शान्ति तथा क्रान्ति के दूत - बापू !

अग्र चित्र

लेखक—बापू के साथ

इसी लेखक की क़लम से अँग्रेज़ी में लिखी अन्य पुस्तकें :

"Light & Colour in the Medical World" Vol. 2
( 2nd Edition )

"Colour in Constipation" ( 2nd Edition )

"Light & Colour in Treating Consumption"
( 2nd Edition )

"Loose leaves from a Socialist Diary"
(यह पुस्तकें छप रही हैं)

आदरणीय आचार्य श्री जुगुल किशोर जी

को

सादर समर्पित

# बापू की छाया में
# मेरे जीवन के सोलह वर्ष

(सन् १९३२ से सन् १९४८)

लेखक

एच० एल० शर्मा,

नेचरोपैथ

एच० एल० शर्मा के लिए

संचालक

ईश्वर शरण आश्रम (भूतपूर्व हरिजन आश्रम), प्रयाग द्वारा

प्रकाशित

# विषय-सूची



—:o:—

## चित्र-सूची

इस पुस्तक के छपते समय तक केवल *तीन सौ बारह* फोटो-ब्लॉक्स तैयार हो सके हैं, जो इस प्रकार हैं :

तार तथा पत्रों के फोटो-ब्लॉक्स—दो सौ छाछठ

चित्रों के फोटो-ब्लॉक्स—छियालिस

पुस्तक के दूसरे संस्करण के लिए कुछ और भी अधिक पत्रों के फोटो-ब्लॉक्स शामिल करने की आशा की जाती है ।

—:o:—

—राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद

## —उपोद्‌घात—

महात्मा जी के लिए अस्पृश्यता-निवारण एक सीमित और बाह्य आचरण का ही प्रश्न नहीं था, वे इस भावना का ही आमूल नाश चाहते थे। १९३३ में उनके अनशन के फल-स्वरूप हरिजन सेवा और अस्पृश्यता-निवारण के लिये एक अभूतपूर्व उत्साह देश में पैदा हुआ और अछूतपन दूर करने के लिए क्रियात्मक प्रयास होने लगे। उन्हीं दिनों मुन्शी ईश्वरशरण ने प्रयाग के हरिजन आश्रम की स्थापना की। तब से यह संस्थान, जिसे अब ईश्वरशरण आश्रम कहते हैं, सुधार के इस क्षेत्र में सतत प्रयत्नशील रहा है। अन्य कार्यों के अतिरिक्त गांधी जी के विचारों का प्रचार आश्रम अपने प्रकाशनों द्वारा कर रहा है।

प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ श्री हीरालाल शर्मा लिखित "बापू की छाया में" आश्रम का नवीनतम प्रकाशन है। पुस्तक की एक बड़ी विशेषता लेखक को लिखे गये गांधी जी के बहुतेरे पत्रों के फोटो ब्लाक्स हैं। इन पत्रों में प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी बातें तो हैं ही, मानव जीवन की उलझनों के समाधान के संकेत भी हैं। सत्यमय और अहिंसामय जीवन प्रकृति के निकट रहकर ही सुलभ है ऐसा गांधी जी मानते थे और इसीलिये प्राकृतिक चिकित्सा में उनकी अनन्य निष्ठा थी। अस्पतालों और औषधालयों को वे आधुनिक जीवन के विकारों का प्रतीक मानते थे और इनकी बहुलता उनके लिये न उठती सभ्यता की निशानी थी न जीवन के पूर्णतर होने की। उनकी दृष्टि सदैव मूल पर रही। विकार ही क्यों हों कि अस्पतालों और औषधालयों की अनिवार्य आवश्यकता हो? क्यों नहीं पथ-भ्रष्ट मानव जिन्दगी नयी तरह जीना सीखे?

आज का मानव यदि गांधी जी के विचारों को उनकी समग्रता में

ग्रहण कर ले तो संसार की अब तक की सबसे बड़ी क्रान्ति संभव हो। लेकिन अभी वह दिन नहीं आया है, फिर भी जिन विचारों में प्रेरणा का अजस्र स्रोत है, उनसे जितना, अधिक परिचय हो, उन्हें जितना भी ग्रहण किया जाय, कल्याणकर ही होगा। मुझे प्रसन्नता है कि इस पुस्तक का एक सस्ता संस्करण निकाल कर आश्रम आम जनता के लिये भी इसे सुलभ बना रहा है।

राष्ट्रपति भवन
नई दिल्ली।

राजेन्द्र प्रसाद

# ज्ञप्ति-पत्र

## (Acknowledgements)

अपने संस्मरण लिखने में मुझे निम्न सज्जनों से जो सहायता मिली है इसके लिए मैं उनका आभारी हूँ और उन्हें हृदय से धन्यवाद देता हूँ :

(१) बापू के पत्रों को प्रसंग सहित पुस्तक के रूप में छपवाने का प्रोत्साहन सबसे पहले मुझे राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन जी की प्रेरणा से दिल्ली में मिला और यह उन्हीं की प्रेरणा का फल है कि आज मैं अपने यह संस्मरण पाठकों के सम्मुख रख सका हूँ। राजर्षि लोग किसी के धन्यवाद के इच्छुक नहीं होते अतः उनकी कृपा के लिए मैं उन्हें सादर प्रणाम करता हूँ।

(२) प्रो० लक्ष्मी नारायन टण्डन, एम० ए०, एल० टी० जिन्होंने बापू के अँग्रेजी पत्रों का हिन्दी अनुवाद किया तथा भाई प्यारेलाल नायर जिन्होंने उसे संशोधन करने की कृपा की।

(३) 'नवजीवन ट्रस्ट', अहमदाबाद के श्री जीवन जी दयाभाई देसाई जिन्होंने थोड़े ही समय में इसकी पाण्डुलिपि का निरीक्षण करके इसके छपवाने की अनुमति दी।

(४) श्री कृष्ण चन्द्र श्रीवास्तव-रिटायर्ड डिस्ट्रिक्ट जज, इलाहाबाद जिनकी प्रेरणा से, बावजूद अनेक प्रकार की कठिनाइयों के, मुझे अपने कार्य को समाप्त करने में बराबर प्रोत्साहन मिलता रहा तथा जिनकी कृपा से इलाहाबाद की प्रसिद्ध लायब्रेरी का मैं तत्सम्बन्धी कार्य के लिए भली प्रकार उपयोग कर सका।

(५) कांग्रेस तथा बापू के पुराने विश्वस्त कार्यकर्ता—आचार्य रामकिशोर लाल नन्दक्योलियर ( बार-एट-लॉ ) संचालक, हरिजन-आश्रम, इलाहाबाद तो विशेष रूप से धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने प्रकाशक के नाते अपने पर्यवेक्षण में इस पुस्तक को छपवाकर बापू के प्रति अपना अटूट प्रेम तथा श्रद्धा का परिचय दिया।

(६) 'अभागिन' नाम की पुस्तक पर उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पारितोषिक प्राप्त—श्री कमलाकान्त पाठक, प्रबन्ध सम्पादक 'आश्रम-संदेश' जिन्होंने पुस्तक के मुद्रण तथा संशोधन सम्बन्धी कार्यों में बहुत परिश्रम किया।

(७) दिल्ली के मेसर्स आइडियल आर्ट स्टूडियो, जिन्होंने बापू के पत्रों के फोटो-ब्लॉक्स को बड़े परिश्रम के साथ तैयार करके मुझे अपना सहयोग दिया।

---

# प्रस्तावना

मुझे अपने प्रतिदिन की डायरी लिखने का तथा महान पुरुषों की कहावतें, लेख तथा पत्रों आदि के संग्रह करने का शौक़ तो शुरू से ही रहा है किन्तु बापू के सम्पर्क में आने के बाद तो यह शौक़ मेरी जीवन-योजना का एक अंग ही बन गया था। अतः ऐसे संस्मरण लिखने में तो मुझे कोई विशेष दिक्क़त नहीं थी किन्तु बापू के निधन के बाद, परिस्थितियों के वश, जिसका ज़िक्र इस पुस्तक के अन्त में किया है, प्राकृतिक-चिकित्सा के साथ ही अपनी आजीविका का साधन कृषी-कार्य्य को दस साल तक अपना लेने की मेरी स्वयं धारित प्रतिज्ञाओं के कारण इससे पहले अपने संस्मरण लिखने का न तो मुझे अवकाश ही मिल पाया और न मुझे यह कोई आवश्यक ही प्रतीत हुआ। इसके अतिरिक्त लेखक का मुझ में कोई गुण भी नहीं है। महत्वाकांक्षा भी नहीं है। यह बड़ी कमी है। मेरी बनावट भी कुछ ऐसी हुई है कि मैं शोर-ग़ल, दिखावा तथा आडम्बर जैसी चीज़ों से सदैव दूर रहता रहा हूँ और मैं अन्ध भक्त अनुयायी भी नहीं हूँ। इसका यह अर्थ नहीं है कि मैं अनुशासन में नहीं रहना चाहता। किन्तु मैं व्यक्ति वादी नहीं हूँ। नेताओं की दूर से आराधना तो करता रहा हूँ लेकिन उनके पास बहुत कम बैठता रहा हूँ यह मेरा स्वाभाविक संकोच है। आत्म प्रशंसा सुनकर किसको खुशी नहीं होती। अच्छा पद पाकर कौन प्रसन्न नहीं होता किन्तु मैंने कभी इसके

लिये कोई लालसा नहीं की। इसी कारण मेरे अन्य साथियों के लिखे हुए अनेक क़ीमती संस्मरण मेरे पास आने पर भी मुझे यह ख़्याल न आया कि मेरे गाँव की झोंपड़ी में खुँटी पर लटकी हुई कपड़े की पोटली में जो बापू की क़लम से लिखे हुए तत्व, नीति और उपदेश से भरे अनेक पत्र पड़े हैं उन्हें मैं भी पाठकों के सामने रख दूँ।

एक बार कुछ परिस्थितियों वश मैंने यह काम हाथ में लिया भी तो उसमें अनेक बाधाएँ सामने आ गईं। पहिली तो यही थी कि बापू के पत्रों को बिना प्रसंग के छाप देने में मुझे कोई लाभ नहीं दिखाई दिया और प्रसंग के साथ छापने में मेरे गाँव की भणित भाषा तथा मेरे स्पष्ट और निर्भीक स्वभाव की रुक्षता जैसी चीज़ें मेरे सामने थीं जो आज के समाज के अनुकूल नहीं प्रतीत होतीं; और प्रासंगिक होने पर हृदय की बात को दबाकर तथा चिकनी चुपड़ी बातें कहकर सत्य को छिपाया जाय या किसी के भले बुरे लगने का ख़्याल किया जाय तो फिर इस पुस्तक की मौलिक रचना के नष्ट होने का डर था तथा इसका लिखना बेकार हो जाता था। इधर हिन्दी में पुस्तक लिखने का भी मेरा यह पहला अवसर है इन्हीं सब बातों का ख़्याल करके दो वर्ष तक फिर यह काम यूँ ही पड़ा रहा। किन्तु अब कई स्थानों से जब बापू के पत्रों की मांग आने लगी तथा उनके पत्रों और लेखों के संग्रहालय खोले जाने लगे और उधर मेरी स्वयं धारित प्रतिज्ञाओं की अवधि भी समाप्त होने को आ गई तब मुझे यह ख़्याल आया कि बापू की इस अमूल्य देन का आगे भी पड़े रखना उचित नहीं; जैसे भी हो इन पत्रों को प्रसंग सहित पाठकों के सन्मुख रख ही देना ठीक है।

गांव में रहने के स्थान अनेक प्रकार के कीड़े मकोड़ों से तथा आंधी मेंह इत्यादि से सुरक्षित तो होते नहीं; फिर कृषि के काम में "फ़ुरसत" जैसी चीज़ का कोई स्थान है ही नहीं जिसमें ग़रीब किसान

अपनी लिखने पढ़ने की आवश्यक चीज़ों को बार बार सँभालता रहे, अतः आज साढ़े नौ वर्ष के लम्बे समय के बाद यह देख कर मुझे दुःख हुआ कि मेरी फाइलों को दीमक तथा वर्षा से काफ़ी हानि पहुँच चुकी थी जिसके कारण बापू के कुछ पत्र तो नष्ट ही हुए मिले। फिर भी बापू के जो कुछ पत्र मुझे सुरक्षित मिल पाए, उन्हीं को लेकर जब मैं यह संस्मरण लिखने लगा तो इन पत्रों के सिलसिले में मुझे अमेरिका तथा यूरोप में हुई कुछ घटनाओं का स्मरण हो आया। बापू का जब भी कोई पत्र मुझे अमेरिका तथा यूरोप में मिलता था तो बापू के हस्तलिखित अक्षरों को देखने के लिए वहाँ के मेरे अनेक मित्र इकट्ठे हो जाते थे तथा बड़ी श्रद्धा और भक्ति के साथ उस पत्र को पहले अपने माथे से लगाते थे और फिर देर तक बापू के लिखे अक्षरों को ऐसी भक्ती भरी भावना से देखते प्रतीत होते थे मानों वह महात्मा ईसा के ही लिखे पत्रों का दर्शन कर रहे हों।

इस प्रकार की कुछ घटनाओं की याद आते ही मुझे अपने कृषी-देश के उस ग़रीब के हृदय की दबी हुई भावनाओं का ख़याल हो आया जिसका प्रतिरूप बनकर बापू ने यहाँ जन्म लिया तथा जीवन पर्यंत उसका प्रतिनिधित्व किया। बापू ने अपने देश के ग़रीब मूक कृषक के प्रति अपना प्रेम दर्शाते हुए कहा भी है कि "I recognise no God except the God that is to be found in the hearts of the dumb millions......And I worship the God that is Truth......through the services of these millions." *"मैं केवल उस भगवान को छोड़ कर जो लाखों मूक प्राणिओं के दिलों में बसता है, (दूसरे) भगवान को नहीं मानता... और इन्हीं लाखों की सेवा के ही ज़रिये मैं सत्य-स्वरूप उस भगवान की पूजा करता हूं।"*

तो फिर इस ग़रीब के हृदय में अपने दरिद्र नारायण के हस्त-

लिखित पत्रों के देखने और पढ़ने की कितनी अभिलाषा दबी पड़ी हो सकती है उसका अनुमान लगाते ही मैं विह्वल हो उठा और मन ही मन सोचने लगा, 'क्या फूंस की झोंपड़ी में रहने वाला तथा आँधी, तूफ़ान, धूप, मेंह, सर्दी-गर्मी इत्यादि से संघर्ष करते रहने पर भी केवल अपने जीवित रहने योग्य मोटा झोटा अन्न खाकर यह चलता फिरता हाड़ पिंजर का ग़रीब पुतला आज पेरिस की सास जैसी बनी बैठी दिल्ली के सरकारी संग्रहालयों में जाकर अपने उस दरिद्रनारायण के हस्तलिखित पत्रों का अवलोकन कर सकता है? या मोटे-मोटे मूल्य की तत्सम्बन्धी पुस्तकों को ख़रीद कर अपने दिल की लगी हुई उस प्यास को बुझा सकता है? यदि नहीं, तो क्यों न बापू के पत्रों का संग्रह उनके फोटो-ब्लॉक्स में छपवाकर सस्ती क़ीमत में ग़रीब तक पहुँचाया जाय?'

मेरे उपरोक्त विचारों ने मुझे ऐसा निश्चय करने को विवश किया कि मैं बापू के जितने भी पत्रों के फोटो-ब्लॉक्स बन सकें वह बनवाकर अपनी इस पुस्तक में दूँ। लेकिन इस स्वयं निर्धारित कठिनाई से पार उतरते ही मैंने एक दूसरी बड़ी मुसीबत में अपने को घिरा पाया। वह थी यह कि बापू के पत्रों को ब्लोक सहित छपवाने से पुस्तक की छपाई का मूल्य इतना बढ़ता गया कि वह मेरे सच्चे पाठकों की जेब से बाहर की बात मुझे दीखने लगी और मेरे ये संस्मरण लिखने का असल उद्देश मुझे भंग होता प्रतीत होने लगा। इन दो विपरीत समस्याओं के उत्पन्न होने से उचित साधन प्राप्त होने तक फिर यह काम कुछ दिन के लिए अधबिच में ही रह गया। लेकिन किसी काम को शुरू करके फिर उससे हटना मेरे स्वभाव में नहीं है और अच्छे काम के आगे पैसे को भी मैंने कभी कोई महत्व नहीं दिया; इसलिए बावजूद पुस्तक की छपाई इत्यादि का बहुत अधिक मूल्य हो जाने के अपने यह संस्मरण ग़रीब से ग़रीब तक

पहुँचने के लिए इसका मूल्य उसकी जेब के अनुसार ही रक्खा। धनी वर्ग के लिए इसका लायँब्रेरी एडीशन आर्ट पेपर पर तथा खादी की रेशम पर त्यार हुआ है मुझे आशा है वे ग़रीब का हिस्सा न खरीदते हुए इसी एडीशन को खरीद कर अपने कर्तव्य का पालन करेंगे।

अब चूंकि यह पुस्तक पाठकों के सामने है अतः उनसे मेरा यही निवेदन है कि गुलाब के फूल के साथ उसके पौदे की काँटेदार किन्तु एक हरी पत्ती के होने से फूल की ही जैसे शोभा बढ़ती है ठीक उसी दृष्टि से बापू के पत्रों के साथ प्रासंगिक रूप में आई मेरी सोलह वर्ष की घटनाओं को भी वह देखेंगे तथा मेरे दिये हुए प्रसंगों को पढ़ेगें तो उन्हें बापू की ही महानता का अधिक बोध होगा; मेरी प्रासंगिक घटनाओं का कोई मूल्य नहीं। वह तो गुलाब के फूल के साथ एक काँटेदार हरी पत्ती के ही समान समझे जाँय।

बापू अपने युग के महान पुरुष थे। और यदि वह जीवन के अन्तिम कुछ वर्षों के लिए भी राजनीति से अलग रह सके होते तो मेरे ख्याल से निश्चय ही आज वह अपने इस अभागे ग्रामीण देश को प्राकृतिक-चिकित्सा द्वारा सच्चे स्वास्थ्य के राजमार्ग पर तो डाल ही गये होते। लेकिन मुझे जितना मालूम है राजनीति ने ही उन्हें ऐसा करने से वंचित रक्खा। उनके पत्रों से पाठकों को भी कहीं कहीं ऐसा आभास होगा कि वह स्वयं राजनीति से अलग रहना चाहते थे और कई बार वह उससे अलग हुए भी; किन्तु परिस्थितियों वश उसे छोड़ न सके और आखिर इस गन्दी राजनीति ने उनकी जीवन लीला ही समाप्त कर दी। इस पर भी भारी दुःख यह रहा कि सदियों से गुलामी में जकड़े हुए इस देश की दबी हुई मिथ्या वासनाओं ने

अवसर पाते ही इसे अपने वशीभूत कर लिया और बापू की राजनैतिक सफलता का भी इसे पूर्ण लाभ न उठाने दिया।

कुछ भी हो, बापू तो जन साधारण के सदैव सच्चे और अनुभवी "मातृ" समान "पिता" कहलाएँगे। उनका जीवन मानवता की अनेक दैनिक समस्याओं का हल उपस्थित करता ही रहेगा। जब अपने जीवन की अनेक उलझी हुई गुत्थियों को सुलझाने के लिए बापू के गहरे अनुभवों का तथा उनके दिए आदेशों का मैं ख्याल करता हूँ तो मुझे यह बात निर्विवाद सी ही लगती है कि किसी भी देश, जाति अथवा व्यक्ति को स्वस्थ्य, सम्पन्न, स्वावलम्बी तथा निर्भीक बनने के लिए बापू के ही बनाए हुए सीधे तथा सरल मार्ग पर उसे उतरना पड़ेगा चाहे वह अपनी कथित नवीन प्राप्त बुद्धि तथा बल के भ्रम में हवा में कितनी ही उड़ान भर ले। अब तो देखना सिर्फ़ यही है कि वह शीघ्र सद्बुद्धि प्राप्त करके स्वयं उनके सद्मार्ग पर उतर कर उसका लाभ उठाते हैं या कि अपनी मदभरी उड़ान में अपने पंखों को जलाकर मौत के मुँह में जाते हैं सो इसका अन्तिम निर्णय तो भविष्य ही करने वाला है।

बापू के स्वभाव में एक विशेष उल्लेखनीय बात यह थी कि वह अपने अनुयायियों को आंख मींचकर यँत्र-वत उनकी आज्ञा-पालन करने को नापसंद करते थे। वह यह नहीं चाहते थे कि उनके साथी उनकी हाँ में हाँ मिलाते रहें या उनके सर्वोत्तम सहयोगी भद्रतावश या नम्रतावश ही अन्धाधुन्द उनके पीछे चलते रहें। बापू तो हमेशा से मैत्रीपूर्ण विरोध, उचित और युक्ति-युक्त विचार विनिमय और रचनात्मक आलोचनाओं का स्वागत करते थे। उन्हें अपने विश्वस्त कार्यकर्त्ताओं की स्पष्ट वादिता प्रिय लगती थी। अतः कितने ही अपने ऐसे कार्यकर्त्ताओं से प्रसन्न होकर उन्होंने उन्हें "अभयदान" से भी विभूषित किया। बापू यह कहा करते थे कि

उनके स्पष्टवादी अनुयायी ही उनके सम्पर्क से सच्चा लाभ उठाकर अपनी जीवन योजना सफल कर सकेंगें; न कि वह जो उनके "महात्मा" कहलाने के नाते किसी प्रकार के दबाव में यंत्र-वत उनकी हाँ में हाँ करते हों। वह स्वयं कहा करते थे कि "किसी भी बात को वेद वाक्य मत मानों भले ही वह किसी महात्मा ने क्यों न कही हो, जब तक कि वह तुम्हारे मस्तिष्क और हृदय को अपील न करे।" अपने समीप के अनुयायियों को कहीं भी दबते हुए कोई काम करते देख बापू तुरन्त संकेत द्वारा उन्हें सावधान करते रहते थे। बापू के पत्रों में इस प्रकार के दिए संकेत अनेक जगह मिलेंगें।

मैं तो बापू की रचनात्मक सेना का एक सिपाही रहा हूँ। उनकी लकीरों पर आंख मींचकर चलने वाले उनके अन्य अनुयायियों की तरह शुरू से ही नहीं रहा। प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी अपने तथा बापू के दृष्टि कोणों की भिन्नता को मैंने उनसे कभी नहीं छिपाया। उनका मुझ पर स्नेह हमारे बीच पारस्परिक सामान्य विचारों पर निर्भर था। मैं उनके कामों में शँका भी करता था, बहस भी करता था और प्रतिरोध भी करता था लेकिन अन्त में उनके किसी आदेश का पालन एक सिपाही के नाते आँख मींच कर करने में मुझे आनँद भी आता था। पाठकों को इसी एक चीज़ की झाँकी मेरे सम्पर्क के सोलह वर्षों में बराबर मिलेगी और वह देखेंगे कि इसी अपनी प्रिय चीज़ को पाकर तथा प्राकृतिक चिकित्सा को मेरी एक ईश्वरीय देन देखकर बापू ने मुझ जैसे देहाती अल्हड़ को अपनी छाया में मृत्यु पर्यन्त सहर्ष स्थान दिए रक्खा और उसी के कारण आज उनकी मृत्यु के लगभग दस साल के लम्बे अर्से के बाद भी मानों मैं उन्हीं की छाया में अभी तक इस छोटे से गांव में रहते हुए यह संस्मरण लिख रहा हूँ।

चूंकि बापू के पत्रों में प्राकृतिक चिकित्सा से सम्बन्धित बातों

के अतिरिक्त धर्मनीति, राजनीति, समाजनीति, तथा गार्हस्थ नीति से सम्बन्ध रखने वाली भी ऐसी कितनी ही बातें हैं जिनमें व्यक्तिगत तथा समष्टिगत जीवन की विभिन्न समस्याओं का समाधान प्राप्त होता है अतः मुझे आशा है कि मेरा परिश्रम व्यर्थ नहीं जाएगा और पाठक इससे उचित लाभ उठाएँगे।

ग्राम—नगला नवाबाद,
पो०—खुर्जा ( उत्तर प्रदेश )
तारीख १० मई १९५७

एच० एल० शर्मा

# बापू की छाया में

## ( मेरे जीवन के सोलह वर्ष )

( सन् १९३२ से सन् १९४८ )

# पहला अध्याय

# पहिला अध्याय

यूँ तो गांधी जी के पहली बार दर्शन करने का मौक़ा मुझे सन् १६२१ में मिला। मुझे याद है कि सन् १६१६-२० में हमारी मैट्रिक परीक्षा की फ़ीस इलाहाबाद भेज दी गई थी और अपने स्कूल में सदा की भाँति प्रथम श्रेणी में आने के लिये मैट्रिक परीक्षा की ज़ोरों से तैयारी की जा रही थी लेकिन देश में चारों तरफ़ असहयोग की आग इतनी भड़क उठी थी कि हमारा खुर्जा का जे० ए० एस० हाई स्कूल भी उसकी लपेट से न बच सका। दिल्ली से श्री आसफ़अली आये और उनके भाषण ने स्कूल के विद्यार्थियों में आग भड़का दी। उन दिनों हमारे हेडमास्टर श्री एल० एन० माथुर थे। उन्होंने स्कूल में असहयोग की रोक थाम के लिए अनेक प्रयत्न किये लेकिन सब निष्फल साबित हुए और हम पूर्ण असहयोग कराने में सफल हो गये। मैं असहयोग कराने वाले उन अगुआ विद्यार्थियों में था जो श्री आसफ़अली को दिल्ली से लाये थे इसलिए उन साथियों के साथ मेरा नाम भी हेडमास्टर ने स्कूल के रजिस्टर से काट दिया। उन दिनों मेरठ में भी अन्य बड़े स्थानों की भाँति राष्ट्रीय हाई स्कूल खुल चुका था। श्री प्यारेलाल शर्मा उसके जन्म दाता तथा श्री गोपीनाथ सिन्हा उसके हेडमास्टर थे। मैंने अपने अन्य साथियों के साथ इसी स्कूल से अपनी मैट्रिक परीक्षा पास की।

सन् १६२१ में मैं राष्ट्रीय कालेज, लाहौर में दाख़िल हुआ। **श्री आचार्य जुगल किशोर जी*** वहां के प्रिन्सपल थे। फ़रवरी मास में लाहौर का राष्ट्रीय कालेज देखने के लिए जाते समय मुझे एक दिन अपने मामा जी के यहाँ दिल्ली रुकना पड़ा। उस दिन वहाँ गाँधी जी का तिब्बिया कालेज में उद्घाटन-भाषण था जिसमें मैं भी कुतुहल-वश गया था। उन दिनों गांधी जी धोती, कुरता और सर पर गाँधी टोपी पहिनते थे। पैरों में चप्पल पहिनते थे। दूर से ही सभा में मैंने उन्हें देखा और वहाँ जो उन्होंने अँग्रेज़ी में भाषण दिया उसके निम्न लिखित कुछ शब्द आज भी मेरी डायरी में ज्यों के त्यों लिखे हुए हैं।

"......The present practice of medicine is the concentrated essence of black magic. I believe that the multiplicity of hospitals is no test of civilization, it is rather a symptom of decay."

**"......चिकित्सा की आधुनिक प्रणाली प्राचीन काले जादू का ठोस तथ्य रूप ही तो है। मेरा विश्वास है कि चिकित्सालयों की बढ़ती हुई संख्या सभ्यता की कसौटी नहीं बल्कि यह तो अवनति का एक चिह्न मात्र है"।**

गांधी जी के साथ मेरे सम्पर्क का सूत्रपात-मात्र तो उनके दिल्ली में प्रथम दर्शन के ६ साल बाद सन् १६२७ के दिसम्बर मास में मद्रास में हुआ। सन् १६२७ की मद्रास काँग्रेस के अवसर पर मैंने अखिल भारतवर्ष के प्राकृतिक चिकित्सकों का चौथा अधिवेशन बुलाने के लिये समाचार पत्रों द्वारा एक अपील निकाली। उसका स्वागत किया गया और चारों ओर से उत्साहवर्धक समाचार मिले। उन दिनों साधु टी०एल० वास्वानी जी के "शक्ति आश्रम"† (राजपुर, देहरादून) का मैं एक सदस्य था और वह मुझ पर विशेष कृपा और स्नेह रखते थे।

---

*** आजकल यू० पी० सरकार के श्रम तथा समाज-कल्याण के मंत्री हैं।**

**† डा० केशव देव शास्त्री तथा प्रोफ़ेसर राममूर्ति के सहयोग से साधु वास्वानी जी ने राजपुर (देहरादून) में Order of Young India "भारत युवक संघ" क़ायम किया था। प्राकृतिक चिकित्सा भी उसका एक भाग था।**

—दो

चित्र—१ लेखक सन् १९२७ में मद्रास के कांग्रेस नगर में ( देखिये पन्ना—तीन )

प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी मेरे लेख वह अखबारों में बड़े चाव से पढ़ते थे। उनको भी सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए मद्रास आने का मैंने निमंत्रण भेजा जिसके उत्तर में साधु वास्वानी जी ने यह पत्र लिखा।

१

हैदराबाद,
सिंध,
१५. ११. २७

मेरे प्यारे शर्मा,

तुम बड़े दयालू हो। तुम्हारा पहिला पत्र ठीक समय पर मिल गया था। मैं उसे कहीं रखकर भूल गया और मुझे तुम्हारा पता याद नहीं रहा। अभी दो दिन हुये मैंने अपना आध्यात्मिक बेतार का तार तुम्हारे पास भेजा था और लो! तुम्हारा दूसरा पत्र भी आ पहुँचा। पत्र न भेजने का अर्थ विस्मृति तो नहीं—मुझे अपने दूसरे व्याख्यानों की ओर ध्यान देने का समय नहीं मिल सका है। तैयार होने पर कुछ तो तुम्हें भेजने का प्रयत्न करूंगा ही। श्री पी० के० घोष, श्री आर० सी० चटर्जी, और श्री एन० सी० चटर्जी* को प्रेम अभिवादन करना। मैं अभी नहीं कह सकता कि मैं मद्रास कब पहुँचूँ। मुझे करांची के पते से ही पत्र लिखना। प्रेममय भगवान तुम पर अपनी कृपा बनाये रक्खें और संघ† का संदेश प्रसारित करने की शक्ति प्रदान करें।

तुम्हारा स्नेही,
टी० एल० वास्वानी

मद्रास काँग्रेस कार्यकारणी के सुसज्जित पंडाल में प्राकृतिक चिकित्सा का चौथा अधिवेशन बड़े धूम धाम से हुआ। कांग्रेस स्वयं सेवक दल के कमान्डर तथा केप्टेन और आंध्र देश के उत्साही स्वयं सेवकों के सहयोग से हमने एक प्राकृतिक चिकित्सालय तथा भोजनालय भी कांग्रेस के अधिवेशन तक खोले रक्खा जिसकी वहाँ काफ़ी सराहना रही।

---

* कलकत्ते से अंगरेजी में छपने वाले मासिक पत्र "नेचर हीलर" "Nature Healer" के सम्पादक।

† भारत युवक संघ—राजपुर।

प्राकृतिक चिकित्सकों के खुले अधिवेशन में दिया गया मेरा अँग्रेज़ी भाषण एक पत्रिका के रूप में गांधी जी के कर कमलों तक पहुँचा जिसमें गांधी जी से उनके सहयोग करने की भी मांग थी।

यह था वह स्थान जहां गांधी जी से मेरा प्रथम परिचय हमारे वयोवृद्ध श्री एन० सी० चटर्जी द्वारा हुआ जब उनके दूसरी बार दर्शन करने के अतिरिक्त मुझे दो दिन तक थोड़ी २ देर उनके साथ "प्राकृतिक चिकित्सा बनाम समाज कल्याण" के विषय पर भी बातें करने का सुअवसर मिला।

उस समय गांधी जी बड़े गहरे विचारों में मग्न थे और राजनीति से अलग थे। भारत के भविष्य की कोई अनोखी तस्वीर उस समय उनके मस्तिष्क में घूम रही मालूम होती थी। उन्होंने हमारे काम की सराहना की और आगे बढ़ने का प्रोत्साहन दिया।

मद्रास अधिवेशन के बाद मैं भारत का दौरा करने निकल गया। देश के अन्य प्राकृतिक चिकित्सकों के सम्पर्क में आने के अतिरिक्त उन दिनों मुझे कुछ अरसा "योगाश्रम" लोनावला में प्रोफेसर जे० जी० गुने (श्री केवल्यानन्द जी) के साथ भी रहने का सुअवसर मिला जहां वह योगासनों द्वारा वैज्ञानिक ढंग से शरीर को स्वस्थ रखने का अभ्यास कराते थे। अपने पांच महीने के देशाटन के बाद ही मेरी प्रथम पुस्तक "Light and Colour in the Medical World" सन् १६२८ के अन्त में छपी। सन् १६३० में एसोसियेटेड प्रेस के श्री के० सी० राय, सी० आई० ई० ने दिल्ली में प्राकृतिक चिकित्सा का काम करने का आग्रह किया और वहां उन्होंने हर प्रकार की सुविधा देते हुये करौल बाग़ (दिल्ली) में बनी हुई अपनी कोठी इस काम के लिए मुझे किराये पर दे दी जो अन्त में उनकी धर्मपत्नी ने अपने स्वर्गीय पति की इच्छानुसार मुझको ही रुपये लेकर बेच दी थी।

इसी वर्ष अक्टूबर मास में मुझे पं० ऋषिराम जी की धर्मपत्नी के इलाज के लिए लाहौर जाना पड़ा। वहाँ के समाचार पत्रों में पं० मोतीलाल नेहरू जी की

Dr. H. L. Sharma,

C/O Pandit Rikhi Ram,
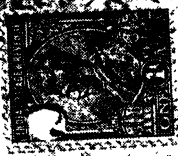
Rishi Bhawan,

Lahore.

Narayan Niwas.

Mussoorie, October 14, 1930.

Dear Sir,

I have received your two letters and I am obliged to you for the suggestions you make about my treatment according to your system. The news paper report that I have taken to sun baths was not quite accurate. I shall be glad to consult you about the light and colour treatment when I make up my mind to try it. Meanwhile I shall study the pamphlets you have sent for which many thanks.

Yours sincerely,

Motilal Nehru

Dr. H.L. Sharma
C/O Pandit Rikhi Ram
Rishi Bhawan
Lahore.

( देखिये पन्ना—पांच )

अस्वस्थता तथा उनके सूर्य-स्नान के समाचार पढ़ने को मिले। सूर्य-स्नान की बात पढ़ते ही मैंने उन्हें अपनी तत्सम्बन्धी सेवाएँ अर्पण करते हुए पत्र लिखे और अपनी पुस्तकें भी भेजीं। लाहौर में ही मुझे उनका यह पत्र मिला।

२

नारायण निवास,
मंसूरी,
अक्टूबर १४. १६३०

प्रिय महोदय,

आप के दो पत्र प्राप्त हुए और अपनी पद्धति के अनुसार मेरी चिकित्सा के बारे में जो परामर्श आप ने दिये हैं उनके लिये मैं आभारी हूँ। यह अख़बारी ख़बर कि सूर्य-स्नान चिकित्सा मैंने प्रयोग की है बिलकुल सही तो नहीं थी। मुझे सूर्य-रश्मि चिकित्सा के बारे में परामर्श लेने में प्रसन्नता होगी और तभी मैं उसको प्रयोग करने के लिये किसी निश्चय पर पहुँच सकूँगा। इस बीच में आपने जो पत्रिकाएँ मुझे भेजी हैं पढ़ लूँगा उसके लिये बहुत बहुत धन्यवाद।

आपका शुभचिन्तक,
मोतीलाल नेहरू

डा० एच० एल० शर्मा,
द्वारा—पं० ऋषि राम,
ऋषि भवन, लाहौर।

दिल्ली में सन् १६३१ में मेरी पुस्तक "Light and Colour in the Medical World," का दूसरा भाग भी छप गया था। देश विदेशों में इन

—पांच

पुस्तकों की अच्छी माँग होने से मेरा उत्साह तो बढ़ा लेकिन अपने देश के प्राकृतिक चिकित्सकों को संगठित करने की प्रबल इच्छा मुझे हर समय चिन्तित रखने लगी। प्राकृतिक चिकित्सा का एक प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित करने की मेरी प्रबल इच्छा थी। मैं चाहता था कि प्राकृतिक चिकित्सकों के लिये एक सामान्य ठोस पाठ्य-क्रम तैयार किया जाय जिसमें Anatomy, (शरीर रचना) Physiology, (इन्द्रि वृत्ति शास्त्र) तथा Dietetics (पथ्य सम्बन्धी ज्ञान) के अतिरिक्त Pathology, (व्याधि विद्या) Bacteriology, (जीवाणु-विज्ञान) Obstetrics, (प्रसव कला) Gynecology, ( स्त्री चिकित्सा ) Diagnosis, (रोग निदान) Hygiene, (स्वास्थ्य विद्या) Sanitation, (स्वास्थ्य कला) Chemistry, (रसायन-शास्त्र) Toxicology, (विष विज्ञान) और Biology ( जीव शास्त्र ) का भी आवश्यक भाग सम्मिलित हो। इन विषयों को मेडिकल कालेजों के अन्य अनेक व्यर्थ तथा अनावश्यक विषयों के साथ पढ़ने में एक बड़ा वक्त लगानेका भी मैं कायल नहीं था इसलिये इस अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए मैं बड़े अच्छे एलोपैथ डाक्टरों का सहयोग चाहता था और इसी संबंध में मैंने पश्चिम के प्राकृतिक चिकित्सकों से सम्पर्क स्थापित करने तथा पश्चिमी देशों में प्राकृतिक चिकित्सा की अनेक पद्धतियों की जानकारी प्राप्त करने के लिए एक वर्ष के लिये अमेरिका और योरुप जाने का निश्चय भी कर लिया था। ईश्वर को मेरा यह निश्चय पूरा करना तो था लेकिन मेरे जीवन में एक भारी परिवर्तन हो जाने के बाद करना था जैसा कि आगे आने वाली घटनाओं से प्रतीत हुआ।

इन्हीं दिनों गाँधी जी द्वारा भेजा गया साबरमती-आश्रम का एक रोगी मेरे यहाँ दिल्ली में आया। इस रोगी के पास अनेक डाक्टरों के अनेक निदान-पत्र थे-जैसे फेफड़े की तपेदिक, हृदय रोग, गुर्दों की कमज़ोरी, मस्तिष्क की दुर्बलता, रक्तहीनता ( एनिमिया ) इत्यादि इत्यादि। इन सबमें "तपेदिक" का निदान इसको बहुत परेशान किये हुए था और वही इसके मस्तिष्क में घर कर बैठा था। मेरी दृष्टि में इस रोगी को तपेदिक का तो रोग था ही नहीं; लेकिन

उसका भय उसके मस्तिष्क से तुरन्त निकाल भगाने का तथा अपने निदान की कोई सच्चाई दिखाने का एक ही साधन मेरे पास था और वह यह कि अछूतों की तरह इस रोगी को अलग न रखकर अपने ही बच्चों के साथ एक कुटुम्बी के रूप में इसे रखता। रोगी के एक उच्च मुस्लिम परिवार की लड़की होने के कारण यह एक साधारण काम न था, खासतौर पर मेरे लिये जिसकी स्त्री एक उच्च ब्राह्मण कुल की सनातनी विचार वाली हो। इसलिये अपनी स्त्री से इस विषय पर राय लेनी ज़रूरी हो गई। गांधी जी की माया कहो चाहे ईश्वर की इच्छा कहो बहरहाल यह एक पहिला आश्चर्य मुझे देखने को मिला कि मेरी स्त्री भी मेरे उपरोक्त सुझाव से तुरन्त सहमत हो गई और ठीक अपने ही बच्चों की तरह इस मुस्लिम लड़की को अपने पास रख कर इसकी सेवा सुश्रुषा का भार अपने ऊपर ले लिया। इस रोगी को आराम होने का सारा श्रेय मेरी स्त्री को रहा। मेरी स्त्री और बच्चों के प्रेम भरे बर्ताव ने इस रोगी के मस्तिष्क और शरीर पर जादू का सा असर किया और उसे अपने झूँठे भ्रम का ज्ञान हो गया। धीरे-धीरे दो महीने में इसका काफ़ी वज़न बढ़ गया और वह स्वास्थ के राजमार्ग पर पड़ गई।

इस बीच गांधी जी के तथा साबरमती आश्रम निवासियों के अनेक पत्र इस लड़की के पास आये जिनसे लगता था मानो कि वह गाँधी जी की पुत्री है। गाँधी जी के लिखे पत्रों को हम बड़े चाव से देखते थे और यह समझ कर कि इस लड़की के चले जाने के बाद गाँधी जी के हाथ के लिखे हुए अक्षर फिर हमको कभी देखने को शायद न मिलें, मेरी स्त्री ने गाँधी जी का एक पहिला पत्र इस लड़की से मांग लिया जो आजतक हमारे पास सुरक्षित रक्खा है।

हमारे यहाँ से वापिस जाते वक्त इस लड़की ने मुझे 'गीता' का अंग्रेजी अनुवाद भेंट किया और बच्चों को अपना एक गिलास दे गई जो घर में काफ़ी अर्से तक 'बुआ जी का ग्लास' नाम से चलता रहा। इसके कुछ ही दिन बाद यरवदा जेल से शिष्टाचार के नाते गाँधी जी का यह पत्र मुझे मिला :

Yeravda Central Prison,
18th. June, 1932

Dear Friend,

Srimati Ben Amtul Salam sent me some time ago your pamphlets and the two Volumes of your book, "Light & Colour in the Medical World." I am grateful for your having treated Amtul Ben with extreme care and attention which she tells me you gave her. As for the literature on Light & Colour I can express no opinion, as I have no experience, worth the name, of this treatment.

As I have not much faith in drugs and as I believe in the great healing power of the Sun naturally I would love to find that the methods you are advocating are sound and can bear investigation. If under the limited conditions in which I am living I can make any experiments, I shall do so.

Yours sincerely,
M.K. Gandhi

यरवदा सेन्ट्रल प्रिजन,
१८ जून, १६३२

प्रिय मित्र,

श्रीमती बहन अम्तुल सलाम ने कुछ दिन हुए तुम्हारी कुछ पत्रिकाएँ और 'लाइट एन्ड कलर इन दी मेडिकल वर्ल्ड' नामक तुम्हारी पुस्तकों के दो भाग मेरे पास भेजे थे। उन्होंने मुझे बताया है कि तुमने उनकी चिकित्सा बड़ी सावधानी और विशेष ध्यान देकर की है। मैं इसके लिए आभारी हूँ। रही लाइट एन्ड कलर के साहित्य की बात—सो इस विषय पर मैं कोई सम्मति नहीं दे सकता क्योंकि इस चिकित्सा का मुझे नाम मात्र भी अनुभव नहीं है। औषधियों में मेरा कुछ अधिक विश्वास नहीं मैं तो सूर्य की रोगनाशक शक्ति में आस्था रखता हूँ इसलिए मुझे तो स्वभावतः यह जान कर खुशी होगी कि जिस चिकित्सा विधि के तुम समर्थक हो, वह ठोस हो और परीक्षा में पूरी उतरे। जिन सीमित परिस्थितियों में मेरा जीवन चल रहा है उनमें प्रयोग करना यदि मेरे लिये संभव हुआ तो मैं करूंगा।

तुम्हारा शुभचिन्तक,
मो० क० गांधी

— ❀ —

—नौ

## दूसरा अध्याय

गाँधी जी के उपरोक्त पत्र का उत्तर मैं जून में ही दे चुका था जिसमें साधारण रूप से मैंने अपने पश्चिम जाने का इरादा भी लिख भेजा था। अब दो महीने बाद जब मैं अपनी लम्बी यात्रा के लिये साधन जुटा रहा था तो यरवदा जेल से गांधी जी का अचानक ही यह १२ अगस्त का लिखा हुआ पत्र आ गया।

4

Dear Dr. Sharma,

I was glad to receive your letter. I would strongly dissuade you from going to Europe or America for finishing your study of natural healing. You have to do it here by perfecting your observations here and making original researches. Those who have done any thing in this line in the west learnt from none but their own experiences. It is vast mistake to suppose that by going to the west you can learn much of this art. It is yet in its infancy there too. But the first thing for you to do is to be your own healer. If you have a broken body you will not be listened to by people. Surely your disease will yield to sun-baths and rigid regimen.

Dear Dr Sharma,

I was glad to receive your letter. I would strongly dissuade you from going to Europe or America for finishing your study of nature healing. You have to do it here by perfecting your observation here & making original researches. Those who have done any thing in this line the west learnt from none but their own experiences. It is a vast mistake to suppose that anything

For my elbow I would not trouble you. Thanks all the same for offering your help.

12.8.32.

Y.M.

Yours sincerely,

M.K. Gandhi

४

प्रिय डा० शर्मा,

तुम्हारा पत्र पाकर मुझे प्रसन्नता हुई। प्राकृतिक चिकित्सा का अध्ययन पूर्ण करने के लिये योरुप और अमेरिका जाने से मैं तुमको दृढ़ता पूर्वक रोकूँगा। यह काम तो तुमको अपने निरीक्षणों की पूर्णता तथा मौलिक अनुसंधानों के द्वारा यहीं करना है। पश्चिमी देशों में भी जिन लोगों ने इस दिशा में कुछ किया है तो उन्होंने अपने निजी अनुभवों से ही सीखकर किया है। किसी दूसरे से नहीं सीखा था। यह मानना बहुत बड़ी भूल है कि पश्चिम जाकर तुम इस बारे में कुछ सीख सकोगे। वहाँ भी तो यह अपनी शैशवावस्था में ही है। पर सबसे पहिले तो तुम्हें यह करना होगा कि तुम अपने आपको स्वस्थ बनाओ। अगर तुम्हारा ही शरीर जर्जर हो तो लोग तुम्हारी सुनेंगे ही नहीं। यह निश्चित है कि तुम्हारा रोग* सूर्य स्नान और दृढ़ संयम से जायगा ही।

अपनी कोहनी† के दर्द के लिये मैं तुम्हें कष्ट देना नहीं चाहता। फिर भी सेवा के लिये तुम्हारी उत्सुकता के वास्ते धन्यवाद।

१२–८–३२

यरवदा मन्दिर।

तुम्हारा शुभचिन्तक,

मो० क० गांधी

---

* उन दिनों लेखक को भारी जुकाम हो गया था।

† यरवदा जेल में गांधी जी के सीधे हाथ की कोहनी में दर्द रहता था।

निश्चय की हुई बात से हटना मेरे स्वभाव में न था परन्तु गांधीजी के इस छोटे से पत्र में न जाने क्या जादू था कि इसे पढ़ते ही अमेरिका जाने का मेरा विचार कुछ ढीला पड़ गया और जब मैंने अमेरिका जाने के अपने उद्देश्य लिखकर गांधी जी को अपने अनुकूल करने का प्रयत्न किया तो उन्होंने अपने निम्नलिखित पत्र द्वारा मेरी वह सब दलील भी समाप्त करदीं जिससे मेरे जाने के सब विचार स्थगित हो गये।

5

Dear Friend,

I have your letter. What you have heard or read about nature cure institutions in the west is a case of distance lending enchantment to the scene. Of the best advertised institution people of the place knew nothing when a friend enquired about it. This does not mean that there is nothing in them. My only point is that the whole of this science is yet in its infancy and that there is no common course adopted by these institutions. They are what they are through the original researches of their authors. We in India have to make our own researches in keeping with our surroundings. Whatever is to be gained from them can be easily learnt through their publications.

As to your own health I simply gathered from your letter that it was not upto much. You cannot afford to go by the cases of orthodox physicians.

—बारह

You are a pioneer and will therefore have to show a record that would stand the most rigorous scrutiny.

I am glad you have given up the idea of going to the west. Do build up your own body. That in itself will lead you to many discoveries. Your progress may be slow but it will be sure, if the foundation is sound.........

2.9.32.

Yours sincerely,
M.K. Gandhi.

५

प्रियमित्र,

तुम्हारा पत्र मिल गया। पश्चिम में प्राकृतिक चिकित्सा की संस्थाओं के विषय में तुमने जो सुना या पढ़ा वह केवल दूर के सुहावने ढोल हैं। एक ऐसी संस्था के विषय में जिसका अत्यधिक विज्ञापन किया गया था जब एक मित्र ने पूछ-तांछ की तो ज्ञात हुआ कि उसी स्थान के लोग भी उसके सम्बन्ध में कुछ नहीं जानते इसका अर्थ यह नहीं कि उनमें कुछ है ही नहीं। मेरा तो तात्पर्य है कि यह समूचा ही विज्ञान अपनी शैशवावस्था में है। और इन संस्थाओं में कोई एक व्यापक विधि नहीं है। वे जो कुछ भी हैं अपने संस्थाओं के मौलिक अनुसंधानों का ही फल मात्र है। हम भारतीयों को तो अपनी परिस्थितियों के अनुसार ही अपना अनुसंधान करना होगा। उनके अनुसंधानों से हमें जो कुछ मिल सकता है वह उनके प्रकाशित साहित्य से भी हम

आसानी से पा सकते हैं। तुम्हारे स्वास्थ्य के बारे में तो तुम्हारे पत्र से ही मुझे कुछ ऐसा लगा कि वह ठीक नहीं है।

तुम्हारे लिये रूढ़िवादी चिकित्सकों का अनुकरण करना काम न देगा। तुम तो एक पथ-प्रदर्शक हो अतएव तुम्हें ऐसा काम कर दिखाना है जो कठिन से कठिन कसौटी पर भी चढ़ सके। मुझे प्रसन्नता है कि तुमने पश्चिम जाने का विचार छोड़ दिया है। अपने शरीर को ही बनाओ। ऐसा करने से तुम बहुत से आविष्कार स्वयं कर लोगे। हो सकता है कि तुम्हारी प्रगति धीमी हो परन्तु यदि मूलाधार ठोस है तो उन्नति भी निश्चय होगी.........

२. ६. ३२

तुम्हरा शुभचिन्तक,
मो० क० गांधी

अपनी वर्ष भर की चाव-भरी विचार धारा के प्रवाह को गांधी जी के दो ही पत्रों द्वारा इतनी आसानी से बदलते देख मैं सहम गया और मुझे एक नादान बच्चे की तरह उनसे डर लगने लगा। पत्र लिखने की इच्छा होते हुये भी मुझे चार महीने तक उन्हें लिखने का साहस न हुआ। उधर आश्रम से अम्तुल सलाम के फिर कुछ अस्वस्थ हो जाने के समाचार मिले। मुझे जनवरी के अन्त में बम्बई के एक रोगी को देखते हुये हैदराबाद (सिन्ध) जाना था और साबरमती मेरे रास्ते में पड़ता था इसलिये मैंने पहिले ही आश्रम को लिख दिया था कि अपने स्वास्थ्य के विषय में उसे कुछ पूछ-ताँछ करनी हो तो वह मुझे अहमदाबाद के स्टेशन पर मिल सकती है। यह ख़बर आश्रम द्वारा गांधी जी को यरवदा जेल में भी मिली और उन्होंने तुरन्त यह पत्र वहां से लिखा—

—चौदह

treatment. She has
great faith in you
Yours sincerely
8-6-33

( देखिये पन्ना—पन्द्रह )

6

Dear Dr. Sharma,

Amtul Salam tells me you are likely to pass through Sabarmati in near future. I would like you to stay for a few months in the Ashram and make your experiments and at the same time observe if the Ashram-life suits you and you, the Ashram. If you can not do this, stay, if you can for a few days for Amtul Salam's treatment. She has great faith in you.

8. 1. 33. Yours sincerely,
Y. M. M. K. Gandhi.

६

प्रिय डा० शर्मा,

अम्तुल सलाम कहती है कि तुम हाल ही में साबरमती से होकर जाने वाले हो। अच्छा हो कि आश्रम में कुछ महीने के लिये ठहर कर तुम अपने प्रयोग वहाँ करलो और साथ ही यह भी देख लो कि आश्रम का जीवन तुम्हारे अनुकूल और तुम आश्रम के अनुकूल पड़ते हो कि नहीं। यदि ऐसा न कर सको तो अम्तुल सलाम की चिकित्सा के लिए ही—हो सके तो–कुछ दिन के लिए रुक जाओ। उसका तुम पर बड़ा विश्वास है।

८. १. ३३
यरवदा मन्दिर। तुम्हारा शुभचिन्तक,
मो० क० गांधी

मेरा कुछ ऐसा नियम था कि दिल्ली में अपने यहाँ रहने वाले रोगियों की उपेक्षा करके दिल्ली से बाहर के किसी एक रोगी के लिये हफ्ते से अधिक नहीं ठहरता था और जिन रोगियों के लिये जा रहा था उनसे वक्त मुकर्रर हो चुका था इसलिये आश्रम द्वारा गांधी जी को अपनी परिस्थिति लिखते हुये उनसे यह प्रार्थना की कि वह अम्तुल सलाम को फिर दिल्ली ही भिजवा दें। गाँधी जी ने मेरे स्पष्ट उत्तर की सराहना की और यह पत्र लिखाः

7

Yeravda Central Prison,
24th. January, 1933

My dear Sharma,

Amtul Salam has forwarded your letter of the 15th. instant. to me and I was glad to receive it. You have indeed fulfilled your self-imposed vow, for the letter you have written to me is not for yourself. I have already advised Amtul Salam to proceed to Delhi and I hope that she will leave the Ashram atonce, stay there till you can discharge her fully cured and then return to the Ashram. I quite appreciate your desire to fulfil your present obligations before you come down to the Ashram.

Sjt. H. L. Sharma,
Sun-Ray Hospital,
Karolbagh, Delhi.

Yours sincerely,
M. K. Gandhi.

यरवदा सेन्ट्रल प्रिजन,
२४ जनवरी, १९३३

मम प्रिय शर्मा,

अम्तुल सलाम ने तुम्हारा १५ जनवरी का पत्र मेरे पास भेज दिया है। उसे पढ़ कर मुझे प्रसन्नता हुई। तुमने वास्तव में अपनी स्वयं धारित प्रतिज्ञा का पालन किया है। कारण कि जो पत्र तुमने मुझे लिखा है वह अपने लिये नहीं लिखा है। मैंने अम्तुल सलाम को दिल्ली जाने के लिये पहिले ही कह दिया है और मुझे आशा है कि वह आश्रम से तत्काल चल देगी और उस समय तक दिल्ली ठहरी रहेंगी जब तक कि तुम उसको पूर्णतः नीरोग करके छुट्टी न दो। तब ही वह आश्रम को लौटेगी। आश्रम आने से पूर्व अपने वहां के वर्तमान कर्तव्यों को पूर्ण करने की जो तुम्हारी इच्छा है उसका मैं आदर करता हूँ। वह सराहनीय ही है।

श्रीयुत एच० एल० शर्मा,
सन-रे हास्पिटल,
करोलबाग़-दिल्ली।

तुम्हारा शुभचिन्तक,
मो० क० गांधी

मेरे दिल्ली वापस लौटने तक अम्तुल सलाम आश्रम से वहाँ पहुँच गई थी उससे जब मुझे यह मालूम हुआ कि आश्रम के अनेक रोगियों की उचित प्राकृतिक चिकित्सा के लिये गाँधी जी चिन्तित रहते हैं और इसी कारण उन्होंने मुझे साबरमती जाकर कुछ अर्सा आश्रम में ठहरने को लिखा था तो मैंने गांधी जी को पत्र लिखा और अपने यहाँ की वर्तमान कठिनाइयों को दूर करके शीघ्र ही कुछ समय के लिये आश्रम पहुँचने का अपना इरादा ज़ाहिर किया तो सचमुच ही गांधी जी ने इस विषय पर मुझे यह पत्र लिखा।

—सत्तरह

8

Dear Dr. Sharma,

I was glad to have your letter. Amtul Salam being with you puts me at ease. She has such great faith in your ability to cure her. I do hope that she will be thoroughly restored to health. I hope that your troubles will be soon over. I am glad you are preparing yourself for the Ashram-life. It will please me greatly, if you could go to the Ashram.

12-2-33 Yours,
Y. M. Bapu

८

प्रिय डा० शर्मा,

तुम्हारा पत्र पाकर बहुत प्रसन्नता हुई। अम्तुल सलाम के तुम्हारे साथ रहने में मुझे बड़ी तसल्ली रहती है उसे अच्छा कर देने की तुम्हारी योग्यता में उनको बड़ा विश्वास है। मुझे तो आशा है कि वह पूर्ण रूप से स्वस्थ हो जायेगी। मैं आशा करता हूँ कि तुम्हारी कठिनानाइयाँ शीघ्र ही समाप्त हो जायेंगी। मुझे प्रसन्नता है कि तुम आश्रम के जीवन के लिये अपने को तैयार कर रहे हो। यदि तुम आश्रम में जा सको तो मैं बड़ा ही प्रसन्न हूँ।

१२-२-३३ तुम्हारा,
यरवदा मन्दिर। बापू

मैंने थोड़े समय के लिये आश्रम जाना तय कर लिया और गांधी जी से वहाँ के लिए अपना कर्त्तव्य पूछा। इस पर उन्होंने तुरन्त उत्तर दिया :

Dr Dr Sharma,

I was glad to have your letter. Amtulsalam being with you puts me at ease. She has such great faith in your ability to cure her. I do hope that she will be thoroughly restored to health.

I hope that your troubles will be soon over. I am glad you are preparing yourself for the Ashram life. It will please me greatly if you could go to the Ashram.

Yours

12/1/33 Bapu

( देखिये पन्ना—अट्ठारह )

Yeravda Central Prison,
14th. March, 1933.

Dear Dr. Sharma,

I have your letter to-day and I reply atonce before deciphering Amtul Salam's. What I would like you to do is to go over to the Ashram, see the patients who are still there and will be for some time, and see whether they can be treated there without being removed to a cooler climate. After all, it is not quite so hot in Ahmedabad as one may think, till April. The nights are perfectly cool and I have not found even the summer to be trying. I have not hesitated to take my own cure in the Ashram more than once, even though I was advised by some doctors to go to a hill-station or atleast to a sea-side place. But you shall judge for yourself, and then if you find it to be necessary I shall endeavour to select a cooler place. Your going to the Ashram will serve a double purpose. You will know the place and surroundings and you will have your first experience of it. You will also be able to deal with cases of obstinate constipation which are common enough in the Ashram. There are two patients there who are chronic Asthmatics and who do not generally go to watering places and try to keep as much as possible in the Ashram itself. You can go to the Ashram whenever

you like, and if you want to take Amtul Salam with you, you can do that also.

I am glad your daughter was cured of Small-Pox through natural treatment.

If you propose to go to the Asharm, you have simply to send a telegram or a letter telling them when you will reach there. I will send a copy of this letter to the Manager.

Dr. H. L. Sharma,
Sun-Ray Hospital,
Karolbagh-Delhi.

Yours sincerely,
M. K. Gandhi

६

यरवदा सेन्ट्रल प्रिजन,
१४ मार्च, १६३३

प्रिय डा० शर्मा,

तुम्हारा पत्र आज मिला और अम्तुल सलाम का पत्र पढ़ने से पहिले ही म तत्काल उसका उत्तर दे रहा हूँ। मेरा तुमसे कहना यह है कि तुम आश्रम चले जाओ। उन रोगियों को देखो जो अब भी वहां हैं और वहां कुछ समय तक रहेंगे और यह भी देख लो कि ठंढे जलवायु के स्थान पर जाने के वग़ैर उनकी चिकित्सा हो सकती है कि नहीं। अहमदाबाद में अप्रैल तक तो इतनी गर्मी नहीं पड़ती कि जितनी लोग समझते हैं। रातें तो काफी ठंडी रहती हैं और मुझे तो गर्मियां भी कुछ कष्टकारी नहीं प्रतीत हुईं। मैंने तो स्वयं अपना इलाज आश्रम में एक से अधिक बार कराने में झिझक नहीं की यद्यपि

मुझे कुछ डाक्टरों ने परामर्श दिया था कि मैं किसी पहाड़ी स्थान या कम से कम किसी समुद्र तट के किसी स्थान पर चला जाऊँ। परन्तु तुमको तो स्वयं ही निश्चय करना है और यदि तुम यह आवश्यक समझो तो मैं कोई ठंडी जगह ढूंढ़ने का प्रयत्न करूंगा। तुम्हारे आश्रम जाने से दो काम बनेंगे—एक तो तुम जगह और परिस्थिति से परिचित हो जाओगे और आश्रम जीवन का अनुभव ले सकोगे साथ ही साथ वहां पुराने मलावरोध के रोगियों पर अपनी चिकित्सा अज़मा सकोगे। आश्रम में तो यह रोग व्यापक सा है। दो रोगी वहां पुराने दमा से पीड़ित हैं जो प्रायः इन रोगों को दूर करने वाले जलाशयों का सेवन करने कहीं बाहर नहीं जाते और जहां तक बस चलता है आश्रम ही में रहते हैं। तुम आश्रम में जब चाहो जा सकते हो और यदि अम्तुल सलाम को भी साथ ले जाना चाहो तो ले जा सकते हो।

मुझे प्रसन्नता है कि तुम्हारी बच्ची प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा चेचक के रोग से ठीक हो गई।

यदि तुम्हारा इरादा आश्रम जाने का हो तो केवल एक तार या एक पत्र अपने वहां पहुँचने की तिथि का भेज देना ही काफ़ी होगा। मैं इस पत्र की एक प्रति लिपि मैनेजर को भेज दूंगा।

डा० एच० एल० शर्मा,<br>सन-रे हास्पिटल,<br>करोलबाग़, दिल्ली।

तुम्हारा शुभचिन्तक,<br>मो० क० गांधी

गाँधीजी का प्रत्येक पत्र अब मेरे हृदय में गुदगुदी सी पैदा करने लगा। अमेरिका जाने के चाव से कई गुना चाव मुझे गाँधी जी के आश्रम जाने का हो गया। मेरे विचारों में इतना शीघ्र परिवर्तन कैसे हुआ, मैं खुद नहीं जान पाया। मैंने नये रोगी लेने बन्द कर दिये और पुरानों से जल्दी जल्दी मुक्ति पाने लगा और अपना निर्णय शीघ्र ही गाँधी जी को लिख भेजा। उस पर उन्होंने यह और अधिक खुलासा पत्र लिखा :

Yeravda Central Prison,
3rd. April, 1933

Dear Dr. Sharma,

I have your letter and I am glad you are coming at last to the Ashram. Do please bring your child, and I shall be delighted if the place is found to be suitable both by you and him.

Naraindas warns me that the principal patients are just now out of the Asharm. I do not mind it at all. There are many things for you to examine and see from the nature-cure-standpoint, and there is the common complaint about constipation which you would be able to deal with.

I am glad you have driven out Amtul Salam's superstition that she is suffering from T. B. She has a very vivid imagination and she conjures up evil where there is none.

I want from your presence in the Ashram much more than mere treatment of a few patients. A firm believer in nature cure myself, I would like to find in you a kindred spirit given up wholly to truthful research without any mental reservations. And if I can get such a man with also a belief in the Ashram ideals, I would regard it as a great

event. I know you too are approaching the visit in that light. You will therefore please make yourself thoroughly at home at the Ashram and study it in every detail. It is my belief that a nature cure man should be able to vanquish the climate. Millions of human beings ought to be able to live healthy life by understanding the laws of adaptability to the climate in which they find themselves. They cannot have changes that rich men can afford and I cannot imagine Nature to be so cruel as to be partial to the rich and indifferent to the poor. On the contrary I believe in the Biblical saying that 'It is easier for a camel to pass through the eye of a needle than for a rich man to enter the Kingdom of Heaven,' and another Biblical verse says that 'The Kingdom of Heaven is within you'. Therefore I have always imagined that Laws of Nature are simple and understandable and capable of being followed easily by the millions.

I would ask you therefore to approach the Ashram with the set purpose of discovering the means of preserving or regaining health in the ordinary Indian climate.

Yours sincerely,
Bapu

Dr. H. L. Sharma,
Sun-Ray Hospital,
Karolbagh-Delhi.

यरवदा सेंट्रल प्रिज़न,
३ मार्च, १९३३

प्रिय डा० शर्मा,

तुम्हारा पत्र मिला और मुझे यह जानकर ख़ुशी हुई कि आख़िर तुम आश्रम में आ रहे हो। अपने बच्चे को अवश्य लाना और मुझे प्रसन्नता होगी यदि आश्रम तुम दोनों को अनुकूल सिद्ध होगा।

नारायण दास* ने मुझे सूचना दी है कि प्रमुख रोगी आश्रम से अभी अभी चले गये हैं। मुझे इसकी कुछ परवाह नहीं है। तुम्हारे लिये वहां प्राकृतिक चिकित्सा के विचार से देखने भालने और परखने के लिए बहुत सी चीज़ें हैं। मलावरोध की तो वहां एक साधारण शिक़ायत है जिस पर तुम्हें ध्यान देना होगा।

मुझे प्रसन्नता है कि तुमने अम्तुल सलाम का यह बहम निकाल दिया है कि उसको क्षय रोग है। उसकी कल्पना शक्ति बड़ी तीव्र है। वह तो कुछ न होते हुए भी कल्पित बीमारियां खड़ी कर लेती है।

आश्रम में तुम्हारी उपस्थिति से मेरा अभिप्राय केवल इन गिने-चुने रोगियों का इलाज ही नहीं, कुछ और भी है। मैं स्वयं प्राकृतिक चिकित्सा में दृढ़ विश्वास रखता हूँ। मैं समझता हूँ कि मैं तुममें मेरी तरह के अनुसंधान की अनन्य निष्ठा रखने वाला एक साथी पाऊँगा। और यदि मुझे ऐसा आदमी आश्रम के उद्देश्यों में भी विश्वास रखने वाला मिल जाये तो मैं बड़ी बात समझूँगा। मैं जानता हूँ कि तुम भी इसी विचार से आश्रम आ रहे हो। अतएव आश्रम में पूर्ण रूप से आराम और घर की तरह शाँति से रहो और उसका बारीकी से निरीक्षण करो। मेरा तो विश्वास है कि प्राकृतिक चिकित्सा जानने वाला जलवायु पर अविलम्बित नहीं होगा। लाखों आदमी अपने को निरोग रख सकते हैं अगर हर तरह के जलवायु को अपने अनुकूल बनाने का

---

*साबरमती आश्रम के मैनेजर

रहस्य वह समझलें। उनको स्थान परिवर्तन के वह साधन तो प्राप्त नहीं हो सकते जो धनिकों को प्राप्त होते हैं। और मेरी समझ में नहीं आता कि प्रकृति इतनी निर्दयी हो सकती है कि धनिकों का पक्ष ले और निर्धनों की उपेक्षा करे। इसके विपरीत मुझे तो बाइबिल की इस कहावत में विश्वास है कि 'एक ऊँट सुई के नकुए में से निकल सकता है परन्तु धनवान के लिये स्वर्ग में प्रवेश नहीं मिल सकता,' बाइबिल का एक और वाक्य है कि 'स्वर्ग हमारे अन्दर ही है।' इसलिये मेरा तो सदैव यही विचार रहा है कि प्रकृति के नियम सरल सीधे-साधे और सर्व साधारण के अनुसरण करने योग्य होते हैं।

अतएव मैं तुमसे कहूँगा कि तुम साधारण भारतीय जलवायु में स्वास्थ बनाये रखने और खोये हुए स्वास्थ को पुनः प्राप्त करने के साधनों की खोज करने के निश्चित उद्देश्य से आश्रम में आओ।

डा० एच० एल० शर्मा,
सन-रे हास्पिटल,
करोलबाग़, दिल्ली।

तुम्हारा शुभचिन्तक,
बापू

उपरोक्त पत्र के बाद आमश्र को मैंने अपने आने की तिथि लिख भेजी और गाँधी जी को जो उत्तर दिया वह यहाँ पाठकों के लिये भी देना अयुक्त प्रतीत नहीं होगा।

11

Karolbagh,
Delhi.
April, 7. 1933

My dear Gandhi ji,

I thank you very much for your kind and inspiring letter of the 3rd. instt. I wonder how I would

be able to carry out the long instructive programme chalked out for me during my short stay in the Ashram. However, I will see how far I succeed in the work.

I too believe that a man should be able to *preserve* his health in any kind of climate by following the simple directions of Nature. But for one, who has lost his health or has got a diseased body by neglecting Her laws, I hesitate to believe that it is always possible for him to *regain* his lost health easily without paying a heavy penalty for his negligence in any form.

Nature is a good and true friend when consulted with due respects, but a severe disciplinarian when neglected. I do not think Nature to be ever treacherous and those who heed Her warnings and follow Her directions, gain Her bounteous blessings as long as they live. All that man is required to do is to understand Her and to co-operate with Her, if he want to be healthy; for She provides generously all the remedies from Her own grand laboratory already specialized to perfection and supplied with stores that know no end.

I have decided to leave for the Asharm on the 11th. April, for a month at present. I want to take my six—year old son with me to the Ashram but

there is a dispute between him and his sister of four years. Both of them want to live together. So if they could not come to a compromise till the evening of the 10th., I will have either to leave the boy here or to take his sister too along with me.

Bibi Amtul Salam has left for Patiala on 31st. Ultimo. I shall be glad if she also likes to leave for the Asharm on the same day.

Yours sincerely,
H. L. Sharma

११

करोलबाग़, दिल्ली।
७ अप्रैल, १९३२.

मम प्रिय गांधी जी,

आपका तीन तारीख़ का उत्प्रम कृपा पत्र मिला। बहुत धन्यवाद। मेरे आश्रम निवास के इतने थोड़े समय में जो शिक्षाप्रद कार्यक्रम आपने मेरे लिये निर्धारित किया है समझ में नहीं आता कि उसमें मैं कैसे उत्तीर्ण हो सकूंगा, फिर भी यथा शक्ति सफल होने का प्रयत्न तो करूंगा ही।

मेरा भी यही विश्वास है कि मनुष्य कैसी भी जलवायु में क्यों न हो अपना स्वास्थ बनाये रख सकता है यदि वह केवल प्रकृति के साधारण नियमों का पालन करता रहे। किन्तु ऐसे व्यक्ति के लिये जिसने उसके नियमों का उलंघन करके अपना स्वास्थ खो दिया है या शरीर को रुग्ण बना लिया है तो फिर उसके लिये मुझे जल्दी विश्वास नहीं होता कि अपनी अवहेलना के लिये किसी भी तरह भारी दन्ड

चुकाये वह आसानी से अपना खोया हुआ स्वास्थ फिर सदा ही प्राप्त कर सके।

प्रकृति तो धनी अथवा निर्धन सबही के लिये निश्पक्ष है। यदि आदर पूर्वक उससे परामर्श लिया जाय तो वह एक सच्चा उपकारी मित्र सिद्ध होगी, किन्तु यदि उसकी अवहेलना की जाय तो एक दुसाध्य अनुशासक से भी वह कम नहीं। मैं नहीं समझता कि प्रकृति कभी धोखा दे सकती है। जो लोग उसकी चेतावनियों पर ध्यान देते हैं और उसके आदेशों पर चलते हैं वही उसके असीम वरदानों से अपने जीवन पर्यन्त लाभ उठाते हैं। मनुष्य को तो केवल प्रकृति को समझना और उससे सहयोग करना ही है। क्योंकि प्रकृति तो बड़ी उदारता पूर्वक अपने विशाल तथा परिपूर्ण कार्यालय से प्रत्येक प्रकार के उपचार स्वयं ही देती है और वह भी इतने प्रचुर रूप में कि जिसकी कोई सीमा नहीं।

अभी तो मैंने एक महीने के लिये ११ अप्रैल को आश्रम जाने का निश्चय किया है। मैं अपने छः वर्षीय बच्चे को अपने साथ आश्रम ले जाना चाहता हूँ किन्तु उसके और उसकी चार वर्षीय बहिन के बीच एक विवाद सा खड़ा हो गया है। दोनों ही साथ रहना चाहते हैं। इसलिए यदि दोनों के बीच १० अप्रैल की सायंकाल तक कोई समझौता न हो सका तो या तो लड़के को यहाँ छोड़ना होगा और या फिर उसकी बहिन को भी अपने साथ लाऊँगा।

बीबी अम्तुल सलाम गत मास की ३१ ता० को पटियाला चली गई हैं। अच्छा हो यदि उसी दिन वह भी आश्रम आना पसंद करलें।

भवदीय,

एच० एल० शर्मा

१४ अप्रैल को मेरे आश्रम में पहुँचते ही मैनेजर ने तुरन्त गाँधी जी का यह पत्र मुझे दिया। गाँधी जी का यह महान शिष्टाचार देखकर मुझे आश्चर्य हुआ और ऐसा लगा मानों वहाँ मुझे वह स्वयं मिल गये :

—अट्ठाइस

## 12

Yeravda Central Prison,
13th. April, 1933

Dear Dr. Sharma,

I have your letter. I am glad that you would be in the Ashram soon, if you are not already there by the time this reaches the Asharm. I hope you have brought with you your four—year old daughter also and I hope that the little boy stuck up for his sister. I would call him very unchivalrous if he did not insist upon her being with him. You will please make your-self at home in the Ashram and express to Naraindas freely all your requirements.

Dr. H. L. Sharma,
C/O the Ashram,
Sabarmati.

Yours sincerely,
Bapu

## १२

यरवदा सेन्ट्रल प्रिज़न,
१३ अप्रैल, १९३३

प्रिय डा० शर्मा,

तुम्हारा पत्र मिला। मुझे प्रसन्नता है कि तुम आश्रम में जल्दी ही पहुँच जाओगे यदि अभी तक इस पत्र के आश्रम पहुँचने के समय तक नहीं पहुँचे हो। मुझे आशा है कि तुम अपने साथ चार वर्षीय बच्ची को

ले आये होंगे और यह भी आशा है कि बच्चे ने अपनी बहिन के लिये ज़िद पकड़ ली होगी। यदि उसने बहिन को अपने साथ लेने में ज़िद न की तो मैं उसे उसकी भीरुता ही समझूँगा। आश्रम में तुम अपने घर की तरह चैन से रहना और आवश्यकताओं को नारायण-दास से निःसंकोच बताते रहना।

डा० एच० एल० शर्मा, तुम्हारा शुभचिन्तक,
मार्फत आश्रम, बापू
साबरमती।

वास्तव में एक प्राकृतिक चिकित्सक के लिये आश्रम के नियम कोई कठिन या बिलकुल नये नियम नहीं कहे जा सकते थे। मैं तो तुरन्त ही वहाँ ऐसा हिल-मिल गया मानों मैं वहीं उन्हीं में का एक था। अम्तुल सलाम भी पटियाला से वहां आ गई। उसके स्वास्थ को देखकर आश्रम में सबको हर्ष हुआ। गांधी जी को जब यह सब लिखा तो उनका यह पत्र आया :

13

Yeravda Central Prison,
Poona.

Dear Dr. Sharma,

I like your letter very much. It does you great credit. You have pictured to me the ideal physician. Yes, by all means wash Amtul Salam's clothes, if necessary. Though in the Ashram, she is solely under your care. Do please insist on taking proper rest and the prescribed diet.

I would like you critically to examine every thing in the Asharm and give me your expressions. Study the health of every inmate who will let you examine him or her. Ofcourse you will frankly tell me of cases that may be beyond your skill. I would

Dear Dr Sharma,

I like your letter very much. It does you great credit.

You have pictured to me the ideal physician. Yes, by all means wear antiseptic clothes if necessary. Though in the Ashram, she is solely under your care. So please insist on taking proper rest and the prescribed diet.

I would like you critically to examine every thing in the Ashram and give me your impressions. Study the health of every inmate who will let you examine him or her. Of course you will freely

please tell me what you
would have me do. Lastly
there is Anandi who has
just had an operation for
appendicitis. She is having
my treatment only as the
others do more or less. These
are the special cases I
would like you see as soon
as you can and tell me all
about them. There are others
too, who require attention.

Now about yourself. While
I would like you to throw
yourself into the Ashram
routine, you mustn't go
beyond your strength &
will. Take every thing easy.

[illegible] your special needs
are supplied. I would feel deeply
hurt if for want of care
your own health was
endangered. You will
make me feel at ease if
you will treat the Ashram
as your home and express
your needs.

I would like you to accompany
Bhagwanji me & see many of
quarters and examine the
ailing ones there and their
sanitation.

I wish your children
had both accompanied you.
But that now later, if
all goes well.

Yours
Bapu

[illegible]

( देखिये पत्र—तीस )

like you to examine Kusum behn. She is to-day under Dr. Talwarkar's treatment. But I would like you to tell what you would have her to do, if she puts herself under you. Then there is Jumna behn. She is a chronic Asthmatic. She can be treated by you now if she will put herself under your care. Then there is Rama behn. She has an enlarged shoulder bone. I do not yet visualise her trouble. Possibly her case is beyond your province. If it is not please tell me what you would have her do. Lastly there is Anandi who has just had an operation for appendicitis. She is having my treatment only, as the others do more or less. These are the special cases I would like you see as soon as you can and tell me all about them. There are others too, who require attention.

Now about your self. While I would like you to throw yourself into the Ashram routine, you must not go beyond your strength and will take every thing easy. Have your special needs supplied. I would feel deeply hurt, if for want of care your own health was endangered. You will make me feel at ease, if you will treat the Ashram as your home and express your needs.

I would like you to accompany Bhagwanji bhai and see Harijan quarters and examine the ailing ones there and their sanitation.

I wish your children had both accompanied you. But that now later, if all goes well.

19. 4. 1933

Yours,
Bapu

१३

यरवदा सेन्ट्रल प्रिज़न,
पूना।

प्रिय डा० शर्मा,

तुम्हारा पत्र मुझे बहुत पसंद आया। यह तुम्हें शोभा देता है। तुमने मेरे सामने एक आदर्श चिकित्सक का चित्रण ही कर दिखाया है हाँ, यदि आवश्यक समझो तो बेशक उसके कपड़े तुम स्वयं साफ़ करो। यद्यपि आश्रम में वह पूरी तरह से तुम्हारी देखरेख में है उसे नियमित खुराक तथा आराम लेने के लिये काफ़ी ज़ोर दिया जाय। मैं चाहता हूँ कि तुम आश्रम की हर चीज़ को सूक्ष्म निरीक्षण की दृष्टि से देखो और तत्सम्बन्धी अपने विचारों से मुझे सूचित करते रहो। प्रत्येक आश्रम निवासी जो तुम्हें निरीक्षण करने दे उन सबके स्वास्थ का तुम अवलोकन करते रहना। हाँ, यह आवश्यक है कि जिन रोगियों का रोग तुम्हारी समझ से बाहर हो, उसके विषय में मुझे स्पष्ट कह देना होगा। मैं चाहता हूँ कि तुम कुसुम बहन को भी देखो। आज तो वह डा० तलवलकर के इलाज में हैं किन्तु मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे बता दो कि यदि वह तुम्हारे हाथ में सौंप दी जाय तो तुम उसके लिये क्या उपचार नियत करोगे। और जमुना* बहिन भी तो है वह पुराने दमा की रोगिणी है। यदि वह तुम्हारे देख-रेख में आना पसंद करे तो तुम्हारे द्वारा उसका इलाज हो सकता है। एक रमा बहिन है उसके कन्धे की हड्डी बढ़ी हुई है। मैं अभी तक उसके रोग को

*श्री नारायन दास गांधी जी की धर्मपत्नी।

अच्छी तरह नहीं समझ पाया। कदाचित इनका रोग तुम्हारे पात्र से बाहर है। यदि नहीं, तो कृपया बताओ कि तुम उनके लिये क्या उपचार निश्चित करोगे। अन्त में आनन्दी भी है उसका अभी 'एपेन्डिसाइटिस' का आपरेशन हुआ है। केवल मेरा ही इलाज चल रहा है जैसा कि और लोग भी थोड़ा बहुत करते रहते हैं। यह मुख्य मुख्य रोगी जिनको मैं चाहता हूँ कि जितनी जल्दी हो सके तुम इन्हें देख लो और उनके विषय में सब कुछ बता दो। रोगी और भी हैं जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

अब कुछ तुम्हारे विषय में कहना है। जहाँ एक ओर मैं चाहता हूँ कि तुम आश्रम की दिनचर्या में रम जाओ वहाँ दूसरी ओर यह भी कहना है कि तुमको अपनी शक्ति के बाहर नहीं जाना है। हर काम को आराम के साथ करते रहना है। अपनी विशेष आवश्यकतायें पूरी करा लेना। यदि असावधानी के कारण तुम्हारा अपना ही स्वास्थ्य संकट में पड़ गया तो मुझे बड़ा दुःख होगा। मुझे बड़ी सान्त्वना रहेगी यदि तुम आश्रम को अपना घर जैसा समझोगे और अपनी आवश्यकताओं को बताते रहोगे। मैं चाहता हूँ कि तुम भगवान जी भाई के साथ हरिजन बस्ती देखने जाओ और रोगियों तथा वहां की सफाई की परिस्थितियों को देखो। अच्छा होता, यदि तुम्हारे दोनों बच्चे तुम्हारे साथ आये होते। कोई बात नहीं। यदि सब ठीक-ठीक रहता है तो पीछे देखा जायेगा।

१६-४-३३

तुम्हारा,
बापू

उपरोक्त पत्र से गाँधी जी को अपने आश्रम में होने वाली प्रत्येक बात की पूर्ण जानकारी हासिल करने की उनकी तीव्र इच्छा तथा वहाँ के हरएक रोगी के प्रति पूरी-पूरी सावधानी बरतने वाले उनके पिता तुल्य स्वभाव को देखकर मैंने भी आश्रम के हर पहलू का अपनी स्थिति और बुद्धि के अनुसार बड़े ध्यान से अध्ययन

किया। और समय-समय पर प्रत्येक रोगी से मिलकर उसके रोग का निदान तथा चिकित्सा विधि आदि सब गांधी जी को भेजने के लिए नोट करता रहा।

उन दिनों मिस्टर ग्रीनलिस डनकन (Greenlis Duncan) एम० ए० नाम का एक अंग्रेज़ भी आश्रम में रहता था। भगवान जी भाई तथा इस अंग्रेज़ के साथ मैं भी हरिजन बस्ती में जाता था। यह बस्ती आश्रम के समीप ही कुछ दूरी पर थी। एक दिन मैंने अपने दोनों साथियों को अपना यह विचार प्रगट किया कि यदि हरिजन बस्ती के कुछ बालक आश्रम में रख लिये जायँ तो उनकी गन्दी आदतें आसानी से दूर हो सकती हैं। यह अंग्रेज़ गाँधी जी को प्रतिदिन की रिपोर्ट भेजता मालूम होता था। मेरा उपरोक्त विचार भी उसके द्वारा वहां पहुँचा। कुछ दिन बाद इसी अँग्रेज़ ने अपने एक पत्र की नक़ल और गांधी जी का उत्तर मुझे पढ़ने को दिया। इस विषय में गांधी जी के विचार पाठकों के सामने रखने के लिये यह आवश्यक अंश उन्हीं पत्रों की प्रतिलिपी में से दिया है:

(From the letter of Gandhiji-addressed to Mr. Greenlis Duncan, M. A., dated 28th April, 1933)

"..................I am glad you visited the Harijan quarters with Bhagwanji. I have seen many. No description, therefore, staggers me. I know how Herculean the task is before me but there I have an excuse because I am one of the many tools in the hands of God. My concern is, therefore, to keep myself a fit instrument to be found ready to do His command at a moment's call.

Dr. Sharma's idea always has been mine and that is why I took charge of Luxmi* so many years

*Luxmi was a Harijan girl. She was brought up by Gandhiji. After giving her proper education she was married to a Brahmin.

ago, almost inside of an year of my arrival here, and I have been teaching as many Harijans as I could lay my hands on. Several have been already fixed up in life but that too is a big job. It is so difficult to keep them even though they are given to you by their parents. I am not surprised at all by these outward results in several cases, and as you very properly say it is all due to sin of the caste Hindus..............I am glad you are there during Dr. Sharma's visit. I would like you to know him and his message. If it is substantial it would be great thing for serving public institutions. I am a fanatical believer in Nature's methods and I never missed an opportunity of having a training. Whatever I know has been picked up from books. I was never able to read from page to page but I made copious experiments on myself and my companions, and have very much benefited from these methods. I have been always anxious to secure some one who would share my idea and develop the method in the interest of the poor. Dr. Sharma is reported to be the man and so he is at the Ashram. I would, therefore, like you to study the method in so far as he would let you do so".

**( From the letter of Mr. Greenlis Duncan-addressed to Gandhiji on 3rd. May, 1933, in reply to his above letter )**

"......................Dr. Sharma also is staying in

Hirdaya Kunj.* If he can live here until the end of May, I shall be able to learn much of his ideas that should be of use. I have begun to pick up some hints already, for anyone in-charge of an institution should himself be able to understand and deal with all usual points of health. I go with him on alternate days to the Harijan village here.

He seems to me an admirable, frank and sincere man. Had such a one been permanently here, some of the educational and nearly all the health evils would have been averted. He has a keen mental gaze, and seems to learn in a week what takes us three months to see.....................Without physical health no one can do anything quite truly".

( गांधी जी के उस पत्र से उद्धृत जो उन्होंने २८ अप्रैल को मिस्टर ग्रीनलिस डंकन† को लिखा : )

"...... प्रसन्न हूँ कि तुमने भगवान जी के साथ हरिजन बस्ती को देखा। मैंने बहुत सी बस्तियाँ देखीं हैं इसलिए कोई भी वर्णन कैसा ही क्यों न हो मुझे विचलित नहीं करता। मैं जानता हूँ कि मेरे सामने कितना बड़ा पहाड़ खड़ा है। परन्तु इससे क्या क्योंकि आखिर मैं तो ईश्वर के अनेक साधनों में से एक हूं। मुझे

*Name of the house where Gandhiji lived in the Sabarmati Ashram.

†श्री ग्रीनलिस डंकन, एम० ए०, एक अँगरेज़ थे और साबरमती आश्रम में रहते थे। उन्होंने आश्रम पर एक छोटी सी पुस्तक भी लिखी थी।

तो सिर्फ इतना ही है कि मैं अपने में ऐसी योग्यता पैदा कर सकू कि समय आने पर क्षण भर में उसका काम करने का साधन बनने की मेरी पूरी तैयारी हो। जो डा० शर्मा का विचार है वही मेरा भी रहा है। और यही कारण है कि यहाँ आने के लगभग १ वर्ष के भीतर ही मैंने कई वर्ष हुए लक्ष्मी* का भार अपने ऊपर ले लिया था। और जितने भी हरिजन मुझे मिल सकते हैं उनको शिक्षा देता रहा हूं उनमें से कुछ तो पहिले ही काम से भी लग चुके हैं। परन्तु यह भी एक बड़ा कार्य है। उनके माता पिता तुम्हें उनको सौंप भी दें तो भी उनको रख सकना कठिन काम है। अनेक बार विपरीत परिणाम आये इसपर मुझे कुछ भी आश्चर्य नहीं होता। तुम्हारा कथन सही है कि यह तो सवर्ण हिन्दुओं के पापों का ही फल है......

मुझे प्रसन्नता है कि तुम डा० शर्मा की मौजूदगी में वहाँ हो। मेरी इच्छा है कि तुम उन्हें और उनके संदेश को समझ लो। यदि उनका संदेश तथ्यपूर्ण है तो वह सार्वजनिक संस्थाओं के लिये बड़े काम का होगा। मैं तो प्राकृतिक चिकित्सा विधि में अंधविश्वासी सा हूँ और मैंने इसको सीखने का कोई अवसर कभी नहीं खोया है। जो कुछ थोड़ा बहुत मेरा ज्ञान है वह सब पुस्तकों द्वारा ही लिया गया है वह भी मुझे पृष्ठ दर पृष्ठ पढ़ने का कभी अवसर नहीं मिल पाया। किन्तु मैंने स्वयं अपने ऊपर तथा अपने साथियों पर बहुत से प्रयोग किये हैं और उनसे बहुत लाभ उठाया है। मैं अपने जैसे विचार रखने वाले व्यक्ति को पाने का सदैव इच्छुक रहा हूं जो दीन दुखियों के हितार्थ इस चिकित्सा-विधि को उन्नति दे सके। डा० शर्मा को ऐसा व्यक्ति बताते हैं और इसीलिए वह आश्रम में आये हैं। अतः

---

*लक्ष्मी एक हरिजन की लड़की थी जिसका पालन पोषण गांधी जी ने स्वयं अपनी पुत्री के समान किया था। और उसे उचित शिक्षा दिलाकर एक ब्राह्मण नवयुवक के साथ उसका विवाह कर दिया था।

मेरा अनुरोध है कि तुम इस विधि को जितना वह तुमको बता सकें अध्ययन करो।"

(मिस्टर ग्रीनलिस डनकन के उस पत्र से उद्धृत जो उन्होंने उपरोक्त पत्र के उत्तर में गांधी जी को ३ मई १६३३ को लिखा)

"......डा० शर्मा भी "हृदय कुंज"* में ठहरे हुए हैं। यदि वह यहाँ मई के अन्त तक रह सके तो मुझे उनके बहुत से विचार ज्ञात करने का अवसर प्राप्त होगा और यह लाभदायक सिद्ध होंगे। उनके कुछ भाव तो मैं ग्रहण करने लगा हूं क्योंकि किसी संस्था के अध्यक्ष को स्वास्थ्य सम्बन्धी बातें स्वयं समझने तथा सुलझाने की योग्यता रखनी ही चाहिये। मैं यहाँ हरिजन गाँव में उनके साथ हर दूसरे दिन जाया करता हूं।

वह मुझे बड़े सीधे, सच्चे और स्वच्छ हृदय व्यक्ति मालूम देते हैं। यदि ऐसे व्यक्ति यहां सदैव के लिये रहते होते तो शिक्षा सम्बन्धी कुछ, और स्वास्थ सम्बन्धी लगभग सभी बुराइयां दूर हो जातीं। उनकी मानसिक दृष्टि बड़ी तीव्र है और जितना तीन महीने में देखकर सीखा जा सकता है वह केवल एक सप्ताह में ग्रहण कर लेते हैं।......बिना शारीरिक स्वास्थ के कोई भी व्यक्ति कोई काम वास्तविक रूप से नहीं कर सकता।"

मुझे आश्रम में आए लगभग अब एक पखवारा हो चुका था गांधी जी के पिछले पत्र में लिखे हुये सब रोगियों को तथा उनके अतिरिक्त कुछ दूसरों को भी देख चुका था और कुछ की चिकित्सा भी प्रारम्भ हो चुकी थी। अतः गांधी जी के आदेशानुसार मुझे अपने विचार उनको भेजने ही थे। उनके स्वभाव को जानते हुये मैने प्रत्येक रोगी का निदान, मनोवृत्ति तथा उसी के अनुसार चिकित्सा-विधि इत्यादि सब विस्तार से अपनी निजी रिपोर्ट के साथ भेज दी। प्राकृतिक चिकित्सा में गांधी जी की तो निरसन्देह अपूर्व श्रद्धा थी ही लेकिन गांधी-परिवार के अन्य सदस्यों की इस ओर कुछ अश्रद्धा देखकर मुझे थोड़ा आश्चर्य हुआ था

*साबरमती-आश्रम में गांधी जी के रहने का मकान 'हृदय कुंज' कहलाता था।

वह मैंने गांधी जी को लिख दिया था। दूसरे गांधी जी ने दाण्डी यात्रा के अवसर पर १९३० में यह प्रतिज्ञा ली थी कि स्वराज्य न मिलने तक वह आश्रम में वापिस नहीं आयेंगे। किसी भी बड़ी संस्था के संरक्षक की इतनी लम्बी अनुपस्थिति के कारण वहाँ कुछ अनियमितताओं का हो जाना आश्चर्य की बात नहीं है। साबरमती आश्रम में भी इसी प्रकार की कुछ गड़बड़ी मेरे देखने में आई। उनमें ( Sex ) स्त्री-पुरुष सम्बन्धी वहाँ का वातावरण विशेष विचारणीय था। अपने उपरोक्त दिये कारण का खयाल रखते हुये मैंने अपनी रिपोर्ट इस सम्बन्ध में सीमित ही रक्खी फिर भी वह संकेत के लिये पर्याप्त थी। साथ ही मैंने दिल्ली वापिस जाने की उनसे इजाज़त भी मांगी। गांधी जी से मेरा पत्र-व्यवहार अब तक अंग्रेज़ी में चलता था इस बार मैंने स्वतः उनको सब कुछ हिन्दी में ही लिखकर भेजा और तभी से हमारा पत्र व्यवहार हिन्दी में होने लगा जो अन्त तक क़ायम रहा। गांधी जी का यह हिन्दी का पहिला पत्र उसी के उत्तर में है। गांधी परिवार की प्राकृतिक-चिकित्सा के प्रति अश्रद्धा के विषय में मेरे संकेत पर गांधी जी ने जिस अहिंसात्मक ढंग से मुझे लताड़ लगाई है वह पाठकों के देखने योग्य है।

१४

यरवदा सेंट्रल प्रिज़न,
पूना।

भाई हीरालाल शर्मा,

तुम्हारा हिन्दी पत्र पाकर मुझको बहुत ही आनन्द हुआ। हिन्दी में यह पहिला पत्र और ऐसे स्वच्छ अक्षर आश्चर्यजनक बात है। हिन्दी भी अच्छी ही है। यह कैसे ? मैंने पत्र और prescriptions सब ध्यान से पढ़ लिये हैं।

प्राकृतिक चिकित्सा से गांधी कुटुम्ब अनभिज्ञ नहीं है। यह तो विनय की भाषा हुई। उनका विश्वास कम है लेकिन यह भी सबके लिये नहीं कहा जा सकता है। वे और दूसरे भी बेचारे क्या करें ? जो

कुछ प्राकृतिक चिकित्सा का ज्ञान और प्रेम हो सकता था वह मेरी ही वजह से। लेकिन मेरा ज्ञान इतना अधूरा कि जिससे जल्द रोगों में निकम्मा बन जाता हूँ। कभी व्यवस्थित तौर पर इस शास्त्र का अभ्यास करने का मुझको समय ही नहीं मिला। मेरे शौख़ की यह वस्तु होने के कारण थोड़ा बहुत मैं जान सका हूँ। मेरे अधूरापन के कारण हमेशा प्राकृतिक चिकित्सा विशारद को मैं ढूंढ़ रहा हूँ। ऐसे उपचारक एक भक्त और बड़ा सज्जन हनमन्त राय था। अपने उपचारों का बलि होकर वह मर गया। उसका ज्ञान कम था। उसकी श्रद्धा अपूर्व थी। पीछे आया था गोपालराव। वह एक अस्पताल रखकर राजमन्द्री में बैठ गया है। उसी पर विश्वास करके मैंने एक मूर्ख प्रयोग किया। उसका वर्णन मैंने अख़बार में भी दिया था। गोपालराव के परिचय से मुझको निराशा पैदा हुई। गोपालराव श्रद्धालु हैं लेकिन उसका ज्ञान बहुत ही अधूरा है और दुख यह है कि अपने अधूरापन का उसको पूरा ख़्याल नहीं है। अब तुम मिल गये हो। मैं तो चाहता हूँ कि मुझे मत छोड़ो। आश्रम में और भी रहो नम्रतापूर्वक अपने ज्ञान की मर्यादा को पहचान लो। आश्रम के लोगों का विश्वास संपादन करो और पीछे ऐसे उपचार के लिये जगत को निमन्त्रण भेजो। अगर आश्रम से शीघ्र लौट जाने की आवश्यकता नहीं है तो कम से कम थोड़े दर्दिओं को तो अच्छे करके जाओ। अगर आश्रम तुमको अच्छा लगे और नारायणदास जी को तुम अच्छे लगो तो आश्रम में अवश्य रह जाओ। प्राकृतिक चिकित्सा का तुम्हारा ज्ञान पूरा हो अथवा अपूर्ण हो उसकी मुझे दरकार नहीं है। मुझे दरकार है सत्य की, जहां तक हम जा सकें वहीं तक जाकर संतुष्ट रहें तो कोई हानि नहीं हो सकती। अगर पत्नी भी आश्रम के नियमों का पालन करने को तैयार है तो कोई कारण नहीं है वह भी आश्रम में आकर क्यों नहीं रहे। तुम्हारी धर्मपत्नी को मैं ख़त लिखता हूँ। इसी के साथ रखूँगा।

भगवान जी के साथ हरिजनों के पास गया सो अच्छा हुआ। यदि

सम्भव है तो आश्रम छोड़ने के पहिले ही और जितना जल्दी हो सके इतना जल्दी मेरे पास आ जाओ। तब हरिजनों में आरोग्य के बारे में क्या करना चाहिये उस बारे में हम कुछ वार्तालाप कर लें। इतवार छोड़कर जब दिल चाहे तब आ सकते हो। दोपहर को मिलने का हो सकता है।

आश्रम में खुराक के बारे में तुम्हारी सूचना की प्रतीक्षा करूँगा। आरोग्य की दृष्टि से आश्रम की खुराक को मैं सम्पूर्ण बनाना चाहता हूँ। हरिजन बालकों को आश्रम में रखने का इरादा तो हमेशा रहा ही है लेकिन ऐसे बालक बहुत नहीं मिल सकते हैं। आश्रम में जो लोग अपना रोग छिपाते हैं उनको सलाह दे दो कि वे उसे प्रगट कर दें और जो अपने विकारों को शांत नहीं कर सकते हैं वे भाग जांय।

कुसुम के बारे में मैं सोच रहा हूँ क्या किया जाय। रमा बहन के बारे में तो अगर उनके रोग का निदान के बारे में और चिकित्सा के बारे में तुम को कुछ भी शंका नहीं है तो वही उपचार किये जांय जो तुम्हें पसंद हो। इसी तरह जमना बहन के लिये। आमीना से अगर भात और दूसरे स्टार्च के पदार्थ और तम्बाकू छोड़वा दोगे तो बहुत अच्छा होगा। प्रातःकाल दांतों पर तमाकू घिसती है। बम्बई के अख-बारों में जो तुम्हारे आने का उल्लेख था उस बारे में जो तुमने किया वह अच्छा ही हुआ और योग्य हुआ।

२-५-३३

बापू के
आशीर्वाद

"गांधी जी यरवदा जेल में उपवास करने वाले हैं" यह दुःखद समाचार तो हमको आश्रम में मैनेजर द्वारा मिल चुके थे लेकिन कब और कितने दिन का उपवास होगा यह उस वक्त तक कोई नहीं जानता था। उधर गांधी जी के उपरोक्त पत्र में भी यही संकेत था कि "जितना जल्दी होसके इतना जल्दी मेरे पास आ जाओ"। इसलिये तुरन्त ही यरवदा जेल में उनसे मिलने के लिये मैं

विवश हो गया। यरवदा जेल की मुलाक़ात ने मुझ पर बड़ी गहरी छाप डाली। मेरे जीवन में भारी उथल-पुथल का बीजारोपण वहीं से हुआ। वहाँ से ही "गांधी जी" मेरे लिए "बापू" हुये। और बापू की छाया में मेरे जीवन की यात्रा का भी श्रीगणेश वास्तव में वहीं से हुआ।

मई की चौथी तारीख़ थी और जेल के द्वारपाल ने दोपहर का एक बजाया था। यरवदा जेल के फाटक पर भारी भीड़ लगी थी। सब के चेहरों पर बेचैनी व घबराहट के चिन्ह देख पड़ते थे। "आठ मई से बापू २१ दिन का उपवास करने वाले हैं" यह समाचार अब चारों ओर फैल गया था। मैं उस जन समूह में केवल सरोजनी देवी तथा देवदास भाई को ही पहिचानता था। सरोजनी देवी जेल के फाटक से बार-बार अन्दर और बाहर जाती आती थीं। जो भी मुलाक़ाती गांधी जी से मुलाक़ात को वहाँ पहुँचता था उससे वह मुलाक़ात का विषय पूछती थीं और बापू का कम से कम समय लेने का आदेश देतीं थीं। मेरी मुलाक़ात का तो कोई विषय ही नहीं था बताता भी क्या? बापू को मेरे आने की इत्तला मिली और सरोजनी देवी तुरन्त जेल के फाटक में मुझे ले गईं। अन्दर कुछ ही क़दम चलने के बाद हम एक बरामदे में पहुँचे जहाँ सामने ही एक छोटे से साफ़ सुथरे कमरे में ज़मींन पर एक गद्दा बिछाये बापू बैठे हुये दो तीन व्यक्तियों से बातें करके चुके थे। उनके चेहरे पर इतना तेज था कि मैं एक टक उनकी ओर देख न सका। मैंने प्रणाम किया और बापू ने अपनी स्वाभाविक हंसी हंसकर मुझे अपने पास बिठा लिया। उनका मुझसे पहिला प्रश्न मेरे भोजन का हुआ। सफ़र के कारण सचमुच खाना मैंने उस दिन नहीं खाया था। तुरन्त सरोजनी देवी को हुक्म हुआ कि खाने के लिये मुझे कुछ दें। उन्होंने संतरे और केले लाकर मेरे सामने रख दिये। बापू के दिमाग़ में उस समय हरिजन कार्य के अतिरिक्त और कोई बात के लिये स्थान नहीं मालूम पड़ता था। उन्होंने सामान्य रूप से कुछ रोगियों के स्वास्थ्य के बारे में तथा मेरी रिपोर्ट के सिलसिले में कुछ अन्य व्यक्तियों के बारे में मालूमात कीं और अधिक समय हरिजनों की उन्नति के लिये विविध पहलुओं पर विचार विमर्श करने में ही ख़र्च किया। समाज कल्याण का विषय प्रारम्भ से ही मेरा रुचिकर विषय रहा है इसलिये तत्सम्बन्धी जो मेरे

विचार थे उनके सामने संक्षेप में रख दिये। बापू मेरी बातों में विशेष दिलचस्पी लेते मालूम हुये तथा उपवास के बाद भी उनसे मिलने की मुझे सलाह दी। समय अधिक हो गया था। सरोजनी देवी दो बार आकर मुझे कड़ी आंखों से देख गई थीं। आखिर जेल के घन्टे ने भी दो बजा दिये और मैंने बापू से इजाज़त ली। लेकिन दिल्ली जाने की फिर भी इजाज़त लेना भूल गया। जेल के फाटक पर आकर एक छोटा सा पत्र बापू को सरोजनी देवी द्वारा भेजकर मैं साबरमती रवाना हो गया। दूसरे दिन आश्रम पहुँचते ही मैनेजर ने आश्रम के नाम आया हुआ बापू का यह निम्न तार मुझे दिया और तीसरे दिन मुझे पत्र द्वारा बापू का यह आदेश भी मिल गया। अतः एक महीना और अधिक मुझे साबरमती आश्रम में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

15

Poona, 5-5-33

Satyagraha Ashram,
Sabarmati.

Sharma's explanation completely satisfactory. Advice his stay Ashram during fast.........

Bapu.

१५

पूना ५-५-३३

सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती

शर्मा का ब्यान बिलकुल संतोषजनक है उपवास दरमियान उन्हें आश्रम में ठहरने की सलाह देता हूं.........

बापू

भाई शर्मा,

तुम्हारा खत मिला है आज तार दे रहा हूँ मेरी सलाह यह है कि उपवास दरम्यान आश्रम में ही रहो और आलस्य निकालो उसे निकालने का औषध उद्यम ही है आश्रम में उद्यम जितना चाहिये मिल सकता है आश्रम की जो बातें देखने में आवें उसे नरायणदास से कहो तुम्हारे उपवास* का मैंने सुना था ठीक ही था ऐसी बातों में मंत्री की सम्मति लेने की जरूरत है।

नैसर्गिक उपचार पर तो मेरा विश्वास चालीस वर्ष का है मेरा मतलब यह था कि तुम्हारी आश्रम में सफलता होने से तुम्हारे उपचारों पर मेरा विश्वास जमेगा। आश्रम के लिये पैम्फलेट अवश्य लिखो।

५-५-३३

बापू के
आशीर्वाद

इसी डाक से आश्रम में बापू के २१ दिन के उपवास के समाचार भी आ गये जो ८ मई से प्रारम्भ हुआ। इसी समाचार के साथ अंग्रेज़ी में टाइप हुये तीन काग़ज आये जिनमें बापू के उपवास के दरमियान प्रत्येक आश्रमवासी के लिये कार्य-क्रम तथा उनके लिये कुछ आदेश दिये हुये थे। आश्रम के मैनेजर ने इन आदेशों की कापी आश्रम के मुख्य कार्य-कर्त्ताओं की जानकारी के लिये उन्हें भेज दी। इनसान को इनसान बनाने की बापू की अभिलाषा तथा हमारे दुष्कर्मों के दूर करने का भी भार एक सच्चे पिता के समान स्वयं अपने ऊपर ले लेने का उनका स्वभाव नीचे दिये हुये इन पत्रों से ज्ञात होगा :

* नया जलवायु बदलते वक्त मैं अक्सर एक दो दिन का उपवास रख लेता हूँ।

—चौवालिस

( देखिये पन्ना—चौवालिस )

( Written instructions received by the Asharm two days before his historic fast of 21 days which began from the 8th. May, 1933 )

"My twenty-one days fast begins from the 8th of this month; the news must have preceded this letter. None should grieve over it, but all should wake up. I cherish greatest expectations from the Ashram. It is full of many impurities, which must be abolished. This fast is meant for all co-workers, which includes Ashram also in its sphere. I would dance with joy to-day, if I feel that the Ashram has performed the necessary penance and knew that all would sink in deep meditation observing fast on the bank of the river. This fast is the preparatory herald of many such other fasts that are still to come. All should do this much.

All should be deeply engrossed in the prayer or should not go to the prayer at all. Those who go there in body only and keep their mind engaged in somewhere else, break the law of Truth. Instead of doing that they should do what they like. Or better still, should leave the Ashram. None should slander anybody behind his or her back.

If one feels sexual emotions rising in one's mind one should confess the same to you (secretary), if not to anybody else or should give in writing.

If one can't control one's passions one should leave the Ashram.

Those who do not like all the rules of the Ashram must leave it forthwith.

In this period of purification there should be one line of limitation drawn if possible. One should be contented with what treatment is given to the patient in the Ashram and not craze for more. At the most the patient may be sent to the different branches of the Ashram for a change.

None should steal a march on work or things; nor should one keep anything secret from others.

One should make content over what one gets and should eat only as a medicine. One should remember this much—that there is no need whatsoever of either the pulse or boiled rice or the roots. Spices, sugar, jarda are all unnecessary things. The whole food consists of wheat, bajra, jwar and raw milk. It is quite enough if from time to time one gets green vegetables or fruits.

It should be considered a sin to hate anybody or to seek for anybody's defects.

All should serve the Harijans. In short I shall hope to see the whole Ashram being purged of its spiritual diseases. If the Ashram cannot do this

—क्रियासिप

much, I have no right to expect anything from anybody else. You can purge the Ashram of all its evils. Now those only who can obey the rules of the Ashram concienciously with full understanding can live in the Ashram. My hope for ever shall be that those who have attained merit there only will join the fast at the proper time. I foresee the hour which is drawing near. This fast is thus typical. It is the beginning of purification. If the Ashram shall not purify wherewith shall it be purified ? This is a more difficult task than the salt campaign but those only should live there who are anxious to make themselves fit for the sacrifice. You ( secretary ) will have to consider the case of the old families there, who would not join in the struggle. You can stop admitting new comers. Of those residing in the Ashram, students not helpless, should be sent off to their homes. Those who are helpless and exiles, like Narmada, should remain. Please know that these are my casual observations from here. Do whatever your mind suggests you to do as you understand it and what you can. You (secretary) have my full permission. During the coming 21 days, you ought not to be burdened heavily with the management, ought not to be taxed with the task of persuading one and all. The old families who may live there and yet cannot join you

in this ordeal should be allowed to have a seperate kitchen."

( बापू के २१ दिन के एतिहासिक उपवास के दो दिन पहिले आश्रम को यह निम्न हिदायतें मिलीं )

"मेरा २१ दिन का व्रत इस माह की ८ तारीख़ से शुरू होता है। सूचना तो इस पत्र से पहिले ही हो गई होगी। इससे कोई दुःखी न हो, सब जाग्रत बनें। बड़ी-बड़ी आशाएँ मैंने आश्रम से रक्खीं हैं। उसमें बहुत सी गन्दगियाँ भरी हुई हैं जो दूर हो जानी चाहिये। यह व्रत सब सहकारियों के हेतु हैं और इनमें आश्रम भी इसके अन्दर आ जाता है। यदि मुझे यह लगे कि आश्रम ने आवश्यक तपस्या कर ली है और मुझे यह ज्ञात हो जाय कि सब ही नदी किनारे व्रत रखते हुये ध्यानावस्थित हो जायेंगे तो मैं आज खुशी में नाचूँगा। यह व्रत ऐसे बहुत से आगामी व्रतों का केवल अग्रदूत मात्र है। सब को इत्तला तो करना ही चाहिये :—

सब ही या तो प्रार्थना में लीन हो जाँय या प्रार्थना में जायें ही नहीं। जो शरीर से तो वहाँ जाते हैं और ध्यान और कहीं लगा रहता है वे सत्य के नियम को भंग करते हैं। इससे तो यही अच्छा है कि वे स्वेच्छानुसार चलें और उत्तम तो यह है कि वे आश्रम ही छोड़ जाँय। कोई किसी की पीठ पीछे बुराई भलाई न करे। यदि किसी के मन में काम वासना आ जाय तो उसको चाहिये कि यदि किसी और के सामने नहीं तो तुम्हारे ( मैनेजर ) सन्मुख उसको स्वीकार कर ले और लिखित रूप में अर्पित कर दे। यदि कोई अपनी वासनाओं को नहीं रोक सके तो उसे चाहिए की वह आश्रम छोड़ दे।

Brackets are mine.

ब्रेकिट के शब्द लेखक के हैं

जिनको आश्रम के नियम अच्छे नहीं लगते उन्हें आश्रम तत्काल छोड़ देना चाहिये।

इस आत्म शुद्धि काल में अगर हो सके तो यह एक मर्यादा रख लेनी चाहिये।

आश्रम में रोगी को जो उपचार प्राप्त है उसी पर संतोष होना चाहिये इससे ज्यादा की आशा न रक्खे। अधिक से अधिक यह हो कि रोगी को स्थान परिवर्तन के हेतु आश्रम की विभिन्न शाखाओं में भेज दिया जाय। कोई भी चोरी से काम या और किसी चीज़ में औरों से आगे बढ़ने का लोभ न रक्खे और नहीं औरों से कोई चीज़ छिपाए।

प्रत्येक को जो कुछ मिले वह उसी पर संतोष करे और आहार को औषधि रूप ही मानकर चले। प्रत्येक व्यक्ति को यह याद रखना चाहिये कि दाल, उबले हुये चावल, आलू इत्यादि कन्द की कोई आवश्यकता नहीं। मसाले, चीनी, ज़रदा यह सब अनावश्यक हैं। गेहूँ, बाजरा, ज्वार और कच्चा दूध सम्पूर्ण ख़ुराक हैं। यदि समय-समय पर सब्ज़ी या फल भी मिलते रहें तो यह भोजन पूर्णतः प्रर्याप्त होगा।

किसी से घृणा करना या किसी की त्रुटियों को ढूँढ़ना पाप समझा जाये।

हरिजनों की सेवा सबको करना चाहिये। संक्षेप में मैं आशा करता हूँ कि समस्त आश्रम अपने आध्यात्मिक रोगों से पूर्णतः शुद्ध हो जाये। यदि आश्रम ही ऐसा नहीं कर सकता तो फिर मुझे किसी और से आशा रखने का अधिकार नहीं। तुम आश्रम की तमाम बुराइयों को निकाल बाहर कर सकते हो। अब केवल वही व्यक्ति आश्रम में रह सकते हैं जो आश्रम के नियमों का पालन सोच समझ

—उन्चास

कर हृदय से कर सकें। मेरी निरन्तर आशा यह रहेगी कि केवल वह व्यक्ति जो वहाँ कुछ कर दिखायेंगे समय आने पर वही उपवास में सम्मिलित हो सकेंगे। वह अवसर मुझे नजदीक आता हुआ दीखता है। उपवास आत्मशुद्धि का प्रतीक और आरम्भ है। अगर आश्रम खुद ही शुद्ध न होगा तो आत्मशुद्धि व यज्ञ में वह कैसे हिस्सा ले सकेगा ? नमक आन्दोलन से कहीं ज्यादा कठिन काम यह है। किन्तु केवल वही लोग वहाँ रहें जो अपने को बलिदान के लिये योग बना सकने के इच्छुक हैं। वहाँ के उन पुराने कुटुम्बों का ध्यान तुम्हें रखना होगा, जो इस आन्दोलन में सम्मिलित न हों। नव आगन्तुकों के प्रवेश को तुम रोक सकते हो। जो आश्रम में रह रहे हैं उनमें जो अपंगु नहीं हैं वह अपने-अपने घर भेज दिये जायँ। जो अपंगु हैं और जिनके जाने की अपनी कोई जगह नहीं—जैसे की नर्वदा—वह भले रहें। यह तो यहाँ बैठे जैसे मेरे मन में विचार आया वैसे मैंने तुम्हारे आगे रख दिया। करना तो तुम्हें है। जैसा तुम्हारा मन साक्षी दे या जैसे तुम्हारी बुद्धि तुम्हें प्रेरित करे वैसे ही है। तुम्हें मेरी तरफ से पूरी छुट्टी है। आगामी २१ दिनों में तुम प्रबन्ध कार्य में अपने को आवश्यकता से अधिक न लाद लेना, और न प्रत्येक व्यक्ति को मनाने का काम अपने सिर लेना। पुराने कुटुम्ब जो वहाँ रहना चाहें और इस अग्नि-परीक्षा में सम्मिलित न होना चाहें उन्हें पृथक रसोई घर दे दिया जाये।

बापू ने ८ मई को आत्म शुद्धि के लिये उपवास प्रारम्भ किया और उसी दिन सरकार ने उन्हें यरवदा जेल से रिहा कर दिया। परन्तु उन्होंने अपने २१ दिन का उपवास 'पर्णकुटी' पूना में जारी रक्खा जो २६ मई सन् १६३३ को ईश्वर की कृपा से निर्विघ्न समाप्त हो गया। उधर आश्रम के रोगियों के प्रति मेरा काम भी समाप्त हो चुका था। मैं तीन जून को दिल्ली के लिये रवाना हो गया।

बापू के स्वास्थ्य सम्बन्धी संतोषजनक समाचार दिल्ली में मुझे श्री मथुरादास जी द्वारा मिलते रहे। इस ऐतिहासिक उपवास के तुरन्त बाद बापू ने अपनी सबसे प्यारी और मूल्यवान वस्तु—साबरमती आश्रम—को तोड़कर यह साबित कर दिखाया कि मनुष्य अपने उच्च और पवित्र आदर्शों की नीति की सुरक्षा हेतु इस पार्थिव जगत से बांध रखने वाली अपनी अन्तिम वस्तु का भी समय पर परित्याग कर सकता है। समाज-कल्याण तथा अन्य रचनात्मक कार्यकर्ताओं के लिये बापू का यह क़दम सदा के लिये एक शिक्षा प्रद जीता जागता उदाहरण रहेगा।

साबरमती आश्रम को बापू ने हरिजन आन्दोलन के अर्पण कर दिया और वहां के निवासी कुछ तो सत्याग्रह आन्दोलन में शरीक हो गये और बाक़ी वर्धा के महिला आश्रम* में भेज दिये गये।

*वर्धा का महिला-आश्रम तथा कन्या-आश्रम दोनों एक ही चीज़ थीं। इस आश्रम के संरक्षक सेठ जमनालाल बजाज़ थे। श्री आचार्य विनोबा भावे आश्रम के कुलपति थे।

## तीसरा अध्याय

मैं जैसा कि पहिले कह चुका हूँ यरवदा जेल में बापू से मिलकर मुझे सादा जीवन के साथ उन्हीं की छाया में रहकर काम करने की धुन लग गई थी। साबरमती से दिल्ली आते ही मैंने अपने हस्पताल का काम समेटना प्रारम्भ कर दिया। बापू के पास जल्दी पहुँचने में मेरे मार्ग में एक मुख्य अड़चन मेरी दिल्ली की कोठी और ज़मीन थी। श्री के० सी० राय की शिमले में हृदय रोग से अकस्मात मृत्यु हो जाने के बाद उनकी पत्नी अपनी कोठी को तुरन्त बेचकर जा रहीं थीं इसलिये कोठी और ज़मीन यकायक ख़रीदने में मुझे कुछ रुपया क़र्ज लेना पड़ा था। जिसका कुछ भाग देना बाक़ी था। ऐसे झगड़ों को साथ लेकर बापू के सम्पर्क में रहना मुझे पसंद नहीं था अतः कोठी और ज़मीन को बेच देना ही एक मात्र ऐसा साधन था जो मेरे अगले क़दम के लिए मुझे शीघ्र स्वतन्त्र करता था और इसी सिलसिले में मैं लगा हुआ था।

उधर बापू और सरकार के बीच आंख-मिचोनी का सा खेल हो रहा था। बापू १ अगस्त सन् १९३३ को पूना की ओर "रास" नामक गाँव की यात्रा करने वाले थे। सरकार को उनकी यह यात्रा मंजूर न थी। यात्रा प्रारम्भ होने के पूर्व ही उन्हें फिर गिरफ्तार कर लिया और चार अगस्त को छोड़कर उन्हें यरवदा गाँव की सीमा त्याग कर पूना चले जाने का नोटिस दे दिया। बापू ने इस नोटिस की अवहेलना की तो चार अगस्त को ही वह फिर पकड़ लिए गये। साथ ही साथ उन्हें एक साल की सज़ा भी दे दी गई और पिछले मई मास में कैदी के नाते जो उन्हें सुविधायें दी गई थीं उनसे भी सरकार ने इनकार कर दिया। इसलिये
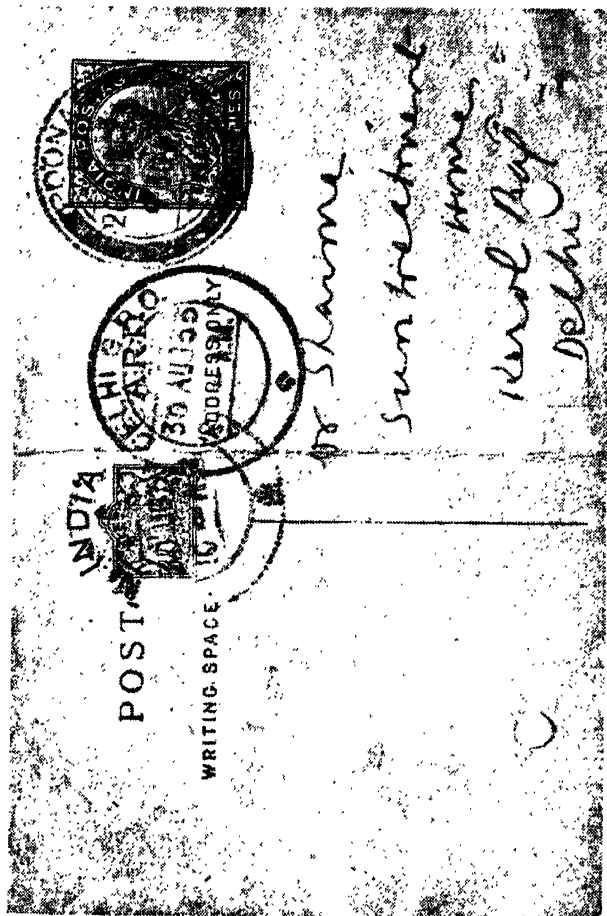
INDIA
POST CARD
WRITING SPACE
ADDRESS ONLY
Dr Sharma
Sun treatment
Home
Karol Bagh
Delhi

पत्र—१७

( देखिये पन्ना—तिरपन )

थोड़े ही दिन बाद बापू ने फिर अनशन ले लिया। इस अनशन के पाँचवे दिन सरकार ने उन्हें कैदी की हैसियत से सैसून (पूना) के हस्पताल में भेज दिया था लेकिन वहाँ उनके प्राण संकट में देखकर सरकार ने अन्त में बिना शर्त २३ अगस्त को उन्हें छोड़ दिया। उनके जेल से रिहा होने के समाचार पाते ही मैंने उन्हें एक पत्र पूना के पते पर भेजा। उन दिनों बापू अधिक कमज़ोर थे। २३ अगस्त को जेल से छूटने पर ही तो उनका एक सप्ताह का उपवास टूटा था। लेकिन पत्र को पढ़कर २७ अगस्त को ही उन्होंने यह उत्तर दिया।

१७

भाई शर्मा,

दस दिन बाद के अवश्य आइये। मैं कहां हूँगा उसका पता नहीं है। अखबार में देखोगे। ठहरने का अलग प्रबन्ध कर लेना।

तुम्हारी तक़लीफें दूर हुई होंगी।

२७-८-३३

बापू के
आर्शीवाद

पूना से बापू के बम्बई आने के समाचार पढ़ते ही मैं नियत तिथि पर उन से "मणि भवन" में बम्बई जा कर मिला और साबरमती से लौटने के बाद का अपना दो महीनों का सारा हाल उन्हें बता दिया तथा भविष्य में शीघ्र ही उनकी इच्छानुसार वर्धा आश्रम पहुँच जाने का अपना निर्णय सुना दिया। यहाँ बापू द्वारा श्री बाल गोपा* जी से मेरा प्रथम परिचय हुआ। यह उन दिनों अस्वस्थ रहने के कारण बड़े दुर्बल थे और वर्धा आश्रम से बापू के पास बम्बई अपने स्वास्थ के विषय में पूछ-तांछ करने आये हुए थे।

बम्बई में ५ दिन बापू के साथ रहने का मुझे सौभाग्य मिला। दिल्ली में मेरी कोठी और ज़मीन के बारे में बापू की राय थी कि मैं उसके विषय में सेठ जमनालाल जी से बातें करूँ लेकिन यह उनकी राय मुझे रुची नहीं और अपने

---

* श्री विनोबा भावे के छोटे भाई।

निश्चयानुसार दिल्ली में अपने कारोबार को समाप्त करके कोठी तथा ज़मीन वहीं के एक व्यक्ति को बेच दी और मोटर आदि सब अन्य सामान कुटुम्बियों में बाँट कर मैं तेरह जनवरी को अपने स्वास्थ के लिये एक हफ्ते का उपवास करने अपने खुर्जा शहर में आ गया। बापू का हरिजन आन्दोलन के सिलसिले में देश का दौरा प्रारम्भ हो चुका था। उनके दौरे का प्रोग्राम मेरे पास आ गया था। चूँकि दिल्ली में अपना काम बन्द करने इत्यादि में ही काफ़ी समय लग चुका था अतः मैंने तुरन्त कूनूर के पते पर तार द्वारा उनको सब समाचार भेज दिये और वर्धा जाने की इजाज़त मांगी। उसके उत्तर में बापू का यह तार और उसके बाद यह पत्र मिला :

18

Coonoor 30. 1. 1934

Dr. Sharma, Khurja.

Can see no difficulty but await my letter.

Gandhi

१८

कूनूर ३०-१-१९३४

डा० शर्मा, खुर्जा

कोई अड़चन तो नज़र नहीं आती लेकिन मेरे पत्र की प्रतीक्षा करो।

गांधी

१९

भाई शर्मा

तुम्हारा तार मिला था। चलती ट्रेन से यह लिख रहा हूँ। वर्धा जाने में तो कोई दिक्क़त अभी नहीं है।

अब्दुलसलाम ठीक बीमार हो गई है। मैं उनको सोमवार के

—चौवन

तार—१८

INDIAN POSTS AND TELEGRAPHS DEPARTMENT.

18

G.

NOTICE.

This form must accompany any inquiry made respecting this Telegram.

| Handed in at (Office of Origin). | Date. | Hour | Min. | Service Instructions. | Words |
|---|---|---|---|---|---|
| Coonoor | 30 | 11 | 55 | | 16 |

Charges to pay — Rs. | As.

TO R.S. Thro Coonoor

Recd. here at 14 H. 1 M.

Dr Sharma Khurja

Can see no difficulty

but await my letter

— Gandhi

N.B.—The name of the Sender, if telegraphed, is written after the text.

( देखिये पन्ना—चौवन )

पत्र—१६

( देखिये पन्ना—चौवन )

INDIAN POSTS AND TELEGRAPHS DEPARTMENT.

NOTICE.

This form must accompany any inquiry made respecting this Telegram

Charges to pay. Rs. As.

Handed in at (Office of Origin) Madras | Date 20 | Hour 9 | Minute 15 | Service Instructions | Words 23

TO Recd. here at 13 H 30 M

Dr Sharma Khurja

Hope fast ends well
Amtu free will remain
some days no anxiety proceed

Wardha after fast Bapu

( देखिये पन्ना—पचपन )

रोज़ मिलूंगा। तब अच्छी नहीं होगी तो वर्धा जाने के पहिले तुम मद्रास आ सकोगे क्या ? अगर आ सको तो मुझे तार दीजिये मैं ऐसे तक़लीफ नहीं दूंगा। तुम्हारे पर उनका विश्वास आश्चर्य-जनक है।

१५-२-३४

बापू के
आशीर्वाद

बापू के आदेशानुसार १६ ता० को तार द्वारा मैंने उन्हें अपने मद्रास आने की स्वीकृति तो भेज दी लेकिन अपने पिछले उपवास की कमज़ोरी दूर हो जाने के बाद वहाँ आ सकूँगा ऐसा उन्हें लिखा। उसके उत्तर में बापू ने तार द्वारा यह आदेश भेजा और दूसरे दिन अम्तुलसलाम का भी तार मिल गया :

20

Madras 20. 2. 1934

Dr. Sharma, Khurja

Hope fast ends well. Amtul Free. Will remain some days. No anxiety. Proceed Wardha soon after fast.

Bapu

२०

मद्रास २-२-३४

डा० शर्मा, खुर्जा

आशा है उपवास निर्विघ्न समाप्त हुआ होगा। अम्तुल स्वस्थ है। थोड़े दिन और रहेगी। कोई चिन्ता नहीं। उपवास के बाद तुरन्त वर्धा चल देना।

बापू

21

Madras 21. 2. 1934

Dr. Sharma, Khurja

Better Most anxious. Wire health and about going Wardha Care Harijan office Madras.

Amtulsalam

२१

मद्रास २१-२-३४

डा० शर्मा, खुर्जा

(मैं) अच्छी हूँ (आपके लिये) बहुत चिंतित हूँ स्वास्थ्य के बारे में तथा वर्धा जाने के बारे में मार्फ़त हरिजन आफ़िस मद्रास के तार द्वारा सूचना दो।

अम्तुलसलाम

अपने प्रत्येक उपवास के बाद मेरे स्वास्थ्य पर उत्तम प्रभाव पड़ता रहा है इस एक हफ्ते के उपवास का भी यही फल हुआ। और अपनी अगली जीवन यात्रा के लिए मैं पूर्णतया स्वस्थ हो गया। जैसा कि मैं कह चुका हूं कि समाज कल्याण तथा अन्य रचनात्मक कार्यों की ओर मेरी अधिक रुचि रही है और समयानुसार इस आवश्यक विषय पर मैं अपने लेखों द्वारा भी देश के नेताओं का ध्यान सदैव से आकर्षित करता रहा हूं। अपने उपवास के बाद तथा वर्धा-आश्रम जाने से पहिले इस विषय पर मैंने अपनी एक और लेखमाला समाचारपत्रों को भेजी जिसका दूसरा भाग तो ६ मार्च १९३४ को देश के कई अख़बारों में भी छपा था।

इसके बाद अन्य अख़बारों के अतिरिक्त मेरा सम्पर्क अधिकतर बापू के 'हरिजन' से ही रहा जैसा कि आगे की घटनाओं से प्रतीत होगा।

—अप्पन

पत्र—२२
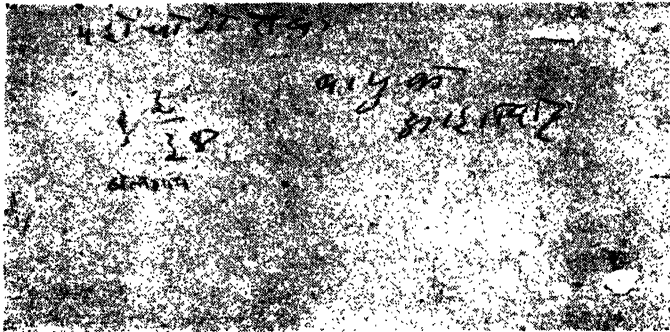
( देखिये पन्ना—सत्तावन )

वर्धा आश्रम के मैनेजर उन दिनों श्री द्वारकानाथ नाम के एक व्यक्ति थे। उनके एक पत्र से मुझे मालूम हुआ कि सेठ जमनालाल जी अपने बँगले के साथ वाले किसी बँगले में तथा तम्बू आदि में मेरे रहने का प्रबन्ध करा रहे थे। यह सब मुझे अच्छा नहीं लगा क्योंकि मैं अपने बच्चों सहित आश्रम में ही वहाँ की परिस्थितियों के अनुसार रहने जा रहा था अतः मैंने इस बारे में बापू को लिखा तो उन्होंने बेलगाँव से यह पत्र भेजा।

२२

भाई शर्मा,

तुम्हारा खत अच्छा है मेरी सलाह है जमनालाल जी जो मकान बताते हैं वहां जाओ लड़कों को साथ ले जाओ उनकी रक्षा करना तुम्हारा धर्म है। तंबु देवे उसका भी उपयोग करो। आश्रम में ही दिन व्यतीत किया जाय। तुम्हारी वृत्ति ऐसी पाता हूँ कि तुम्हारा संग्रह हर जगह हो सकेगा। मैं चाहता हूँ जल्दी आश्रम पहुँच जाओ तुम्हारे पास से मैं बहुत सेवा लेना चाहता हूँ तुम्हारी पत्नी की भी पहचान कर लेना चाहता हूँ। मैं वर्धा से १० तारीख़ को पसार होता हूँ इतने में पहुँच सको तो पहुँच जाओ। अब्दुल सलाम को मैं तुम्हारे पास भेजना चाहता हूँ, जब आश्रम में पहुँचोगे तब।

बेलगाँव — बापू के
६–३–३४ — आशीर्वाद

२३ मार्च को मैं अपनी पत्नी तथा दो बच्चों के साथ वर्धा के लिए दिल्ली से रवाना हुआ और "कृष्णा" नाम की अपनी छोटी बच्ची को जो उस समय केवल सवा वर्ष की थी अपने बड़े भाई के साथ खुर्जा ही छोड़ दिया। बापू को यह सब ख़बर भेज दी थीं।

२४ मार्च को हम वर्धा आश्रम पहुँच गये और वहाँ एक कोने में अपना डेरा डाल दिया। मेरी पत्नी और बच्चों के लिए आश्रम जीवन एक आकस्मिक

परिवर्तन जरूर था लेकिन उन्होंने इसका कोई दुःख नहीं माना और पहिले ही दिन से वहाँ के कार्य-क्रम में लग गये। बापू अपनी हरिजन यात्रा में बिहार की तरफ थे जहाँ भारी भूकम्प से बहुत क्षति पहुँची थी। नीचे के दो पत्र बापू के एक साथ हमको वर्धा मिले। दूसरा पत्र मेरी पत्नी के नाम है।

२३

भाई शर्मा,

तुम्हारे दोनों ख़त मिले हैं लम्बा ख़त तो क्या लिखूँ? समय कहां? द्रौपदी देवी* को साथ का ख़त देना। लड़का और लड़की को सच्ची तालीम तुम दोनों के संयम से मिल जायगी। उनकी तालीम तुम्हारे संसर्ग में रहने से काफ़ी होगी इसका अर्थ यह नहीं कि यदि कोई शिक्षा आश्रम में पा सके तो न पावे यह तुम्हारे प्रयत्न की पूर्ति में हो सकती है।

तुम्हारे हाथ में आश्रम के कोई मरीज़ आ जाँय उसका उपचार तो अवश्य किया जाय। तुम्हारे इस ज्ञान का उपयोग मैं पूरा लेना चाहता हूँ। ज्यों-ज्यों वहां के लोगों का विश्वास बढ़े त्यों-त्यों यह काम बढ़ता जायगा।

तुम्हारे दोनों ने चरखा की सब क्रियायें सीख लेनीं हैं। आश्रम में नैसर्गिक चिकित्सा की मेरी किताब आ गई हैं। उनमें से किसी का उपयोग करना है तो किया जाय। कृष्णा को तुम्हारे पास बुला लेना अच्छा होगा।

अगस्त मास में देखें क्या होता है। सुभिता रहा तो मेरे पास बुला लूंगा।

१-४-३४

बापू के
आशीर्वाद

*लेखक की धर्मपत्नी।

( २ )

( देखिये पन्ना—अट्ठावन )

पत्र—२४

(२)

( देखिये पन्ना—उनसठ )

चि० द्रौपदी,

तुम्हारा आश्रम में आना मुझे बहुत प्रिय लगा है। जो सीखने का कार्य-क्रम अब बनाया है सो अच्छा लगता है। मेरी उम्मेद है तुम सबका स्वास्थ्य वर्धा में अच्छा रहेगा। आश्रम जीवन समझने की पूरी कोशिश करो। सब बहिनों का परिचय करके उनकी यथा शक्ति सेवा करो। तुमको आश्रम में लाने में मैंने बहुत आशायें बांध रक्खी हैं। मुझे खत अवश्य लिखो।

६–४–३४

बापू के
आशीर्वाद

साबरमती आश्रम में प्राकृतिक चिकित्सा से जिन व्यक्तियों को लाभ पहुँचा था उन्हें जब मेरे वर्धा-आश्रम में पहुँच जाने के समाचार मिले तो वहाँ उनके अनेक पत्र आने लगे उनमें से यहाँ केवल साबरमती आश्रम के मैनेजर—श्री नरायणदास गाँधी—के ही कुछ पत्रों का उल्लेख दे सका हूं।

25

Rajkot,
14. 4. 34

Opposite Middle School.

My Dear Dr. Sharma,

I hear that you have now settled in Wardha. I would like to know something about your work there. Have you thought of taking in any student? Would you advise my son Purushotamdas to remain with you for his treatment as well as to undergo some training under you? In his past experience

—उनसठ

Wardha climate is not suitable but as you are there you will be able to help him. I think he should read your books. You will please arrange to send them to me.

My wife is keeping fairly well and remembers you for all the care you had taken for her. Kanu* is in Sabarmati jail. I wish he would have remained with you for some longer time.

How is Amtul Salam behn keeping.

Expecting to hear from you,

Yours sincerely,
Naraindas K. Gandhi.

२५

राजकोट,
१४-४-३४
मिडिल स्कूल के सामने

मेरे प्रिय डा० शर्मा,

मैंने सुना है कि अब आप वर्धा में बस गये हैं। मैं यह जानना चाहता हूँ कि आपका वहां कार्य-क्रम क्या रहेगा। क्या आपको कोई विद्यार्थी बनाने का विचार है? क्या आप परामर्श देंगे कि मैं अपने पुत्र पुरुषोत्तमदास को आपके पास इलाज के लिए तथा कुछ प्रशिक्षण के रूप में सीखने के लिये छोड़ दूं? उसके पिछले अनुभव से तो वर्धा का जलवायु उसके अनुकूल नहीं है किन्तु अब आप वहाँ

*Kanu Gandhi—His younger son.

( २ )

(देखिये पन्ना—इकसठ)

हो तो उसकी सहायता कर सकते हो। मेरे ख्याल से तो उसे आपकी पुस्तकें पढ़ लेनी चाहियें। कृपया मुझे उनके भेजने का प्रबन्ध कर दें।

मेरी धर्मपत्नी अच्छी तरह है और जो कुछ सावधानी व देख-रेख आपने उनके प्रति रक्खी थी उसके लिये आपकी याद उन्हें बनी रहती है। कनू* साबरमती जेल में है। अच्छा होता यदि वह कुछ दिन और अधिक आप के साथ रहा होता।

अम्तुल सलाम बहन कैसे है ? आशा है पत्रोत्तर शीघ्र दोगे।

आपका शुभचिन्तक,
नारायणदास के० गांधी

आश्रम से बापू को मेरा छोटा सा पत्र जाता ही रहता था प्राकृतिक-चिकित्सा सम्बन्धी उनके अनुभव भी मैं उनसे पूछता रहता था। नीचे का पत्र उन्होंने राँची से लिखा है जिसमें तत्सम्बन्धी कुछ अपने अनुभव भी दिये हैं।

२६

भाई शर्मा,

तुम्हारा खत मिला है। अम्तुल सलाम को मैं तो लिखता रहूँगा लेकिन अब मैं उसके बारे में चिन्ता मुक्त हुआ हूँ उसका इलाज दिल चाहे ऐसे करो। अच्छी हो जाय तो सब झंझट मिट जाय। मुझे लिखा करो कैसे चल रहा है। तुम को तो मैंने लम्बा खत दिया है।

बापू के
आशीर्वाद

१४-४-३४

खुराक के बारे में कुहने, जुस्ट, कैलोग, कैरिंगटन अच्छे हैं। कोई पूर्ण नहीं है। मैंने जो परिणाम निकाला है वह यह है :

रसदार फल सबसे निर्दोष खुराक है। शक्ति के लिये दूध के पदार्थों

---

*श्री नारायणदास गांधी के छोटे पुत्र।

की अत्यावश्यकता है कच्चा ताज़ा दूध उत्तम है। नित्य बहुत चीज़ नहीं खाना एक-एक चीज़ भिन्न खाना आवश्यक है। सिरियल्स में गेहूँ अच्छे हैं चावल अनावश्यक है दाल अनावश्यक है इतना संक्षेप में।

बापू

वर्धा आश्रम के मैनेजर द्वारा मुझे यह मालूम हुआ कि सेठ जमनालाल जी ने उनको आदेश दिया था कि वह मुझसे प्लान लेकर उसके अनुसार आश्रम में एक नया मकान मेरे लिये खड़ा करादें और टाइपराइटर इत्यादि जैसी आवश्यक चीज़ों के लिये उनकी दूकान से प्रबन्ध करा दें। उनकी इस कृपा का मैं आभारी तो था परन्तु मुझे यह रुचिकर न था क्योंकि मैं अपने लिये आश्रम में कोई विशेष सुविधा नहीं चाहता था और यही मैंने सेठ जी को लिख भी दिया। उसके उत्तर में यह पत्र उनका पटना से भेजा हुआ है जिसपर शायद काम की अधिकता से वह हस्ताक्षर करना भूल गए।

२७

बिहार सेन्ट्रल रिलीफ कमेटी,
पटना, २७-४-३४

प्रिय शर्मा जी,

आपका ता० २१ का ख़त मिला। मैनेजिंग कमेटी की सभा आज तीन रोज़ से चल रही है। इस वजह से उत्तर तुरन्त नहीं लिखवा सका.........मकान के बारे में मैंने द्वारकानाथ जी को कहा था कि मकान का सुभीता किया जाय। आप कायम* के लिये रहोगे ऐसी मुझे उम्मीद है। मेरी तो अभी भी यही समझ है कि मकान आपके प्लान के मुताबिक़ ही बनाया जाय तो सब प्रकार का सुभीता रहेगा।

*मुस्ता

**टाइपराइटर न होने के कारण आपके साथ कोई हरकत न आनी चाहिये उस दृष्टि से चिरञ्जीलाल* से मैंने लिखा था। बच्चों को आशीष, उनकी माता को यथा योग्य। अम्तुल बहन का स्वास्थ्य अच्छा होगा। मेरी तबीयत ठीक है।**

आश्रम के नियमों का पूर्णतया पालन न कर सकने वाले गृहस्थियों के लिए आश्रम ही की हद में कुछ मकान थे जहाँ बापू के पुत्र श्री रामदास भी अपने गृहस्थ के साथ रहते थे। वह अक्सर मेरे पास आकर स्वास्थ्य सम्बन्धी बातें करते रहते थे उनके सत्य और सरल स्वभाव से मैं बड़ा प्रभावित हुआ था। इनकी विचार शैली में बापू की ही कुछ धुँधली सी झलक भी मुझे प्रतीत हुई। और भी अधिक समीप से इनका अध्ययन करने का अवसर मिलने पर मुझे उनके शरीर की दशा ठीक टिमटिमाते हुये उस दीपक की भांति मालूम हुई जिसका तेल समाप्त होने पर उसकी बत्ती की दशा हो जाती है। शरीर की दुर्बलता से इनका मस्तिष्क भी दुर्बल होना ही था। अन्य रोगियों के साथ क्रमशः जब इनकी सेवा का प्रश्न मेरे सामने आया तो प्राकृतिक चिकित्सा में संयमी रहने का मुख्य नियम तथा उसके पालन करने में अनेक कठिनाईयों के आने की संभावनादि खुलासा करके मैंने इनके सामने रख दिया और इस सम्बन्ध में मेरी सेवाएँ लेने के लिये पहिले बापू की अनुमति प्राप्त करने की उनको सलाह दी। बापू इन दिनों रांची में थे। श्री रामदास वहीं जाकर उनसे मिले और मैंने भी उनके विषय में सीधे और स्पष्ट पत्र बापू को तथा सेठ जमनालाल जी को लिख दिये थे। इधर श्री नरायणदास गांधी मुझ से वर्धा मिलकर स्वयं रांची बापू के पास जा रहे थे उनके द्वारा भी श्री रामदास के सम्बन्ध में कुछ बातें बापू तक भेज दी थीं। आगे के तीन पत्र क्रमशः इसी सिलसिले में है। बापू ने अपना पत्र पटना से लिखा है।

***सेठ जी की दुकान का कोई कर्मचारी।**

28

Ranchi,
3. 5. 34.

My Dear Dr. Sharma,

We arrived here safely. My health is good. I had a good talk with Bapuji. Bhai Ramdass will give you the idea about the arrangement about all Ashramites.

I had a talk about you also. He (Bapu) thinks he has given you the full idea about the work which he wants you to do but he will call you to see him after his Bengal tour which will be over at the end of this month. He has not yet definitely decided about the place where he will pass three or four days of rest which he wants to take after his Bengal tour. By that time you will take a note of all what you want to put before him. I think this will solve your problem.

I am so thankful to you for all you did for me when I was there.

Remember me to your wife and love to children. You will please write to me c/o Behar Relief Committee, Patna. Bapuji wants me to remain there till 17th. instant, when he will be there.

Yours sincerely,
Naraindas K. Gandhi

—चौसठ

रॉंची
३-५-३४

मेरे प्रिय डा० शर्मा,

हम यहां सकुशल पहुँच गये। मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। बापू जी से खूब अच्छी बातें हुई। सब आश्रमवासियों के लिये क्या प्रबन्ध हो इसपर भाई रामदास आपको (बापू के) कुछ विचार देंगे।

(बापू से) मेरी आपके विषय में भी बातें हुई। उनका ख्याल ऐसा है कि जो काम वह आप से लेना चाहते हैं उसका पूर्ण रूप वह आपको बता चुके हैं किन्तु इस महीने के अन्त में जब उनका बंगाल का दौरा समाप्त हो जायगा तब आपको वह मिलने के लिये बुलायेंगे। अपने बंगाल के दौरे के बाद वह तीन चार दिन आराम करना चाहते हैं, कहां करेंगे सो अभी निश्चित नहीं किया है। इस बीच में जो कुछ भी आप उनके सामने रखना चाहते हों उसे लिखित रूप में तैयार करके रख लो। मैं समझता हूँ इस प्रकार आपकी समस्या हल हो जायगी।

मेरे वहां रहने के समय जो कुछ आपने मेरे लिये किया उसके लिये मैं बहुत आभारी हूँ।

अपनी धर्म पत्नी जी से मेरा यथा योग्य कहिये और बच्चों को प्यार। कृपया मुझे मार्फ़त रिलीफ कमेटी पटना के पते पर लिखें। बापू जी ने मुझे वहां १७ तारीख़ तक रहने का आदेश दिया है। उसी दिन वह भी पटना पहुँचेंगे।

आपका शुभचिन्तक,
नारायणदास के० गाँधी

—पैंषठ

२६

बिड़ला हाउस,
रांची,
ता० ५-५-३४

प्रिय शर्मा जी,

आपका ता० २६ का पत्र यथा समय और दूसरा पत्र आज मिला। आज का दूसरा पत्र बापू जी को नहीं दिखा सका क्योंकि वे यहाँ से कल रवाना हो गये थे।

जल्दी-जल्दी आपका पहिला पत्र बापू ने पढ़ा था। उनको और मुझे उससे संतोष हुआ है।

चि० रामदास का शरीर सुदृढ़ हो जाय तो सब को बहुत ही संतोष होगा। ईश्वर आपको सफलता दे यही ईश्वर प्रति प्रार्थना है।

बच्चों के पढ़ाने के विषय में मैं जब जून में वर्धा आऊँगा तब तय करेंगे। आपके ज्ञान का लाभ सब को अच्छी तरह मिलता रहे।

जमनालाल बजाज का बन्देमातरम्

३०

भाई शर्मा,

तुम्हारे ख़त का उत्तर देने का नारायणदास को कह दिया था। तुम्हारे अभिप्राय के मुताबिक़ रामदास के उपचार अवश्य करो। मुझे लिखा करो। शक्ति के बाहर त्याग न किया जाय। जब मैं कहीं थोड़े दिन के लिये स्थिर हो सकूं तब मेरे पास अवश्य आ जाओ।

७-५-३४

बापू के
आशीर्वाद

आश्रम में छोटे बच्चों की तालीम का उन दिनों कोई प्रबन्ध न होने से मेरी पत्नी अपने दो बच्चों की ओर से कुछ परेशान रहती थी और इस ओर

( देखिये पन्ना—छाछठ )

( २ )

( देखिये पन्ना—सरसठ )

मेरी लापरवाही देखकर अपनी परेशानी कभी-कभी बापू को लिख देती थी। यह पत्र उसी के नाम बापू ने पुरी से लिखा है।

## ३१

चि० द्रौपदी देवी,

तुम्हारा ख़त मिला। अच्छा है। माता पिता को अपने बच्चों का भार नहीं लगना चाहिये भले क्यों ब्रह्मचर्य का निश्चय भी किया हो। उनका पालन कर्तव्य समझ करना आवश्यक है। उसी के साथ दूसरी सेवा की जाय। इसका परिणाम यह आवेगा कि बालक भी सच्चे सेवक होंगे। यह तो हुई मेरी राय। इससे संतोष न रहे तो जैसा दिल कहे ऐसे किया जाय। मुझे लिखा करो।

पुरी<br>७-५-३४

बापू के<br>आशीर्वाद

अपने शरीर को पूर्ण रूप से स्वस्थ बनाने की श्री रामदास की इच्छा के साथ ही बापू तथा सेठ जमनालाल जी की अनुमति मिल जाने पर उनके इस श्रेष्ठ काम में कुछ शर्तों के साथ मैंने उनका सहायक बनना स्वीकार कर लिया। श्री रामदास की सेवा करने में मुझे विशेष उत्साह था और हर्ष था। उन्होंने कुछ ही दिनों में उन्नति भी की लेकिन उन्नति को क़ायम नहीं रख सकते थे। इससे मैं चिन्तित रहने लगा। सारे आश्रम का मिला कर भी कोई काम मेरे लिये कभी इतना कठिन नहीं प्रतीत हुआ जितना कि श्री रामदास के उन्नति किए हुए स्वास्थ को क़ायम रखने की समस्या मेरे लिये बन गई थी। उनकी इच्छा शक्ति अति दुर्बल थी। किसी बात पर कुछ दिन भी क़ायम रहना उनके लिये कठिन था और यही मेरी चिन्ता का कारण बन गया था। इस सम्बन्ध में अपनी कठिनाईयों का वर्णन मैं केवल जमनालाल जी को ही लिख सकता था और उनसे इस विषय में सलाह भी लेता रहता था। उधर आश्रम के मैंनेजर

—परषठ

तथा बापू के पुराने अनुयायियों द्वारा जो समाचार उनके पास पहुँचते थे उनपर बापू और जमनालाल जी के संकेत भरे निम्न प्रकार के पत्र मुझे मिलते रहते थे।

३२

पटना,

ता० २२-५-३४

प्रिय० डा० शर्मा,

आपका ता० १४-५-३४ का पत्र मिला। आपका पत्र यहाँ तो १६-१७ ता० को आ गया होगा। लेकिन काम की बहुत भीड़ होने से मुझे वह आज ही पढ़ने को मिला। इसलिए पूज्य बापू जी को वह न पढ़ा सका न उसके सम्बन्ध में कुछ बातचीत कर सका। बापू जी को भी समय थोड़ा था।

श्री रामदास भाई, बसुमती बहन आदि के लिये आप जो कष्ट उठा रहे हैं उससे हर्ष होता है। लेकिन ऐसा करने में आप ख़ुद ही रोगी बनकर दूसरे की सेवा लेने की नौबत न आ जाय इस ओर ध्यान देवें। .........मेरा जून के प्रथम सप्ताह में वर्धा आना संभव है।

जमनालाल बजाज का

बन्देमातरम्

३३

भाई शर्मा,

अमतुल सलाम तुम्हारी तारीफ़ करती है इतनी ही शिक़ायत वह लिखती है कि तुम्हारा वजन बहुत कम हो गया है। खाना कम कर दिया है। मैं इतना ही कहना चाहता हूँ कि शरीर को निरर्थक कष्ट देना इतना ही गुनाह है जितना शरीर को पंपालना। इसलिये शरीर रक्षा के लिये जो आवश्यक है वह किया जाय। इतना तो चार दिनों के पहले लिख चुका था। अब तुम्हारा ख़त मिला है। दिल चाहे तब मेरे पास आ सकते हो। लेकिन वहाँ के मरीज़ों को छोड़कर नहीं। मेरा

—अष्टपठ

पत्र—३३

( २ )

( देखिये पन्ना—अड़सठ )

मेरे पत्रका उत्तर नहि दिया है
बापुके आशीर्वाद
२१-५-३८

( देखिये पन्ना—उन्हत्तर )

मुसाफिरी क्रम तो तुम्हारे पास होगा। जून १२ तक तो यहीं काम चलेगा। पीछे शायद मंबई।

तुम्हारी इच्छा* सिद्ध होने में कुछ देर लगेगी। मैं चाहता हूँ थोड़े और स्थिर चित्त बनों। लेकिन यह सब बातें करने पर। इस समय तो सब का प्रेम संपादन कर रहे हैं सो अच्छा ही है।

बापू के
आशीर्वाद

२३-५-३४

३४

भाई शर्मा,

आस्ते चलना। द्वारकानाथ जी कहते हैं बहुत बोझ उठाते हो। शायद सुरेन्द्र† के खत में भी कुछ ऐसी शिक़ायत थी। यथा शक्ति सेवा लेने करने में सबको सब प्रकार से लाभ है। मुझे लिखा करो। खाने में दूध इत्यादि की जरूर रहे इतना लेने का धर्म समझो।

द्रौपदी देवी ने अब तक मेरे पत्र का उत्तर नहीं दिया है।

बापू के
आशीर्वाद

३१-५-३४

श्री नारायणदास गाँधी पटना से वापिस राजकोट चले गये थे। उनकी यही इच्छा रही कि मैं किसी पहाड़ी स्थान पर एक बड़े पैमाने पर प्राकृतिक चिकित्सा-लय की योजना बना कर बापू के सामने रक्खूँ। लेकिन मेरे मस्तिष्क में तो केवल श्री रामदास का "स्वास्थ" घर बना बैठा था इस अपनी योजना के अतिरिक्त मैं न कुछ सोच सकता था न कुछ कर सकता था। नीचे का पत्र श्री नारायणदास गाँधी का है जिसमें उन्होंने मेरी भावी स्कीम पर ही ज़ोर दिया है।

---

*आश्रम में रोगियों के लिए एक अलग वार्ड बनाने की मेरी इच्छा थी।
†सुरेन्द्र जी बापू के पुराने और सच्चे अनुयायियों में से हैं।

—उन्हत्तर

Opposite Middle School,
Rajkot. 3. 6. 34

My dear Dr. Sharmaji,

I had received your few lines at Patna. I reached here on 28th. On my way back I saw Kanu in Sabarmati-Jail. He keeps well. He remembered you. Purushottam is very keen about coming to you and start your treatment. As you desire he will come there after the first good rain.

I wrote you that Bapuji will call you when he would pass some days of rest at some place but now I see no such thing in his programme. What do you propose to do about putting your scheme of work before him ? Did you write him in detail ? If you have to put any scheme, you ought to do it in time. As far as I understand Bapu thinks that he has already instructed you about the work you have to do.........I think you may also be called in Bombay by Bapuji.

How is your work getting on ? I wish I could have come there on my return journey. Remember me to your wife and children. Jumna remembers you.

Your's
Naraian Dass

—सत्तर

३५

मिडिल स्कूल के सामने,
राजकोट,
३-६-३४

मेरे प्रिय डा० शर्मा जी,

आपकी कुछ पंक्तियाँ मुझे पटना में मिली थीं मैं यहाँ २८ तारीख़ को पहुँच गया। लौटते समय साबरमती जेल में मैं कनु से मिला था। वह सकुशल हैं। आपको याद करता था। पुरुषोत्तम आपके पास आकर अपनी चिकित्सा कराने के लिए बड़ा उत्सुक है। आपकी इच्छानुसार वह पहली अच्छी वर्षा के होते ही आ जायगा।

मैंने आपको लिखा था कि बापू जी कुछ दिन किसी स्थान पर विश्राम लेगें तब आपको बुलायेंगे। परन्तु अब उनके प्रोग्राम में कोई ऐसी बात नहीं दीखती। उनके सामने अपने कार्य-क्रम की स्कीम रखने के बारे में आप का क्या विचार है? क्या आपने उनको पूरा व्योरा लिखा? यदि कोई योजना उनके सामने रखना चाहते हो तो आपको उचित समय पर ही करना चाहिये। जहाँ तक मैं समझता हूं बापू का विचार है कि जो काम आपको करना है वह उन्होंने आपको पहिले से ही कह दिया है............मेरा ख़्याल है बापू जी आपको बम्बई बुलाएँगे भी।

आपका काम कैसा चल रहा है। लौटते समय वहाँ आपसे मिल सका होता तो अच्छा था। अपनी धर्मपत्नी और बच्चों को मेरा स्मरण करा देना। जमना आपको याद करती है।

आपका,
नारायण दास

जब मैंने यह भली भाँति देख लिया कि महिला आश्रम के वायु-मंडल में तथा गृहस्थ के झगड़ों में फँसे रहकर श्री रामदास मेरी इच्छानुसार अपना

स्वास्थ बनाकर उसे क़ायम नहीं रख सकते तो मैंने उन्हें वहाँ से हटाने का निश्चय कर लिया और इस विषय में बापू से सलाह लेनी आवश्यक हो गई। बापू वर्धा आने वाले तो थे लेकिन बहुत थोड़े समय के लिये; और उस थोड़े समय में भी उनके लिये आश्रम की ही इतनी अधिक गम्भीर समस्याएं सुलझाने को थीं कि मुझे श्री रामदास के सम्बन्ध में उनकी सलाह लेना मुश्किल नज़र आता था।

यहाँ यह भी मेरा कहना अयुक्त न होगा कि मैं आश्रम के कुछ पुराने व्यक्तियों को शक़ की निगाह से देखने लगा था इससे वहाँ एक हलचल सी मच गई थी। बापू वर्धा आये और मेरे ख्याल के अनुसार उनका तमाम समय वहाँ के घरेलू झगड़ों में ही बीत गया। आश्रम के मैनेजर को अलग किया गया तथा इसी संबन्ध में कई और उलट फेर करने में बापू का कुछ रुद्र रूप भी हो गया था। इसलिये श्री रामदास के संबन्ध में बातें करने के लिये मुझे पूना आने का आदेश मिला।

अपने बच्चों की शिक्षा के विषय में मेरी पत्नी की उनसे चलते समय काफ़ी बातें हुईं लेकिन वह दोनों एक मत न हो सके। और इस विषय पर मेरी तटस्थता देखकर मेरी पत्नी ने फिर इस सम्बन्ध में बापू से या मुझसे ज़िक्र करना ही छोड़ दिया और मेरे ही काम में सहायक बनीं रहीं। प्रारम्भ से ही उनका स्वभाव कम बोलने का रहा है। पत्र लिखने में तो वह बहुत ही पीछे हैं।

बापू पूना चले गये। मेरे जाने की तैयारी थी लेकिन इधर तो श्री विनोबा जी का उपवास समाप्त हुआ था जो आश्रम के ही झगड़ों के कारण उसके कुलपति होने के नाते उन्होंने किया था और साथ ही मेरे दोनों छोटे बच्चों को अकस्मात तेज़ ज्वर हो गया था। इन परिस्थितियों के बावजूद श्री रामदास के लिए मुझे पूना का अवसर खोना मंजूर नहीं था। मैं २० जून को बम्बई पहुँचा और बापू से तार द्वारा अपने मिलने का समय मांगा। बापू का यह तार मुझे बम्बई मिला और इसी के अनुसार मैंने उनसे २१ ता० को पूना में भेंट की।

—बहत्तर

तार—३६

O. R.

INDIAN POSTS AND TELEGRAPHS DEPARTMENT.

No. 1191

This form must accompany any enquiry respecting this telegram.

( देखिये पन्ना—तिहत्तर )

36

Poona 20. June, 1934.

Sharma care "Shree" Bombay.
Five morning Parankuti.

Bapu.

३६

पूना २० जून सन् १९३४

शर्मा मार्फ़त "श्री"
"पर्णकुटी" में सुबह पांच बजे।

बापू

२२ जून को आश्रम से यह तार आया।

37

Wardha 22. June 1934

Sharmaji Care Gandhiji

Poona.

Vinoba 96 Draupadidevi well Both children had high fever 20th. Rajo keeping 101 temperature.

—विद्दचर

वर्धा २२ जून १९३४

शर्मा जी मार्फत गांधी जी

पूना।

विनोबा का ९६ ( पौंड वज़न ) है द्रौपदीदेवी ठीक है दोनों बच्चों को २० तारीख़ को तेज़ बुखार था राजो* का १०१ बना हुआ है।

श्री रामदास को मैं आश्रम से ही नहीं बल्कि हिन्दुस्तान से बाहर भेजकर किसी स्वतन्त्र धन्धे में लगा देना चाहता था और इसी विचार को लेकर मैं पूना गया था। बापू को इस अपने सुझाव की अहमियत समझाकर उन्हें हम-ख्याल कर लेना कोई आसान काम न था इसके लिये मुझे वहाँ ५ दिन लग गये और अन्त में यह निर्णय हो ही गया कि श्री रामदास को अबकी बार स्वस्थ करके तुरन्त उन्हें दक्षिण अफ्रीका भेज दिया जायगा और दक्षिण अफ्रीका भेजने की तैयारी करने तक मैं उन्हें वर्धा आश्रम से बाहर ले जाकर उनकी सेवा करूंगा। जिसके लिए बापू ने तिथिल जैसे दो एक स्थान तजवीज़ भी कर दिये थे।

मैं अपनी कामयाबी पर बहुत ख़ुश था और श्री रामदास को सब हाल वर्धा आकर सुना दिये थे। लेकिन अभाग्यवश श्री रामदास ने बापू को बिना मेरे दरियाफ्त किये "तिथिल" जैसी जगह के लिये तीन सौ रुपया माहवार का ख़र्च लिख भेजा। पैसे के मामले में मैं बापू की कंजूसी को भली-भाँति जाने हुए था। बापू के पास इस तरह का ख़त भेजने की बात जब श्री रामदास द्वारा मुझे मालूम हुई तो मैंने तुरन्त बापू को लिखा कि वह या रामदास भाई ख़र्च की चिन्ता न करें और मुझे तिथिल के बजाय रामदास भाई को अपने गाँव खुर्जा में ले जाने की इजाज़त दे दें।

---

*लेखक की पुत्री।

—मोहनदास

जो मुझे डर था वही हुआ। बापू तीन सौ रुपया अपने होनहार बनने योग्य पुत्र के इलाज में भी ख़र्च कैसे कर सकते थे! वह तो दरिद्र देश के दरिद्र-नारायण कहाते थे। इसी विषय का यह पत्र उनका मुझे शायद भावनगर से मिला। यहीं से बापू मुझे अपना पुत्र मानकर चिरञ्जीव शब्द मेरे लिये प्रयोग करने लगे जो अन्त तक क़ायम रहा।

३८

चि० शर्मा,

तुम्हारा स्वच्छ पत्र मिला है। खुर्जा जाने में मुझे कोई एतराज़ नहीं है। अब मैं समझा तुम्हारा रामदास से कहना कि ख़र्च तुम दोगे। इसका अर्थ यही था न कि उस ख़र्च की ज़िम्मेवारी मैंने अपने सिपुर्द ले ली है? यदि यह था तो ठीक ही था। इसमें एक बात थी और है कि ख़र्च की मर्यादा होनी चाहिये। जो रामदास ने लिखा है उससे मैं यह पाता हूँ कि माहवार ख़र्च कम से कम ३०० होगा। मेरी दृष्टि में यह ख़र्च बहुत है अन्त में जो कुछ लेना है वह तो जमनालाल जी से है। उनपर अथवा किसी पर इतना बोझ मैं कैसे डालूँ? इससे बहतर यह है कि रामदास द० अ० (दक्षिण अफ्रीका) चला जाय। वहाँ उसका शरीर किसी हालत में अच्छा हो जायगा। तुम्हारे लिये पासपोर्ट मिले तो तुम्हारे भी जाना। नैसर्गिक उपचारों में यह भी समझा जाय कि ग़रीब भी इसे कर सके। यह सब लिखते हुये मुझे बहुत दुःख होता है लेकिन धर्म मुझे लाचार बना देता है रामदास के साथ का तुम्हारा प्रेम तुम्हारी भी परीक्षा कर रहा है। मेरी तो हो ही रही है।

मेरा अभिप्राय ऐसा बन रहा है कि तुम्हारे वर्धा में ही रहना और ख़र्च को परिमित करके उसी में सब कुछ करना। रामदास और निर्मला* के निमित रू० १०० से अधिक नहीं तुम्हारे भी इतना ही। इतने में

---

*श्री रामदास की धर्मपत्नी।

जो कुछ शक्य है वह किया जाय। तुम्हारे मोह के वश होकर कुछ भी नहीं करना। रामदास के बारे में जब निश्चय हो जायगा तब वह दुरुस्त हो जायगा। रामदास की ही स्थिति के दूसरे इसी तरह अच्छे हुए हैं। रामदास भी हो जायगा। इसमें तुम्हारे निश्चय और निर्णय की आवश्यकता रहती है क्योंकि रामदास का तुम पर विश्वास बढ़ता जा रहा है।

२-७-३४

बापू के
आशीर्वाद

जिस समय यह पत्र मैंने पढ़ा था उस समय तो रामदास के प्रति अपने मोहवश बापू की हठ पर झुंझलाहट में मेरे नेत्रों ने दो आँसू गिराये थे और आज इस पत्र को यहाँ देते समय अधिकार प्राप्त वर्ग की हठ पर दया के दो आँसू मेरे नेत्रों से निकले हैं जो ज़बरदस्ती बापू के क़दमों पर चलने का दावा भरकर सेन्ट पाल ( St. Paul ) की भाँति उस पवित्र नाम को बट्टा लगा रहे हैं। क्या ऐसे लोग अपने उपरोक्त दावे की सच्चाई को बापू के इस पत्र की कसौटी पर लगा कर स्वयं निर्णय करने का साहस करेंगे?

—गिरधर

( देखिये पन्ना—पचहत्तर )

## चौथा अध्याय

जैसा कि मैं पीछे लिख आया हूँ कि साबरमती आश्रम तथा वर्धा के मेरे अनेक मित्र मेरी ओर कुछ और ही आशा रख रहे थे। उनमें से एक श्री आनन्द टी० हिंगोरानी* चाहते थे कि मैं पूना में श्री दिनशा मेहता के साथ मिलकर वहाँ के नेचर-क्योर क्लिनिक को बढ़ावा दूँ।

पूना में मुझे श्री दिनशा मेहता से मिलने का तथा उनके क्लिनिक को देखने का सुअवसर तो मिला था और श्री दिनशा मेहता मुझे अच्छे सज्जन व्यक्ति भी प्रतीत हुये। उनका स्वभाव मैंने अपने स्वभाव से कहीं अच्छा और नम्र पाया किन्तु प्राकृतिक चिकित्सा की दृष्टि से उनका नेचर-क्योर क्लिनिक मुझे कुछ जँचा नहीं और मैं विनम्रतावश अपना स्पष्ट विचार श्री हिंगोरानी को न देकर इस विषय पर मौन ही रहा। इसी सम्बन्ध में श्री आनन्द टी० हिंगोरानी ने अपने इस पत्र द्वारा अपनी न्याययुक्त शिकायत करांची से लिखी :

* श्री आनन्द टी० हिंगोरानी बापू के एक पुराने अनुयायियों में हैं तथा श्री दिनशा मेहता के मित्र हैं। पहले यह करांची में थे। देश के विभाजन के बाद अब इलाहाबाद में रहते हैं। बापू के लेखों का संग्रह करके उन्हें अनेक पुस्तकों के रूप में छाप कर इन्होंने एक सराहनीय काम किया है।

Sahitipur, Karachi.
29. 7. 34.

Dear Dr. Sharma,

I had written to you a P. C. from Ahmedabad, telling you there-in to get yourself in touch with Dinshah Mehta. I had hoped that you would do so and also inform me about it. But, to my surprise, I now learn from Dinshah that you have had no correspondence with him since you left Poona. May I know what has made you so silent? I do hope you are keeping well and nothing is really the matter with you. How are your children and wife? Are they still at Wardha? Do please let me know about your immediate future programme. Also I would request you once again to sound Dinshah's views regarding the Nature Cure Institute and then see if you can help him tide over the present crisis.

I am awaiting your reply anxiously,

With kind regards,

Your's sincerely,
Anand T. Hingorani.

—[illegible]

साहितीपुर, करांची
२६–७–३४

प्रिय डा० शर्मा,

मैंने आपको एक पोस्टकार्ड अहमदाबाद से लिखा जिसमें मैंने आपको दिनशा मेहता से अपने सम्बन्ध स्थापित करने को कहा था। मेरी आशा थी कि आप मिले होंगे और उसके बारे में मुझे भी सूचित कर देंगे। किन्तु आश्चर्य है कि दिनशा मेहता द्वारा मुझे अब ज्ञात हुआ कि आपने पूना से जाने के बाद उनसे कोई पत्र व्यवहार नहीं किया। क्या मुझे अपनी इस खामोशी का कारण बतलायेंगे? आशा तो यह है कि आप सकुशल होंगे और कोई गड़बड़ न होगी। बाल बच्चे कैसे हैं क्या अभी वह वर्धा ही हैं? कृपया अपना तात्कालिक प्रोग्राम मुझे अवश्य बताओ। मैं तो फिर आपसे अनुरोध करता हूँ कि प्राकृतिक चिकित्सा की संस्था के सम्बन्ध में दिनशा मेहता के विचारों को एक बार टटोल लो और देखलो कि वर्तमान संकट काल काटने में आप उनकी क्या सहायता कर सकते हैं।

आपके पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में हूँ। शुभ कामनाओं के साथ।

आपका शुभचिन्तक,
आनन्द टी० हिंगोरानी

बापू के २–७–३४ के पत्र ने मुझे व्याकुल कर दिया था और मेरे मस्तिष्क में श्री रामदास के स्वास्थ के अतिरिक्त किसी अन्य बात के लिए स्थान ही नहीं रहा था। खुरजा में बस्ती से बाहर किसी खुली जगह का इन्तज़ाम करने के विचार से मैं एक हफ्ते पहिले वहाँ पहुँच गया और बापू तथा जमनालाल जी को इसकी सूचना दे दी। खुरजा मेरा जन्मस्थान होने के कारण

मुझे पूरी आशा थी कि यहाँ के मशहूर सेठों की कोई भी कोठी मुझे श्री रामदास को कुछ दिवस यहाँ ठहराने के लिये आसानी से मिल जायगी; लेकिन मनुष्य की कायरता की पराकाष्ठा का प्रथम अनुभव मुझे यहाँ हुआ जब कि बापू के नाम लेने से भी यहाँ के सेठ डरते थे। कोठी या मकान मिलने का तो प्रश्न ही क्या था मुझे श्री रामदास के लिए यहाँ किसी सेठ की गाड़ी भी न मिल पायी जो स्टेशन की टूटी हुई चार मील की सड़क से उन्हें मैं आराम से ला सका होता। आख़िर किसी तरह एक पुरानी मुस्लिम इमारत के एक हिस्से को मैंने उनके ठहराने के लिए ले लिया। श्री रामदास वर्धा से तो निश्चित तिथि पर चल दिये थे किन्तु दिल्ली में अपने छोटे भाई के साथ रुक गये और इन पत्रों द्वारा मुझे सूचना दी।

४०

मार्फ़त देवदास गांधी,<br>दिल्ली २०-७-३४

प्रिय भाई साहेब,

मैं उम्मीद रखता हूँ कि कल रात का लेट फी पेड तार किया है सो समय पर मिला होगा और खाने-पीने का व स्टेशन आने के कार्य से आप बच गये होंगे। परिस्थिति के वश होकर ही मैं यहाँ रुका हूँ बाक़ी मेरा मन खुर्जा में ही है। आपको यह मेरा रुक जाना चुभता हुआ भी होगा और दुःखदायी भी लगता होगा परन्तु आख़िर में अपन सब विधि के ही वश में व आश्रय है न? अब तक जो कुछ हो रहा है वह ठीक ही समझिये। आपकी और मेरी उसमें परीक्षा दीख पड़ती है। मैं यदि यहाँ न आता तो एक प्रकार का मेरे से अनर्थ हो जाने का सम्भव था। खैर विशेष तो जब मिलेंगे तब। मैं मानता हूँ कि अगले सोमवार ता० २३ के रोज अवश्य सुबह ६ बजे की गाड़ी से यहाँ से

—अस्सी

निकल कर खुर्जा पहुँचूंगा। चि० कन्नु* ठीक है। वर्धा याद करता है। सौ० द्रौपदी बहन को प्रणाम बच्चों को प्यार ।

आपका,
रामदास गांधी

४१

मार्फत देवदास गांधी,
दिल्ली, २१-७-३४

प्रिय भाई साहब,

पू० जमनालाल जी सोमवार के दिन यहाँ आते हैं इसलिये सोमवार को नहीं परन्तु मंगलवार के रोज़ सुबह की ६ बजे वाली गाड़ी से आऊँगा। आप सोमवार के दिन पसंद करें तो आ जायँ। पू० द्रौपदी बहन को प्रणाम। बच्चों को प्यार। आशा है बच्चे ज्वर मुक्त होंगे। आपके फोड़े मिट गये होंगे। मेरा स्वास्थ अच्छा है।

लि० रामदास का
सप्रेम बंदन

२४ ता० को श्री रामदास अपने ५ वर्षीय पुत्र चि० कन्नु के साथ खुरजा आ गये और उनका इलाज प्रारम्भ हो गया। मेरी पत्नी ने भोजन बनाने का तथा सब बच्चों की देख-रेख का भार अपने ऊपर ले लिया ।

श्री रामदास के खुर्जा में मेरे साथ रहने से सरकारी कर्मचारियों की खोपड़ियों में दर्द होने लगा था और मुझे आश्चर्यजनक दुःख तो उस समय हुआ जब उन्होंने मेरी देख-रेख के लिए सी० आई० डी० के कुछ आदमी मेरे स्थान पर तैनात कर दिये थे। इसका नतीजा यह हुआ कि हमारी सुबह शाम

---

*रामदास जी का पुत्र जो उस समय लगभग ५ वर्ष का था उसे वह अपने साथ ही ले आये थे ।

की प्रार्थना में मेरे गिने-चुने ही कुछ मित्र आ पाते थे। हमारे इस प्रकार के बहिष्कार का मैंने श्री रामदास को बोध नहीं होने दिया किन्तु मुझे खुरजा में बनवास सा लगने लगा था।

बापू की हरिजन-यात्रा जो उन्होंने ४ अगस्त सन् १९३३ को एक वर्ष के लिए शुरू की थी उसका यह अन्तिम दौर था। उनकी यात्रा का प्रोग्राम तो मेरे पास रहता ही था उसी के अनुसार उन्हें यहाँ की प्रतिदिन की रिपोर्ट, सबकी दिनचर्या के साथ भेजता रहता था और उसी अपनी रिपोर्ट पर बापू की सलाह लिखवाकर उसे वापिस मँगा लेता था। इस प्रकार एक हफ्ते से अधिक की रिपोर्ट उनके पास भेजी जा चुकी थी किन्तु बनारस में बापू तथा पूज्य बा० की तबियत कुछ ख़राब हो गई थी। इसकी हमको चिन्ता न हो—इस ख्याल से उन्होंने ३ अगस्त को मेरी पिछली भेजी हुई सब रिपोर्ट वापिस करते हुए निम्न पत्र लिखा और दूसरे दिन अपनी और पूज्य बा० की कुशलता का तार दिया :

४२

चि० शर्मा,

तुम्हारा खत मिला। सब खतों के उत्तर की तो आवश्यकता अब नहीं है ना ? यदि है तो जिनकी चाहिये वह वापिस कर दो।

भाई यदि बिना संकोच शक्ति होने से आर्थिक मदद देना चाहें तो उनकी मदद लेने में मैं कोई अयोग्यता नहीं पाता हूँ इसलिये जितनी मदद वे दे सकते हैं देवें।

तुमको वहाँ बनवास सा लगता है यह अच्छी बात नहीं है। इसमें सुधारणा नहीं होगी तो रामदास पर उसका बुरा प्रभाव पड़ेगा। तुम्हारे काम में हम सबने रुकावट डाली है यह कैसे ? मैंने तो जितना उत्तेजन दे सकता था देने की चेष्टा की है। अनजानपणा में कुछ उलटा हुआ है तो तुम्हारे बताना चाहिये।

—बबासी

(२)

( देखिये पन्ना—बयासी )

देवी* को टाइफाइड कैसे ? और हुआ है तो उसका इलाज क्या तुम्हारे पास नहीं है ? बच्चों का दिल चाहे ऐसे किया जाय। मैं ज्यादा दखल देना नहीं चाहता।

३-८-३४

सब को बापू के
आशीर्वाद

वीर्यस्राव के लिए शीर्षासन अथवा अर्ध सर्वाङ्गासन अच्छा है इसी तरह सिद्धासन और प्राणायाम।

43

Mughalsarai

4th August, 1934

Dr. Sharma, Khurja

No temperature. Both well. Hope Ramdass strong.

Bapu.

४३

मुग़लसराय

४ अगस्त, १९३४

डा० शर्मा, खुर्जा

ज्वर नहीं है (हम) दोनों अच्छी तरह हैं। आशा करता हूँ रामदास बल प्राप्त कर रहा है।

बापू

---

*लेखक के पुत्र चि० देवीप्रसाद को आश्रम में ज्वर हुआ था वह खुर्जा में टाइफ़ाइड के रूप में हो गया था।

—तिरासी

बापू की बनारस यात्रा के समय 'श्री इराटे' नाम के एक हरिजन कार्यकर्त्ता ने एक विपक्षी सवर्ण हिन्दू के सर में लाठी मार दी थी। इसका बापू को दुःख हुआ और बनारस से वर्धा पहुँचते ही उन्होंने 'श्री इराटे' के उस अमल पर एक हफ्ते का अनशन रखकर स्वयं प्रायश्चित किया। यह अनशन ७ अगस्त को प्रारम्भ होकर १४ ता० को निर्विघ्न समाप्त हो गया। अनशन सम्बन्धी रिपोर्ट लगभग प्रतिदिन खुर्जा आती थी और श्री रामदास के स्वास्थ्य में हुई उन्नति की सूचना प्रतिदिन मैं वर्धा भेजता रहता था। नीचे के कुछ पत्र तथा तार इसी सम्बन्ध में हैं।

४४

वर्धा आश्रम,<br>
८-८-३४<br>
२॥ बजे दिन के

श्री भाई शर्मा जी प्रणाम।

आशा है आप लोग सकुशल होगें। आपका दो पत्र बापू जी ने लौटाया था लेकिन एक पुराना पत्र भूल से रह गया था। उसको मैं इस पत्र के साथ भेज रही हूँ। कल प्रातः ६ बजे से बापू जी का उपवास शुरू हो गया, कल ५॥ बजे सुबह खाना खाया था उसके बाद से कुछ नहीं लिया। आज दूसरा दिन है, ईश्वर की कृपा से तबीयत अभी तक ठीक है कोई चिन्ता की बात नहीं है। रात को नींद भी अच्छी आई थी। पानी भी पी रहे हैं। कोई तक़लीफ नहीं है। उनका तो विश्वास है कि इस बार का उपवास अच्छी तरह शान्ति से कट जायगा। ईश्वर ऐसा ही करें यही हम लोगों की प्रार्थना है। कल यहाँ के तीन डाक्टर नौ बजे दिन में आकर देख गये। वजन १००, ब्लड प्रेशर १४२:६८, नाड़ी ६२।

—चौरासी

INDIAN POSTS AND TELEGRAPHS DEPARTMENT.

NOTICE.

This form must accompany any inquiry made respecting this Telegram.

Charges to pay. Rs. As.

Handed in at (Office of Origin). Wardha — Date. 9 — Hour. 13 — Minute. 45

Service Instructions. — Words. 11

TO. Recd. here at 15 H. 28 M.

Dr Sharma Delhi

No nausea general condition very satisfactory

Mahadev

N.B.—The name of the Sender, if telegraphed, is written after the text.

( देखिये पन्ना—पच्चासी )

कल की रिपोर्ट इस प्रकार है : पानी ३२ औंस, सोडा २ ग्रेन, नमक २५ ग्रेन, पिशाब चार बार ( हुआ ) । नींद दिन में ६० मिनट ( आई ) रात्रि को ७ घंटे । आज का भी रिपोर्ट अच्छा है । आप लोग चिन्ता न करें । सब अच्छा होगा । सौ० द्रौपदी देवी को मेरा प्रणाम । बच्चों को प्यार । पत्र लिखेंगे ।

आपकी बहिन,
प्रभावती*

45

Wardha 9th. August, 1934

Dr. Sharma, Khurja.

No nausea. General condition very satisfactory.

Mahadev.

४५

वर्धा ९ अगस्त, १९३४

डा० शर्मा, खुरजा

मितली ( उबकाई ) नहीं है अन्य सब हालत बहुत सन्तोषजनक है ।

महादेव

*श्री जयप्रकाश नरायण की धर्मपत्नी

४६

बच्छराज एंड कम्पनी लिमिटेड,
३९५ कालबा देवी रोड,

१३-८-१९३४

प्रिय शर्मा जी,

आपका ९ ता० का पत्र मिला। श्री भाई रामदास का स्वास्थ्य सुधर रहा है पढ़कर सन्तोष हुआ। मेरा इलाज चालू है। डाक्टरों की राय है कि आपरेशन होना चाहिये। यदि आपरेशन हुआ तो यहाँ महीना डेढ़ महीना रहना पड़ेगा। आप कोई चिन्ता न करें। पू० बापू के उपवास ईश्वर कृपा से पार उतर जावेगा।

जमना लाल बजाज का
बन्देमातरम्

खुर्जा में अम्तुलसलाम का वर्धा से एक ख़त मुझे मिला जिसमें उसने अपनी किसी ज़रूरत के लिए मुझसे कुछ रुपये माँगे थे। बापू की मार्फ़त मनीआर्डर द्वारा मैंने उसे रुपया वर्धा भेज दिया। बापू को यह अच्छा नहीं लगा और अपने उपवास की समाप्ति के तीसरे दिन ही उन्होंने मुझे यह पत्र लिखा।

४७

चि० शर्मा,

शरनामें में मेरी गलती* हो गई इसका दुःख है होनी नहीं चाहिये थी। रामदास के हाल तुम्हारी दृष्टि से लिखो।

---

* बापू ने किसी लिफाफे पर मेरा पता लिखते समय 'खुर्जा' की जगह 'खुर्दा' लिख दिया था। वह पत्र बहुत दिन बाद उड़ीसा से लौट कर खुर्जा आया था। उसकी इत्तला बापू को मैंने पहिले ही दे दी थी।

पत्र—४७

( देखिये पन्ना- छियासी )

अमतुलसलाम को तुमने पैसे भेजे सो तो अच्छा नहीं था। तुम्हारे पास अब दान करने को पैसे कहाँ है ? अमतुलसलाम की ऐसी हालत भी नहीं जिस लिए किसी न किसी तरह उसे मदद पहुँचाना आवश्यक था। मैंने उसे बताया है उसका धर्म इस तरह पैसे नहीं लेने का था। वह समझ गई है। मित्रता का यह कभी अर्थ नहीं है कि हम एक दूसरों के दौर्बल्य को पोषे। उसका हेतु है एक दूसरों की उन्नति करना। इसे मैं नैसर्गिक उपचारक के अभ्यास का विषय मानता हूँ। नैसर्गिक उपचारक शारीरिक, मानसिक और आत्मिक व्याधि को पहचानता है उसका इलाज करता है और वह ज्यादातर आन्तरिक शक्तियों के विकास से। उसमें पृथ्वी, पाणी, आकाश, तेज और वायु की मदद ली जाती है। नैसर्गिक उपचारक से आत्मा की अधोगति अशक्य होनी चाहिये। इस दृष्टि से अमतुलसलाम का केस लो। उसे हृदय दौर्बल्य है। यह एक व्याधि है। दुर्बलता के वश होकर वह पैसे उड़ाती है अपने घर से पैसे लेने से हिचकिचाती है। उसको पैसे भेजना अधोगति वर्धक है न भेजना उन्नति वर्धक है। नैसर्गिक उपचारक पैसे नहीं भेजेगा।

१७-८-३४

बापू के
आशीर्वाद

श्री रामदास के स्वास्थ्य की उन्नति से सबको पूर्ण संतोष मिल रहा था। वजन ८ पौंड बढ़ गया था। शरीर में स्फूर्ति आ गई थी। इसी उन्नति के दौरान में उनको दक्षिण अफ्रीका शीघ्र भेज देने के लिए बापू द्वारा वहाँ के परमिट की उनके लिए मैं उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा था। मैं यह भली-भाँति समझे हुए था कि श्री रामदास खुर्जा अधिक दिन न रह सकेंगे और वर्धा जाते ही फिर गृहस्थ में फँस कर अपना सुधरता हुआ स्वास्थ्य खो बैठेंगे। लेकिन बापू ने उनका परमिट प्राप्त करने में अपने स्वभाव के अनुसार सस्ता और लम्बा

रास्ता अख्तियार कर रक्खा था। यदि श्री रामदास को एक वर्ष के लिए उस समय हिन्दुस्तान से बाहर रखकर दूसरे प्रकार के किसी धन्धे में लगा दिया जाता तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि आज बापू की उनके प्रति बहुत सी आशाओं को सफल बनाने में वह योग दे सकते होते। लेकिन विधि की गति निराली है उसके आगे किसी का वश नहीं चलता। आख़िर श्री रामदास को वर्धा जाने की तरंग उठी और प्रतिदिन वह उसके लिए मुझसे इसरार करने लगे। मेरे लड़के को भारी टाइफाइड हो चुका था। वह बहुत कमज़ोर था। श्री रामदास का ध्यान उसकी ओर भी दिलाया लेकिन कोई फल न मिला। अपनी सहायता के लिए सब हाल बापू को तथा जमनालाल जी को लिखे ताकि वही श्री रामदास को समझावें। जमनालाल जी तो अपने एक पत्र में पहले ही लिख चुके थे कि "मेरी राय है कि भाई रामदास इलाज छोड़कर अब वर्धा जाने का विचार न करें तो ठीक होगा। आप बापू जी से मिलेंगे ही उन्हीं की राय भी बहुत करके इस मामले में मेरी राय से मिलती होना सम्भव है।" अब उनका बम्बई में ओपरेशन हुआ था और वह हस्पताल में थे। लेकिन बापू ने अपने निम्न तार और पत्र द्वारा इस विषय का फैसला कुल मेरे ऊपर छोड़ दिया।

48

Wardha. 18th. Augst, 1934.

Dr. Sharma, Khurja

Do what you think proper about Ramdass.

Bapu.

४८

वर्धा १८ अगस्त, १९३४

डा० शर्मा, खुर्जा

रामदास के विषय में जो तुम उचित समझो वह करो।

बापू

—अट्ठासी

पत्र—४६

( देखिये पन्ना—नवासी )

चि० शर्मा,

जमनालाल जी को तो ओपरेशन हुआ है। मुंबई में हस्पताल में हैं। रामदास के बारे में तार दिया है। उचित किया जाय। देवी को ऐसे छोड़कर आने का धर्म मैं नहीं समझता हूँ लेकिन इस बारे में मेरा कोई आग्रह नहीं हो सकता है। पिता-धर्म प्रत्येक पिता अपने लिये बना लेता है। और तो अब क्या लिखूं? मिलने से अथवा खतों से बातें करेंगे।

१८–८–३४

बापू के
आशीर्वाद

बापू का उपरोक्त तार और पत्र मिलने के बाद मैं अपने रोगी के ही नाते श्री रामदास की भलाई के लिये यदि उनके साथ थोड़ा कठोर हृदय बना सका होता तो भी उनको आने वाली मुसीबतों से बचा लेता लेकिन मैं मोहवश ऐसा न कर सका और इसकी अपेक्षा अपने बच्चे को उसकी वैसी ही कमज़ोर हालत में उसकी माँ की निगरानी में छोड़कर मैंने श्री रामदास के साथ ही वर्धा जाना अपना धर्म समझ लिया; क्योंकि श्री रामदास को अपनी निगाह से अलग रखना अब मेरे लिये उचित नहीं था। वर्धा जाती बार भी श्री रामदास एक दिन के लिए अपने छोटे भाई के यहाँ दिल्ली में ठहरे और दूसरे दिन मेरे साथ वर्धा को रवाना हुए।

बापू उनके स्वास्थ्य और उनकी नई स्फूर्ति को देखकर तो प्रसन्न हुए किन्तु चि० देवी प्रसाद को उसकी कमज़ोर हालत में मेरे खुर्जा छोड़ आने से उन्हें दुःख हुआ। मैंने जब बापू को हमारी पूना में हुई सब बातों का स्मरण कराया तो मुझे मालूम हुआ कि बापू अपने बड़े पुत्र श्री मणिलाल गांधी को श्री रामदास के लिए दक्षिण अफ्रीका का परमिट हासिल करने के लिए लिख

—नवासी

चुके थे और उसके एक पखवारे तक आ जाने की आशा भी थी। बापू के इन शब्दों से एक बार फिर मुझे श्री रामदास के प्रति अपनी आशाएँ पूरी होती देख मैंने बापू की यह तजवीज़ तुरन्त स्वीकार करली कि 'दक्षिण अफ्रीका का परमिट आने तक मैं श्री रामदास को वर्धा न छोड़कर उन्हें साबरमती ले जाऊँ।'

साबरमती में मेरी सलाह के अनुसार श्री रामदास के लिए भोजनादि का उचित प्रबन्ध रखने के लिए मेरी पत्नी तो तुरन्त नहीं आ सकती थी अतः इस कार्य के लिए पूज्य बा० हमारे साथ साबरमती चलने को तैयार हो गईं। बापू को पूज्य बा का हमारे साथ जाना बहुत अच्छा तो नहीं लगा किन्तु इसके अतिरिक्त दूसरा कोई चारा भी नहीं था इसलिए पूज्य बा०, रामदास भाई तथा चि० कनु को लेकर मैं साबरमती को रवाना हुआ और उधर बापू ने तुरन्त यह पत्र मेरी पत्नी के नाम खुर्जा भेजा।

## ५०

चि० द्रौपदी,

तुम्हारे मेरा डर* तो छोड़ ही देना चाहिये। डराने की तो मैंने कोई बात नहीं कही थी। मैंने तो केवल माता पिता का अपने बच्चों के प्रति क्या धर्म है वह बताया। लेकिन कुछ भी हो अब उसे भूल जाना। मुझको निडर होकर लिखो।

अब बात यहाँ की। आज शर्मा, रामदास, कनु[1] और बा साबरमती गये। अच्छा ही हुआ। हिसाब जैसे मुझे दिया गया क़ायम रखा है।

* वर्धा में अपने बच्चों की तालीम के विषय में लेखक की धर्म पत्नी और बापू के बीच वार्ता हुई—बच्चों की माता चाहती थी कि उनको किसी पाठशाला में भेज दिया जाय; बापू का कहना था कि बच्चों को सच्ची तालीम उनके माता पिता से ही मिलती है। इसके बाद से लेखक की पत्नी ने इस विषय पर बापू को लिखना बन्द कर दिया था।

—नव्वे

( २ )

( देखिये पन्ना—नब्बे )

रामदास के चित्त को तुमने हर लिया है यह क्या चीज है ? अब्दुल सलाम का तो चोर लिया ही। बताओ यह क्या चीज़ है ?

तुमको साबरमती बुलाने का यदि होगा तो दस अथवा पचीस दिन के बाद होगा। यदि रामदास का दक्षिण अफ्रीका जाना हुआ तो बुलाने की बात छूट जाती है। अगर रामदास नहीं जायगा तो तुम्हारे साबरमती जाना है ही। दस दिन या २४ का मतलब यह है कि दक्षिण अफ्रीका से जहाज़ हर चौदह दिन आती है। एक शनिवार को आवेगी। उसमें अगर कोई पता न चला तो चौदह दिन के बाद तो मिलना ही चाहिये। तब तक भी न मिला तो रामदास नहीं जावेगा। बच्चे सब अच्छे होंगे।

वर्धा<br>२–६–३४

बापू के<br>आशीर्वाद

साबरमती के लिए आवश्यक वस्तुओं को एकत्रित करने में तो काफ़ी समय लगा ही था। मुझे स्टेशन पर भी जल्दी पहुँच कर अपने साथियों के लिए तीसरे दर्जे की मुसाफ़िरी की सुविधा करनी थी। अपने इन सब ज़िम्मेदारी के कामों में इतना व्यस्त रहा कि वहाँ से चलते समय बापू से दुबारा नहीं मिल पाया और जब गाड़ी चल दी तब इसका ख्याल आया तो सोचा कि "बापू मेरी इस प्रकार की बेहूदगी पर क्या कहेंगे !" मैंने साबरमती पहुँचते ही बापू से अपनी इस भूल की पत्र द्वारा क्षमा माँगी। और साधारणतया अहमदाबाद के किसी बड़े डाक्टर के नाम एक पत्र भी भेजने की प्रार्थना की जो वक्त ज़रूरत श्री रामदास के लिए मुझे अपना सहयोग दे सके। बापू का यह पत्र उसी के उत्तर में है :

## ५१

चि० शर्मा,

तुम न मिल सके इसका मैंने बुरा नहीं माना, अच्छा माना। मेरा समय बचाने के लिये नहीं आये ऐसा समझ लिया।

डाक्टर की ऐसी जरूरत मैं महसूस नहीं करता। मूत्र—मल परीक्षा तुम्हारे जानना चाहिये। लेकिन एक पत्र मैं भेजता हूँ। इस्तमाल करना है तो अवश्य करो।

बा० को मैं लिखूँगा कि जो कहना है कहा करे। ऐसे तो मैंने उसको कह दिया है। बा मुझको कुछ भी लिखेगी मैं फ़ौरन तुमको लिखूँगा।

जामनगर* में क्या है उसका पता लगाकर मुझे लिखो ज्यादा बाद में मैं जान लूँगा और लिखूँगा। तुमने अपनी रसोई पकाने का इरादा कर लिया है सो अच्छा तो लगता है लेकिन हठ† न किया जाय। क्या पका लेते हो? फिनिक्स से जो खबर आजायगी शीघ्र भेज दूंगा। तय हो जाने से द्रौपदी को बुला सकते हो मैंने खत लिख भेजा था। यदि वहाँ कुछ तजरबा मिल गया है और अच्छा चल रहा है और रामदास को दक्षिण अफ्रीका जाने की आवश्यकता ही नहीं है तो द्रौपदी को शीघ्र बुला सकते हो। सोमवार को कुछ न कुछ पता चल जायगा।‡

७–६–३४

बापू के
आशीर्वाद

* जामनगर के राजा ने अपने निजी प्रयोग के लिए चारों ओर घूमने वाला पृथ्वी से काफी ऊँचा एक सोलेरियम (सूर्य स्नान घर) बनवाया था। उसकी सही जानकारी करने के लिए मैंने बापू को लिखा था।

† भोजन में तली हुई चीज़ें व चाय तथा कोफ़ी इत्यादि मैं नहीं ले सकता था। मेरी खुराक अधिकतर चोकर मिली मोटी रोटी, हरी पत्तेदार भाजी और दूध दही है इसके लिए पूज्य बा० को मैंने तकलीफ देना उचित नहीं समझा क्योंकि थोड़े समय में ही मैं इस खुराक को स्वयं आसानी से तैयार कर लेता था।

‡ श्री रामदास का दक्षिण अफ्रीका के लिए परमिट आया ही नहीं।

—बानवे

( देखिये पन्ना—इक्यानवे )

पत्र—९२

( देखिये पत्र—तिरानवे. )

साबरमती नदी में बाढ़ आई हुई थी और आश्रम में मलेरिया का ज़ोर हो गया था। श्री रामदास को भी एक दिन साधारण मलेरिया ज्वर हो गया। अहमदाबाद के बड़े डाक्टर (क) के सहयोग से कुनैन द्वारा उनके मलेरिया पर तुरन्त क़ाबू पा लिया गया और इसकी सूचना बापू तथा जमनालाल जी को भी मैंने भेज दी थी। उनके नीचे के दो पत्र इसी सम्बन्ध में हैं :

५२

चि० शर्मा

तुम्हारा पत्र मिला। चाबियों* के बारे में प्रभावती पर का पत्र देखा। रामदास के बारे में बुख़ार का मुझे डर था ही। जो हुआ सो हुआ। मेरा ख़्याल है इससे अच्छा ही होगा। डाक्टरों की दवाई करना योग्य ही था। धीरज से काम लेना। डाक्टर लोग कहें वही किया जाय। तुम्हारे नर्स बनकर वे लोग जैसा कहे वही करना है। इसमें सब शुभ है परिणाम का स्वामी एक ईश्वर है। मुझे नित्य पत्र तुम्हारी तरफ से आना चाहिये।

इस वक्त तो दक्षिण अफ्रीका की बात भी क्या करूँ। मैं रास्ता साफ करने की कोशिश करता रहूँगा। आगे क्या होगा सो देखेंगे।

वर्धा

ता० १२-६-३४

बापू के
आशीर्वाद

५३

बम्बई,
१४-६-३४

प्रिय शर्मा जी,

आपका कार्ड मिला। मेरा स्वास्थ्य ठीक हो रहा है। कम बोलने

---

*वर्धा में मेरे सामान को बापू धूप वगैरा दिलाना चाहते थे उसकी चाबियां बहिन प्रभावती पर थीं। उनको मैंने चाबियों के लिए लिख दिया था।

की कोशिश करता हूँ। भाई रामदास को ज्वर आया लिखा सो ठीक हो गया होगा। ज्वर उतर जाने की सूचना मुझे भिजवाना। पूज्य बा को प्रणाम कहना।

जमनालाल बजाज का
बन्देमातरम्

डा० (क) गुजरात प्रान्त में तपेदिक़ के विशेषज्ञ थे। श्री रामदास का मलेरिया दूर होने के बाद उसने रामदास के शरीर की परीक्षा की और उनका सीधा फेफड़ा कमज़ोर हुआ बतलाया और जो मैं सात्विक ख़ुराक श्री रामदास को दे रहा था वह भी उस डाक्टर को स्वास्थ्य वर्धक न लगी। उसकी राय में श्री रामदास को अण्डों का प्रयोग कराना आवश्यक जान पड़ा। इतने बड़े ज़िम्मेदार डा० का निदान और उसी के अनुसार उसके भोजन सम्बन्धी सुझाव का कुछ अर्थ तो होना ही था। पूज्य बा० के हृदय पर डा० (क) की गहरी छाप पड़ी और उनको उसी डाक्टर के इलाज में श्री रामदास को रखना उचित मालूम हुआ।

मैं अन्य प्राकृतिक चिकित्सकों को भांति अन्डों के नाम से घबराता नहीं था। बल्कि उचित समय पर उसके योग्य रोगी को उनका प्रयोग भी कराता हूं किन्तु श्री रामदास के रोग को तथा उनकी मनोवृत्ति को भली-भांति जानने के कारण मेरे हृदय में डा० (क) की दोनों ही बातें न उतर पाईं। यहां मैं धर्म संकट में पड़ गया। पूज्य बा० की इच्छा के विरुद्ध जाना मुझे अपनी सीमा का उलंघन करना था; और उनकी इच्छानुसार डा० (क) की तजवीज़ों पर अमल करना मेरे लिए मुझे अपनी ही आत्मा का हनन करना था। उधर श्री रामदास को भी मेरे बताये हुए कठोर अनुशासन में और अधिक रहना पसन्द नहीं प्रतीत हुआ अतः पूज्य बा० के आदेशानुसार तथा श्री रामदास की इच्छा देखकर उन्हें डा० (क) का इलाज पूर्णतया कराने की छूट देने का मुझे निर्णय करना ही पड़ा।

—चौरानबे

श्री रामदास के बाद मेरा ध्यान स्वाभाविक ही मेरे बीमार बच्चे की ओर जाना था। इसलिए बापू को तार द्वारा समाचार देकर मैंने अपने घर-खुर्जा जाने की उनसे इजाज़त मांगी। उन दिनों वर्धा में कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक होने को थी। बापू कांग्रेस से अलग ही नहीं बल्कि उसके चार आने के मेम्बर भी न रहने की सोच रहे थे। उन परिस्थितियों में बापू के लिखे हुए निम्न तार और पत्र मुझे साबरमती मिले।

54

Wardha 12-9-34.

Sharma, Ashram, Sabarmati

No hurry going home. I must hold you your promise. Produce satisfactory certificate there. Writing to-morrow. Wire Ramdass daily progress.

Bapu.

५४

वर्धा १२-९-१९३४

शर्मा, आश्रम साबरमती

घर जाने की जल्दी नहीं है मुझे तुम्हारे वचन पर तुमको क़ायम रखना है वहाँ संतोषपूर्ण प्रमाणपत्र हासिल करो कल (तुमको) पत्र लिख रहा हूँ रामदास के प्रतिदिन की उन्नति तार द्वारा भेजो।

बापू

चि० शर्मा,

दतून करके तुम्हारा पत्र पढ़ गया। कल पूरा नहीं पढ़ सका था। ऐसे आजकल मेरे हाल हो गये हैं। कल के तार का तो उत्तर दे दिया है आज भी यही उत्तर है। धीरज से काम करो। वहाँ से हट जाओगे तो रामदास का शरीर और बिगड़ेगा। यह तो यहाँ बैठे हुए मेरा अभिप्राय है। सुरेन्द्र* वहाँ है वह जैसा कहे ऐसे किया जाय। मेरा अभिप्राय यह है तुम्हारे मूक नर्स बन जाना। डाक्टरों का अपमान भी सहन करके रामदास जहाँ तक खुश रहता है उसको साथ देना। जो बनता रहे मुझे बताते रहो। बा० को सहन करो। जो वहाँ बन रहा है उस बारे में मैंने चेतावनी दी थी। कनु† को अभी भी यहाँ भेज दिया जाय तो अच्छा है ही। लेकिन इन सब बातों में सुरेन्द्र की सुनो। मैं यहाँ बैठे हुए कर्तव्यमूढ़ हूँ।

मेरे कारण लोग भयभीत हो जाते हैं यह मैं जानता हूं। क्या करूं ? इसी कारण मैं कांग्रेस छोड़ना चाहता हूं इसी कारण सबसे अलग रहना पसन्द करता हूं लेकिन यह सब बलात्कार से नहीं होगा। जैसे ईश्वर चाहता है ऐसे ही होगा। तुम्हारा अन्तिम वचन सर्वथा योग्य है। हिन्दुस्तान का अथवा एक मनुष्य के क़िस्मत का ठेका लेने वाला मैं कौन ? ऐसा होते हुए भी रागादि के कारण मैं अनजानपन में भी भ्रम में पड़ता हूंगा। सब कुछ देखते हुए यदि रामदास को छोड़ना ही पड़े तो यहाँ होकर जाना। द्रौपदी और बच्चों का ख्याल यहाँ कर

---

*सुरेन्द्र—बापू के पुराने साथी।

† कनु—श्री राम दास का पांच वर्षीय पुत्र।

पत्र—५४

चित्र—३४

(४)

( देखिये पन्ना—छानवे )
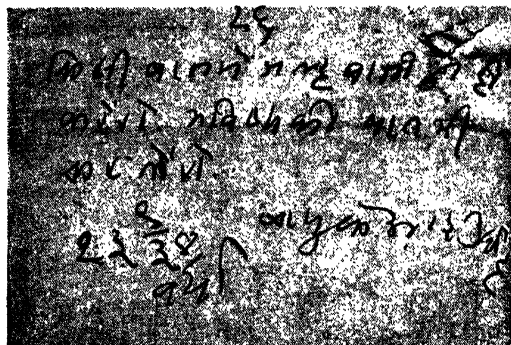
( देखिये पन्ना—सत्तानवे )

लेंगे। मुझे भी उनकी चिन्ता है ही। लेकिन किसी बात में जल्दबाज़ी नहीं करेंगे। भविष्य की बात भी कर लेंगे।

वर्धा
१३-९-३४

बापू के
आशीर्वाद

बापू के उपरोक्त तार और पत्र पढ़कर मैंने उन्हें कुल सच्चे वाक़यात स्पष्ट रूप में दो लम्बे पत्रों द्वारा भेजकर अपनी स्थिति ब्यान कर दी। श्री रामदास स्वयं ही मेरी निगरानी से हटना चाहते थे। उसपर फिर बापू ने यह पत्र लिखा :

५६

चि० शर्मा,

तुम्हारा हिन्दी ख़त आज मिला। इंग्रेजी कल मिलना चाहिये। मैं तो तुम्हारे सब ख़त बराबर पढ़ लेता हूँ।

रामदास ही यदि तुमसे मुक्ति चाहता है तब तो मुझे कहना नहीं होगा। तब तुम्हारे यहाँ आ जाना है मैं कुछ समझ नहीं सकता हूं क्या हो रहा है।

बा क्या करती है, कहती है। सुरेन्द्र वहाँ है यह बहुत अच्छी बात है। कैसे भी हो तुमारे अपनी शांति नहीं खोना। तुमने रामदास के लिये जो कष्ट उठाया है सो मेरे ध्यान के बाहर कभी नहीं रहा है। और अन्त में तुम्हारा मेरे पास आना कुछ रामदास के लिए नहीं हुआ है। यह तो नैसर्गिक उपायों के कारण ही है इसलिए इस बारे में जो कुछ

है वह तो करने का बाक़ी है ही। जब मिलेंगे तब बातें करेंगे।

तुम्हारा ख़त वापिस करता हूं जमनालाल जी का नहीं। उसे फाड़ डालता हूं।

वर्धा
१७-६-३४

बापू के
आशीर्वाद

जमनालाल जी का ख़त भी भेजता हूँ। शायद यही तुम्हारी फाइल कापी है।

बावजूद परिस्थितियाँ बदलने के मैंने श्री रामदास को उनका खुर्जा जितना वज़न हो जाने तक किसी न किसी तरह अपनी निगरानी में रक्खा। लेकिन इतने पर भी जब वहाँ के डाक्टर (क) ने अपनी पहिली राय नहीं बदली और श्री रामदास की भी इच्छा डाक्टरी इलाज कराने की देखी तब श्री रामदास को वहाँ के डाक्टर (क) के सुपुर्द मैंने कर दिया। उधर खुर्जा से मेरी छोटी बच्ची (कृष्णा) के भी बीमार पड़ जाने की ख़बर मुझे मिली थी। यह सब अंतिम समाचार मैंने तार द्वारा बापू को भेज दिये तो उनका यह पत्र मिला :

५७

चि० शर्मा,

तुम्हारा तार मिला था। तार का अमल मिलते ही किया और द्रौपदी को कल तार भेज दिया। यदि रामदास तुमको छोड़ने पर राज़ी हो गया है तो शीघ्र वर्धा आ जाओ और मेरे पास दो तीन दिन अथवा कम रह कर अब तो खुर्जा ही चले जाओ। द्रौपदी के ख़त का मेरे पर असर यह हुआ है कि तुम्हारे उससे अलग रहना पाप है। देवी की देख-भाल करना तुम्हारा प्रथम कर्तव्य है। यदि उसकी रक्षा तुम्हारे से हो ही न सके तो तुम्हारे उसको दिल्ली में छोड़ना शायद उचित होगा। मेरी दृष्टि में तो वह तुम्हारी पतन की निशानी होगी। लेकिन तुम्हारा धर्म

( देखिये पन्ना—अट्ठानवे )

नियत करने वाला मैं कौन ? अन्त में तो तुम्हारा हृदय कहे वही तुम्हारा धर्म हो सकता है। और तो क्या लिखूँ ?

वर्धा
२०-६-३४

बापू के
आशीर्वाद

श्री रामदास के छोड़ने का मुझे दुःख था लेकिन धर्म ने मुझे ऐसा करने को मजबूर किया था। श्री रामदास को भी कुछ कम दुःख न था परन्तु उनको भी उनका हृदय डा० (क) के निदान के कारण उन्हीं का इलाज कराने को बाध्य कर रहा था। उनका आगे इलाज किस तरह किया गया और उसका क्या परिणाम रहा यह सब कुछ तो उनके पत्र तथा आगे आने वाली घटनाएँ स्वयं बता सकेंगी।

१८ ता० को मैं वर्धा के लिए रवाना हुआ लेकिन १७ की रात्रि को श्री रामदास का एक लम्बा पत्र मुझे मेरे कमरे में मिला उसकी कुछ अन्तिम पंक्तियाँ ही यहाँ दे सका हूं।

५८

प्रिय भाई साहब,

……तुमने जो कुछ मेरे लिए किया है वह कभी मेरे दिल में से नहीं जा सकता। तुम्हारा प्रेम, त्याग उसी दिन भूल सकता हूं जब पागल बन जाऊँगा या तो अभिमान में आकर कृतघ्नता का मेरे पर साम्राज्य होगा।

तुम्हारा
रामदास गांधी

इसके बाद उनके डाक्टरी इलाज के सम्बन्ध में निम्न कुछ सूचनायें उनके पत्रों द्वारा मुझे वर्धा में मिलती रहीं :

—निन्नाणवे

## ५६

हरिजन आश्रम,
साबरमती।
ता० २६-६-३४

प्रिय भाई साहब,

तुम्हारी याद आया करती है। वर्धा जाकर तुम्हारी शान्ति बढ़ी होगी। तुम्हारा भविष्य कार्य-क्रम क्या निश्चित हुआ? वर्धा ही रहोगे? पूज्य बापूजी के बढ़िया-बढ़िया खत आते रहते हैं। तत्वज्ञानकारी भाषा में लिखा हुआ रहता है मैं उसमें से क्या व कितना, ग्रहण कर सकूँगा वह पता नहीं। मेरी ट्रीटमेंट अच्छी चल रही है। प्रेम युक्त सेवा मिल रही है.....................शक्ति के इन्जेक्शन देते रहते हैं। Right Lung is weak that is the X-Ray finding...... ............पू० बा० की चिन्ता मेरे बारे में कम क्या अधिक होती जाती है।

तुम्हारा
रामदास गांधी

## ६०

c/o Seth Vadilal Sarabhai Hospital,*
Ahmedabad,
2-10-34.

प्रिय भाई साहब,

तुम्हारा खत व हिसाब मिला कोई खास भूल नहीं दीख पड़ती...

---

*इन्जेक्शन से पूर्ति न होने पर डा० : क : ने श्री रामदास को उपरोक्त हस्पताल के स्पेशल वार्ड में दाखिल कर लिया था।

—सौ

डा० लोग अपना सारा कला कौशल मेरे पर खर्च रहे हैं प्रेम भाव की भी कमी नहीं। डा० (क) व डा० (ख) दोनों खुशमिजाज़ हैं व कुशल माने जाते हैं।......सावधानी से खाता हूँ। दूध व फल का मेल नहीं करता। दूध व शाक साथ लेता हूं। स्पेशल कमरा मिला है मोटा हवादार व अन्य मरीज़ों से दूर है। मुझे मिलने सब कोई आते हैं भाई सुरेन्द्र जी भी। थोड़ा पढ़ता हूं बाक़ी पत्र लिखवाना लिखना ऐसा चलता है.........पू० बापू का तप भी कहां कम है ? हम सबके लिए कितना सोचते हैं। 'मुझको तुम्हारी ख़ुशी में मेरी ख़ुशी है' ऐसा लिखा करते हैं......

लि० आपका स्नेही,
रामदास

६१

वा० सा० अस्पताल,
अहमदाबाद,
२०-१०-३४

प्रिय भाई,

तुम्हारा पत्र ता० १३ का दो दिन पर मिला। भाई सुरेन्द्र जी पर का तुम्हारा पत्र पढ़कर आनन्द हुआ.........मेरा स्वास्थ अच्छा ही है हाज्मा अच्छा है.........अब तो अन्डे अनफर्टिलाईजड की कमी है लेकिन उससे बचना चाहता हूं...भाई पुरुषोत्तम* की तबीयत अच्छी नहीं ऐसा पू० नारायण दास भाई लिखते हैं। रक्त विकार होगा। कब्ज़ तो न्यूनाधिक प्रमाण में रहती है मुँह पर फुनसियाँ होने लगी

*श्री नारायण दास गाँधी के बड़े पुत्र।

हैं उसे दवा से जला देते हैं खुराक तो दूध रोटी व बेनिमक का उबाला हुआ साग ही खाते हैं पू० ना० भाई ( नारायण दास गांधी ) लिखते हैं कि डा० शर्मा तो अब कन्या-आश्रम के हेल्थ आफिसर* बने हैं।......तुम्हारा परिचित श्री आनन्द हिंगोरानी† का मेरे पर कार्ड है। बम्बई में के० ई० एम० होसपिटल में बवासीर का आपरेशन करवाया है। मेरे से खबर पूछते हैं व सूचना देते हैं कि भाई शर्मा को कहो कि "मुझे आनन्द होगा जो वे कुछ भी मदद डा० दिनशा मेहता‡ की कर सकेंगे।"

......सेठ पाल भाई रुस्तम जी को क़रीब-क़रीब तुम्हारा जितना ही दुःख होता है कि वे मुझे अफ्रीका न ले जा सके वे तो ३१-१०-३४ की जहाज़ से जायेंगे।......मेरा वज़न** ६२ है......पू० बा० अच्छी हैं चि० कनु भी तन्दुरुस्त है पूज्य बापू का कार्य-क्रम जानने पर मेरा यहाँ रहना न रहना निश्चित होगा।

तुम्हारा भाई
रामदास

* यह शब्द व्यङ्गात्मक थे क्योंकि मैं कन्या-आश्रम का हेल्थ आफिसर कभी नहीं रहा।

† श्री टी० हिंगोरानी पहिले भी इस विषय पर मुझे कई बार लिख चुके थे।

‡ डा० दिनशा मेहता पूना में नेचर क्योर क्लीनिक के मालिक हैं।

** श्री रामदास का १८-९-३४ को ६८ पौंड अर्थात् खुर्जा जितना ही वज़न मैंने छोड़ा था।

## पांचवा अध्याय

बापू ने अपने २०-६-३४ नं० ५७ के पत्र में मुझे सलाह दी थी कि मैं वर्धा दो तीन दिन उनके पास रहकर फिर खुर्जा अपने बच्चों की देखभाल के लिए चला जाऊँ। किन्तु मेरे वर्धा पहुँचने पर बापू ने कहा कि वह मेरे बच्चों का हाल स्वयं तार द्वारा दरियाफ्त कर रहे हैं। जैसा कि निम्न तार से ज़ाहिर है :

62

Wardha 16. 10. 34

Draupadi Devi Care
Nathmaldas Beharilal, Danganj, Khurja.
Wire Krishna's health.

Bapu

६२

वर्धा ता० १६-१०-३४

द्रौपदी देवी मार्फ़त
नथमल दास बिहारीलाल, दानगंज खुर्जा,
कृष्णा के स्वास्थ्य (के समाचार) तार से भेजो।

बापू

इसलिए मुझे आश्रम में ही रह जाने का आदेश मिला। बापू की ऐसी किसी भी नीति पर जो मुझे अनोखी और असम्भव सी प्रतीत होती थी, आए दिन मेरा उनसे झगड़ा रहता था। किन्तु तीव्र मतभेद होते हुए भी जब उनका मुझे कोई आदेश मिलता था तो एक सिपाही के नाते मैं तुरन्त उसे मान लेता था। बापू को कभी-कभी अपने ऐसे आदेशों से एक बार छोड़ कई बार कुछ कष्ट भी उठाने पड़े थे लेकिन फिर उन कष्टों की ओर ध्यान न देना ही मैंने अपना कर्त्तव्य बना लिया था और इसमें मुझे बड़ा आनन्द मिलता था। यही हाल बापू के उपरोक्त आदेश को मेरे स्वीकार कर लेने से हुआ। बापू के अगले पत्रों का पूर्णतया रसपान कराने की इच्छा से मुझे बापू के प्रति अपने दृष्टिकोण को रखना आवश्यक जान पड़ा है जिसके लिए पाठकों से मैं क्षमा माँगता हूं।

मेरी दृष्टि में बापू का जीवन महात्मा ईसा के समान था और उसी तरह उनके ईर्द-गिर्द भी मुझ जैसे पापियों का समूह अपने गुनाहों से बच निकलने के लिए कोई मार्ग ढूँढ लेने की इच्छा से सदैव उन्हें घेरे रहता था या सरल भाषा में यों कहिये कि बापू का जीवन एक प्रयोगात्मक जीवन था और उनका आश्रम उनकी प्रयोगशाला का ही एक रूप था। जिस तरह एक प्रयोगशाला में अनेक प्रकार की विषैली वस्तुयें भी रहती हैं उसी तरह बापू के आश्रम में भी अनेक प्रकार के विषैले व्यक्ति भी रहते थे। जहाँ तक सरल और साधारण प्रयोग करने या कराने का प्रश्न है वह तो मेरे ख्याल से किसी भी व्यक्ति को किसी भी परिस्थिति में करने की छूट दी जाय तो कोई विशेष हानि की सम्भावना नहीं किन्तु (Sex) स्त्री-पुरुष सम्बन्धी जैसे गम्भीर और विषैले प्रयोगों के करने का अधिकार तो प्रयोगशाला के अनुभवी और समर्थ मालिक को ख़ुद अपने ही तक सीमित रखना उचित है। इन प्रयोगों को कोई अयोग्य व्यक्ति करने का प्रयत्न करे तो वह मूर्ख तो कहलायेगा ही अपितु ख़ुद भी उनके भयंकर परिणामों से बच नहीं सकता।

बापू में किसी भी प्रयोग करने की तथा उसके सम्भावित दुष्परिणामों से

बचे रहने की शक्ति थी। बापू सामर्थ्यवान थे। उनमें एक अदम्य इच्छाशक्ति थी जिसके द्वारा वह अपरिपक्वावस्था में ही लिये हुए अपने ब्रह्मचर्य व्रत को आदि से अन्त तक पूर्णतया निभा सके थे। उन जैसे अदम्य इच्छाशक्ति रखने वाले महानपुरुष की नक़ल एक साधारण व्यक्ति को स्त्री-पुरुष सम्बन्धी जैसे नाजुक मामलों में करते हुए देखकर मुझे दुःख होता था। यही एक ऐसा विषय था जिस पर मेरे और बापू के विचारों में बड़ा अन्तर रहने लगा था।

बापू का व्यवहार प्रत्येक आश्रमवासी के प्रति पितृवत् ही नहीं बल्कि मातृवत् भी रहता था। वह अक्सर कहा करते थे कि "जगत पिता तो मैं बना किन्तु जगत माता कहाँ से लाऊँ ?" विशेषकर कन्याओं और महिलाओं के साथ तो उनका स्नेह मातृवत् ही रहता था। मैंने देखा कि उनको पत्र लिखते समय बापू कहीं-कहीं अपने को माता की तरह स्त्री लिङ्ग में भी सम्बोधित कर जाते थे। वह उन्हें स्वयं नर्स करते थे, और उनके अनेक ऐसे कार्य जो केवल माँ ही अपनी पुत्री के लिए कर सकती है बापू स्वयं निःसंकोच कर बैठते थे। कन्यायें भी उनके साथ उसी तरह निर्भय तथा निःसंकोच रहती थीं मानो वह अपनी माँ के साथ हैं। उनके अन्तिम दिनों में तो मेरी दृष्टि से बापू पर यह श्लोक पूर्ण-रूपेण लागू हो चुका था कि "त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव" जिसको देखकर कुछ नवीन आगन्तुक तो आश्चर्य, भ्रम और सन्देह में भी पड़ जाते थे। ऐसे उच्च पवित्र महान पुरुष की (Sex) स्त्री-पुरुष सम्बन्धी बातों की नक़ल करना मेरी निगाह में एक बेहूदेपन का ढोंग "हिप्पोक्रेसी" ही था और आश्रम में वैसे ढोंगियों की कमी भी नहीं थी। इसलिए बापू से मेरी यही विनम्र प्रार्थना रहती थी कि वह या तो आश्रम में स्त्रियों के साथ अपने मातृवत् वर्तावे को अपने तक ही सीमित रक्खें तथा हम सब के लिए उस पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाय और नहीं तो वह कन्या-आश्रम को छोड़कर अपना स्थान अन्यत्र कर लें। बापू अपने स्वभाव के अनुसार हम सभी साधारण व्यक्तियों के मस्तिष्क और हृदय अपने जैसे ही शुद्ध और पवित्र देखना चाहते थे। अतः मेरा यह सब कुछ कहना उन्हें मेरा वहम,

अभिमान और परदोषदर्शन इत्यादि ही प्रतीत होता था और वह मुझे इस पर उपदेश देकर ख़ामोश कर देते थे।

मुझे बताया गया था कि मुझसे पहिले भी उनके पुराने साथियों ने इस ओर बापू का ध्यान कई बार आकर्षित किया था लेकिन बापू हमारे दुष्कर्मों पर स्वयं ही प्रायश्चित कर बैठते थे जिसके कारण उनसे सत्य छिपाया भी जाने लगा था। आश्रम में कुछ ऐसे पुराने ढोंगियों "हिप्पोक्रेटस" को मैं पहिले ही से शक की निगाह से देखता था। कुछ तो ऐसे व्यक्ति मेरे वहाँ पहुँचने के बाद स्वयं आश्रम से चले गये थे और कुछ ऐसी ही गम्भीर बातों के कारण निकाले भी जा चुके थे। एक पुराने भाई जो डबल एम० ए० कहे जाते थे और बापू के सादे पहिनावे से भी एक क़दम आगे ही रहने की चेष्टा करते रहते थे, साबरमती आश्रम में गीता और अँग्रेज़ी पढ़ाते थे। उसके बाद मौन रहना उनका नित्य का नियम था। उनके मानसिक रोगों का अध्ययन करके मैंने एक वर्ष पहिले ही साबरमती से बापू को उन भाई के विषय में संकेत कर दिया था। साबरमती आश्रम टूट जाने के बाद वही भाई वर्धा आश्रम में भी मुझे दिखाई पड़े। लेकिन उस समय मेरा ध्यान श्री रामदास की ही ओर सीमित था। फिर भी वह भाई जब एक दिन अर्धरात्रि को अपना भंडा फूटने पर आश्रम से स्वतः भागे तब मैंने बापू को अपने पिछले संकेत की याद दिलाई। उस पर बापू ने मुझे लिखा :

६३

चि० शर्मा,

तुम्हारा ख़त मिला है।......'म' के बारे में तुमने लिखा था सो याद नहीं है। लेकिन उस युग में तुम्हारी परीक्षा शक्ति के लिए मेरे मन में आदर कहां था? आज भी बहुत नहीं है। जल्दी से ख़्याल

बाँध लेते हो ऐसे दृष्टांत कहाँ मेरे पास कम हैं। लेकिन उसकी कोई हरज नहीं है। मलेरिया के बारे में तुम्हारा लेख पढ़ गया।.........

वर्धा
२२-६-३४

बापू के
आशीर्वाद

इतने कुछ होने पर भी बापू की इस गम्भीर विषय पर इस प्रकार की ढिलमिल नीति मुझे पसन्द नहीं आई। उधर आश्रम में चारों ओर काना-फूँसी होने लगी थी और इस सम्बन्ध में आश्रमवासियों के लिये मैं उनके काल्पनिक भय का कारण बन गया था। यह मुझे और भी अखरा क्योंकि आश्रम के प्रति मेरी भावनाएँ शुद्ध थीं। मैं तो वहाँ सब के भले के लिये ही आश्रम में स्त्री-पुरुष-सम्बन्धी नियम बदलवाना चाहता था। लेकिन अभाग्यवश आश्रम जैसी जगह में भी प्रान्तीयता का प्रश्न उठाकर वहाँ गुटबन्दी बनने लगी और खुर्जा के एक स्वामी कहाने वाले व्यक्ति को किराये पर बुलाकर बापू से मेरे बारे में बुराई भलाई कराने की नौबत भी पहुँच गई। विरोध, विघ्न और बाधाएँ तो वास्तव में मेरे जन्म के साथी रहे हैं इसलिए उनकी तो परवाह स्वाभाविक ही मुझे नहीं रहती और नाहीं वह मुझे मेरे मार्ग से कभी विचलित करते हैं। लेकिन उनके साथ ही यहाँ "प्रान्तीयता" और जुड़ जाने से मेरे आश्रम आने का मुख्य उद्देश्य ही भंग होता जब मैंने देखा तो इस विषय पर मैंने अपने कुछ मित्रों से परामर्श किया जिनमें बापू के पुराने साथी श्री सुरेन्द्र जी का नाम उल्लेखनीय है। मुझे उनसे काफी बल मिला और अन्त में मैंने आश्रम छोड़ देने का निश्चय कर लिया और बापू को छोटी सी पर्ची पर लिख कर इसकी सूचना भेज दी।

बम्बई कांग्रेस का अधिवेशन समीप था। बापू के पास देश के नेताओं के आने जाने का एक तांता लगा हुआ था। बापू स्वयं भी बम्बई जाने को थे। ऐसे समय में मेरा उपरोक्त निर्णय उन्हें अखरा। बापू के हृदय रूपी चित्रशाला में एक बार जिसकी तस्वीर खिंच जाती थी उसे इतनी जल्दी अकारण निकाल फेंकना उनके स्वभाव में न था। मेरे इस कथन की सच्चाई को बापू के वह

सभी नज़दीकी साथी अब भी भली भांति समझ सकेंगे भले ही आज उनमें बहुत से पदलोलुप्य होकर पथभ्रष्ट हो गये हों।

बापू को मेरी छोटी सी पर्ची पर अपना कोई निर्णय देने के लिये उन्हें समय की ज़रूरत थी। उनकी राय थी कि मैं उनके साथ या तो बम्बई चलूँ और नहीं तो उनके बम्बई से वापिस आने तक मैं आश्रम में रहूं। इन दोनों ही बातों पर मुझे आपत्ति करते देख बापू ने फिर मुझे उनकी वापिसी तक साबरमती में श्री सुरेन्द्र जी के पास रहने की सलाह दी। यह मुझे स्वीकार था। बापू २० अक्तूबर की शाम को बम्बई चले गये और मैं २१ अक्तूबर को फिर साबरमती रवाना हो गया।

यहाँ एक और छोटी किन्तु महत्वपूर्ण घटना का ज़िक्र करना भी ज़रूरी है ताकि अगले पत्रों के प्रसंग को पाठक अच्छी तरह समझ सकें। 'बिना ईश्वर की असीम कृपा के तथा बिना अपने संस्कारों के केवल महान् पुरुषों के सम्पर्क में रहने ही से इन्सान अपने राग द्वेषादि अनेक विकारों पर विजय प्राप्त करले' यह कोई ज़रूरी नहीं कहा जा सकता। इस तथ्य की सच्चाई पर निम्नलिखित छोटी सी घटना अच्छा प्रकाश डालती है:

साबरमती को रवाना होने से पहिले ही मेरे बिस्तर में से किसी ने मेरी गर्म लोई निकाल ली। भूसावल स्टेशन से साबरमती को गाड़ी सुबह बदलनी पड़ती थी वहाँ जब बिस्तर खोला तो लोई नहीं मिली। सर्दी की रात थी। हवा तेज़ चल रही थी। मुझे शारीरिक कष्ट होना ही था लेकिन मेरे मन को अधिक दुःख हुआ क्योंकि मुझे बिस्तर के अन्दर की अन्य चीज़ों की बेतरतीबी से यह यक़ीन हो गया था कि बिस्तर किसी ने खोलकर ही द्वेष के वशीभूत होकर मेरी लोई निकाली, फिर भी साबरमती पहुँचने पर मैंने प्रभावती* बहन को पत्र लिखा और उनसे प्रार्थना की कि यदि मेरी लोई मेरे कमरे में रह गई हो तो मुझे वह लिखें। वह बड़ी दयालु हैं उन्होंने तुरन्त यह पत्र लिखा:

*श्री जय प्रकाश नरायण जी की धर्मपत्नी।

(२)

INDIA POST CARD

WRITING SPACE

ADDRESS ONLY

INDIA POSTAGE NINE PIES

24 6 34

10 A.M.

Smt Braupati
Devi
C/o Shri Nathumal Dass
Biharilal
Sanganj
Khurja
U.P.

पत्र—६५

( देखिये पन्ना—एक सौ नौ )

६४

वर्धा आश्रम
२७-१०-३४

श्री भाई शर्मा जी प्रणाम,

आपका पत्र कल दोपहर के बाद मिला। मैं आज सुबह आपके कमरे में आपकी ऊनी लोई देखने गई लेकिन वहां नहीं था। अब आप वहीं पता लगावेंगे। यहाँ तो किसी जगह पर भी नहीं है। अम्तुल बहन अच्छी है। आप यहाँ कब आयेंगे? बापू जी का पत्र आपके पास जाता होगा। और यहाँ सब कुशल हैं। आशा है आप अच्छे होंगे। पूज्य बा से और सुरेन्द्र जी से मेरा प्रणाम कह देंगे।

आपकी बहन
प्रभावती

उधर २२ ता० को बम्बई पहुँचते ही बापू ने निम्न एक पत्र मेरी पत्नी को तथा दूसरा मुझे लिखा:

६५

चि० द्रौपदी,

तुम्हारा तार आया उसके बाद उत्तर नहीं है। कृष्णा अच्छी होगी। शर्मा कुछ अशान्त हो गया है। सुरेन्द्र जी के पास मेरी गैर-हाजरी में गया है। मेरे वर्धा पहुँचते वहीं आ जायगा। उसके तरफ से पत्र मिलते रहते होंगे। तुमने जो खत उसके बारे में लिखा था बहुत अच्छा था।

मुंबई
२२-१०-३४

बापू के
आशीर्वाद

वर्धा ३० ता० को पहुँचने की सम्भावना है।

६६

चि० शर्मा,

तुम्हारे बारे में चिन्ता रहती है। सुरेन्द्र वहाँ नहीं होगा ऐसा सुन कर चिन्ता में वृद्धि हुई है। ज्यों ज्यों विचार करता हूँ मैं हमारे में दृष्टि भेद बहुत पाता हूँ। लेकिन निराशा किसी प्रकार की नहीं है। हम प्रयत्न करते रहें। सुरेन्द्र को बुला लिए होंगे। तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा करता हूँ।

मुंबई<br>२२-१०-३४

बापू के<br>आशीर्वाद

उपरोक्त पत्र को पढ़ कर मैंने एक लम्बा पत्र बापू को बम्बई भेजा और उसमें अपनी लोई के इस तरह गुम हो जाने का सब हाल लिख दिया तथा अपनी लोई वापिस न मिल जाने तक कोई वस्त्र न ओढ़ने का अपना निश्चय भी लिख दिया। बापू के यह नीचे दिये पत्र इसी सम्बन्ध में हैं। पहिले दो पत्र उन्होंने कांग्रेस अधिवेशन के समय बम्बई से लिखे हैं। तथा दूसरे पत्र उन्होंने २६ ता० को बम्बई से वर्धा वापिस जाकर लिखे हैं :

६७

चि० शर्मा,

तुम्हारा लम्बा खत पढ़ा दुःख हुआ और सुख भी हुआ। दुःख हुआ क्योंकि खत तुम्हारी अशांति का अच्छा प्रदर्शन है। सुख हुआ क्योंकि तुम्हारे हृदय में मैं स्वच्छता पाता हूँ। लेकिन मुझे शक है कि तुम अपने को दबा रहे हो। शक्ति बाहर जाकर काम कर रहे हो। यह अच्छा नहीं लगता है तुम्हारा दिल मेरे पास पाता हूँ। तुम्हारा दिमाग़ लड़ाई कर रहा है। मेरी बुद्धिमता के बारे में तुमको शक है मेरे साथियों की ओर तुम शक की नजर से देख रहे हो। ऐसी

( देखिये पन्ना—एक सौ ग्यारह )

हालत में मैं तुमको कैसे शान्ति दे सकता हूँ मैं यह भी महसूस करता हूँ कि द्रौपदी का वियोग तुम्हारे लिए दुःखद है। अगर तुम्हारे खुर्जा जाने की कोई जरूरत है तो अवश्य जाओ नरहरि भाई से पैसे लेना। अगर नहीं जाना हो तो वहीं रहो। सुरेन्द्र की प्रतिक्षा करो उसको मिलने के बाद आ जाओ। किसी हालत में शान्त रहो। मुझे दूसरा खत लिखो। यहाँ सोमवार तक तो हूँ।

मुंबई
ता० २४-१०-३४

बापू के
आशीर्वाद

६८

चि० शर्मा

तुम्हारे पत्र का उत्तर इसके पहिले भेज नहीं सका।

चक्की का आटा पिसवा कर खाने में मैं कोई दोष नहीं पाता।

किसी के पास से ओढ़ने का ले लेना धर्म है।

तुम्हारे घी लेना ही चाहिये बटर आवश्यक हो तो बटर।

रोगी का सम्बन्ध होते हुए तुमारे मेरे दोषों को बताना ही चाहिये।

रामदास की परमिट अब तक नहीं मिली है।

दिल चाहे तब आ जाओ। शरीर कभी मत बिगाड़ो।

पैसे चाहिये सो ले लो।

२६-१०-३४

बापू के
आशीर्वाद

## ६९

चि॰ शर्मा,

तुम्हारा खत मिला है। मुझे थकान नहीं होगा न मुझे किसी प्रकार की निराशा है। जब आओगे तब आश्रम में ही रहना है। विनोबा भी राजी हैं तुमने मुझे निश्‍िंचत रहने का लिखा है इसलिए निश्‍िंचत रहूंगा। स्वभाव के आगे नहीं जाओगे तो मैं निश्चिन्त ही हूं ऐसा समझो।

द्रौपदी को भी मैं तो खींचना चाहता ही हूं। लेकिन तुम्हारे स्थिर होने पर ही यह बात हो सकती है।

तुमारी लोई नहीं मिलती है। सम्भव है जो लड़का यहाँ रहता था वह ले गया हो। वह अब यहाँ नहीं है। लेकिन लोई के अभाव में सरदी की बरदास्त करना कोई अच्छी बात नहीं है।

वर्धा
३१-१०-३४

बापू के
आशीर्वाद

श्री रामदास अहमदाबाद के हस्पताल में डाक्टरों के इलाज से भी हट कर इन्हीं दिनों साबरमती आश्रम वापिस आ गये थे और अब उन्होंने बापू के पास रहने की इच्छा से वर्धा आने की बापू से इजाज़त माँगी थी। उनको बापू ने तार द्वारा यह सूचना भेजी।

## 70

Wardha 2. 11. 1934

Ramdas Gandhi
Ashram, Sabarmati
You can come. Bring or send Sharma.

Bapu

पत्र –१६

७०

वर्धा २-११-१६३४

रामदास गांधी
आश्रम साबरमती

तुम आ सकते हो। शर्मा को साथ लाना या उसे भेज देना।

बापू

उधर अपने निश्चयानुसार मैं आश्रम छोड़ने के विषय पर बापू से पत्र व्यवहार कर रहा था। पिछले वाक़यात से मुझे ऐसा प्रतीत हो गया था कि आश्रम को मेरी आवश्यकता नहीं थी और बापू जबरदस्ती मुझे वहाँ थोपना चाहते थे। बापू की सलाह थी कि मैं कम से कम १ वर्ष तो वहाँ रहूं ही लेकिन ऐसी परिस्थितियों में जो वहाँ उत्पन्न हो गई थीं मुझे एक वर्ष रहना क़ैद के समान लगता था और यही मैंने बापू को कह दिया था इस विषय पर अधिक वाद-विवाद में न पड़ने की इच्छा से मैं साबरमती से ही पत्रों द्वारा बापू से खुर्जा जाने की इजाज़त ले लेना चाहता था। किन्तु बापू हमारे बीच मतभेद होने की असल बात की ओर से ख़ामोश रहकर अपने उपदेशों द्वारा ही मुझे शान्त कर देना चाहते थे और उसी के लिये मुझे वर्धा आने को सलाह दे रहे थे। नीचे के शिक्षाप्रद पत्र इसी सम्बन्ध में हैं :

७१

चि० शर्मा,

तुमारा खत मिला। सुरेन्द्र का भी पढ़ा। तुमारे यहाँ आना है बाद में देखा जाय क्या करना उचित है। तुमारे बाहर रहने से तो

लोग निर्भय नहीं होंगे। निर्भय बनाने के लिए भी तुमारे आना है। विनोबा तो तुमारे आने से बिलकुल राज़ी है बाबा जी* के मेज़बान बनो तो वह भी प्रसन्न रहेंगे। और मैं तो हूँ ही। मैं जब बर्दाश्त न करूँ तब देखा जायगा। एक वर्ष की मर्यादा तो तुमारे लिये रक्खी है भले (ही) अमर्यादित क़ैद में रहो। द्रौपदी के पास रहना, कुटुम्ब सेवा में ग्रस्त होना यह सब तो सोचने की बात है। हमारे बीच में इतना समझौता है न कि तुम कोई भी चीज़ जबरदस्ती से नहीं करोगे, शक्ति के बाहर जाकर भी नहीं करोगे। इतना अभयदान मुझे चाहिये। दूसरा मैं देख लूंगा। योगानन्द† को भूल जाओ। बाहर क्या बातें कर रहा है सो तो वही जाने यहाँ उसका कोई असर नहीं है। मेरे पर तो उसने कोई असर ही नहीं डाला जिससे मेरे दिल में तुमारे बारे में किसी प्रकार का संशय हो। मैंने जो निदान किया है उसी पर मैं क़ायम हूँ। वहम, अभिमान और परदोषदर्शन। वहम की औषध काल ही है अभिमान का औषध शून्यवन् बनना है परदोषदर्शन का औषध स्वदोष दर्शन है। हम अपने को सब से बुरा माने तो किसी का दोष नहीं देखेंगे और दोष माश्र रोग का रूप लेगा। बातें करने का थोड़ा-थोड़ा समय तो मैं दूंगा लेकिन बात से हमारा काम नहीं बनेगा। तुमारे लिये मेरे पास मज़दूरी का बहुत काम पड़ा है और इसी के साथ में थोड़ा और भी काम ले लूँगा। आज तार दिया है आ जाने का।

वर्धा
२-११-३४

बापू के
आशीर्वाद

---

*आश्रम के मैनेजर श्री मोघे जी—बाबा जी के नाम से पुकारे जाते थे।

†खुर्जे का एक स्वामी—जिसे आश्रम में बापू के सामने मेरे विषय में कुछ कहलाने के लिए वहां के अधिकारियों ने किराये पर बुलाया था।

(२)

POST
INDIA
WRITING SPACE
REPLY.
ADDRESS ONLY
NINE PIES
DELY.
NOV 34

बापू के ऐसे सुन्दर शिक्षाप्रद पत्र भी उन दिनों मुझे बेचैन कर देते थे। मेरा कहना यह था कि अपने आश्रम रूप एक कुटुम्ब की किसी कमी को दुरुस्त करके उसकी व्यवस्था उचित ढंग से कराने की अपनी इच्छा को मैं केवल अपना वहम, अभिमान और परदोषदर्शन मात्र ही मान कर कैसे दबा देता। यह सब मैं बापू को लिखता था तो वह फिर दूसरी तरह का पत्र लिख भेजते थे। आख़िर उनको मुझे वर्धा बुलाने पर ही आगे का विचार करना था उधर मेरे बच्चों की बीमारी के समाचार बापू स्वयं मंगाते रहते थे। यह निम्न-पत्र उन्होंने मेरी पत्नी को लिखा और दूसरा पत्र मेरे लिये भाई नरहरि परीख द्वारा साबरमती भेजा :

७२

चि० द्रौपदी,

तुम्हारा खत मिला है। अम्तुल सलाम यहीं है। अच्छी है। आश्रम का कार्य करती है। तुमको लिखने वाली थी। रामदास साबर-मती है। कनु और सुमित्रा* उसके साथ हैं। शायद रामदास यहाँ आ जायगा। नीमु† यहाँ है। शर्मा ८ ता० को यहाँ पहुँच जायगा ऐसा लिखता है। कृष्णा अब तक क्यों अच्छी नहीं होती है? दवा कौन करते हैं? चाहती है कि शर्मा वहाँ आवे? दिल खोलकर लिखो जैसे पुत्री माता को लिख सकती है।

६-११-३४

बापू के
आशीर्वाद

*श्री रामदास के बच्चे।

†श्री रामदास की धर्मपत्नी।

चि० शर्मा,

मैं तो तुमारे आने की आशा रखता था। आज नरहरि* ने पैग़ाम दिया। मैंने तुमारे पत्र का उत्तर तो दे ही दिया है। सब निर्भय हो गये ऐसा तो कैसे कहूँ ? लेकिन विनोबा निर्भय है। चाहते हैं यहाँ आ जाओ। लोगों को निर्भय तो तुमारे करना है। सुरेन्द्र का क़िस्सा पढ़ लिया। थोड़ा दुःखद है। यह ग़लती कैसे हुई मैं समझ सकता हूं। लेकिन उसमें बड़ी बात नहीं है। तुमने यदि ख़त पढ़ा भी होता तो उसका यह अर्थ मैं कभी नहीं करता कि उसका निदान तुम्हें स्वीकार था। यहाँ आओगे तब उनका निदान देखोगे। किसी का निदान तुम्हारे क्या काम का ? तुमारे दिल पर जो चीज़ का असर हो सके वही ठीक। यहाँ आ जाओ, आ ही जाओ। विलम्ब न किया जाय।

वर्धा
१५-११-३४

बापू के
आशीर्वाद

उपरोक्त पत्र मुझे श्री नरहरि परीख ने १६ ता० को दिया और मैं रामदास भाई को कुछ दिनों के लिए डाक्टरी इलाज को और भी जारी रखने की राय देकर उसी दिन वर्धा को चल दिया। मेरे पास साबरमती से वर्धा तक जाने का तो पैसा था लेकिन वर्धा से खुर्जा पहुँचने तक ख़र्चा काफ़ी नहीं रहा था। इसलिए मैंने खुर्जा अपने भाई को तार द्वारा १००) रु० मुझे वर्धा के पते पर भेजने को लिख दिया था। मैं वर्धा १७ ता० को पहुँच कर अपने निश्चयानुसार आश्रम में न जाकर मगनवाड़ी में श्री महादेव भाई के साथ ठहरा। बापू को यह अच्छा तो नहीं लगा लेकिन मेरा निश्चय बदलने के लिए वह बलात्कार भी नहीं करना

*श्री नरहरि परीख साबरमती से बापू के लिए मेरा एक पत्र ले गये थे।

पत्र— ७३

चाहते थे। १७ ता० को बापू का मौन था। उनसे मिलने गया तो यह पत्र उन्होंने लिख कर दिया :

७४

चि० शर्मा,

तुमारे लिये यह चीजें हैं।

१. नीमु* के साथ रहना।

२. जानकी बहन† के साथ रहना।

३. जमनालाल जी के बगीचे की कोई कोठरी में रहना।

४. इर्द-गिर्द की किसी देहात में रहना।

५. सुरेन्द्र के पास रहना यदि वह राजी होगा तो।

६. नारायणदास के पास रहना।

७. खुर्जा भाइयों के साथ रहना।

इतनी चीजों में से कुछ भी पसन्द करो। सम्भव है कि सातवीं चीज सबसे अच्छी हो। कुदरती तो है ही। लेकिन यह भी हो सकता है कि तुम्हारा श्रेय कुटुम्ब के वियोग में ही है साथ का खत भाई‡ को भेज दो।

वर्धा
ता० १७-११-३४

बापू के
आशीर्वाद

मुझे सबसे पहिले तो अपनी लोई ढूँढ निकालनी थी इसलिए अपना उत्तर तुरन्त न देकर बापू को कल शाम के लिए अपना निर्णय देने की प्रार्थना की

---

*श्री रामदास की धर्म पत्नी।

†सेठ जमनालाल जी की धर्मपत्नी।

‡लेखक के बड़े भाई—पं० बिहारीलाल।

और भाई के ख़त में महीना ११ की जगह गलती से वह ८ लिख गये थे उसे सही करने की याद दिलाई इस पर बापू ने तुरन्त ही यह पर्ची मुझे लिखी :

## ७५

चि० शर्मा,

खुशी से कल शाम को उत्तर दो। भले उससे भी बाद। कौनसे ८ के ११ माह बना दूं? जो हो सो बनाया समझो*। भाई जी के पत्र में वृद्धि कर दी है और तुम कर लो।

१७–११–३०

बापू के
आशीर्वाद

खुर्जा से जो मैंने रुपया मँगाया था वह मुसीबत का मारा बापू के पते पर तार द्वारा उसी दिन आ गया था। इसी पर बापू ने मेरे भाई को निम्न पत्र लिखकर मुझे पोस्ट करने का आदेश दिया :

## ७६

भाई बिहारीलाल,

आपने १०० रु० तार से शर्मा को भेजे हैं मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लगा है। शर्मा का सब खर्च यहीं से निकालने में कोई दुश्वारी न थी और न है। लेकिन आप बगैर कष्ट के शर्मा का खर्च उठा सकें तो मैं इतने पैसे फेंक देना भी नहीं चाहता हूं। मुझे तो और भी

---

*इसके अनुसार मैंने स्वयं महीना ८ की जगह ११ कर लिये। जैसा कि पत्र नं० ७६ के ब्लाक में है।

पत्र—७५

( देखिये पन्ना—एक सौ अट्ठारह )

( देखिये पन्ना—एक सौ बीस )

पैसे चाहियें--जो दे सकते हैं उनकी तरफ से ? शर्मा की कोई चिन्ता न करें। यद्यपि उसका केस कठिन तो है ही लेकिन वह सच्चा है इसलिए सब ख़ैर है। बताओ तार से पैसे क्यों भेजने पड़े ? द्रौपदी और लड़कों के हाल भेजो।

वर्धा
१७-११-३४

बापू के
आशीर्वाद

उपरोक्त पत्र को पोस्ट करके मैंने अपनी लोई के बारे में इधर-उधर कुछ मालूमात की और पुनार नाम के गाँव में चला गया जो आश्रम से कुछ मील की दूरी पर है और वहाँ ज्ञानोबा* नाम के लड़के के घर पर मेरी लोई मिल गई। ज्ञानोबा से मुझे मालूम हुआ कि उसने मेरी लोई चुराई नहीं थी वह तो मेरे बिस्तर में से निकाल कर (र) और (प) नाम के आश्रम के भाइयों ने उसे इनाम में दे दी थी। इस लड़के का यह ब्यान बापू के सामने कराने के लिए मैं उसे लोई सहित आश्रम ले आया किन्तु आश्रम तक आने में दिन छिप गया था। महादेव भाई और श्री किशोरीलाल मशरू वाले ने उस लड़के से लोई लेकर उसे भगा दिया और बापू से नहीं मिलने दिया। उस समय मैंने भी इसकी कोई परवाह न की बल्कि लोई पाकर आराम की सांस ली और जाड़े को अन्तिम नमस्कार कर दिया। लेकिन आगे की घटना से जब यह मालूम हुआ कि बापू के भी काग़ज़ात का एक बंडल मेरा ही समझकर मेरे कमरे से गुम करा दिया था तब ज्ञानोबा सब को याद आया जैसा कि आगे चल कर पत्रों द्वारा मुझे पता चला।

*बम्बई में कांग्रेस अधिवेशन होने के कारण बापू के पास अनेक नेताओं का आना जाना रहता था उन दिनों ज्ञानोबा नाम का यह लड़का सहायक के रूप में आश्रम में रख लिया गया था।

बापू को दूसरे दिन मैंने अपना अन्तिम निर्णय खुर्जा जाकर बीमार बच्चों की देखभाल करने का ही दिया और उसी दिन अपने जाने की इजाज़त लेनी चाही। इस पर बापू ने एक पर्ची पर मुझे यह लिख कर भेजा **"चि० शर्मा, आज जाने का मोकूफ किया जाय। बापू के आशीर्वाद"**। फिर मैंने दूसरे दिन के लिए जाने की इजाज़त माँगी तो श्री किशोरी लाल मशरू वाले द्वारा लिखी यह पर्ची मिली :

**"पूज्य बापू जी कहते हैं कल सुबह का जाना भी मोकूफ रखिये। ता० फिर निश्चित करेंगे"।**

**किशोरीलाल**

मुझे जब यह मालूम हुआ कि बापू मेरे १०० रु० तार द्वारा घर से मंगवाने पर गुस्सा हो गये हैं और इसी के कारण मेरे जाने की तारीख़ निश्चय नहीं हो रही है तो मैं स्वयं अपनी ग़लती की उनसे क्षमा माँगने गया। बापू उस दिन भी मौन लिये हुए थे। और उन्होंने निम्न पर्ची पर लिखकर ही मुझे मेरे प्रश्नों का उत्तर दिया। १०० रु० मेरे मंगाने का कारण ब्यान करके मैंने उन्हें इस पर गुस्सा न करने की प्रार्थना की तो बापू ने लिखा **"मुझे गुस्सा नहीं है जब तक मैं तुमको पुत्र मानूँ तब तक तुमारे पर गुस्सा करना पाप है। हाँ रंज हुआ और अपनी जिम्मेदारी का ख्याल हुआ"** भाई के पत्र में 'केस' शब्द से उनका क्या अर्थ था उसका उत्तर बापू ने लिखा **"मेरा स्वभाव ऐसा है कि तुमारा 'केस' मेरे लिए स्वराज्य के मसले जितना ही वज़न रखता है"**।

बापू के उपरोक्त उत्तर पर मैंने १०० रु० आश्रम में ही जमा कर दिये और फिर वहाँ से खुर्जा तक के लिये सिर्फ रेल भाड़े के लिये पैसे ले लिये तब २३ ता० को मुझे खुर्जा जाने की इजाज़त मिली। बापू की इच्छानुसार आश्रम के मैनेजर, श्री जमनालाल जी के बड़े पुत्र—श्री कमल नयन तथा आश्रम के कुछ अन्य सदस्य मुझे वर्धा स्टेशन तक छोड़ने आये। स्टेशन पर मैनेजर ने

( देखिये पन्ना—एक सौ बीस )

मज़ाक के रूप में यह कह दिया "तुम रूठे हम छूटे"। बात तो यह साधारण सी थी किन्तु मुझे उस समय बुरी लगी क्योंकि मैं उन्हें हृदय से नहीं छोड़ रहा था। बहरहाल मैं खुर्जा २४ ता० को पहुँच गया और वहाँ अपने बच्चों के गिरे हुए स्वास्थ्य को देखकर मुझे एक भारी धक्का लगा। छोटी बच्ची का तो दम न मालूम कहाँ अटक रहा था। सब बच्चे वहाँ के एक ढोंगी वैद्य के इलाज में थे। बापू को खुर्जा के सब हाल लिखते हुए मैंने वर्धा स्टेशन से वाक़यात भी लिख दिये और उनसे आश्रम से मुझे सदैव के लिए छुट्टी दे देने की प्रार्थना की तो बापू ने यह पत्र भेजा :

७७

चि० शर्मा,

तुमारा ख़त मिला। तुमने फिर भी जल्दबाज़ी की है। कैसे जाना कि मोघे जी तुमारे हमेशा के लिए जाने को मानते थे अथवा ऐसे जाने से ख़ुश थे। यह भी वहम है। तुमसे लोग डरते हैं तो इसका कारण ही यह है तुम लोगों पर जल्दी से दोषारोपण करते हो। और अपने मन में कई प्रकार की कल्पना करते हो। मैं यदि कमल नयन को पूछूँ तो अवश्य वह दूसरी बात करेगा। तुमारी सेवा भावना के बारे में जहाँ तक मैं जानता हूं किसी को शक नहीं है। तुमारे साथ गैर समझौती हो जाती है। यह तो मैं खुद देख रहा हूँ। तुमने जो प्रण किया उसी पर डटे रहो। आश्रम के हो, आश्रम में आना है इसलिए तैयार होना है स्टेशन की बात को भूल जाओ। और जो कुछ मुझको लिखा है सो भी भूल जाओ।

डा० शिरलेकर* ने कुछ भेजा नहीं है। मैं मँगवाऊँगा। डा०

---

* डा० शिरलेकर वर्धा शहर में एक एलोपैथ थे उनके पास मेरी कुछ पुस्तकें थीं।

अनसारी* को लिखूँगा तुमको नक़ल भेजूँगा। किताबें भेजने की कोशिश कर रहा हूँ।

कृष्णा की तबीयत के हाल पढ़कर दुःख होता है अब उसीका ध्यान करो और अच्छी बनाओ। अवश्य अलग मकान लेकर रहो। भाइयों को तुम्हारा खर्च उठाने में कुछ भी तकलीफ हो तो मुझको लिखो।

रामदास† का अच्छा है ऐसे नहीं कह सकता हूं। तीन अंडे तक पहुँचा है उसके बारे में तुमारे कुछ कहना है तो कहो।

मेरा वज़न १०८ रतल है यह अच्छा वज़न है। शायद अब न बढ़े। कच्चे दूध और कच्ची भाजी से लाभ यह है कि शक्ति कुछ बढ़ी हुई लगती है कम खाने से इतनी ही पुष्टि मिलती है जैसी ज्यादा दूध और भाजी खाने में मिलती थी। ज़ाहिर है खर्च तो बहुत कम हो गया। वख़त बचा। और कहने के लिये ज्यादा अनुभव होना चाहिये।

अमतुल सलाम ठीक चल रही सी लगती है। वह दूध हज़म नहीं करती है।

तुमको मीरा‡ बहन ने खत लिखा है मेरे अति उपयोगी काग़ज

* डा० अनसारी साहब से प्राकृतिक चिकित्सकों के लिए मैं एक ठोस सामान्य पाठ्यक्रम बनवाना चाहता था।

† श्री रामदास अहमदाबाद में डाक्टरी इलाज छोड़कर बापू के पास वर्धा आ गये थे।

‡ कन्या-आश्रम से मेरा कुछ सामान वहाँ के मैनेजर ने खुर्जा भेजा था। इस ख्याल से कि 'शायद बापू के काग़जों की गठरी भी उस सामान के साथ खुर्जा भेज दी गई हो' मीरा बहन ने मुझे एक कार्ड लिखा था लेकिन खुर्जा सिर्फ दो ट्रंक लोहे के ही पहुँचे थे।

( देखिये पन्ना—एक सौ इक्कीस )

और ऐनक इत्यादि के दफ़्तर की एक गठड़ी उसी कोठरी में रक्खी गई थी जिसमें तुमारा सामान था उसमें कुछ सामान पहिले वहाँ भेजा गया था। उसके साथ यह बंडल आया था क्या? उसका पता मिल सकता है? वह बंडल सफ़ेद खादी की चद्दर में बाँधा गया था। तलाश करके यदि हाथ आवे तो मुझे तार दो। कागज की चिन्ता रहती है। द्रौपदी का वज़न बढ़ना चाहिये। तुमने मुझे अभयदान दिया है। इसलिये तुमारी चिन्ता नहीं करूँगा।

तुमारी नोटिस† आगामी 'हरिजन' में नहीं आ सकती तुमारा खत देर से मिला।

२७-११-३४

बापू के
आशीर्वाद

उपरोक्त पत्र को पढ़ते ही मुझे अपनी खोई हुई लोई के ढूँढ़ निकालने का सब क़िस्सा याद आ गया और तुरन्त मैंने यह तार बापू को भेजा :

† मेरी पुस्तक "Light & Colour in the Medical World" के दोनों भागों का प्रथम संस्करण समाप्त हो चुका था। दूसरा संस्करण छपा नहीं था। किताबों की मांग आ रही थी। उधर बापू के सम्पर्क में आने के बाद मुझे नेचर क्योर की अधिक गहराई और सच्चाई में उतरने का सौभाग्य प्राप्त हो चुका था इसलिए मैंने अपनी पुस्तकों का द्वितीय संस्करण उस समय तक मुल्तवी कर दिया था जब तक कि मैं अपने नये विचारों के आधार पर अपनी पुस्तकों में फेर बदल न कर लूँ तथा अपनी कुछ त्रुटियों को दुरुस्त न कर लूँ। इसी आशय का एक नोटिस मैंने 'हरिजन' में छपने के लिए भेजा था ताकि पुस्तकों की मांग बन्द रहे। यह नोटिस बापू ने स्वयं अपने दस्तख़तों से "An Aspiring Naturopath" के सरनामें से 'हरिजन में' छापा था।

Khurja, Gandhiji, Wardha 29. 11. 34

Miraben's and your letters bear great difference. Papers question increases my anxiety. Perhaps "R" "P" or "G" can honestly trace bundles. Put them directly in my charge then I trace your things. Wire I come otherwise writing to-morrow.

Sharma

७८

खुर्जा गांधी जी, वर्धा २९-११-३४

आपके और मीरा बहन के पत्रों में बड़ा अन्तर है कागजात के प्रश्न से परेशानी हुई है। सम्भव है (र) (प) या (ग) ईमानदारी से उनकी खोज निकाल सकते हैं उन्हें सीधे मेरे सुपुर्द करें तो मैं आपकी चीजों की खोज करवा सकता हूँ। तार द्वारा सूचित करें तो मैं आऊँ नहीं तो कल पत्र लिख रहा हूं।

शर्मा।

उपरोक्त तार का बापू ने तार द्वारा ही यह उत्तर दिया तथा उसी तारीख को मेरे एक पहिले पत्र के उत्तर में निम्न पत्र लिखा :

Wardha Ganj 30. 11. 34

Sharma Care

Nathmaldas Beharilal, Danganj, Khurja.

Your wire. Your duty there for present. Write and guide. Change residence fine fresh air Draupadi children.

Bapu

७६

वर्धागंज ३०-११-३४

शर्मा मार्फ़त नथमलदास बिहारीलाल

दानगंज, खुर्जा।

तुम्हारा तार मिला। इस समय तुम्हारा धर्म खुर्जा ही रहने का है पत्रों द्वारा पथ प्रदर्शन करते रहो द्रौपदी और बच्चों की ख़ातिर स्वस्थ और ताज़ा हवादार मकान बदलो।

बापू

—एक सौ पच्चीस

चि० शर्मा,

तुम्हारा ख़त, नमूने* और पुस्तक† और २०)‡ रु० के नोट व स्टाम्प** मिले हैं। नोट किस हिसाब से वापिस की गई मैं नहीं समझा हूँ। डा० अनसारी को मैंने ख़त लिखा है उसकी नक़ल इसके साथ है। जब मुझे उत्तर मिलेगा तब मैं लिखूँगा उसके पहिले तुमारे उनको लिखना नहीं है। तुमारे किसी मकान में जाना ही चाहिये। वैद्यों†† का तुमने लिखा सो ही है। मकान न मिले तो ज़मीन का टुकड़ा मिले उस पर फूस की झोंपड़ी (डाल) कर रहो। द्रौपदी का पर्दा तोड़ डालो वर्ना खुर्जा छोड़ो।

३०-११-३४

बापू के
आशीर्वाद

*आश्रम में उन दिनों शुद्ध घी काफ़ी नहीं बन पाता था अतः मैंने खुर्जा से घी के नमूने भेजे थे।

†कन्या-आश्रम की कुछ पुस्तकें मेरे पास थीं वह सब वापिस कर दी थीं।

‡२० रु० के मूल्य की आश्रम की खादी मेरे प्रयोग में आई थी वह रु० मैंने भेजा था।

**पोस्टल स्टाम्प जो मैंने आश्रम के दफ़्तर से लिये थे वह वापिस किये थे।

††आयुर्वेद में मेरी बड़ी श्रद्धा है किन्तु कुछ ढोंगी वैद्यों ने इसे धन कमाने का साधन बना लिया है और धनी पुरुषों के हाथों में खिलौने जैसे बने हुए हैं। ऐसे वैद्यों का मैंने कुछ हाल बापू को लिख दिया था।

तुम्हारा तार मिला। मैं मानता हूँ तुम्हारे आने से काग़ज़ात ढूँढ़ने में मदद मिलेगी। लेकिन ऐसा नहीं हो सकता। तुमारा धर्म द्रौपदी और लड़कों की सेवा करने का है। घर बदलो। मैं खोज कर रहा हूँ।

बापू

बापू के उपरोक्त तार तथा पत्र के पश्चात मैंने उन्हें अपनी लोई के ढूँढ़ निकालने में जो तरीक़े अपनाये थे वह सब लिख भेजे तथा ज्ञानोबा को उनसे न मिलने देने की शिकायत भी लिखी जिसके द्वारा उनकी गठरी का भी पता मेरी लोई के ही साथ निकल आना सम्भव हो सकता था। उसके उत्तर में बापू ने मुझे यह पत्र लिखा :

८१

चि० शर्मा,

तुमारा पत्र कल मिला। सम्भव है उससे सामान का पता मिल जाय। उसमें तुमने जो सब लिखा है वह शोध करने के लिए काफ़ी है। तुमको यहाँ इस काम के लिए कैसे बुलाऊँ ? तुमारे वहाँ जाने का एक बड़ा सबब द्रौपदी और बच्चों के पास रहकर उनकी सेवा करना है। यही तुमारी शिक्षा का आरम्भ है इसी से नेचरोपेथी शुरू होती है फिर तुम लिखते हो डा० अनसारी क़बूल करे तो उनके घर के एक कमरे में रहोगे*। यह भी द्रौपदी को छोड़कर कृष्णा को हाड़ पिञ्जर की हालत में रखे हुए ? नहीं, तुमारी शिक्षा, तुमारा कर्तव्य आज तो द्रौपदी और बच्चों के पास रहते हुए जो कुछ हो सकता है सो करने का है।

द्रौपदी और बच्चों को लेकर खुर्जे के नज़दीक के गाँव में कहीं

*डा० अनसारी साहब के साथ रहकर मैं प्राकृतिक चिकित्सकों के लिए एक सामान्य ठोस पाठ्य क्रम तैयार करना चाहता था।

रहो। ऐसा नहीं तो और किसी देहात में। दिल्ली के नजदीक नरेला है वहाँ कृष्णन नेयर रहता है सज्जन है उसके पास भी रह सकते हो मतलब वह जगह बतायेगा अथवा अपने साथ रक्खेगा। खुर्जे में भाइयों के साथ तो रहने का नहीं* है। जो भाई खर्च देते हैं वह तो जहाँ होगे वहां खर्च देता ही रहेगा। बताओ उनकी आमद कितनी है ?

अमतुल की इच्छा तुमारे साथ रहकर कुछ करने की है। यदि किसी देहात में रह सकते हो तो यह इच्छा भी फलित हो सकती है। वह द्रौपदी और बच्चों की सेवा करना चाहती है लेकिन इस बात का तुमारे देहात में जाकर रहने से कोई सम्बन्ध नहीं है।

ऐसा तो मुझे नहीं कहोगे कि ऐनेटमी† के पुस्तक नहीं मिले हैं इस कारण तुमारा अभ्यास रुक गया है। पुस्तक कभी भी मिले तुमारा अभ्यास तो व्यवस्थित जीवन व्यतीत करने से हो ही रहा है वहम मात्र निकालने से भी होता है। देखो ज्ञानोबा को मेरे पास नहीं लाने में मेरी रक्षा ही कारण था अगर लोई मिल जाय तो मुझे उसे (ज्ञानोबा) मिलने का कोई कारण नहीं था। किशोरीलाल (मशरुवाले) को मैंने ही नीचे भेजे थे। ऐसे ही कमल नयन और मोघे जी की बात है जब बातें हुई तब अमतुल वहाँ खड़ी थी। उसने सब बातें सुनीं। वह कहती है कमल नयन और मोघे जी सिर्फ मजाक करते थे उसमें तुमारे जाने में खुशी की कोई बात नहीं थी सम्भव है तुमारे जाने का उनको न रंज था न खुशी। नेचरोपैथ

---

*बच्चे सब प्रारम्भ से ही खुली साफ हवा में रहने के आदी हो चुके थे। भाईयों का मकान धूप और हवादार नहीं था। इसी ख्याल से बापू ने यह लिखा।

† 'ग्रे' की ऐनेटमी और फिजिओलोजी की पुस्तक मैंने मँगाई थीं।

बनना चाहता है वह आदमी किसी पर वहम नहीं करेगा, जल्द-बाज़ी नहीं करेगा, किसी के दोष का ध्यान नहीं धरेगा। तुलसी दास के इस दोहे का नित्य मनन करेगा।

जड़ चेतन गुण दोषमय विश्व किन्हि करतार।
संत हंस गुण गह ही पय परिहरि वारि विकार ॥

तब तो दूसरों की दवाई करेगा। दूसरों के रोग का निदान सच्चा करेगा।

रामदास यदि आयेगा तो मेरे साथ ही चलेगा। देखता हूँ क्या होता है।

आजकल समय कैसे व्यतीत करते हो? क्या पढ़ते हो? तुम्हारे पास किताब तो काफी हैं ही।

दिल्ली* से मनाई हुक्म तो आया है अब पत्र व्यवहार चल रहा है देखें क्या होता है।

वर्धा
४-१२-३४

बापू के
आशीर्वाद

खुर्जा में शान्ति की अपेक्षा मेरी अशान्ति अधिक बढ़ गई थी उसके तीन मुख्य कारण थे :

१. मेरी छोटी बच्ची की नाजुक दशा। २. प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी मेरी पढ़ाई में एकदम रुकावट का पड़ जाना और ३. आश्रम के हित के लिए ही वहाँ की प्रचलित (Sex) स्त्री-पुरुष सम्बन्धी नीति में अपने सीधे सच्चे,

* दिल्ली से वाइसराय और बापू की मुलाक़ात के सिलसिले में पत्र व्यवहार चल रहा था उसके लिए वाइसराय की ओर से मनाई हो गई थी।

सरल तथा व्यवहारिक सुझावों को बापू के हृदय में न उतार सकने की अपनी अशक्ति थी। इन तीनों बातों का ख्याल हरदम मेरे हृदय को खरोंचने लगा था। ऐसी हालत में बापू के उपदेश मेरी समझ में बिलकुल नहीं आते थे बल्कि उनके ऐसे प्रत्येक पत्र से मेरी तड़पन और अधिक बढ़ने लगती थी। मैं अपनी तालीम को बढ़ावा देने की बात करता था—बापू मेरी मुसीबतों को ही मेरी सच्ची तालीम लिख देते थे, मैं आश्रम की स्त्री-पुरुष सम्बन्धी मुख्य नीति परिवर्तन करने के लिए उन्हें अनेक कारण देता तो वह उसे मुझे ही मेरा वहम बताकर उलटा डाँट देते थे तथा अनेक उपदेश देने लगते थे; बच्ची के स्वास्थ्य की बात लिखता तो गाँव में झौंपड़ी डालकर रहने का सन्देश भेज देते; किसी नई पुस्तक को ख़रीदने को लिखता तो उसे कहीं से मुफ्त हासिल करने के लिए स्वयं बड़े-बड़े डाक्टरों को लिखना शुरू कर देते और उस पुस्तक को बिना पैसे ही पाने की इच्छा से महीनों उसकी लिखा पढ़ी में व्यतीत हो जाता। ऐसी हालत में मैं झुँझला कर बापू को बड़े लम्बे और सख्त पत्र लिखता था किन्तु बापू टस से मस न होते थे उल्टे मुझही को फटकार लगा देते थे। उनका नीचे का यह पत्र इन्हीं बातों से ओत-प्रोत है :

## ८२

चि० शर्मा,

तुमारा खत मिला। दुःख है तुमारे दो खत एक से नहीं होते हैं। सब मूढ़* से भरे हुए रहते हैं। मेरे लिए वहम की कोई बात नहीं है। मेरे नज़दीक प्रधान कार्य तुमको व्यवस्थित बनाना है। वहम का भाजन तो तुम्ही हो। मैंने ऐसा क्या लिखा है जिसमें से तुमने मेरा वहम को पहचाना? मैं तो हर तरफ से तुमारी तालीम का प्रबन्ध करता हूँ। डा० अनसारी को तो लिखा ही है। कहो और क्या करूँ?

---

* मूढ़—बेवकूफी।

## पत्र — ८२

( देखिये पन्ना—एक सौ तीस )

सच्ची तालीम तो हो रही है। देहात में भी रहने का मकान न मिल सके उसका अर्थ क्या हो सकता है? कृष्णा का पिघलते रहना, तुमारा बीमार हो जाना क्या बताता है? कहाँ गई तुमारी शोधक शक्ति? कहाँ गया तुमारा संयम? तुमने लिखा था तुमारे जाने से शायद कृष्णा ठीक हो जायगी। अब क्या कर रहे हो? मैंने मान लिया था वहाँ जाकर स्वस्थ हो जाओगे। इस बार का ख़त मुझे दुःख देता है। बड़े संकट में दिन काट रहे हो ऐसा मुझे प्रतीत होता है। लड़कों की तालीम का कुछ ठिकाना हुआ है क्या?

मुझे स्पष्टतया लिखो क्या हो रहा है। सब कोई तुमारे कहे में रहने से न मुझे भाईयों के ख़त मिल सकते हैं न द्रौपदी के।

रामदास का कुछ अच्छा नहीं चलता है। बहुत चिंतित रहता है। अन्यवस्थित भी हो गया है। अनेक प्रकार तरंग आते जाते हैं। ईश्वरेच्छा बलवती है। हम क्या कर सकते हैं।

१०-१२-३४

बापू के
आशीर्वाद

शायद मैं २० तारीख़ के नज़दीक दिल्ली पहुँचूँगा।

जिस कारण से मैंने आश्रम छोड़ा था उस असल बात पर कोई चर्चा न करके बापू के यह उपदेश तथा फटकारों से भरे पत्र मेरी समझ से मुझे बाहर लगते थे इसलिए मैंने अमेरिका तथा यूरोप जाने का अपना पहिला इरादा फिर से ताज़ा किया और उसी अपने पहिले मार्ग पर जाने का विचार करने लगा। अमेरिका तथा यूरोप में एक वर्ष के अध्ययन के लिए उस वक्त अपनी नासमझी के कारण मैं तीन हज़ार रुपया काफ़ी समझ बैठा था और इस छोटी सी रक़म का मैंने अपनी जायदाद के बल पर हासिल करना तय सा ही कर

लिया था। बापू का केवल आशीर्वाद चाहता था। यह सब विचार मैंने स्पष्टतया बापू को लिख दिये। किन्तु जितने बल और गर्मी के साथ वह लम्बा पत्र मैंने उन्हें लिखा था बापू के निम्न उत्तर ने इतना ही मुझे यहाँ भी निर्बल और ठण्डा कर दिया :

८३

चि० शर्मा,

तुमारा ख़त मैं समझ सका हूँ। सरल है स्पष्ट है। लेकिन उसमें बहुत अज्ञान भरा है। विलायत जाकर कोई डिग्री तो लेना ही होगा। इसमें कम से कम सात बर्ष चाहिये। यदि सच्ची डिग्री लेना है तो। ऐसे भी पाँच तो अवश्य चाहियें। और लाओगे जो यहाँ मिल सकता है वही। विलायत से आये हुए और यहाँ के डाक्टरों पर तुमने बड़ा इल्ज़ाम लगाया है। आज दोनों प्रकार के मौजूद हैं जो भंगी का काम करते हैं और उसमें उनको कोई लज्जा नहीं है। सात वर्ष के लिए आज रुपया ३००० काफ़ी नहीं है कम से कम ३०,००० चाहिये। द्रौपदी को ले जाने पर ६०,००० चाहियें। यह सब सात वर्ष का हिसाब है कम से कम। मुझे सादगी से रहते हुए तीन वर्ष में रु० १३,००० हो गये थे। आज तो सब चीज़ का दाम दो गुना हो गया है लेकिन पैसे की बात गौण समझी जाय। मेरा तो इंगलैण्ड जाने से ही सख्त विरोध है मौलिक ज्ञान प्राप्त करके ही इंगलैण्ड जाना उचित हो सकता है। मौलिक ज्ञान आसानी से यहाँ मिल सकता है। उसमें मुझे तनिक भी सन्देह नहीं है। इंगलैण्ड जाने का भ्रम ही है। उस भ्रम को मिटाना ही चाहिये। यदि भ्रम नहीं है तो तुमारे स्वतन्त्र रूप में बग़ैर मेरे आशीर्वाद के, बंड* करके जाना है।

---

*बग़ावत।

(२)

बंड करने का तुम्हें अधिकार है जैसा प्रह्लाद को था। बंड की नीति उसकी सफलता से ही सिद्ध हो सकती है। मैंने भी तो मेरे पिता जैसे भाई के सामने १३ वर्ष तक बंड किया था। वह सफल हुआ क्योंकि उसकी नीति सिद्ध हुई। ऐसे ही तुमारे करना है तो बंड करो।

मेरी मानो तो मैंने कहा है सो करो। हाल यहीं रहो। एनेटमी, फिजिओलोजी का अभ्यास करो। यहाँ के डाक्टर की मदद दिला सकता हूं। मैं जो बताता रहूँ सो काम करो। चाहो तो द्रौपदी को बुला लो। घर का प्रबन्ध हो सकता है। द्रौपदी तुमसे दूर है वह मुझे खटकता है ही। शरीर शास्त्र का तुमारा ज्ञान बहुत ही कच्चा—नहींवत- समझो। यह काम के लिये तुमारे में अध्ययन का प्रेम होना चाहिये। सो मैं नहीं पाता हूँ। यदि मेरी भूल है तो मुझे बताओ। मेरी निकटता अच्छी न लगे तो दिल चाहे वहाँ रहो और पत्र व्य- वहार से काम लो। यदि ऐसा करना पड़ेगा तो इसमें तुमारी सहन- शीलता की कमी पाऊँगा। मेरे सानिध्य में नहीं रह सकने वालों को मैं जानता हूँ। उसमें तुम नहीं हो, न होने चाहिये।

यह सब स्पष्ट नहीं है तो मुझे पूछ लो। इसे अच्छी तरह सम- झने की कोशिश करो।

तुमारा पत्र वापिस* करता हूँ ताकि और नक़ल न करनी पड़े।

वर्धा
१२-१२-३४

बापू के
आशीर्वाद

---

* बापू के पास जो पत्र जाते थे उन पत्रों की ख़ाली पुश्त को बापू इस्तमाल कर लेते थे। उनके कई पत्र मुझे भी ऐसे मिले थे जो एक तरफ तो किसी अन्य व्यक्ति के लिखे होते थे और दूसरी तरफ बापू के लिखे होते थे। इसलिये मैं अपने पत्र बापू से वापिस मँगा लेता था लेकिन बापू काग़ज़ की बचत करके कभी-कभी मेरे ही पत्रों पर अपना उत्तर लिखकर उन्हें वापिस कर देते थे।

बापू के उपरोक्त पत्र ने मानो मेरे सामने उजाला कर दिया और मुझे यह स्पष्ट प्रतीत हो गया कि मैं अपने हृदय की किसी भी बात को उन्हें अभी तक सही तरीक़े से नहीं समझा सका। मुझे डाक्टरी की कोई डिग्री लेकर किसी की नौकरी नहीं करनी थी, एनेटमी फिज़ियोलोजी का मुझे पर्याप्त ज्ञान था और अध्ययन का सदैव से मैं कीड़ा जैसा बना रहा हूं। मैं पश्चिमी देशों में वहाँ की प्राकृतिक चिकित्सा तथा स्वास्थ्य व खाद्य सम्बन्धी सभी बातें सीखने के लिए जाना चाहता था और वहाँ के समाज कल्याण के तरीक़ों का अध्ययन करके, अपने ग़रीब देश की परिस्थितियों के अनुसार यहाँ का जीवन-स्तर उचित ढङ्ग का बनाने की मेरी भारी इच्छा थी। यह सब सरल बातें भी मैं बापू के हृदय में न उतार सका इसके कारण मुझे अपनी ही कमज़ोरी पर घृणा होने लगी और अब तक के अपने समय को मैंने व्यर्थ नष्ट हुआ ही समझा। अपनी बच्ची के हाड़ पिञ्जर हो जाने का मुख्य कारण भी मैंने अपनी बेवकूफ़ी ही मानी। इसलिए मेरी बेचैनी इतनी बढ़ गई कि उसका उपाय ढूँढ़ निकालना अब आवश्यक ही हो गया। बापू के साथ अब तर्क वितर्क करने का समय रहा ही नहीं क्योंकि उन्होंने तो स्पष्ट शब्दों में मेरी नीति सिद्ध करने का मार्ग प्रदर्शन मुझे अपने उपरोक्त पत्र द्वारा करा ही दिया था। उनके अनुसार अब अग्नि परीक्षा ही देना मेरे लिये एक मात्र साधन शेष रह गया था। किन्तु मैं उससे डरता था और उससे बच निकलना चाहता था। अतः १४ दिसम्बर १९३४ को ही एक और कड़ा पत्र बापू को मैंने इस विचार से लिख मारा कि वह मुझे अपने घेरे से निकाल दें तो अच्छा है लेकिन दूसरे दिन ही अपनी भीरुता तथा अपनी मूर्खता पर मुझे हँसी आई और मैंने मन ही मन में यह कहा, "बापू तो समुद्र के समान गहरे हैं। शान्ति और प्रेम के अवतार हैं। उनका मुख्य उद्देश्य तो अपने प्यारे अनुयायियों को सत्य पर लड़ने की कला सिखाने का रहता है। मेरे कड़े पत्र उनके हिमालय पहाड़ जैसे विशाल और मज़बूत हृदय पर न कोई चोट पहुँचा सकेंगे और न उसे मोम ही बना सकेंगे"। यह विचार मस्तिष्क में आते ही मुझे मेरे शरीर में एक नई शक्ति का प्रवेश होता महसूस हुआ और मुझे लगा मानो मेरे सर से चिन्ता और बेचैनी का पहाड़ सा उतर गया। मैंने तुरन्त चौदह दिन के

उपवास का निश्चय कर लिया और बापू को उसी समय यह छोटा सा पत्र लिख दिया :

८४

खुर्जा
ता० १५-१२-३४

पूज्य बापू जी,

कल १४-१२-३४ का लिखा हुआ पत्र मेरी भीरुता की निशानी समझा जाय। आपके पत्रों से मुझे लगा है कि मैं आपसे बहुत दूर हूँ अतः मेरे हृदय की आवाज आप तक पहुँच नहीं पाती। "पुत्र, पिता के अधिक समीप आकर अपने हृदय की आवाज सुना सके" केवल इस हेतु मैंने कल सुबह १६ ता० से १४ दिन का उपवास आत्म शुद्धि के लिए करना निश्चय किया है। यह मेरा पहला बंड समझा जाय। संभव है आगे आवश्यकतानुसार और भी ऐसे बंड हों। यह मेरा उपवास आध्यात्मिक है। केवल आपको ही सूचना दी है। आप इसे अपने तक ही सीमित रक्खें। मुझे इस अग्नि परीक्षा से आशा है कि (१) चि० कृष्णा अच्छी होगी (२) आश्रम के बारे में मेरी विनम्र सरल और सीधी प्रार्थना पर आप विचार करेंगे तथा (३) पश्चिमी देशों में जाने का मेरा असल अभिप्राय जान पायेंगे। ईश्वर मेरी सहायता करें यही प्रार्थना है। आपके कागजात मिले क्या? 'हरिजन' का नोटिस क्या दूसरे अखबारों में छपा है? रामदास भाई का क्या हाल है?

आपका आज्ञाकारी पुत्र,
शर्मा का प्रणाम

यह मेरा पत्र बापू को वर्धा पहुँचने नहीं पाया कि उन्होंने मेरे १४-१२-३४ के पत्र का यह उत्तर भेजा।

८५

चि० शर्मा,

तुमको ख़त लिखने में मैं डरता हूं। तुमारा ख़त अभी मिला। मैंने ऐसी कोई बात नहीं लिखी थी जिससे तुमको ऐसा ख़त लिखना पड़ा। पुत्र पिता के लिए वहम में कैसे पड़ सकता है? मैं सच्चा पिता बनने के लायक़ नहीं हूँगा। जब वहाँ किसी का शरीर अच्छा नहीं है तो क्यों खुर्जा में पड़े रहते हो? जाओ हरिजन आश्रम* में। वहाँ एक स्वतन्त्र मकान में सब रहो। बहुत ख़र्च भी नहीं होगा। यहां की देहात में रहो। तुमारा बीमार पड़ना और रहना मेरे से सहन नहीं होता है।

रामदास मेरे पास नहीं रहेगा। मेरी चिकित्सा में उसका विश्वास नहीं रहा है। मेरे साथ मशवरा तो करता रहता है। अन्डे छोड़ दिये हैं। सामान्य ख़ुराक लेता है। कल से नीमु के साथ रहना शुरू कर दिया है। मुंबई जाने की तैयारी कर रहा है। मैंने इजाज़त दे दी है। शक्ति ठीक आ गई है। घूमता फिरता है। मैं चिन्ता नहीं करता हूँ। अन्त में उसका कुशल ही होगा।

अमतुल परसों मुंबई गई। इस मास के अन्त में शायद दिल्ली आवेगी। मेरा दिल्ली जाना शायद २७ ता० के बाद होगा। 'हरिजन बन्धु' में तुमारे बारे में गत हफ़्ता में नोट आ गई। 'हरिजन' में इस वक़्त आई है। नोद (नोट) गफ़लत से एक हफ़्ता रह गई। जब तुमारा ख़त आ गया तब ही 'हरिजन' तुमको भेजने का लिख दिया था।

* हरिजन आश्रम, किंग्सवे-दिल्ली।

पत्र—८५

( देखिये पन्ना—एक सौ छत्तीस )

डा० अन्सारी का खत आज आया उसमें और चीजों के साथ तुम्हारे बारे में लिखते हैं।

"As regards Dr. Sharma, I would like to see him and fix out his exact requirements and then I may be able to help him".

दिल्ली जाओ तो अच्छा होगा। मेरे पहुँचने के बाद आना है तो ऐसे किया जाय।

भाइयों ने नहीं लिखा उसका कारण तुम ही हो ऐसे तुम्हीं ने मुझे बताया था वे ऐसे विवेकहीन हो सकते हैं कि मुझे उत्तर तक न दें ?

यदि आज तक उनको नहीं मिले हो तो यह अव्यवस्था का एक नमूना ही है न ? यदि अव्यवस्था की प्रतीती तुमको नहीं है तो मैं बता नहीं सकूँगा। मैं तुमारी बातों में, कामों में, खतों में अव्यवस्था ही देख पाता हूँ। मेरा ख्याल रहा था कि यह ज्ञान तुमको हो गया था। खैर, उसकी चिन्ता नहीं है। सब कुछ अच्छा ही हो जायगा। तुमारा चित्त अच्छा है मेरा प्रयत्न यथा शक्ति पूर्ण है। तुमारे श्रेय का ही ख्याल रहता है अश्रेय का कभी नहीं। तुमारे पास से काफी सेवा लेने की आशा रख रहा हूँ। द्रौपदी से कहो मुझे सब हाल लिखे।

वर्धा<br>
१७-१२-३४

बापू के<br>
आशीर्वाद

बापू का निम्न पत्र मेरे १५-१२-३४ वाले पत्र के उत्तर में है जबकि मेरा १४ दिन का उपवास प्रारम्भ होने को था।

८६

चि० शर्मा,

तुमारे उपवास से कुछ दुःख तो नहीं होता है। निर्विघ्न समाप्त हो ही जायगा। समाप्त होने पर मुझे दिल्ली खबर देना। २६ को दिल्ली हूँगा। उपवास में जो अनुभव मिलें वह भी बताना।

कृष्णा अच्छी हो जाय तो बड़ी बात होगी।

मेरे कागजात नहीं मिले हैं। नोटिस किसी अखबार वालों ने ली या नहीं मुझे पता नहीं है।

रामदास तुमको लिखेगा। यहाँ उसका चित्त शान्त नहीं रहता है। अब तो सब कुछ खाता है।

ता० २२-१२-३४

बापू के
आशीर्वाद

बापू से प्रार्थना करने के बावजूद मेरे उपवास के समाचार उनके यहाँ से निकल ही गये और जो अनेक मित्र हम दोनों पिता पुत्र के इस झगड़े को बड़ी उत्सुकता से देख रहे थे उनके पत्र और तार आने शुरू हो गये। उनमें से यहाँ केवल अपने मित्र तथा बापू के पुराने साथी—श्री सुरेन्द्र जी के ही दो एक पत्र दे सका हूं।

८७

साबरमती आश्रम,
२६-१२-३४

प्रिय भाई श्री शर्मा जी,

आज ही श्री रामदास भाई के खत से पता चला कि आप १४ दिन का उपवास कर रहे हैं। यह भी पता चला कि आप तथा श्री

पत्र—८६

( देखिये पन्ना—एक सौ अड़तीस )

पत्र—८८

( देखिये पन्ना—एक सौ चालीस )

बहन जी बीमार रह चुके हैं। मैं तो यहाँ आपके पत्र की राह देख रहा था पर पत्र भला कहाँ ? मैंने सोचा आखिर आप हैं धुनी, कहीं किसी के पीछे पड़ गये होंगे। बस सारी दुनियाँ जिसमें मैं भी एक नाचीज़ प्राणी हूँ—आप भूल गये होंगे।

पूज्य बापू जी ने लिखा था कि आप खुर्जा में सकुशल हैं और वहां जाना धर्म था। पर मैं यह न जानता था कि वहाँ आप घोर तप करेंगे। मैं जानता हूँ कि जब किसी बात का हद आ जाता है और कोई दूसरा रास्ता नहीं मिलता है तभी आप ऐसे मार्ग को लेते हैं। अच्छा, इस तप से आप सत्य के अधिक निकट पहुँचे, जगत में जो चीज़ जैसी है उस चीज़ को वैसी ही समझें और वस्तु परिस्थिति को योग्य क़ीमत दें, यही प्रभु से प्रार्थना हैं।

पर भाई, इस तप को इतनी गुप्ति क्यों ? अगर मैं नहीं जानता हूँ तो शायद दूसरे बहुत कम लोग जानते होंगे। क्या पूज्य बापू जी की अनुमति थी ? किस लिए किया ? उस पुरानी बात—जिसकी आप पाकशाला में जिक्र कर चुके थे*—के लिए नहीं न ?

श्री रामदास भाई को कैसे पता चला ? अच्छा, शीघ्र कुशल समाचार दें। श्री रामदास भाई अब कड़े होकर मैदान में आ रहे हैं। यहाँ से जाने के बाद कुछ भी सुधार नहीं हुआ। आपकी क्या राय है ? श्री जमनालाल जी बम्बई हैं शायद श्री निर्मला बहन इधर आयें। पूज्य बापू जी की क्या राय है मैं नहीं जानता हूँ।

---

* साबरमती में श्री रामदास के इलाज के दौरान में भी मुझे उपवास करने का एक समय आ गया था। लेकिन कुछ परिस्थितियों वश वह उपवास स्थगित कर दिया था।

आप वर्धा से जाने के बाद इतने नीरस क्यों बन गये ? क्यों, वह साबरमती की छटा* व खीर का नाश्ता, व प्रातःकाल की हमारी बातें, वह "लिपे में लड़ने का संग" कभी याद आता है ? फिर क्यों ? पूज्य बापू जी अब वर्धा की बगीची में ठहरेंगे† । वक़्त क़रीब है । आज यह जाना ही चाहिये इसलिए बस ।

आपका सुरेन्द्र

बापू को मेरे उपवास समाप्त होने की तिथि बराबर याद रही और दिल्ली २६ ता० को पहुँचते ही उन्होंने यह पत्र भेजा ।

८८

चि० शर्मा,

तुमारा उपवास आज पूरा होना चाहिये । मुझे शीघ्र सब ब्यान दे दो । मैं यहाँ आज फजर में आ गया । रामदास देवलाली स्वामी‡ के साथ गया । वहाँ से मुंबई जायगा ।

दिल्ली, बिरला मिल्स,<br>२६–१२–३४

बापू के<br>आशीर्वाद

* साबरमती आश्रम में हम दो मित्रों के प्रसन्न जीवन की यह एक झाँकी सी है ।

† बापू ने दिल्ली रवाना होते समय वर्धा में अपनी वापिसी पर महिला आश्रम के बजाय सेठ जमनालाल के बगीचे (मगन वाड़ी) में रहने का अपना निश्चय सुना दिया था और उसी के अनुसार दिल्ली से लौटने के बाद उन्होंने मगन वाड़ी में अपना स्थान क़ायम कर लिया था ।

‡ स्वामी आनन्द ।

पत्र—८६

( देखिये पन्ना—एक सौ इकतालीस )

उपवास १६ ता० को प्रारम्भ होकर २६ ता० को निर्विघ्न समाप्त हो गया। उपवास के दरमियान भाँति-भाँति के पत्र काफी आये पड़े थे। सबको उत्तर देना भी कठिन था। अपने उपवास की ख़बर अपनी मंडली में फैल जाने का मुख्य ज़रिया मैंने बापू को ही माना और उन्हीं को इसकी शिकायत लिखी तब बापू ने यह पत्र भेजा।

८६

चि० शर्मा,

तुमारा ख़त मिला। हाँ, मैं ज़िम्मेदार तो हूँ लेकिन मैं समझा था कि अब तुमारे पास कोई छुपाने की चीज़ नहीं है। जो ख़त आते रहते हैं उसको मत पढ़ो। अथवा उसका असर कुछ भी मत होने दो। अमतुल सलाम अब तक यहाँ नहीं आई है। शायद इन्दौर है। कृष्णा बच गई वह बड़ी बात है। अब क्या खाते हो?

दिल्ली
२-१-३५

बापू के
आशीर्वाद

६०

बिड़ला मिल्स, देहली,
५-१-३५

प्रिय शर्मा जी,

आपका पत्र पूज्य बापू जी को मिल गया। यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि आप अच्छे हो रहे हैं। १२ ता० तक आप आ जायेंगे। ऐसी आशा बापू जी रखते हैं। श्री अमतुल सलाम जी भी आ गई

हैं। वह कुछ इसमें लिखेंगी। पं० खरे* जी भी हैं वह प्रणाम लिखवाते हैं।

आपका सेवक
महादेव देसाई

"बापू महिला आश्रम के बजाय मगनवाड़ी में ठहरेंगे" यह समाचार तो श्री सुरेन्द्र जी ने दे ही दिये थे। यहाँ चि० कृष्णा भी दिन पर दिन अच्छी होने लगीं और हमने नया हवादार मकान भी समीप के गाँव में बदल लिया। यह सब रिपोर्ट अपने मासिक† खर्च के हिसाब के साथ भेजते हुए बापू को १५ ता० अपने दिल्ली आने की लिख दी थी। उसी के उत्तर में बापू ने यह पत्र भेजा :

६१

चि० शर्मा,

तुमारे खत की इंतजार हम दोनों कर रहे थे। ठीक आया। नया घर भले लिया। खर्च का हिसाब देखा। डाक का खर्च बिलकुल अच्छा है। किसी को उत्तर देने की आवश्यकता नहीं है। 'हरिजन' की नोटिस बहुत अखबारों में आई‡ है। कोई मेरे साथ इस बारे में पत्र

* पं० खरे जी साबरमती आश्रम में हमारे साथी थे। भारतवर्ष के बड़े संगीतज्ञों में तथा बापू के प्रियजनों में थे।

† बापू हमारी अन्य रिपोर्टों के साथ हमारा मासिक खर्चे का ब्योरा भी हमसे मंगाते थे।

‡ मेरी पुस्तकों को कुछ समय के लिये मेरे बन्द कर देने के बारे में जो नोटिस पिछली बार 'हरिजन' में छपा था उसे कई अखबारों ने भी छापा था।

( देखिये पत्र—एक सौ बयालिस )

भी लिखते हैं। मेरा यहाँ से जाने का कब होगा कहा नहीं जा सकता। लेकिन २० के बाद तीन दिन का दौरा देहात का है। बाद में भाग जाना वर्धा। नये मकान का किराया क्या होगा? कुछ लीज् पर लिया है? तुमारे यहाँ आने से ज्यादा समझूँगा। द्रौपदी और बच्चे आवेंगे ना? रामदास मुंबई में है।

दिल्ली
१४-१-३५

बापू के
आशीर्वाद

१५ ता० को हम सब दिल्ली जाकर बापू से मिले। वहाँ तीन दिन हमको उनके साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहाँ डा० अन्सारी साहब ने मुझे बताया कि वह मेरी इच्छानुसार प्राकृतिक चिकित्सकों के लिये आवश्यक डाक्टरी पुस्तकों का चुनाव करके उनकी लिस्ट मेरे पास शीघ्र ही भेजेंगे। उन्हीं के द्वारा मुझे यह भी मालूम हुआ कि "बापू मुझे अमेरिका और यूरोप भेजने के लिये कुछ तैयार हुए प्रतीत होते हैं"; लेकिन हमारे वहाँ तीन दिन तक रहते हुए बापू ने इस सम्बन्ध में मुझसे कुछ नहीं कहा था। इसलिये मैंने डा० अनसारी साहब की बात को मजाक ही समझा यद्यपि मेरे प्रति बापू की हर एक बात में तथा उनके हर एक पत्र में एक आश्चर्यजनक परिवर्तन अवश्य हो गया जैसा कि आगे की घटनाओं से मालूम हुआ।

दिल्ली से हमारी वापिसी के दिन बापू ने अम्तुल सलाम को आदेश दिया कि वह प्रति हफ्ता खुरजा जाकर हम सबके स्वास्थ की सही रिपोर्ट उन्हें वर्धा भेजती रहे। उधर बापू ने वर्धा पहुँच कर अपने रहने का स्थान सचमुच ही जब जमनालाल जी का बगीचा ( मगनवाड़ी ) बनाया तो सुरेन्द्र जी की तीन सप्ताह पहिले भेजी हुई उनकी इस ख़बर की पुष्टि हो गई। वहाँ से ही बापू ने २५ सेर अरब के ख़जूरों का एक पार्सल हमारे लिये खुर्जा भिजवाया तथा डा० अन्सारी साहब को मेरे लिये पुस्तकों की लिस्ट शीघ्रातिशीघ्र भेजने के बारे में लिखा। नीचे के कुछ पत्र इसी सिलसिले में हैं:

## ६२

वर्धा
१-२-१६३५

श्री शर्मा जी की सेवा में,

इस पत्र के साथ खजूर के पारसल की रसीद भेजी है। पहुँचने पर कृपया सूचित कर दें। खजूर पूज्य बापू जी की आज्ञानुसार भेजा गया है।

साथ है
रेलवे बिल्टी नं० ४३३१।२८ पेड

आपका
छोटेलाल

## ६३

४-२-३५

चि० शर्मा,

थकान के कारण बायें हाथ से लिख रहा हूँ। खजूर तुमको भेजा गया है सो मिला होगा। अमतुल* लिखती है तुम दोनों दुखी हो। यदि यह सही है तो दुःख की बात है। डा० अन्सारी ने उर्दू किताबों की और थोड़ी हिन्दी की फ़हरिस्त भेजी थी। मैंने नामंजूर की। अब अंग्रेजी भेजने की प्रतिज्ञा तो की है। मुझे तो

---

* अमतुल सलाम बापू के आदेशानुसार पहिले हफ़्ते में हमारा मुआयना करने खुर्जा आई। उसने अपनी चिकित्सा कराते समय हमारा रहन सहन दिल्ली में जो देखा था उसके बिल्कुल विपरीत उसे खुर्जा में देखना हुआ। उसी पर उसने अपने ही विचार से बापू को लिख दिया होगा कि हम दुःखी हैं। मैंने बापू को उत्तर लिखते वक्त उसकी रिपोर्ट का खंडन किया था।

पत्र—१३

( देखिये पन्ना—एक सौ चौवालिस )

( देखिये पन्ना—एक सौ चौवन )

साबरमती आश्रम
१०-२-३५

भाई साहब,

आपका ता. २४-१-३४ का खत मुझे गावों में ३-२-३४ को मिला। (मांप्र से) आज १५ दिन के बाद यहां आया हूं आप के पत्र में पू. बापूजी ने भी कुछ लिख दिया था। मैंने तुरन्त श्री नरहरि भाई को लिखा था कि उन चीजों की एक फेहरिस्त शीघ्र पू. बापू जी को भेजा दें। उसके अनुसार उन्होंने भेज दिया है। आज फिर पू. बापूजी ने श्री प्यारेलाल जी के मार्फत कहलाया है। श्री नरहरि भाई का कहना है कि कुछ चीजें यहां 'विनय मंदिर' खुलने का. - है उसके उपयोग की है। फिर भी उन्होंने पू. बापू जी को लिखा है। उसका जवाब आने पर विशेष लिखेंगे।

आप को मालूम होगा - मैं वर्धा जा रहा हूं। वहां चर्मालय का काम आदि मैं सीखूंगा। पू. बापूजी ने बुलाया है। और शायद बालकृष्ण आता होगा।

(२)

( देखिये पत्र—एक सौ पैंतालिस )

चिन्ता* नहीं है। लेकिन तुमारे लिये है। यदि समय का सदुपयोग कर रहे हो तब तो अच्छा है। मुझे टाइम† टेबिल भेजो।

वर्धा
४-२-३५

बापू के
आशीर्वाद

९४

सावरमती आश्रम,
१०-२-३५

भाई साहिब,

आपका २४-१-३५ का खत मुझे गाँव में ३-२-३५ को मिला। माफ़ करें आज १५ दिन के बाद यहाँ आया हूँ। आपके पत्र में पूज्य बापू जी ने कुछ लिख दिया था। मैंने तुरन्त श्री नरहरि भाई को लिखा था कि उन चीजों की एक फहरिस्त शीघ्र पूज्य बापू जी को भेज दें। उसके अनुसार उन्होंने भेज दिया है। आज फिर पूज्य बापू जी ने श्री प्यारेलाल जी के मार्फत कहलाया है श्री नरहरि भाई का कहना है कि कुछ चीजें वहाँ 'विनय मंदिर' खुलने वाला है, उसके उपयोग की है। फिर भी उन्होंने पू० बापू जी को लिखा है। जवाब आने पर विशेष लिखेंगे।

आपको मालूम होगा मैं वर्धा जा रहा हूँ। वहाँ चर्मालय का काम अधिक सीखूँगा। पूज्य बापू जी ने बुलाया है फिर शायद कलकत्ता जाना होगा। फिर आपके पास आऊँ क्या? आपका पत्र तो आया ही

---

* प्राकृतिक चिकित्सकों के लिए बापू डाक्टरी पुस्तकों के पढ़ने की अपेक्षा उन्हें अपने ही जीवन को प्राकृतिक बना कर उसे व्यवस्थित करने पर अधिक वज़न देते थे।

† दिनचर्या।

नहीं। बड़े धुनी हैं। आप कहाँ हैं और क्या करते हैं? पूज्य बापू जी के साथ क्या क्या बातें हुई? कौन जीता? आपने उन्हें कुछ सबक दिया? मैं पाँच छः दिन में यहाँ से निकलने वाला हूँ। भटकते-भटकते वर्धा पहुँच जाऊँगा। पूज्य बहन को प्रणाम।

आपका भाई
सुरेन्द्र का वन्दे

६५

चि० शर्मा,

तुमारा खत मिला। मुझे बहुत ही अच्छा लगा है अविश्वास आया था क्योंकि अमतुल ने बहुत सख्त लिखा था* मुझको सब देना कोई मामूली चीज़ नहीं है। सब चीज़ों को, मोहमात्र को छो देना और छोड़ने में खुशी मानना सबसे नहीं हो सकता तुमने बा चीज़ तो बहुत छोड़ दीं हैं लेकिन भीतरी ज्ञान नहीं होगा तो भीत आनन्द कैसे? और जिसको भीतरी आनन्द नहीं मिलता है व गुस्से भी होता है और बीमार भी होता है और सब कुछ कर बैठत है।

अब मैं तुम जितना लिखोगे वह सब सत्य में ऐसा ही है ऐसा मान कर चलूँगा। इसमें कठिनाई है। यह भी समझो और कठिनाई का कारण तुमारे में जल्दीपन है क्रोध भी है और क्रोध के मारे जल्दी में कुछ लिख दिया उसे ऐसा ही मानकर मैं बैठ जाऊँ सो तो उचित नहीं होगा। लेकिन तुमारे साथ चलने में और कोई चार

* अमतुल सलाम ने हमारे खुर्जे के सादा रहन सहन को देखकर ब को रिपोर्ट दी थी कि हम दुःखी हैं इस रिपोर्ट का मैंने खंडन किया था।

पास नहीं हूँ। साथ रखना तो मुझे अच्छा लगता है इतना याद रक्खो क़र्ज़ा बिलकुल न करना। हरिजन का सम्पर्क होता है वह भी बहुत अच्छा है।

तुमारी डाक्टरी पढ़ाई के बारे में नित्य ख्याल आता है। डा० अन्सारी को लिखा है उत्तर का ठिकाना नहीं उसकी शिकायत भी क्या करें? शक्ति से ज्यादा काम ले लेता है।

मैं नहीं जानता किस चीज में बहतरी है। मद्रास का क्या कोर्स है मुझे पता नहीं है लेकिन मैं पता निकाल सकता हूँ। कोई सर्जन के यहाँ रहना नहीं हो सकेगा। अगर मद्रास जाना हुआ तो अकेले जाओगे? द्रौपदी का खुर्जे में अकेले रहना मेरे लिये असह्य हो जायगा। मेरे साथ रहे, मेरा काम करे, बा के स्वभाव की बर्दाश्त करे तो मुझे सबसे अच्छा लगेगा। और जब वह इस तरह से रहने के लिये तैयार हो जायगी तब तुमारा काम और मेरा भी सरल हो जायगा। तुमारे बारे में मैंने बहुत आशायें बाँध रक्खी हैं। तुमारे सब दोष निकल जाने से तुमारे पास से बहुत ही काम मैं ले सकता हूँ ऐसा प्रतीत होता है। आख़िर अगर तुमारा विलायत जाने का होगा तो भी साथ में द्रौपदी और बच्चों के ले जाने में मैं कभी तैयार नहीं हूंगा। क्योंकि उसको मैं अनावश्यक मानता हूँ तुमको भेजने के लिए कुछ तैयारी है वह पश्चिम के बारे में तुमारा मोह उतारने के लिए है। सच्ची नैसर्गिक चिकित्सा देहात में ही है। पश्चिम का जो ज्ञान है उसमें से जो लेना है वह उनकी किताबों से ले लें। बाक़ी सब देहात में से ही मिलने वाला है। और अन्त में हम जो सेवा करना चाहते हैं। वह भी देहातियों की ही है न? यह सब सोचो और बाद में लिखो तुमारी दृष्टि से क्या किया जाय? द्रौपदी मेरे साथ रह सकती है?

—एक सौ सैंतालिस

तुम्हारा टाइम टेबिल अच्छा है कौन सी किताब पढ़ते हैं ? बालकों को क्या पढ़ाते (हो) ?

आटा घर पर पीसा जाता है ? चावल बग़ैर पोलिश के हैं ? बग़ैर पोलिश के चावल बाजार में आते ही नहीं यह पता मुझे अब लगा। बग़ैर पोलिश के चावल निकालना बहुत आसान है ऐसा सुना है मैंने पेड़ी पैदा कर ली है और उसको पीस कर छिलका निकालने की कोशिश यहीं करूँगा।

पं०* कौन है जो सिखाता है मैं नहीं जानता ऊपर के हरूफ़ पढ़ सकते हो या नहीं मैं दाहिने हाथ से सिर्फ़ सोमवार को लिखता हूँ उसे थोड़ा आराम पहुँचे।

१२/१३-२-३५

बापू के
आशीर्वाद

९६

चि० शर्मा,

तुमारा खत मिला। आज भी हाथ लिखने के लिये तैयार नहीं हुआ है। लेकिन 'हरिजन' के लिए तो लिखा ही है तो यह क्यों नहीं ?

द्रौपदी और बच्चों को मेरे पास छोड़कर पश्चिम जाने के लिये तैयार हो ? द्रौपदी वहाँ जाकर क्या करेगी ? बच्चों को कहीं छोड़कर माँ

* एक गांव का मास्टर मैंने अपने लड़के को पढ़ाने के लिए लगा लिया था।

3158

( देखिये पन्ना —एक सौ अड़तालिस )

चि. भाभी,

( देखिये पन्ना—एक सौ उन्चास )
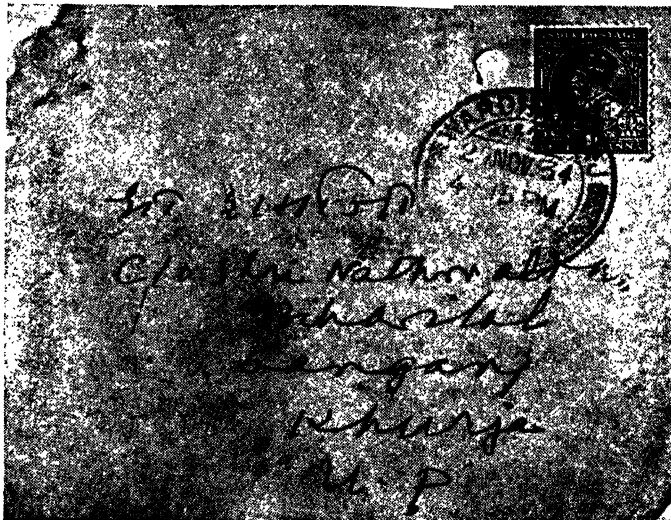
चली जाय मुझे तो अच्छा नहीं लगेगा। तुमको भेजने के लिए मैं तैयार हो गया हूँ। नहीं कि उसमें मैं कोई लाभ अब देखता हूँ लेकिन तुमारा भला उसी में देख रहा हूँ वहाँ से कुछ न कुछ तो पाओगे। मुझे लिखने के लिये गुरु या शुक्र* तक राह देखने की आवश्यकता नहीं है।

वर्धा
१८-२-३५

बापू के
आशीर्वाद

१७

चि० शर्मा,

डा० अन्सारी ने किताबों का लिस्ट भेज दिया है आजकल यहाँ नये डाक्टर आये हैं। परोपकारी हैं। उनसे तुमारे बारे में बातें हुई वह तुमारे नित्य पाठ देने के लिये तैयार हैं। क्या द्रौपदी के साथ यहाँ आने के लिए तैयार हो? यदि नहीं हो और कहो तो किताब इत्यादि लेकर भेज दूं। मेरे अगले खत के उत्तर की प्रतीक्षा तो कर ही रहा हूँ। अब तुमारे सामने तीन प्रश्न हैं। दो में द्रौपदी के वर्धा में रहने की शर्त है। एक में तो दोनों वहीं रह कर जो हो सकता है सो करने की बात है।

वर्धा
१९-२-३५

बापू के
आशीर्वाद

* चूंकि बापू मुझे पत्र अपने हाथ से ही लिखते थे इसलिए मैंने उनको पत्र बृहस्पतिवार या शुक्रवार को लिखने का विचार किया था ताकि उनके दाहिने हाथ को आराम मिल सके।

—एक सौ उन्चास

वहाँ उत्तम घी का भाव क्या है? यहाँ आने में रेल खर्च कितना?

बापू

दिल्ली में डाक्टर अन्सारी साहब द्वारा दिये गये संकेत की पुष्टी बापू के एक ही हफ्ते में आये हुए उपरोक्त तीन पत्रों ने कर दीं। इस तरह ईश्वर की कृपा से अपनी तीनों ही बातें सफल हुई देख मुझे अपने उपवास की कामयाबी पर हर्ष हुआ।

उपवास निर्बल और असहाय व्यक्ति का अन्तिम शस्त्र है। इसमें द्वेष छूकर भी नहीं गया। मेरा ऐसा अनुभव है कि यदि ठीक जगह और ठीक समय पर इसका प्रयोग किया जाय तो इसके निष्फल होने की सम्भावना हो ही नहीं सकती। किन्तु दुःख है कि इस दो धारी तलवार के हर पहलू पर बिना सोचे समझे आज-कल हर जगह जो व्यक्ति आवेश में आकर इसका प्रयोग कर बैठते हैं वह न सिर्फ इस शस्त्र के महत्व को खोकर तथा इसे कलंकित करके इसका मखौल कराते हैं बल्कि इसके भयंकर परिणामों से अपना भी काफी नुक्सान कर बैठते हैं। मैं अपने चालीस वर्ष के अनुभव के आधार पर पाठकों से यही कहूँगा कि इस आध्यात्मिक शस्त्र के सफल प्रयोग के लिए अन्य सभी सांसारिक शस्त्रों से कई गुना अधिक जानकारी और सूझ-बूझ की आवश्यकता होती है अतः इसमें सदैव सावधानी बर्ती जाय।

मेरे उपवास के बाद बापू के पत्रों का ढंग तथा उनके हृदय का परिवर्तन देख मैं हैरान था और ऐसा लगता था मानों स्वप्न देख रहा था। मैंने बापू से तार द्वारा उनसे मिलने की इजाज़त माँगी और लिखा कि मुझे तो उनके पत्र पढ़कर कुछ ग़लत फहमी सी लग रही है। बापू ने भी उत्तर तार द्वारा भेजा लेकिन मैं तो गाँव में रहने लगा था। बापू ने एक आने का लोभ किया और तार खुर्जा से वापिस चला गया तब उन्होंने यह पत्र लिखा:

पत्र—६८

(२)

( देखिये पन्ना—एक सौ इकयावन )

ों से
इसमें
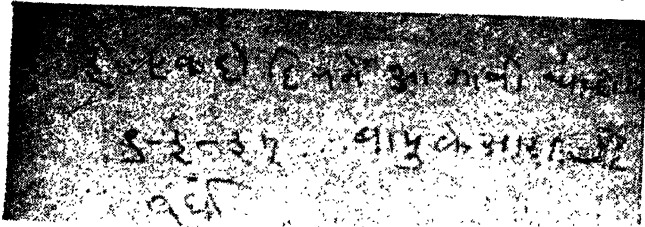
र्तन
ू से
पत्र

चि० शर्मा,

यह हाल तुमारे तार का हुआ। तुमने कहा था 'शर्मा' काफी है इसलिए मैंने एक आना बचाने की चेष्टा की। तार में था "आ जाओ कोई ग़लतफ़हमीं नहीं है"।

मैंने जो निर्णय किया सो ग़लतफ़हमी से नहीं था। तुमारी स्थिति पहचानते हुए यही अच्छा लगा। लेकिन आजाना है तो अवश्य आओ। डा०* भास्कर को किताबों के बारे में है। एक दो दिन में आ जानी चाहिये।

६–३–३५

बापू के
आशीर्वाद

मैं अपना निर्णय बापू से मिलकर ही उनको देना चाहता था किन्तु अभाग्यवश परिस्थितियाँ ऐसी हो गईं कि सवा महीने तक उनके पास मेरा जाना नहीं हो सका। मेरे लड़के के पाँव में गांव के एक कुत्ते ने काट लिया। कुत्ते को बाँध कर रक्खा भी लेकिन दूसरे दिन वह रस्सी काट कर भाग गया और यह पता भो लग गया कि कुत्ता पास के ही ज़मींदार का था और ठीक हालत में था इसलिए मिट्टी की पुलटसों से बच्चे के पाँव का ज़ख्म ठीक कर लिया था। लेकिन इतना तो मैंने निश्चय कर ही लिया था कि यदि पश्चिम जाना भी हुआ तो अपने बच्चों का भार बापू पर छोड़ जाना ठीक नहीं होगा इसलिए यह तो मैंने उनको स्पष्ट लिख ही दिया था कि 'जहाँ तक बच्चों को आश्रम में छोड़ने का प्रश्न है मैं उनसे सहमत नहीं हूं और यदि वह ऐसा करनें का मुझे आदेश देंगे तो उनके आदेश का पालन मैं करूँगा ही।' बापू के निम्न पत्र इन दो विषय पर प्रकाश डालते हैं।

---

* डा० अन्सारी साहब की भेजी हुई पुस्तकों की लिस्ट के अनुसार बापू उन पुस्तकों को मुफ़्त हासिल करने की इच्छा से अनेक डाक्टरों को पत्र लिखने लगे थे।

—एक सौ इक्कावन

९९

वर्धा
ता० १२-३-३५

चि० शर्मा,

अहमदाबाद* म्यूनिसीपेलिटी की जो पुस्तक तुमारे पास हैं उनकी फेहरिस्त तुमने शायद मुझे दी थी। लेकिन मुझे उनका कुछ ख्याल नहीं है। उसमें दो पुस्तक होनी चाहियें। एक का नाम है "The Earth" by Poore और दूसरी का "Colonial and Farm Sanitation" by Poore यह पुस्तक यदि हैं तो मुझे भेज दो और आते हो तो साथ लाओ।

वर्धा
१२-३-३५

बापू के
आशीर्वाद

१००

वर्धा
ता० २१-३-३५

चि० शर्मा,

तुम्हारा पत्र मिला। तार† के बारे में समझा। मेरी मान्यता यदि

* बापू ने अपनी हजारों पुस्तकें कई संस्थाओं को दे दीं थीं। उनमें से स्वास्थ्य सम्बन्धी लगभग सभी पुस्तकों के पढ़ने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। कुछ पुस्तकें तो मेरे साथ रहतीं थीं जो पूर्णतया अध्ययन करने के बाद लौटाता था। और अधिक पुस्तकें बापू द्वारा मँगाता रहता था।

† बापू का पिछला तार मुझे नहीं मिला था उसका कारण मैंने उनको लिख भेजा था।

पत्र—१०१

( देखिये पन्ना—एक सौ त्रिरपन )

तुमारे अनुभव से विपरीत है तो उसका अमल न किया जाय। मैंने कोई आज्ञा नहीं भेजी है। मैंने तुमको छुट्टी दे रक्खी है। तुमारे अभ्यास के कारण अथवा द्रौपदी के कारण अथवा लड़कों के कारण यहाँ आने में बहतरी है ऐसी अगर तुमारी मान्यता है तब ही आजाना अच्छा है अर्थात तुमारे रहने के बारे में मैं तटस्थ हूँ।

पूरे (Poore) की दोनों पुस्तक मिल गई हैं। जीवन चरित्र किसके चाहियें? अंग्रेजी में या हिन्दी में? Indian Drugs की किताब मेरे पास तो काफ़ी थीं लेकिन सब किताब म्युनिसिपैलिटी को चली गई। अब तो नहीं हैं।

बापू के
आशीर्वाद

१०१

चि० शर्मा,

तुम्हारा खत मिला। मेरी मनोदशा ऐसी हो गई है कि बच्चों को भी मैं हुक्म नहीं करता हूँ। जब मैं निश्चय कर सकूँ तब तो अवश्य हुक्म भी करूँ लेकिन दिन प्रति दिन ऐसे ही होता है कि मैं दूसरों के लिए क्या योग्य हूँ कैसे जानूँ?

अब तो वहीं रहो। पुस्तक* की खोज चल रही है। पैसे बचाने

---

* डा० अनसारी साहब द्वारा तैयार की हुई पुस्तकों की लिस्ट बापू ने न तो मुझे भेजी और न स्वयं वह पुस्तकें खरीदीं। उन्हें मुफ़्त हासिल करने की इच्छा से अपने जानकार सभी डाक्टरों को पुस्तकों के लिये लिखते रहे। और इसी में महीनों व्यतीत हो गये। आख़िर महादेव भाई द्वारा वह लिस्ट मैंने उनसे मँगाकर सब पुस्तकें खरीद लीं। इस पर भी बापू ने बुकसेलर से कमीशन लेने का मुझे आदेश दिया जैसा कि आगे के पत्रों से पता चलेगा।

में यह सब होता है। इतना तो कह दूं कि तुम दोनों का दिल इस ओर आने को लगे तो आ जाना। वहाँ सबकी प्रकृति अच्छी न रहे तो भी आ जाना। आने के बाद यहाँ से जाना ही नहीं है। हाँ, पश्चिम जाने का बने तो जुदी बात है।

२७-३-३५ बापू के
आशीर्वाद

१०२

चि० शर्मा,

अब तक कुछ तार नहीं है इसलिए देवी अच्छा है ऐसा मानता हूँ। मैंने तो अब तक किसी को इंजेक्शन नहीं लगवाये हैं। मिट्टी की पुलटिस से ही काम लिया है। हाँ, यदि शिमले जा सकते हो तो अवश्य जाओ। किताब यदि हाथ आयगी तो मैं भेजूँगा। मौन* छुटने के बाद का जो डर है वह व्यर्थ है।

वर्धा बापू के
१-४-३५ आशीर्वाद

१०३

चि० शर्मा,

तुम्हारा खत मिला। देवी अच्छा ही होगा। यदि रस्सी† लगाना है तो अब तो क़रीब हर अस्पताल में लग सकती है। खुर्जे में नहीं तो दिल्ली में तो है ही।

* बापू ने लम्बा मौन ले रक्खा था। मुझे ऐसा लगा कि अपने मौन के बाद शायद राजनीति में बापू कोई नया क़दम उठायेंगे। बापू ने लिखा कि वह डर व्यर्थ है।

† रस्सी = इंजेक्शन।

याद रखो कि यहाँ रहने के लिए आने का तुमको अधिकार है ही। आज्ञा तो देने की स्फुर्णा अब तक हृदय में नहीं है।

वर्धा
६-४-३५

बापू के
आशीर्वाद

चि० देवी के ज़ख्म को जब पूर्ण आराम हो गया तब बापू के साथ विचार विमर्श करने के लिये मैं २३ ता० को मगनबाड़ी पहुँचा। चार दिन उनके साथ बातें कीं और यही निर्णय हुआ कि मैं पश्चिम जाऊँगा और मेरे बच्चे खुर्जा ही रहेंगे। मगनबाड़ी से २७ ता० को खुर्जा वापिस होते समय एक अजीब घटना हुई :

मेरे साथ चमड़े का एक सूटकेस, एक बिस्तर तथा बेंत का बना हुआ मेरा खाना रखने का एक पिटारा था। गाड़ी वर्धा से सुबह को शायद नौ बजे चलती थी। मैं स्नान घर में था तब साबरमती के मेरे पुराने मित्र श्री भगवान जी बिना मेरे दरियाफ्त किये मेरा सामान स्टेशन पर ले गये। उनके साथ दूसरे एक भाई स्टेशन पर डाक पोस्ट करने जा रहे थे। उन्हें भी श्री भगवान जी ने मेरा कुछ सामान दे दिया। बापू को यह सब हाल किसी ने जा कहा। मैं जब उनके पास उनका आशीर्वाद लेने गया तो स्वाभाविकतया बापू ने मेरी कमर ठोकी किन्तु तुरन्त ही उनकी यह फटकार लगने लगी कि "दो व्यक्ति अपना काम छोड़कर मेरा सामान स्टेशन ले गये हैं" यह क्या हुआ! मैं हैरान था। क्योंकि मैंने तो किसी को ऐसा करने का कहा ही नहीं था लेकिन बापू की फटकार दस मिनट तक बन्द न हो पाई और गाड़ी का समय यदि समीप न होता तो न मालूम मेरा उस वक्त वहाँ क्या बनता। स्टेशन पहुँचने पर मैंने श्री भगवान जी को लगते हाथों लिया क्योंकि उनकी उस सहानुभूति की मुझे भारी क़ीमत देनी पड़ी थी। गाड़ी आधा घंटा लेट थी। मैंने बापू को अपने सामान को स्टेशन तक श्री भगवान जी द्वारा लाने का सब हाल लिखकर उन्हीं के हाथों वह पत्र बापू को भेज दिया था। खुर्जा पहुँचते ही उस मेरे पत्र के उत्तर में बापू का यह खत मिला :

बापू की इस पत्र में दी हुई हिदायतों पर पूरी तरह अमल करने से ही मेरी कुल पश्चिमी यात्रा बड़े सुख और आराम से कटी। बापू की फटकार या उनकी मज़ाक का भी कोई शब्द अर्थ-हीन नहीं देखा गया।

१०४

चि० शर्मा,

कैसी बात ? छोटी ही चीज़ थी उसमें परिणाम बड़े भरे थे। तुमारी बात पर मैंने ध्यान दिया था तुमसे उठ सके उससे ज्यादा बोझ था। इस कारण तुमको मदद की आवश्यकता थी। यही मेरा दुःख। हम तो ग़रीब लोग हैं हमारे पास इतना बोझ क्यों ? तुमारे साथ तो एक किताब, एक कम्बल, एक गमछा, एक लोटा, एक कटोरा, एक चद्दर, धोती कुरता और टोपी के सिवाय और कुछ होना नहीं चाहिये था। उससे अधिक क्यों लाये ? लाये तो चुपकी से एक हेलकरी* को बुलाकर जाना था अथवा जैसे मैंने कहा ज्यादा चीज़ थी वह छोड़ जाना था। न भगवान जी को आना था न किशोर प्रसाद को। दोनों काम में थे लेकिन दोनों सामान उठाने के लिए गये। किशोर प्रसाद के साथ ख़त इत्यादि सो तो अलग बात है तुमारे दुःखी होने का तनिक भी कारण नहीं था। शिक्षा पाने का था अब भी पाये हो तो यह हादसा भले ही हुआ। मेरा ख़त† चला गया है।

२७-४-३५

बापू के
आशीर्वाद

तुम्हारा ख़त‡ वापिस जाता है।

---

* कुली।

† बापू ने अमेरिका के डा० जोन हार्वे कैलोग को मेरे वहाँ आने के समाचार लिख दिये थे।

‡ बापू मेरे पत्रों को मेरी फाइलों के लिए मुझे वापिस कर देते थे।

(२)

( देखिये पन्ना—एक सौ छप्पन )

बापू को जब मुफ्त पुस्तकें कहीं से न मिल पाईं और वक्त बहुत व्यतीत हो गया तो डाक्टर अनसारी साहब द्वारा तैयार की हुई पुस्तकों की फहरिस्त को मुझे भेज देने के लिये मैंने महादेव भाई को लिखा। महादेव भाई ने पुस्तकों की फेहरिस्त के साथ निम्न ख़त भेजा। इस ख़त पर भी बापू ने अपनी क़लम से लिखा है :

१०५

वर्धा
३-५-३५

श्री शर्मा जी,

पत्र पहुँचा। बुकसेलर का नाम

दी यूनीवर्सिटी बुकसेलर
करांची रोड, लाहौर है।

घटाई हुई क़ीमत भी, मुझे याद है तहाँ तक आपके लिस्ट में लिखी गई हैं। किताबें अगर डाक्टर गोपीचन्द* भार्गव के मार्फत लेंगे तो इससे भी अधिक सस्ती मिलेंगी। उनसे कहियेगा कि गांधी जी ने कहा है कि आपके लिए सब किताबें ख़रीदने की कृपा करें।

आपका सेवक,
महादेव देसाई

---

* पंजाब के भूतपूर्व चीफ़ मिनिस्टर।

इसी पत्र पर बापू ने लिखा है :

मैं डाक्टर गोपीचन्द को लिख रहा हूं। यहाँ तुमारे हिसाब में ४३ रुपया निकलते हैं। ४२ रुपया रेल किराये का है। मुझे सब स्मरण नहीं है। मेरी सलाह है भले १००* रुपया ऐसे ही रहें।

बापू के
आशीर्वाद

बापू मेरे अमेरिका जाने के विषय में महादेव भाई द्वारा श्री घनश्यामदास बिरला से पत्र व्यवहार कर रहे थे। इसका पता मुझे बापू के नीचे के पत्र से चला जो उन्होंने बिरला जी के ही पत्र की खाली पुश्त पर लिखा है। इससे काग़ज की बचत हुई तथा एक ही पत्र में दोनों के पत्र भी मुझे पढ़ने को मिल गये। इसी तरह इस्तेमाल हुए लिफाफों को भी पलट कर बापू उनका फिर से उपयोग कर लेते थे और सैकड़ों काग़ज़ और लिफ़ाफों की उनके प्रतिदिन के पत्र व्यवहार में बचत हो जाती थी :

१०६

चि० शर्मा,

तुमको कल एक ख़त भेजा। अब स्टीमर के बारे में उत्तर आ गया है सो उसके पीछे है ठीक है ना ?......कार्गो बोट की मुसाफिरी बिलकुल ख़राब नहीं है। मैं मुंबई से सीलोन तक कार्गो बोट में ही गया था। मुझे ज्यादा अच्छा लगा था। एकान्त थी।

५–५–३५

बापू के
आशीर्वाद

---

* आश्रम में मेरे १०० रु० जमा थे जिसमें से वहाँ जाने आने का मेरा ख़र्च होता रहता था।

उपरोक्त पत्र की पुश्त पर अंग्रेजी में टाइप हुआ श्री बिरला जी का है जो उन्होंने महादेव भाई को लिखा था :

"Bapu has written to me about Dr. Sharma and I will write to-morrow after making some enquiries. I think it is possible to send him as far as New York or San Fransisco on a Cargo Steamer without having to pay any fare. The Cargo Steamer takes a little longer but is quite comfortable. Being our regular large shippers of Gunnies to America, I hope to be able to persuade the Liner to take the passenger free but I will write after making further enquiries".

"बापू ने मुझे डा० शर्मा के लिए लिखा है। मैं इस बारे में कछ पूँछ-तांछ करके लिखूँगा। मेरे ख्याल से उन्हें कार्गो जहाज़ द्वारा बिना कुछ खर्चे किये न्यूयोर्क या सैनफ्रान्सिसको तक भेजा जाना सम्भव हो सकता है। कार्गो जहाज़ में कुछ समय तो अधिक लगता है किन्तु बिलकुल आरामदेह होता है। जहाज़ की कम्पनी अमेरिका को हमारा सन बराबर ले जाती हैं इस कारण मुझे आशा है कि मैं कम्पनी से फ्री मुसाफरत के लिए स्वीकृति ले सकूँगा किन्तु ठीक तो मैं उनसे पूँछ ताँछ करके ही लिखूँगा।"

मैं पहिले लिख आया हूं कि विरोध, विघ्न और बाधायें यह तो मेरे जन्म के साथी रहे हैं। दरिद्रनारायण की कृपा से दरिद्रता उन्होंने सन् १६३२ से मुझे बरदान में दी। इसलिये मेरे जीवन में प्रत्येक काम के साथ इन चारों मित्रों की मदद रहती आयी है। विरोध, विघ्न बाधायें तथा दरिद्रता वस्तुतः किसी को साधना पथ पर अग्रसर करने में सदैव सहायक ही होते आये हैं ऐसा मेरा निजी अनुभव है। इसलिए इनसे घबराने के बजाय प्रत्येक नवयुवक को इनसे स्नेह करना चाहिये क्योंकि अधिक निकटता से देखा जाय तो पता चलेगा

कि 'विरोध' मनुष्य को अनेक काल्पनिक तथा अनावश्यक पार्थिव सुखों की प्राप्ति के प्रयास से बचाये रखता है तथा मनुष्य को सदैव जाग्रत और सतर्क रखता है; 'विघ्न महाशय' के कारण मनुष्य दृढ़ संकल्प बनता है और उसकी इच्छा शक्ति को बल मिलता है; 'व्याधा मित्र' शरीर को लोहे के समान प्रति-रक्षित बना देता है तथा 'दरिद्रता' मनुष्य को ईश्वर के अधिक समीप रखती है और उसका स्मरण सदैव ताज़ा बनाये रहती है जिसके कारण प्रभु का हिरन्य हस्त सदैव उसके सर पर रक्खा प्रतीत होता है तथा उसी प्रभु का हिरन्य कवच अन्दर बाहर मनुष्य की सुरक्षा करता रहता है। सच पूछा जाय तो मुझे अब वह कोई काम रुचि कर ही नहीं लगता जहाँ इन चारों मित्रों में से कोई एक भी मेरे साथ न हो। बापू जैसे महान् पुरुष द्वारा मेरे पश्चिम जाने के समाचार सुनते ही मेरे इन चारों मित्रों ने बारी-बारी से जो अपना कार्य प्रारम्भ किया वह आगे की घटनाओं से तथा बापू के पत्रों से मुझे मालूम हुआ।

जहाज कम्पनी ने मुझे फ्री पैसेन्जर स्वीकार कर लिया था; मेरे टिकट के लिए आदेश निकल गये थे; स्टीमर के जाने की तिथि भी निश्चित हो गई थी यह सब कुछ हो जाने पर बापू वर्धा से मेरे लिए पास पोर्ट हासिल न कर सके। बापू यह समझे हुए थे कि वह मेरे पासपोर्ट को वर्धा में स्वयं बनवा लेंगे इसलिए मुझसे इस विषय पर कभी कोई चर्चा नहीं की। जब उन्हें पास पोर्ट के नियम मालूम हुए तो यह निम्नपत्र उन्होंने लिखा और जहाज़ कम्पनी की स्वीकृति का पत्र उसके साथ में मेरे पढ़ने को भेजा :



चि० शर्मा,

तुमारी टिकिट का ओर्डर तो आ गया। लेकिन पासपोर्ट में मुश्किल है। पासपोर्ट के लिये अर्जी प्रत्येक मनुष्य को अपने लिये करनी पड़ती है। इसलिये तुमारे शायद दिल्ली जाना पड़े। संभव है

—एक सौ साठ

कि खुर्जा के मजिस्ट्रेट के यहाँ अर्जी का फार्म मिल सके। तुमारी अर्जी जाने के बाद मैं लिख सकूँगा। यदि आवश्यकता होगी तो। पासपोर्ट मिलने के बाद कलकत्ते के अमेरिकन कोनसल का प्रमाण पत्र चाहियेगा। वह तो मैं ले सकूँगा ऐसी उम्मीद रखता हूँ। अब तो तुमारे पासपोर्ट की तजवीज़ करना है।

साथ के खत वापिस किये जायँ। मैं कल बोरसद जाता हूँ। २ जून को वापिस। बोरसद—वाया—आनन्द। बी० बी० एण्ड सी० आई० रेलवे। ठिकाना २३ तारीख़ से ३१ तक समझो।

वर्धा
२०-५-३५

बापू के
आशीर्वाद

खुर्जा के एक महाजन ने अपनी पत्नी के साथ एक बड़ी रक़म का कभी जोइंट बीमा कराया था उसकी एक ही किश्त देने के बाद उसकी पत्नी मर गई। बीमा कम्पनी को इस मामले में कुछ शक था। उसकी पत्नी बीमा होने के कई महीने पहिले कभी मेरे इलाज में रह चुकी थी इसी सिलसिले में बीमा कम्पनी ने कुछ मालूमात करने के लिये मुझे कोर्ट के वारन्ट द्वारा गवाही देने को बुला लिया था। महाजन मेरी गवाही पर रुष्ट हो गया और बापू को उसने यह पत्र लिख दिया कि 'मैं उससे ५,००० रु० माँगता था। वह रक़म उसके न देने से मैंने उसके मुक़दमे को बिगाड़ देने की गरज़ से बीमा कम्पनी की तरफ़दारी की है'।

बापू को इस सिलसिले में मैंने भी सब समाचार अपनी प्रतिदिन की रिपोर्ट के साथ भेज दिये थे और उनसे जोइंट बीमा के विषय में 'हरिजन' में कुछ लिख देने की प्रार्थना भी की थी क्योंकि इस हादसे से मुझे सदमा पहुँचा था उस सिलसिले में बापू ने निम्न पत्र लिखा :

—एक सौ इकसठ

चि० शर्मा,

साथ का ख़त तो प्रातःकाल तीन बजे लिखा। दोपहर तुमारा ख़त आया। उसी डाक से ख़बर आई कि तुमने गवाही देने के लिए रु० ५,००० मांगा था। मैंने इस बात पर वज़न नहीं दिया। इतने में तुमारा ख़त पढ़ा। उसमें उसी बारे में और बात। तुमको निराशा कैसे हुई? जज को कैसे निराशा हुई? क्यों, खुर्जा क्यों छोड़ना? दुनियां कुछ भी कहे इससे क्या?......जोइंट पोलीसी के बारे में मुझको पूरा समझा दोगे तो मैं अवश्य कुछ छापूँगा। अब तक मैं समझा नहीं हूँ। तुम तो जानते हो मैं बीमा कराने का विरोधी हूं। लेकिन खास जोइंट का क्यों? बीमा में ज़हर देने का तो अकसर हुआ ही करता है। जोइंट में कुछ विशेषता मैं नहीं पाता।

तुमको फोड़े* कहाँ हैं? मिट्टी से शीघ्र आराम न हो तो उसे छोड़ना चाहिये।

वर्धा
२०-५-३५

बापू के
आशीर्वाद

कोई बात आवेश में न की जाय।

बापू

इसी बीच में मेरे पास लाहौर से मँगाई हुई पुस्तकों का वी० पी० पार्सल एक तो आ गया दूसरे के आने की सूचना मिल गई थी बापू को इसकी सूचना भेजनी ही थी यहाँ फिर बापू को कमीशन का ख्याल आ गया। और मुझे तुरन्त लिखा :

---

* लेखक की जंघा में दो फोड़े हो गये थे जो मिट्टी की पुलटिसों से ही ठीक हुए।

चि० रानी,

तुम्हारा पत्र मिला है।

मैं जानता हूँ इस वक्त तक तुमने पुस्तकों को पढ़ लिये हैं।

[illegible]

( देखिये पन्ना—एक सौ त्रिरसठ )

१०६

चि० शर्मा,

तुमारा खत मिला है। मैं समझा हूं इस वक्त तो तुमने पुस्तकों के पैसे दिये हैं दूसरे आ जाने से सबके पैसे तुमको जमा* दूंगा। पुस्तकों के पैसे तुमारे देने की कोई आवश्यकता नहीं है। क्या दूकानदार ने कुछ दाम कम किया कि जो छापा था वही लिया? जो पुस्तक पढ़ सकते हैं आज सो तो ऐसे ही पढ़े जाँय। दरम्यान अमेरिका का क्या होता है सो देखें। वर्धा आकर तो अवश्य सीख सकते हो यह सब तो अमेरिका पर निर्भर है। डा० कैलोग को लिखने का मतलब यह नहीं है कि तुमारा जाना उनके उत्तर पर निर्भर है। यदि पासपोर्ट हमारे पास रहता तो मैं तुमको ३१ तारीख को अवश्य रवाना कर देता। कैलोग के उत्तर की प्रतीक्षा न करता। पासपोर्ट का तो मैंने तुमको लिखा सो हुआ। तुमारी अर्ज़ी के सिवाय एक क़दम भी आगे नहीं बढ़ सकते हैं। मैं बोरसद में हूं। ३१ तारीख को रवाना होकर २ जून को वर्धा पहुँचूंगा।

बापू के
आशीर्वाद

वा० २७-५-३५

तुमारे फोड़े का क्या? कोर्ट के जजमेन्ट का क्या?

११०

चि० शर्मा,

मैं क्या करूं? तुमको वर्धा से पासपोर्ट नहीं मिलेगा। जहाँ तक मैं

---

* बापू से पैसे लेने का अवसर कभी नहीं आया।

—एक सौ तिरपन

जानता हूं दिल्ली से ही मिलेगा। मजिस्ट्रेट के यहाँ अर्ज़ी होगी। तलाश पुलिस कमिश्नर करेगा इसलिए तुमारे अर्ज़ी का फार्म लेकर भर कर देना होगा। मेरी तो उम्मीद थी कि मैं ही पासपोर्ट निकालूंगा लेकिन क़ानून ही ऐसा नहीं होता है। मुझको भी अर्ज़ी करनी पड़ी थी। फोटो देना पड़ा था। और यह सब शिमले में नहीं लेकिन मुंबई में। फरक इतना था कि मेरे लिए शिमले से रास्ता साफ कर दिया गया क्योंकि मैं राउंड टेबिल में जा रहा था। तुमारे बारे में काफ़ी तलाश होगी जैसी सब के बारे में हुआ करती है। इसमें न कुछ घबराहट की बात है न कुछ और बात है। ऐसे अमलदारों के सम्पर्क में बहुत दफा तुमारे इधर उधर आना ही पड़ेगा। अमेरिका में तो बहुत ही आना पड़ता है। हर जगह तहकीक़ात और पूंछ ताछ होती है इसलिए यह काम तो आरम्भ कर दो।

५,००० की बात एक सज्जन ने ही लिखी है। अपना नाम प्रकट करना नहीं चाहता है। कम्पनी तो वही है। इसमें मुझको तो कोई धोका दिया जा सकता ही नहीं। न उसका मतलब ऐसा है। जब उनको मालूम हुआ कि मैं तुमको अमेरिका भेज रहा हूँ तो उसने मुझको साव-धान करने के लिए खत भेजा। मैंने लिख दिया मुझे सावधान होने का कुछ है नहीं। तदपि तुमारे लिये कैसी बातें होती हैं यह तुमारे कानों तक पहुंचाने का धर्म समझकर तुमको लिखी। इसमें कोई विचार करने की बात नहीं है।

जोइंट पालिसी का समझा। इसमें कुछ कर नहीं सकते हैं। ऐसा मुझे डर है। मेरे लेख से एक भी पोलिसी रुक जाने का सम्भव नहीं है। उसकी भी फिक्र न करें अगर लिखना कर्तव्य बन जाय तो। मैं अब तो ऐसे प्रतीत करता हूँ कि लिखने का कोई कर्तव्य नहीं है।

बोरसद
२६–५–३५

बापू के
आशीर्वाद

( देखिये पन्ना—एक सौ चौषठ )

उपरोक्त पत्र पढ़ कर जब मुझे यह निश्चय हो गया कि पासपोर्ट की अर्ज़ी मुझ ही को देनी होगी तो मैंने पासपोर्ट का फार्म भरकर पहिले बापू के देखने को भेज दिया और उनसे उसको वापिस करने की प्रार्थना की। नीचे के पत्र के साथ पासपोर्ट का फार्म बापू ने वापिस किया तब ६ जून को उसके मिलते ही मैंने फीस दाख़िल करके पासपोर्ट का फार्म बुलन्दशहर के कलेक्टर को भेज दिया।

१११

चि० शर्मा,

तुम्हारा ख़त मिला। पासपोर्ट की अर्ज़ी की नक़ल वापिस करता हूं। मनीऑरडर* में से जो तुमारे लेना था सो क्यों नहीं काटा? पुस्तकों का और दूसरा मेरे खाते में रखो और जो गवाह† के बारे में पैसे बचे हैं सो मेरे जमा करो। बाद में लेन देन होगी। इतना हिसाब तो रख सकते हो ना?

५००० के बारे में जो अच्छा लगे सो करो। यदि कोई तुमको अपना नाम नहीं बताता है तो मानो कि वह डरता है। फोड़े मिट्टी के प्रयोग से ही दुरस्त हुए कि और कुछ लगाना पड़ा था?

वर्धा
३–६–३५

बापू के
आशीर्वाद

* मैंने १००) रु० आश्रम में जो जमा किये थे उन्हें यों ही छोड़कर मैंने खादी, पोस्टल-स्टाम्प वगैरा का पैसा आश्रम को अलग भेजा था बापू ने उसी सिलसिले में लिखा है कि उस मनीऑरडर से आये हुये रुपयों में से यह खादी वगैरा का पैसा क्यों नहीं काट लिया?

† कोर्ट में गवाही देने के बाद मुझे रेल भाड़ा आदि का ख़र्चा मिला था।

**यहाँ भी गरमी बहुत तेज है। चौबीस घन्टों तक। भूसावल* में चार घंटे ठहरना पड़ा। लेकिन थर्ड क्लास वेटिंग रूप में नहीं। २५/२७ की सालों में थर्ड क्लास वेटिंग रूम का मुझे काफ़ी तजर्बा मिला।**

**बापू**

बुलन्दशहर के कलेक्टर के यहाँ भी मेरे पासपोर्ट की अर्जी पहुँचने से पहिले ही एक दूसरी क़िस्म का विरोध-पत्र उसी जोइंट पोलिसी कराने वाले महाजन का पहुँच गया था जिसमें कलेक्टर को सलाह दी गई थी कि वह मुझे पासपोर्ट न दिलाये। कलेक्टर उन दिनों मिस्टर डी० एस० बैरन था। मेरी तहकीकात पुलिस द्वारा कराने के बजाय उसने मुझे स्वयं बुला भेजा और ४५ मिनिट तक मुझसे बातें कीं। मेरी स्पष्ट तथा सीधी बातों से वह बहुत प्रभावित हुआ। मैंने पासपोर्ट की प्राप्ति के लिए पन्द्रह दिन की अवधि काफी समझ कर यह प्रतिज्ञा कर ली थी कि इसी अवधि में मुझे पासपोर्ट नहीं मिलेगा तो मैं अमेरिका जाना स्थगित कर दूंगा। मेरे इस प्रकार के निश्चय से कलेक्टर को आश्चर्य हुआ। उसके ख्याल से पासपोर्ट में ६ महीने तक लग सकते थे इसलिए उसने मेरे निश्चय को बदलने की सलाह दी। "पासपोर्ट जैसे काम के लिए किसी भी सुचारु सरकार को पन्द्रह दिन पर्याप्त होने चाहिये" यह चीज़ मेरे मस्तिष्क में बैठी हुई थी इसलिए मैं अपने निश्चय पर अटल रहा। बापू को भी मैंने अपनी यह प्रतिज्ञा लिख भेजी और कलेक्टर के साथ हुई अपनी बातों का सारांश भेज दिया तब बापू ने यह पत्र लिखा :

*** भूसावल स्टेशन पर तीसरे दर्जे के मुसाफ़िरखाने की बेंचों में मुझे खटमलों ने बहुत सताया था। और अन्य स्टेशनों का भी मुझे यही अनुभव था। उसका ज़िक्र मैंने बापू को लिखा था और मुसाफ़िरखानों में इस प्रकार की गंदगी का सुधार कराने की प्रार्थना की थी। उसी पर बापू ने यहाँ अपने अनुभवों का ज़िक्र किया है।**

पत्र- १११

( देखिये पन्ना—एक सौ पैंसठ )

११२

चि० शर्मा,

मैं तो जानता हूँ पासपोर्ट में छः २ मास से भी अधिक बीते हैं। देखें तुमारा क्या होता है? पैसे के बारे में नहीं समझा हूँ। पासपोर्ट आने पर कपड़ों* का देखा जाय और घड़ी इत्यादि का भी। पेजामा कुड़ता अच्छा लिबास है। करेले† का समझा ठीक है।

वर्धा
११-६-३५

बापू के
आशीर्वाद

बापू के उपरोक्त पत्र से मुझे ऐसा लगा कि मैं अब अमेरिका नहीं जा सकूँगा क्योंकि न तो पासपोर्ट १५ दिन में मिल सकेगा और नाहीं मैं अपनी प्रतिज्ञा तोड़ूँगा। अतः बापू को मैंने यह स्पष्ट लिख दिया कि मैं १५ दिन की अवधि बीतने पर मगनवाड़ी में आकर रहूंगा। उसके उत्तर में बापू ने यह पत्र लिखा :

११३

मगनवाड़ी; वर्धा
१६-६-३५

चि० शर्मा,

तुम्हारा खत मिला। पन्द्रह दिन की मर्यादा यह कुछ चीज नहीं

* अमेरिका के लिए अपने कपड़ों के साथ मैंने कुछ कुर्ते और पायजामे भी सिलवाये थे।

† मेरी धर्मपत्नी ने रास्ते के लिए करेले इत्यादि कुछ सब्जियां सुखाकर मेरे लिये तैयार की थीं।

—एक सौ चरपठ

है। बड़ों को भी पन्द्रह दिन में पासपोर्ट नहीं मिलता। अभी ही एक डाक्टर (को) पासपोर्ट मिला वह अठारह महीने के बाद।

तुम्हारा यहाँ आना यह अलग बात है। तुम्हारे आने के बाद द्रौपदी और बच्चों का क्या ? क्या वह भाईयों के साथ रहेगी ? सब हाल मुझको बराबर दे दो। यहाँ आने का निश्चय हो जायगा तो भी मैं कमरा नहीं ले रखूँगा। तुम्हारे आने के बाद अलग कमरे का देखा जायगा। लेकिन वह भी पासपोर्ट के बारे में निर्णय होने के बाद। अगर पासपोर्ट मिल भी जाय तो क्या अलग कमरा लेवें ? आने के पहिले तुम्हारे कलेक्टर को लिखना होगा या उनके पास जाना होगा और कहना होगा कि कुछ तहकीकात करना है तो वर्धा खत भेजे। उसको पूछा भी जाय कि उत्तर की कब आशा की जाय ? माँ के बारे में लिखा है वह मैं नहीं समझा हूँ। "श्री प" ने शिकायत तो काफी भेजी है लेकिन उसमें कुछ है नहीं ऐसा ही उत्तर भेज दिया गया है।

बापू के
आशीर्वाद

सर्वव्यापी प्रभू ने तो अपने अनेक भक्तों की बड़ी-बड़ी प्रतिज्ञायें पूरी कराने में मदद की है फिर मुझ नादान बालक की ही इस टेढ़ी तिरछी प्रतिज्ञा के लिए वह कहाँ सो जाते ! उस समय की परिस्थितियों को देखते हुए मुझे ऐसा लगा मानो प्रभू ने ही स्वयं नैनीताल से १८ जून को मेरा पासपोर्ट स्वीकार किया। २१ जून को पासपोर्ट कलेक्टर के दफ्तर में बुलन्दशहर आया। वहाँ भी मानों दीनबन्धु मौजूद थे क्योंकि मि० डी० एस०बैरन ने विशेष दूत द्वारा उसी तारीख की रात्रि को ११ बजे मेरे गाँव के मकान पर मेरे बच्चों के पास पासपोर्ट पहुँचाया। मैं किसी गाँव के दौरे पर गया हुआ था। २४ ता० की रात्रि को जब वापिस आया तो यह १८ जून का स्वीकृत हुआ पासपोर्ट मेरी पत्नी ने मुझे दिया।

मगन वाड़ी
वर्धा
ता. [illegible]

चि. शर्मा,

तुम्हारा खत मिला। पंद्रह दिन की मांगणी यह कुछ चीज नहीं है। बड़ों को भी पंद्रह दिन में पासपोर्ट नहीं मिलता। अभी ही [illegible] डॉ. को पासपोर्ट मिला। वह अठारह महीने के बाद।

तुम्हारा यहाँ आना यह अलग बात है। तुम्हारे आने के बाद द्रौपदी और बच्चों का क्या? क्या वह भाईओ के साथ रहेगी? सब हाल मुझको बराबर दे दो। यहाँ आने का निश्चय हो जायगा तो भी मैं कमरा नहीं दे सकूंगा। तुम्हारे आने के बाद अलग कमरे का देखा जायगा। लेकिन वह भी पासपोर्ट के बारे में निर्णय होने के बाद। अगर पासपोर्ट मिल भी जाय तो क्यों अलग कमरा लेते? आने के पहले तुम्हारे कालेकर को लिखना होगा या उनके पास जाना होगा और कहना होगा कि कुछ तहेकि-त करना है तो वर्धा पता भेजे।

उसको पूछा भी जाय कि उत्तर की आशा की जाय?

माँ के बारे में लिखा है वह मैं नहीं समझा हूं। रामगोपाल ने शिकायत तो काफी भेजी है लेकिन उसमें कुछ है नहीं। ऐसा ही उत्तर भेज दिया गया है

बापू के आशीर्वाद

( देखिये पन्ना—एक सौ परषठ )

चित्र—४/१

VISAS

CALCUTTA, INDIA

(Country)

SEEN ... journey to the United States

Hira Lal Sharma

Fred W. Jandrey

Vice Consul

Date JUL 3 0 1935

COUNTRIES FOR WHICH THIS PASSPORT IS VALID

PAYS POUR LESQUELS CE PASSEPORT EST VALABLE

British Empire (see regulations 10 and 11) France, the United States of America. Belgium Denmark Norway Sweden Germany Switzerland Spain Austria

The validity of this passport expires :

Ce passeport expire le :

June 18, 1940

unless renewed.

à moins de renouvellement.

Naini Tal

June 18, 1935.

( देखिये पन्ना—एक सो अड़षठ )

क्या ही अच्छा होता यदि आज स्वतन्त्र कहे जाने वाले भारत का शासक-वर्ग अंग्रेजों की भाषा, आहार, विहार तथा शिष्टाचार इत्यादि जैसी व्यर्थ की चीज़ों की नक़ल करने की अपेक्षा उनकी कार्यदक्षता जैसे गुणों को अपनाते। क्या वह कभी ऐसा कर सकेंगे ?

२५ ता० की सुबह को बापू को तार द्वारा पासपोर्ट मिल जाने की सूचना भेज दी गई :

114

Khurja. Gandhiji, Wardha. 25. 6. 1935

Pass-port granted. Wire if I bring it for Calcutta.

Sharma.

११४

खुर्जा। गांधी जी, वर्धा २५-६-३५

पासपोर्ट मिल गया। तार दीजिये क्या उसे कलकत्ता के लिये साथ लाऊँ ?

शर्मा

और यह उत्तर बापू का मिला :

## 115

Wardha 25. 6. 1935

Dr. Sharma, Khurja

Wire received. Come though next steamer unknown. Enquiring.

Bapu.

## ११५

वर्धा ता० २५-६-१९३५

डा० शर्मा, खुर्जा

तार मिला। आ जाओ यद्यपि दूसरे जहाज का मालूम नहीं है मालूम कर रहा हूँ

बापू

पासपोर्ट मिलने के बाद अनेक मित्रों के तार और पत्र मेरे पास आये। यहाँ केवल श्री रामदास गांधी का पत्र उल्लेखनीय है। यह उन दिनों स्वतन्त्र धन्धे की तलाश में बम्बई चले गये थे और किसी प्रिन्टिङ्ग के काम में लग गये थे।

( देखिये पन्ना—एक सौ सत्तर )

MGIPAh—

INDIAN POSTS AND TELEGRAPHS DEPARTMENT

G.

NOTICE

This form must accompany any inquiry made respecting this Telegram

| C | Rs | As. | Office Stamp |
|---|---|---|---|

16

| Handed in at (Office of Origin) | Date. | Hour. | Minutes | Service Instructions. | Words |
|---|---|---|---|---|---|
| Wardha | 25 | 16 | 50 | | 14 |

Recd. here at 17. H. 2

TO Dr Sharma Khurja

Wire received come through dak next steamer unknown inquiring

Bapu

N.B.—The name of the Sender, if telegraphed, is written after the text.

मार्फत श्रीयुत कल्यानदास जगमोहनदास,
फोर्ट, बम्बई
२८-६-३५

प्रिय भाई साहब,

मैंने मन में जो संकल्प किया था उसके पालन में अधिक समय जाने देना उचित नहीं समझता। मुझे इस महीने में कुछ धन प्राप्त हुआ है। पहिला काम प्रिन्टिङ्ग का किया और उसमें जो मिला उससे यह ख़याल आया कि जिसने मुझे शरीर शक्ति दी उनको, व इस धन्धे में जिसने मुझको शरीक किया उनको ही पहिली कमाई जाना चाहिये। ईश्वर ने मुझे आज जो कुछ शारीरिक सम्पती दी है वह अधिकतर आपके जरिये से दी है ऐसा मैं मानता हूँ। मुझमें जो कुछ कर्तव्य शक्ति प्राप्त हुई है वह भी आपने मेरे में से खींचकर निकाली है। उसका फल या आशीर्वाद तो वही एक ईश्वर आपको दे सकते हैं। मैंने तो जो सोचा है वही कर सकता हूँ। अर्थ के रूप में आपको, आपने जो कुछ किया है, उसके लिए मैं पूरी तौर से कुछ कर ही नहीं सकता। जो कुछ करना चाहता हूँ या भविष्य में होगा वह मेरी मनो-भावना का मन किंचित स्वरूप होगा। इससे ज्यादा क्या लिखूँ?

इस पत्र के साथ १२ आने के टिकट भेजता हूं यह रक़म मेरी तरफ से प्रेमांजली के रूप में स्वीकार करके मुझे आनन्द दें। मेरा काम और स्वास्थ्य ठीक चल रहा है।

आपको अमेरिका भेजने में पूज्य बापू सहानुभूत हुये हैं और सहमत हुए हैं यह खबर मिली थी। आपको पासपोर्ट मिला? कब

जाते हो ? आपकी मनोभावना सिद्ध हो और आप से आजारियों* की अधिक सेवा हो यही इच्छा और प्रार्थना है।

वर्धा में सब कुछ कुशल है। आपके यहाँ सब कोई अच्छे होंगे। पूज्य द्रौपदी बहन को प्रणाम।

आपका
रामदास का प्रेम बंदन।

बापू से मैंने पत्रों द्वारा कुछ आवश्यक प्रश्न किये थे और साथ ही साथ मेरे ख़िलाफ उस महाजन द्वारा की गई रिपोर्ट के विषय में भी मुझे कुछ जानकारी कराने की उनसे प्रार्थना की थी लेकिन जो भी शिकायत बापू के हृदय को नहीं छू पाई उन्होंने वह मुझे कभी नहीं लिखी। आगे भी ऐसी सारहीन पिशुनाएँ उनके पास कई बार आईं जिनको बापू ने मुझे दिखाने तक की भी ज़रूरत न समझी ऐसा ही उन्होंने यहाँ भी किया जैसा निम्न पत्र से प्रगट होता है।

११७

वर्धा,
३०-६-३५

चि० शर्मा,

तुम्हारे दो ख़त मिले। कोनसल के पास विज़ा की तजवीज़ चल रही है। इसी के लिए तुम्हारे कलकत्ता जाना नहीं होगा। ऐसी मेरी उम्मीद है। डा० कैलोग का उत्तर नहीं आया है। आना चाहिये था। मैं दूसरी तजवीज़ करूँगा। श्री (प) के ख़त में कुछ है नहीं। मैंने उसको लिखा है कि उसके ख़त पर मैं कोई ध्यान नहीं दे सकता हूँ

*आजारियों—बीमारों की।

Shri H. S. Sharma
Khurja
U. P.

पत्र—११८

(देखिये पन्ना—एक सौ तिहत्तर)

मैंने इसमें से कोई चीज़ पर वज़न नहीं दिया है। इसलिए तुमको भी इस बारे में कुछ नहीं लिखा।

बापू के
आशीर्वाद

मुझे यह तो इल्म था कि अमेरिका का विज़ा कलकत्ते में मिलेगा लेकिन यह इल्म नहीं था कि मैं कलकत्ते से सवार हूंगा या बम्बई से। बापू के निम्न पत्र से मुझे कलकत्ते से सवार होने की पहिली बार ख़बर मिली।

११८

चि० शर्मा,

कलकत्ते से ख़त आया है। स्टीमर दस अगस्त के आस-पास जायगी। लिखते हैं तुमारे दस बारह दिन पहिले जाना होगा। अमेरिका के विज़ा के बारे में वे ठीक कर देंगे। तुमारे पर वह छपा* हुआ किसने भेजा था? निश्चय से ख़बर चार-पाँच रोज में आयेंगे। दरिया† की परवाह नहीं है जाना कलकत्ते से ही है।

वर्धा
१–७–३५

बापू के
आशीर्वाद

* मेरे एक मित्र ने कलकत्ते के किसी अख़बार का एक कटिंग मुझे भेजकर मुझसे मेरे अमेरिका जाने की पुष्टि करनी चाही थी। वह कटिंग मैंने बापू को भेज दिया था।

† दरिया = समुद्र में तूफ़ान उठने का समय समीप था।

अब बापू का दूसरा पाठ कम खर्ची पर तथा मुझे अमेरिका में मज़दूरी आदि करके अध्ययन करने पर शुरू हुआ। इस विषय पर वह पिछले कई महीनों से अमेरिका में रहने वाले अपने मित्रों से लिखा पढ़ी कर रहे थे। उनमें से एक श्री गोविन्द जी* का पत्र बापू ने मुझे पढ़ने को भेजा और उसके साथ ही यह पत्र लिखा :

११६

चि० शर्मा,

इसके साथ गोविन्द का ख़त है उससे पता चलेंगे वहाँ कैसे हाल हैं इससे कुछ चिन्ता नहीं है जो देना पड़ेगा सो देंगे। यहाँ एक भाई आये थे वह कहते हैं आजकल कैलोग की ख्याति उतनी नहीं है जितनी दूसरों की। मैं उनसे नाम ठाम इ० भेजने को कहूंगा।

वर्धा
१४–७–३५

बापू के
आशीर्वाद

बापू के ऐसे पत्रों का समय से पहिले मैं उत्तर दे भी क्या सकता था इसलिए मैंने उन्हें स्पष्ट लिख दिया कि यदि वहाँ खर्चा ज्यादा है तो वह मुझे न भेजें।

इस पर बापू ने लिखा :

* श्री गोविन्द जी हिन्दी टाइपराइटर के आविष्कारक थे और अमेरिका में ही अक्सर रहते थे इनके द्वारा बापू ने अमेरिका के खर्च इत्यादि की बाबत दरियाफ़्त किया था।

INDIAN POSTS AND TELEGRAPHS DEPARTMENT.

NOTICE.

This form must accompany any inquiry made respecting this Telegram.

| Charges to pay. | |
|---|---|
| Rs. | As. |

Office Stamp.

| Handed in at (Office of Origin). | Date. | Hour. | Minute. | Service Instructions. | Words. |
|---|---|---|---|---|---|
| Wardhaganj | 22 | 17 | 45 | | 12 |

Recd. here at 7 H. 50 M.

TO Dr. Sharma Khurja =

They want you quick Calcutta come immediately =

Bapu =

N.B.—The name of the Sender, if telegraphed, is written after the text.

१२०

चि० शर्मा,

तुमारा खत आया था। जो हो सो हो। अमेरिका जाना तो है ही। कलकत्ते से खत आया है। तारीख दस को जहाज जायेगा। तुमारे कलकत्ता जल्दी पहुँचना है। इस लिए यहाँ २५ तारीख को आ जाओ। यहाँ दो तीन दिन रहकर कलकत्ता जाना अच्छा होगा। वहाँ से ज्यादा सामान नहीं लाना। आवश्यक अवश्य लाओ।

वर्धा<br>२०–७–३५

बापू के<br>आशीर्वाद

उपरोक्त पत्र खुर्जा पहुँचा ही था कि बापू का यह तार आ गया :

121

Wardhaganj 22. 7. 1935

Dr. Sharma, Khurja

They want you quick Calcutta. Come immediately.

Bapu

१२१

वर्धागंज २२–७–३५

डा० शर्मा, खुरजा

वह तुम्हें कलकत्ता में जल्दी चाहते हैं तुरन्त आ जाओ।

बापू

दिल्ली तक मेरे सब बच्चे मुझे पहुँचाने गये। मेरी पत्नी ने मुझे एक पैकेट दिया जिसमें नारियल, चावल, रोली, कलावा, फूल तथा कुछ मिठाई थी। और मुझसे कहा गया कि हमारे जहाज़ के समुद्र में प्रवेश करते ही मैं उस पैकेट को समुद्र की भेंट कर दूं। २६ ता० को मैं मगनवाड़ी बापू के पास पहुँचा और दो दिन उनके साथ रहा। रात्रि को मेरा बिस्तर बापू के समीप ही रहता था। २७ ता० की रात्रि को बापू अधिक देर तक कुछ पत्र लिखते रहे और मैं सो गया। २८ की सुबह को उन्होंने ३ बजे ही मुझे उठा दिया। स्नानादि से फारिग़ होकर प्रार्थना के बाद मैं बापू के पास कमरे में जा बैठा। बापू आखें मूँदे हुये थे। थोड़ी देर में उन्होने चार पत्र मेरी ओर सरका दिये। वह पत्र रात्रि में ही बापू ने लिख लिये थे। उनमें एक श्री ब्रिजमोहन बिरला के लिये था, दूसरा श्री सतीशचन्द्र दास गुप्ता को, तीसरा श्री प्यारेलाल भाई को जो उन दिनों श्री सतीश बाबू के यहाँ कुछ अध्ययन के लिये गये हुए थे और चौथा पत्र अमेरिका के प्रसिद्ध रेवरेन्ड डाक्टर जोन हैनेज़ होम्स के नाम था। इस अन्तिम पत्र की एक प्रतिलिपि बापू ने डाक द्वारा उनको अमेरिका भेज दी थी। अपने साथ ले जाने वाले पत्र की नक़ल मैंने अपनी फाइल के लिये कर ली थी वह यह है :

122

Dear friend,

This will introduce to you Sri H. L. Sharma who is an utter stranger to America. He is going there in order to gain his further knowledge of Natural treatment of diseases. Dr. Kellogg's Battle Creek-Sanitorium has attracted his attention. I now learn from Dr. Kellogg's representative that he has stopped taking in pupils. I can think of no

better guide for Sri Sharma than your goodself. He wants to live there as a very poor man. He is hard working. If he can work for his studies and food, he would like it and so would I. If he cannot, he is assisted by a friend who will defray his expenses. Please give him such help as is in your power to give him. I am not giving Sri Sharma any further introductions not even to Hari Das. Whatever you may think necessary in this direction, you will please do. I know you do not mind my putting you to this trouble. It will interest you to know that Sri Sharma is pursuing this study purely to serve diseased humanity.

Wardha. Yours sincerely,
27. 7. 35 M. K. Gandhi.

१२२

प्रिय मित्र,

यह पत्र श्री एच० एल० शर्मा को आपसे परिचय कराने के निमित्त है। यह अमेरिका के लिए बिलकुल अजनबी हैं। रोगों की प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी विशेष ज्ञान प्राप्त करने के लिए अमेरिका जा रहे हैं। डाक्टर कैलोग का बैटिल क्रीक सेनीटोरियम ने उनका ध्यान आकर्षित किया है। मुझे अब डाक्टर कैलोग के प्रतिनिधि से मालूम हुआ है कि उन्होंने शिष्य बनाना बन्द कर दिया है। श्री शर्मा के पथ प्रदर्शन के लिए आपके आदर्णीय अस्तित्व के अतिरिक्त और विचार में नहीं आता। वह वहां एक बहुत ही सादा, ग़रीब आदमी की

तरह रहना चाहते हैं। वह बहुत परिश्रमी हैं। यदि किसी प्रकार वह अपनी शिक्षा और भोजन के निमित्त कुछ काम प्राप्त कर सकें तो उन्हें भी पसन्द होगा और मुझे भी। यदि यह न हो सका तो एक मित्र द्वारा उनकी सहायता होगी जो उनका तमाम खर्च उठा लेगा। जो सहायता भी आपसे बन पड़े उनको देने की कृपा कीजिये। मैं श्री शर्मा को कोई अन्य परिचय पत्र नहीं दे रहा हूं। हरिदास तक को भी नहीं लिखा है। इस ओर जो कुछ भी आप आवश्यक समझें उनके प्रति करने की कृपा कीजिये। मैं समझता हूँ कि जो कष्ट मैं दे रहा हूँ उसको आप कष्ट नहीं मानेंगे। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि श्री शर्मा यह अध्ययन केवल रोगी जनों की सेवा के हित में ही कर रहे हैं।

वर्धा
२७—७—३५

आपका शुभचिन्तक,
मो० क० गांधी।

इन पत्रों को मुझे देने के बाद बापू ने बड़े प्रेम से मेरी कमर ठोक कर मुझे आशीर्वाद दिया और मैं आश्रम के दफ्तर से अपने पिछले ५३) रु० वापिस लेकर कलकत्ते को रवाना हो गया। ६१) रु० मेरे पास थे। इस तरह वर्धा से चलते समय मेरे पास कुल ११४) रु० हो गये। कलकत्ते में मेरा बिरला पार्क में १२, १३ दिन ठहरना हुआ लेकिन मेरा समय अधिकतर श्री सतीष बाबू के यहाँ व्यतीत होता था। सतीष बाबू ने गाँव की ग़रीब जनता की सेवा करने वाले कार्यकर्त्ताओं के लिये "विलेज डाक्टर" नाम की पुस्तक लिखी थी तथा चीप रिमेडीज़ (सस्ती औषधियों) का आविष्कार किया था। उनका छोटा सा हस्पताल भी चलता था और कुटीर उद्योग के कुछ धन्धे भी थे। उनकी चीप रिमेडीज़ से मैं बड़ा प्रभावित हुआ और अपनी पश्चिम यात्रा से लौटने के बाद उनके साथ रहकर वह सब क्रियायें मैंने स्वयं सीखीं।

बिरला बन्धुओं के जरिये अमेरिकन विज़ा के मिलने में तथा मेरे सफर

सम्बन्धी अन्य सब सुविधाओं के प्राप्त होने में मुझे बहुत मदद मिली। उन्हीं के प्रभाव का यह फल था कि जहाज़ की कम्पनी ने मुझे न्यूयोर्क तक प्रथम श्रेणी का मुफ्त टिकट दे दिया जिसमें मेरे खाने इत्यादि का सब प्रबन्ध शामिल था।

मैंने कलकत्ते से २-८-३५ को ही बापू के लिये पत्र भेज दिया था तथा श्री सी० एफ० एन्ड्रूज़ जो कलकत्ते से वर्धा जा रहे थे उनके द्वारा भी बापू को अपनी राज़ी खुशी भेज दी थी किन्तु बापू ने तीन दिन में ही यह ख़त लिख भेजा :

१२३

चि० शर्मा,

यह क्या बात है कि तुमारी तरफ से कोई खत नहीं है? श्री व्रजमोहन के खत से पाता हूं अमेरिका का खर्च बहुत है। इतना होना नहीं चाहिये। वहाँ जाकर देखोगे। मज़दूर बनकर रहने में खर्च कम होना ही चाहिये। सब ठीक चल रहा होगा। सब हाल दे दो।

१-८-३५

बापू के
आशीर्वाद

डा० अनसारी साहब की चुनी हुई डाक्टरी की पुस्तकों की एक पेटी, इकमिक कुकर, कपड़ों का एक छोटा सा बक्स तथा तीन रु० चौदह आने की खरीदी हुई एक डेक चेअर (Deck Chair) यह मेरा कुल सामान था। सब कुछ ख़रीदने के बाद मेरे पास ५३) रु० बचते थे। यह रुपया मैंने श्री सतीष बाबू के हस्पताल के ग़रीब रोगियों के खाते में जमा करा दिया क्योंकि कलकत्ते से मेरे खर्च का नया खाता बिरला बन्धुओं के यहाँ खुलने वाला था। मैं अमेरिका तथा कुछ योरुप के सफर में कम खर्च करने का एक रिकार्ड क़ायम करना चाहता

था और ऐसा ही संकल्प मैं कर भी चुका था इसीलिये मैंने कुल २०० पौंड अपने नाम सिटी बैंक आफ न्यूयोर्क में जमा कराने की बिरला बन्धुओं से इच्छा प्रगट की। यह रक़म तुरन्त निम्नलिखित पत्र द्वारा बैंक में जमा करा दी गई।

124

"Gunny" 7th. August, 1935.

The Manager,
National City Bank of New York,
Calcutta.

Dear Sir,

Re: Travellers' L/Credit.

We shall thank you to issue a travellers' letter of Credit to the extent of 200 (Pounds two hundred only) in favour of Dr. H. L. Sharma–a friend of our Mr. Birla who is proceeding to New York for his Medical Research. We enclose herewith a cheque for Rs. 2,666/2/ (Rupees two thousand six hundred sixty six annas two only) equivalent of the above amount at exchange 1/6 3/32 plus your commission at 1/2 Per cent against the same as per our arrangement made with you last week.

We shall thank you also to give Dr. Sharma the necessary recommendation letter to all your branches in America and other countries so that he might

get all sorts of facilities during his stay in foreign countries.

Thanking you in anticipation,

Your's faithfully,
Sd. (Praphulla Babu)

१२४

"गनी" ७ अगस्त, १६३५

मैनेजर,
नेशनल सिटी बैंक आफ न्यूयोर्क
कलकत्ता।

प्रिय महोदय,

यात्री के लेटर आफ क्रेडिट के बारे में

हम कृतज्ञ होंगे यदि आप एक यात्री लेटर आफ क्रेडिट २०० पौंड की रक़म का डा० एच० एल० शर्मा के नाम जारी कर देंगे, जो हमारे बिरला जी के एक मित्र हैं और जो न्यूयोर्क चिकित्सा सम्बन्धी अनुसन्धान के लिए जा रहे हैं। जैसा कि आप से पिछले सप्ताह में तय हुआ था हम इस पत्र के साथ एक चेक २,६६६) रु० २ आना का भेज रहे हैं। इसमें तबादले की दर १/६ ३/३२ के हिसाब से बराबर की रक़म और आपका १/२ प्रतिशत के हिसाब से कमीशन शामिल हैं। हम कृतज्ञ होंगे यदि आप डा० शर्मा को अपनी अमेरिका तथा अन्य देशों की शाखाओं के लिये आवश्यक परिचय पत्र दे सकेंगे जिससे विदेशों में अपने ठहरने के समय उन्हें हर प्रकार की सुगमता उपलब्ध हो सके।

आपकी इस कृपा के लिए धन्यवाद।

आपका शुभचिन्तक,
ह० (प्रफुल्ला बाबू)

—एक सौ इक्कासी

११ ता० को "मथुरा" नाम के कारगो जहाज़ पर मुझे साढ़े सात बजे सवार हो जाने का आदेश नीचे के पत्र द्वारा मिला। उस रात्री को हमारा "मथुरा" कलकत्ता बन्दरगाह से हटकर हुगली में रहा और १२ ता० को यह २०,००० टन का जहाज़ समुद्र की लहरों के साथ खेलता हुआ अमेरिका की ओर मुझे ले चला।

125

Brockle Bank's Cunard Service,
P. O. Box No. 147.
Calcutta,
7th. August, 1935.

Dr. Sharma,
c/o Messrs. Cotton Agents Ltd.,
Calcutta.

Dear Sir,

S/S/"MATHURA"

The medical inspection of crew and passengers will be held on board the above vessel at 7. 30 a. m. on Sunday the 11th. instt., at No. 2 Garden Reach Jetty.

Kindly arrange to be on board punctually at that time and please have your Pass-port ready for

inspection. We trust you have obtained all the requisite papers for landing in the U. S. A.

Yours faithfully,
(Sd.) Assistant Manager.
Grahams Trading Co. Ltd.

१२५

ओकले बैंक्स कुनार्ड सरविस,
पो० ओ० बक्स नं० १४७
कलकत्ता, ७ अगस्त १६३५

डा० शर्मा,
मार्फ़त मेसर्स कोटन एजेन्टस लि०
कलकत्ता।

प्रिय महोदय,

एस०/एस० "मथुरा"

उपरोक्त जहाज़ के कर्मचारियों तथा यात्रियों का डाक्टरी निरीक्षण ११ ता० इतवार के रोज़ सुबह साढ़े सात बजे नं० २ गार्डन रीच जेटी पर होगा।

कृपया जहाज़ पर ठीक समय पर उपस्थित होने का प्रबन्ध कर लीजिये और निरीक्षण के लिए अपना पासपोर्ट तैयार रखिये।

हमें आशा है कि यू० एस० ए० जाने के सम्बन्ध में सब आवश्यक पत्र आपने प्राप्त कर लिये होंगे।

आपका शुभचिन्तक
(ह०) सहायक मैनेजर,
ग्राहम्स ट्रेडिंग कं० लिमिटेड।

—एक सौ तिरासी

मेरी पत्नी के दिये हुये पैकेट को बड़ी श्रद्धा के साथ मैंने समुद्र की भेंट किया और अपनी डायरी लिखने बैठ गया। यह निम्नलिखित पंक्तियाँ अपनी डायरी में से यहाँ दी हैं :

"स्मरणीय तिथि"

"१२ अगस्त सन् १६३२ को यरवदा जेल से पत्र लिखकर बापू ने मुझे अमेरिका जाने से रोका था वही बापू आज १२ अगस्त सन् १६३५ को मेरी ठीक मंजाई करने के बाद अपने प्रमाण पत्रों के साथ मुझे स्वयं अमेरिका भेज रहे हैं। मेरे जीवन की अनेक स्मरणीय घटनाओं में से यह घटना भी मुझे सदा स्मरण रहेगी।" ( डायरी से )

"मथुरा" के ठहरने के स्थान, तारीख़ तथा समय इत्यादि की सूचना बापू को कलकत्ते से ही मैंने भेज दी थी ताकि मुझे प्रत्येक बन्दरगाह पर उनके पत्र मिल सकें। बापू की व्यवहार कुशलता का यह हाल था कि मेरे जहाज़ ने हुगली में से निकल कर समुद्र में प्रवेश ही किया था कि उन्होंने मेरी पत्नी को यह पत्र लिखा :

१२६

चि० द्रौपदी,

आज शर्मा रवाना होंगे। वह जब तक कलकत्ते में भी था तो मुझे कुछ चिन्ता तुमारे लिये नहीं थी। अब तुमारे हाल जानते रहना मेरा कर्त्तव्य हो गया है। मुझे तुमारे और लड़कों के हाल बताओ। तुमारे रहन-सहन की बात लिखो। तुमारा रोज़ का कार्य-क्रम लिखो। तुमारे मददगार कौन हैं सो भी लिखो।

१२-८-३५

बापू के
आशीर्वाद

वहां कुछ किताब कन्या आश्रम की रही हैं ?

## छटा अध्याय

कार्गो जहाज़ की मुसाफिरी मेरे लिखने पढ़ने में बहुत लाभदायक साबित हुई। उसी वर्ष अक्तूबर मास में मुझे वाशिंगटन के अमेरिकन स्कूल आफ नैचरोपैथी के ग्रेजुएट कोर्स की परीक्षा में बैठना था। मेरे साथ जितनी पुस्तकें थी उन सब का अध्ययन मैं इस शान्तिमय यात्रा में भली भांति कर सका। कार्गो जहाज़ में केवल प्रथम श्रेणी के पुरुषयात्री ही यात्रा कर सकते थे और 'मथुरा' कार्गो जहाज़ में केवल मैं ही एक यात्री था। 'शहज़ादा' नाम का एक नवयुवक मेरे सहायक के रूप में तैनात किया गया था जो हर समय मेरी ख़िदमत के लिए तैयार रहता था। कमरे की सफाई, स्नानादि का प्रबन्ध तथा कुकर में मेरे भोजन बनाने की सामग्री का सफाई के साथ सब इन्तज़ाम वग़ैरा वह बड़ी ख़ुशी से करता था। शहज़ादा बड़ा ख़ुश मिजाज़ था। उसे अंग्रेज़ी पढ़ने का बड़ा शौक था। इसलिए मैंने रात्रि को एक घण्टा प्रति दिन उसे अंग्रेज़ी पढ़ाना शुरू कर दिया। जहाज़ का कैप्टेन मिस्टर हैने (Henney) एक वृद्ध अंग्रेज़ था और स्टूअर्ड मिस्टर टर्नर (Mr. Turner) एक अधेड़ उम्र का आइरिश था। यह दोनों ही बड़े सज्जन थे। मिस्टर टर्नर प्रतिदिन सुबह को मेरे कमरे में आकर दिन भर के भोजन का मीनू (Menu) दरियाफ्त करके उसी के अनुसार शहज़ादे को सब सामान बता देता था। मैं चाय नहीं पीता था तो सूखे दूध के डिब्बे शहज़ादे को काफी तादाद में दे दिये गये थे और हर एक बन्दरगाह पर काफी तादाद में फल, सब्ज़ी तथा मक्खन आदि मेरे लिए लेकर रख लिए जाते थे। कैप्टेन मिस्टर हैने ने तीसरी मञ्जिल वाले अपने कमरे में मुझे हर समय जाने की छूट दे दी थी ताकि मैं इच्छानुसार वहाँ रेडियो सुन सकूँ तथा उसके छोटे से पुस्तकालय की

जो पुस्तकें पढ़ना चाहूँ वह पढ़ सकूँ। उसीने मुझे अपनी एक दूरबीन भी दे दी थी जिसने लालसागर और स्वेज़ नहर के रमणीक दृश्य देखने में मुझे बड़ी सहायता दी। जहाज़ का इञ्जीनियर मुझे जहाज़ के निचले भाग में ले जाकर अपनी बड़ी-बड़ी मशीनों का काम बड़े चाव और प्रेम से समझाता था ग़रज़ है कि जहाज़ का हर कर्मचारी मुझे हर वक्त ख़ुश रखता था।

हमारा "मथुरा" दिन रात बराबर चलकर छटे दिन कोलम्बो बन्दरगाह पर सुबह साढ़े सात बजे बारह घन्टे के लिए ठहरा। कोलम्बों की सैर करने के लिए यह समय काफी था। यहाँ पहुँचते ही अन्य पत्रों के साथ बापू का यह पत्र मिला :

१२७

चि० शर्मा,

तुमारा ख़त मिला। अच्छा किया सब तारीख़ दी हैं। मैंने द्रौपदी को ख़त लिखा है। तुमारे रवाना होने का तार व्रजमोहन जी से मिल गया था। तुमारे अगले ख़त मिल चुके थे। तुमारे जहाज़ के अनुभव का ब्यान अब मिलेगा। कन्याआश्रम की कुछ किताब* तुमारे पास थीं क्या? छोटेलाल ने यह याद भेजी है। अगर मुझको कुछ तुमने कहा है तो मैं भूल गया हूँ।

वर्धा
१४-८-३५

बापू के
आशीर्वाद

---

* कन्याआश्रम की पुस्तकें तथा मेरे ख़र्च में आई हुई खादी के दाम और पोस्टल स्टाम्प आदि मैं सब पहिले ही वापिस कर चुका था। जैसा कि बापू के २०-११-३४ नं० ८० के पत्र से ज़ाहिर है।

पत्र—१२७

( देखिये पन्ना—एक सौ छियासी )

बापू को प्रत्येक बन्दरगाह से मैं हवाई डाक द्वारा अपने पत्र भेजता था जो थोड़े समय में ही उन्हें मिल जाते थे। कोलम्बो से चल कर "मथुरा" जहाज़ का दूसरा पड़ाव सुडान था जहाँ वह अदन से चलकर लालसागर में ५२ घन्टे का सफ़र करके पहुँचा। सुडान पर बापू का पत्र न मिलने से मुझे कुछ उदासी हो गई और दिल बहलाव के लिए मैं सुडान का सिविल हस्पताल देखने तथा सुडान के रीति रिवाज़ की कुछ झांकी करने शहर चला गया। अपने समुद्री रास्ते में सबसे अच्छा रमणीक तथा शिक्षाप्रद दृश्य मुझे स्वेज़ नहर का लगा।

हमारे "मथुरा" जहाज़ को स्वेज़ नहर में सुबह साढ़े तीन बजे प्रवेश होने का वहाँ के अधिकारियों द्वारा संकेत मिला और रास्ते में कई जगह रुकता हुआ वह रात्रि के नौ बजे पोर्ट सईद बन्दरगाह पर पहुँचा। वहाँ के इस साढ़े सोलह घन्टे के सफर में मुझे अनेक सुन्दर दृश्य देखने में आये। हमारे सीधी ओर मोटरें, बाईसिकलें तथा तांगें व सामान से लदे ऊँटों के काफिले चल रहे थे; बाईं तरफ मीठी नहर के साथ साथ लोहे की पटरी पर रेलगाड़ियाँ दौड़ रहीं थीं; हमारे ऊपर हवाई जहाज़ उड़ रहे थे और उधर बीच में जल मार्ग पर हमारा "मथुरा" धीमे-धीमे आगे बढ़ रहा था। उद्देश्य सब का एक था। रास्ते जुदा-जुदा थे। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये निर्भय होकर अपने-अपने मार्ग पर सब चल रहे थे। एक दूसरे पर न हँसता था न आपस में कीचड़ फेंकते थे न कोई एक दूसरे को नष्ट करने का प्रयत्न करता था और न दूसरों के रास्ते में कोई बाधा उत्पन्न करता था। कैसा था वह सुन्दर सुखद और शान्ति का वातावरण क्योंकि उन सब ही ने अपने-अपने चालक अपने साथ रक्खे हुए थे। मनुष्य द्वारा बनाई हुई मशीनों को तथा पशुओं को इस प्रकार सुचारु ढंग से अपने-अपने मार्ग पर चलते देख मुझे प्रभु की बनाई हुई इन शरीर धारी मशीनों का ख्याल आगया जो एक दूसरे पर गिरते हैं, आपस में टकराते हैं एक दूसरे के रास्ते में रोड़े बनते हैं तथा एक दूसरे को नष्ट करके अपना-अपना आधिपत्य जमाने का प्रयत्न करते हैं जिसका परिणाम सर्व नाश के सिवाय

कुछ और नज़र नहीं आता। इसका कारण सिर्फ यही है कि इस देहधारी मशीन ने अपने चालक को दूर हटा दिया है। इस देहधारी इंसान ने अपने स्वार्थ रूपी पर्दे के पीछे उस प्रभु को ढक दिया है जो इस मशीन का चालक है। जिस समय भी इंसान अपने चालक—उस प्रभू को अपने हृदय रूपी कमरे में बिठाकर अपनी मशीन चलाने देगा उसी क्षण वही सुन्दर सुखद और शान्ति के वातावरण में यह शरीरधारी मशीनें भी निर्भय होकर अपने-अपने मार्ग पर सुख और चैन से अपने मनोरथ सिद्ध कर सकेंगी।

"प्रकृति" मनुष्य के लिये शिक्षाओं का भंडार है। उसकी एक चीज़ का भी अनुसरण करने से सैकड़ों प्रकार के मानसिक तथा शारीरिक कष्टों से वह अपने को बचा सकता है। किन्तु इस अभागे इंसान ने अपने को प्रकृति के बहुमूल्य शिक्षाप्रद भंडार की ओर से आँखें बन्द कर अँधेरे में ठोकरें खाना ही पसन्द किया जिसके कारण वह पशुओं से भी नीचे गिर कर जीवन पर्यन्त अपने लिये सुन्दर और सुखद वातावरण उत्पन्न न कर सका तथा स्थाई सुख से सदा वंचित रहा।

उस रात्रि को इस प्रकार के विचारों से ओत-प्रोत एक लम्बा पत्र बापू को लिखते-लिखते मैं सो गया और सुबह को देखा तो "मथुरा" मैडीट्रेनियनसागर में रेंगता नज़र आया।

सुडान और पोर्ट सईद पर प्राप्त हुये अन्य मित्रों के पत्रों से मुझे मालूम हुआ कि बापू मेरे पत्रों को पढ़ कर मगनवाड़ी में दूसरे साथियों को पढ़ने के लिये देते थे; फिर उन्हें रामदास को पढ़ने के लिये भेजते थे; और श्री रामदास बापू के आदेशानुसार वह पत्र मेरी पत्नी के पढ़ने के वास्ते खुर्जा भेजते थे और अन्त में फिर वह पत्र बापू अपने पास वापिस मंगाकर रखते थे। यदि किसी पत्र की वापिसी में कहीं देर लगती थी तो बापू उसकी वापिसी का तक़ाज़ा करते थे और देरी से भेजने का कारण भी पूँछ बैठते थे। यह सब हाल मेरी

( देखिये पन्ना—एक सौ नवासी )

पत्नी के नाम भेजे हुए नीचे के पत्रों से मुझे मालूम हुआ जो मेरे सफर के दरम्यान उन्हें मिले :

१२८

वर्धा
२०-८-३५

श्रीमती बहन जी,

आपसे मेरा परिचय नहीं है, लेकिन शायद मुझे नाम से तो पहिचानती होंगी। बापू जी दाहिने हाथ से लिख नहीं सकते हैं। इसलिए मुझे आज्ञा की कि द्रौपदी देवी को लिखो। शर्मा जी के पत्र यहाँ तो नियमित आते हैं। उनकी तनिक भी चिन्ता आप न करें। उनका आया हुआ ताज़ा पत्र इसके साथ भेज रहा हूं। उसे पढ़ लेने पर वापिस भेजियेगा। कोई जल्दी नहीं है।

आपका भाई
महादेव देसाई

१२९

चि० द्रौपदी,

तुमारा ख़त मिला। ऐसे ही लिखा करो। साथ में शर्मा का ख़त है उसे पढ़कर वापिस करो। लड़कों में से जो लिख सके उसको लिखने का कहो।

वर्धा
२४-८-३५

बापू के
आशीर्वाद

१३०

मगनवाड़ी, वर्धा
२०-६-३५

सौ० प्रिय द्रौपदी बहिन,

सप्रेम प्रणाम। यह पत्र पू० बापू जी की आज्ञा से लिख रही हूं। इधर बहुत दिनों से आपका कोई खत बापू जी को नहीं मिला है ऐसा क्यों? आपकी और बच्चों की खबर जानने के लिए बापू जी को चिन्ता रहती है। आपको बराबर पत्र लिखना चाहिये। बच्चे कैसे हैं? आपकी तबीयत कैसी है? और क्या खबर है? सब पूरा-पूरा जल्दी लिखिये। यहाँ सब कुशल हैं। बापू जी अच्छे हैं। अमतुल बहन यहीं हैं अच्छी हैं। शर्मा जी का पत्र आपके पास आता होगा। यहां भी बापू जी के पास आया था खूब आनन्द से हैं। पत्रोत्तर जल्दी दीजिये।

आपकी बहिन
प्रभावती

१३१

ता० २०-१०-३५

पूज्य द्रौपदी बहिन,

आप कुशल होंगे। मैं कुशल हूँ आपकी सबकी याद आया करती है। पूज्य माता जी* को मेरा प्रणाम कहें। बच्चे सब अच्छे होंगे। राजो व किस्रो ( कृष्णा ) का नाम याद रहा देवी का नाम भूल गया

* लेखक की माता जी।

था सो याद करके लिखा। देवी को तो शर्मा जी के जाने से सम्पूर्ण आजादी होगी। मेरे योग्य सेवा कार्य लिखवायें। इस पत्र की पहुँच मुझे लिखियेगा व शर्मा जी का खत पू० बापू को वापिस भेजें। पू० बापू जी खत को रखने चाहते हैं।

लि० आपका अनुग्रहित
रामदास का प्रणाम

१३२

चि० द्रौपदी,

यह कैसी बात है ? तुमारे तरफ़ से कोई खत नहीं ? तुमको शर्मा का लम्बा खत भेजा है, वह वापिस मँगवाया है। न वह मिला है, न तुमारा खत मिला है। अमतुल सलाम कुछ बीमार सी रहती है वह भी तुमारे खत की इन्तजार (में) है। वहाँ सब कुशल होगा। खत लिखने में आलस्य न किया जाय। शर्मा का एक और खत तुमको रामदास ने भेजा होगा।

मगनवाड़ी, वर्धा।
२५-१०-३५

बापू के
आशीर्वाद

१३३

बम्बई
१०-११-३५

पूज्य बहिन जी,

इस पत्र के आगे का पत्र भाई साहब का भेजते हुए लिखा था सो आपको ठीक पहुँचा होगा। आज भी भाई साहब का पत्र आपको भेजता हूं मिलने से पहुँच लिखेंगे ऐसी आशा है।

आप सब कुशल मंगल होंगे। माता जी को प्रणाम मेरा कहें।

भाई साहब का आज भेजा हुआ पत्र आप पढ़कर पूज्य बापू के पास भेजें।

रामदास गांधी का
सविनय प्रणाम

१३४

वर्धा
१६-११-३५

चि० द्रौपदी,

तुमारा ३० अक्तूबर का खत मिला। ८ अक्तूबर का नहीं मिला है, न मुझे कोलम्बो* का पत्र वापिस आया है। रामदास के पत्र के साथ जो था वह मिल गया। इस वक्त तो लङ्का वाले पत्र की नक़ल भेजने की तकलीफ नहीं दूंगा। वहाँ से कुछ पता निकल सकता है तो निकालो। किसको दिया था? तुमारे पत्र न होने की शिकायत शर्मा करता है। पत्र लिखने का आलस्य न किया जाय। जब आलस्य है ऐसा स्वीकार करती है तो पीछे तुमारे आलस्य निकाल देना चाहिये। सब अच्छे होंगे। पत्र लिखो।

बापू के
आशीर्वाद

१३५

चि० द्रौपदी,

शर्मा का खत आया है उससे मालूम होता है कि तुम बीमार रहती है यह क्या बात है? मुझको अब थोड़ा लिखने की इजाज़त

* बापू के नाम कोलम्बो से भेजा हुआ लेखक का पत्र।

चि. द्रौपदी,

[illegible]

Harijan Colony
Kingsway
Delhi

( देखिये पन्ना—एक सौ बानवे )

पत्र—१३६

( देखिये पन्ना—एक सौ तिरानवे )

( देखिये पन्ना—एक सौ तिरानबे )

मिल गई है इसलिए यह लिखा है। मैं दिल्ली आया हूँ अगर मुझको मिल जायगी तो अच्छा होगा। अमतुल सलाम तो यहाँ है ही।

हरिजन कोलोनी,
किंग्सवे, दिल्ली
६-३-३६

बापू के
आशीर्वाद

१३६

चि० द्रौपदी,

तुमारा खत मिला। उसी को मैं शर्मा को भेजता हूँ मेरा दिल्ली में रहना २३ ता० तक तो है ही। इतने में मुझसे मिल जायगी तो अच्छा लगेगा। मेरा स्वास्थ्य अच्छा है बहुत काम तो नहीं कर पाता। शक्ति है लेकिन डाक्टरों की मनाई है।

दिल्ली
१४-३-३६

बापू के
आशीर्वाद

१३७

चि० द्रौपदी,

तुमको खत लिखने के बाद शर्मा का खत मुझको भी मिला था। रामदास को भेजा है। और रामदास को लिखा है तुमको भेज देवे। हाँ मैं सरदार* को लेकर बेंगलूर मइसूर† ८ तारीख को जाऊँगा। अब

* सरदार पटेल।
† मैसूर।

मैं एक देहात* में रहने आगया हूं। अमतुल सलाम लिखा करती होगी।

२-५-३६

बापू के
आशीर्वाद

मेडीट्रेनियन सागर में छः दिन चलकर 'मथुरा' ने स्टेटआफ जिब्राल्टर को रात्रि के बारह बजे पार किया। और ग्यारह दिन तक लगातार अटलांटिक महासागर की तूफ़ानी लहरों से टक्कर लेता हुआ बारहवें दिन शाम को साढ़े पांच बजे बोस्टन बन्दरगाह पर पहुँचा।

"मथुरा" की यात्रा दूसरे दिन न्यूयोर्क में समाप्त होने को थी इसलिए रात्रि को जहाज़ के सब अफ़सरों का डिनर था। कैप्टिन की इच्छानुसार मैंने भी उस रोज़ अपना रात का भोजन जहाज़ के बड़े कमरे में सबके साथ लिया जिसके लिए मिस्टर टर्नर ने मेरी प्रकृति के अनुसार मेरे खाने का सब प्रबन्ध बड़े सुचारु ढङ्ग से कर दिया था। बहुत दिनों के बाद उस रात्रि को शुद्ध दूध की ताज़ा बोतलें मिलने से वह बड़ी स्वादिष्ट मालूम पड़ीं।

बोस्टन से न्यूयोर्क को जहाज़ किनारे-किनारे चला तो रात्रि को अमेरिका की रौशनी का बड़ा ही सुहावना दृश्य देखने को मिला। दूसरे दिन सुबह नौ बजे 'मथुरा' न्यूयोर्क पहुँच गया। इन्टरनेशनल हाउस में मेरे ठहरने का प्रबन्ध किया गया था। कई मित्र अपनी गाड़ियाँ लेकर बन्दरगाह पर मुझे लेने आये हुये थे। उनके साथ इन्टरनेशनल हाउस पहुँचते ही सब से प्रथम मैंने टेलीफोन द्वारा अपने आने की सूचना रेवेरेन्ड डाक्टर जौन हेनेज़ होम्स (Rev. Dr. John Haynes Holmes) को दी। उनके पास बापू का पत्र पहिले ही पहुँच चुका था। उन्होंने तीसरे पहर साढ़े तीन बजे अपने

* बापू मगनवाड़ी से सेवाग्राम में आगये थे।

( देखिये पन्ना—एक सौ छानवे ) चित्र—५
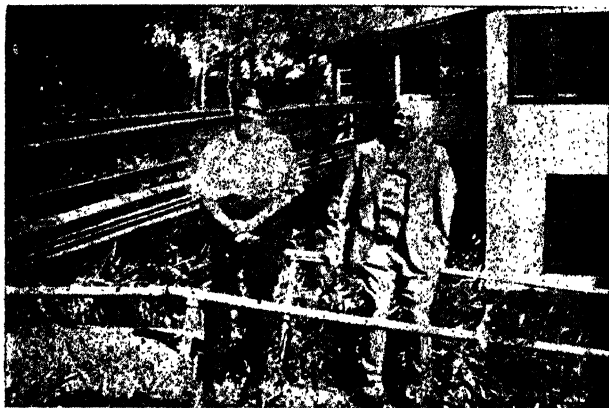
बटलर सेनीटोरियम में लेखक—डा० बैनेडिक्ट लस्ट के साथ

मकान पर मिलने का मुझे समय दिया। उनका मकान ब्रूकलीन (Brooklyn, N. Y.) में है। मैं ढाई बजे की रेल से ब्रूकलीन पहुँचा और टैक्सी द्वारा ठीक समय उनसे जा मिला। डा० होम्स ने बड़े प्रेम से मेरा स्वागत किया। २८ मिनट उनसे बातें हुईं।

बापू का पत्र मिलने के बाद डा० होम्स ने न मालूम किस तरह यह सोच लिया था कि वह अपने धनी मित्र—मि० रोकफैलर से मुझे वज़ीफा दिला देंगे और यही मुझ से उन्होंने कहा भी। उनकी इस असीम कृपा का धन्यवाद देते हुए मैंने उन्हें बापू के 'स्वावलम्बी' शब्द का सही मतलब समझाने की चेष्टा की और उनका यह भ्रम दूर किया कि मेरे पास पैसे की कमी थी। मुझे तो मेरे देश के 'बिरला' नाम के रोकफ़ैलर ने मेरा ख़र्चा देना पहिले ही से स्वीकार कर रक्खा था। 'स्वावलम्बी' शब्द से बापू का मतलब था कि मैं अपने ख़र्च लायक़ स्वयं मेहनत करके पैसा कमा सकूँ तो अच्छा है। डा० होम्स मेरी बात सुनकर बड़े प्रसन्न हुये। वह ५ अक्तूबर तक कहीं बाहर जाने वाले थे और मेरे रहने का प्रबन्ध हो ही गया था इसलिये यह निश्चय हुआ कि मैं पहिले अमेरिका का भ्रमण करके स्वतन्त्र रूप से वहाँ के प्राकृतिक चिकित्सकों से मिलकर अपना प्रोग्राम बना लूँ और फिर डा० होम्स से जिस बात में सहायता की आवश्यकता हो वह उनसे लूँ। अतः दूसरे दिन ही मैंने अमेरिका के प्राकृतिक चिकित्सकों की सूची प्राप्त की और उसी दिन से वहाँ का तूफ़ानी दौरा प्रारम्भ कर दिया। समय की बचत के लिए मैंने कहीं-कहीं हवाई जहाज़ का भी प्रयोग किया और मैकफ़ैडन, शेल्टन, स्टेफिन्स, लस्ट, कैलोग इत्यादि सभी प्रसिद्ध चिकित्सकों की संस्थायें सैनफ्रांसिसको, कनाडा, बैटिलक्रीक आदि स्थानों में जाकर देखीं और अन्त में प्राकृतिक चिकित्सा की दृष्टि से मैंने सबसे प्रथम डा० बैनेडिक्ट लस्ट तथा दूसरे नम्बर पर डा० जोन हार्वे कैलोग—इन दो वृद्ध और प्रसिद्ध व्यक्तियों के साथ रहकर उनकी चिकित्सा प्रणाली का अध्ययन करना निश्चित किया तथा न्यूयोर्क के स्वास्थ्य विभाग व समाज-कल्याण विभाग की पूर्ण जानकारी प्राप्त करने के लिये वहाँ के सर्कारी

कर्मचारियों का सहयोग प्राप्त करने का निश्चय किया। और इसी सम्बन्ध में कोलम्बिया यूनीवर्सिटी के उच्च अधिकारियों के साथ मेरा घनिष्ठ सम्बन्ध भी स्थापित हो गया।

डा० लस्ट तो पहिले से ही मेरे नाम से परिचित थे। उनके मासिक पत्र "नेचर्स पाथ" (Nature's Path) में मेरे लेख निकलते रहते थे और इन्हीं के अमेरिकन स्कूल आफ नेचरोपैथी के ग्रेजुएट कोर्स में मुझे परीक्षा के लिए बैठना था। यह स्कूल वाशिंगटन में था। इनका हैड आफिस न्यूयोर्क में था और सैनीटोरियम इनका बटलर (न्यू जर्सी) में था। उधर डा० जोन हार्वे कैलोग को बापू स्वयं लिख ही चुके थे। डा० होम्स के न्यूयोर्क वापिस आने से पहिले ही मैं डा० लस्ट के साथ बटलर चला गया। अमेरिका तथा समस्त यूरोप की प्राकृतिक चिकित्सा की भिन्न-भिन्न पद्धतियों का विवरण तो पाठक मेरी अन्य पुस्तकों में देखेंगे ही। बटलर में बापू का मुझे यह पत्र मिला।

१३८

चि० शर्मा

तुमको कोलम्बो पत्र भेजा उसके बाद मैं पत्र भेज ही नहीं सका हूँ यों तो तुमारे अमरीका से खत आने के पहिले लिखना ही क्या था ? लेकिन ऐसा भी नहीं। मेरे दिल में तो हमेशा तुमको लिखने का रहता था। मैं वक्त के अभाव से भेज ही नहीं सका। दैव जाने अब यह कब मिलेगा। पोर्ट सुडान का तुमारा खत मिल गया। कोलम्बो का भी मिला था दोनों आकर्षक थे। जैसे सुख से दिन वहाँ कटे ऐसे ही अमरीका में हों।

जो किताब तुम्हें चाहिये उसकी पेखी करूंगा। मेरा कुछ ख्याल है कि अमरीका पहुँचने के बाद उस किताब की आवश्यकता शायद ही हो। तो भी मैं तजवीज करूँगा। द्रौपदी का मुझे एक बहुत ही छोटा खत आया था। उसके बाद कुछ नहीं है। अगरच मैंने उनको

लिखा है। अम्तुल सलाम को बड़ी शिकायत है कि उसको भी कुछ खत नहीं मिलते हैं। तुमको तो मिलते होंगे कुछ मुझे बताने का हो वो बताइये।

कन्याआश्रम की किताबों के बारे में छोटेलाल से बातें करने के बाद मैं लिखूँगा।

तुमारे खत तो नियमपूर्वक आते रहेंगे।

वर्धा
२०–६–३५

बापू के
आशीर्वाद

बापू की वर्षगाँठ के अवसर पर न्यूयोर्क में एक जलसा हुआ था। उसमें सम्मलित होने के लिये मुझे भी बटलर से बुलाया गया। अपने-अपने दृष्टि-कोण के अनुसार वहाँ कई सज्जनों ने बापू की जीवनी पर प्रकाश डाला। मुझे भी बोलने के लिए २५ मिनट दिये गये। जलसे की ओर से बापू को बधाई का तार भेजा गया होगा। उनका यह निम्न पत्र मुझे वाशिंगटन में मिला जहाँ प्राकृतिक चिकित्सा के अमेरिकन स्कूल आफ नेचरोपैथी के ग्रेजुएट कोर्स की परीक्षा में मैं सम्मलित होने गया हुआ था।

१३६

चि० शर्मा,

तुमारा बोस्टन पहुँचने के पहिले का खत मिला है बहुत अच्छा है। बोस्टन में मेरा खत नहीं मिलने का दुःख भूल गये होगे। मैं लाचार रहा। कुछ नया लिखने का तो था ही नहीं। नया लिखने का तो तुमको मिलता है और उस अवसर का अब तक तो अच्छा ही उपयोग कर रहे हो। ऐसे खत मिलते ही रहेंगे ऐसी आशा रखकर बैठा हूं।

द्रौपदी को भी खत भेजते होगे। मैं तुमारे खत उस को पढ़ने के लिये भेज रहा हूँ। द्रौपदी खुले दिल से नहीं लिख पाती। वह बच्चों तक खुश रहे तब तक मुझे उसके खत नहीं होने का दुःख नहीं है। मेरी कोशिश उसे खींचने की जारी रहेगी।

तुमने लन्दन के लिए खत मांगा है इसलिए मैं भेजता हूँ। अमरीका से जल्दी नहीं भागना अगर वहाँ से कुछ पाने जैसा नहीं है अथवा खर्च बहुत है तो अवश्य भागो। जैसा अच्छा लगे ऐसा ही करो।

न्यूयोर्क से साल गिरह का तार था उसमें "शर्मा" नाम भी रहा। तुमारा ही होगा। जो लोगों से मिलो उनका शब्द चित्र भेजा करो।

लन्दन* के लिए एक ही खत भेजता हूँ पर्याप्त होगा।

वर्धा
१०-१०-३५

बापू के
आशीर्वाद

अमेरिका में मुझे डा० वैनेडिक्ट लस्ट द्वारा वहाँ के तथा यूरोप के समस्त बड़े-बड़े नैचरोपैथ से परिचित होने में सुभीता मिला। डा० लस्ट ने मेरे विषय में एक गश्ती चिट्ठी इन लोगों के लिए छाप दी थी। इसके अतिरिक्त डा० लस्ट से मुझे आर्थिक सहायता भी मिली। उनके बटलर सैनीटोरियम के लिए मैंने सूर्य स्नान के थरमोल्यूम (Thermolume) नाम के चार यन्त्र तैयार कराये थे जिसका जिक्र मेरी अन्य पुस्तकों में आया है। मेरी मेहनत का उन्होंने मुझे २५० डोलर दिया। उन्होंने ही मेरे दो लेक्चर न्यूयोर्क में प्रैक्टिल योगासनों

* लन्दन के लिए बापू ने मिस अगाथा हैरीसन के नाम एक परिचय पत्र भेज दिया था।

( ३ )

( देखिये पन्ना—एक सौ सत्तानवे )

चित्र—६
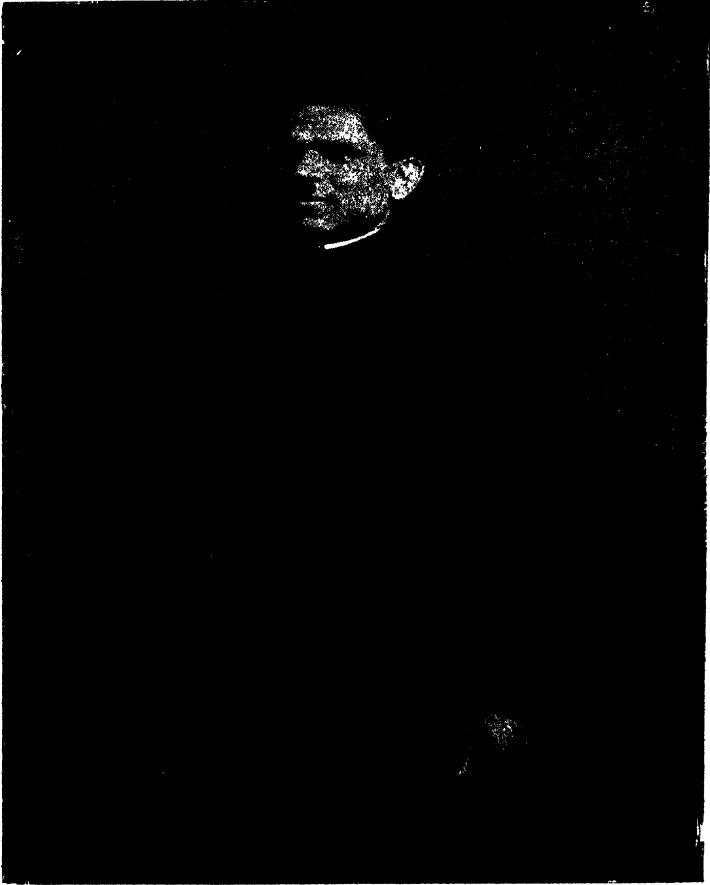
लेखक—अमेरिका में ( देखिये पन्ना—एक सौ निन्यानबे )

( देखिये पन्ना—एक सौ निन्यानवे )

चित्र—७

न्ययार्क में योगासनों पर प्रेक्टिकल लेक्चर के बाद लेखक—डा० लस्ट तथा एक अन्य मित्र के साथ

पर कराये थे जिनमें उन्होंने प्रवेश फ़ीस रक्खी थी। १५० डोलर मुझे उन लेक्चरों द्वारा प्राप्त हो चुका था जिनमें से मैंने टाइपराइटर तथा अन्य आवश्यक पुस्तकें तुरन्त ख़रीद लीं और फिर भी काफ़ी पैसा मेरे पास बच रहा।

अमेरिका में उन दिनों भी मुझे अचकन और चूड़ीदार पायजामा या बन्द गले का कोट और पतलून पहिनते रहने में कभी संकोच नहीं हुआ। योगासनों पर प्रैक्टिकल लेक्चर देते समय तो मै विशेषकर कुर्ता और पायजामा में ही जाता था और मेरे साथी अमेरिकन नेचरोपैथ्स को तो हमारे देश की यह ढीली ढाली सादा पोशाक बहुत ही पसन्द आती थी।

डा० जोन हार्वे कैलोग को डा० होम्स ने मेरा परिचय पत्रद्वारा करा दिया था इसलिए उनके भी उत्साह वर्धक यह दो निम्न पत्र मुझे मिले जिनका आगे चलकर मैंने पूरा लाभ उठाया :



बैटिलक्रीक सेनीटोरियम,
बैटिलक्रीक, मिसीगन।
४-१०-३५

डा० एच० एल० शर्मा,
मार्फ़त रेवेरेन्ड जोन हैनेज़ होम्स,
२६ सिडनी प्लेस,
ब्रूकलीन, (एन० वाई०)

प्रिय महोदय,

आपका ३० दिसम्बर का पत्र मिला। एक पत्र मैंने अभी आपके मित्र रेवेरेन्ड होम्स को लिखा है। उसकी एक प्रतिलिपि यहाँ इस पत्र के साथ है।

निश्चय ही हमें आपके यहां आने से प्रसन्नता होगी और हम

आपको फिज़ियोथेरेपी के सिद्धान्तों से साधारणतया और अपने निजी विधानों से मुख्यता अवगत करा सकेंगे।

अपने विचार मैंने लिख दिये हैं। मैं नवम्बर की पहिली तारीख को दक्षिण की ओर जा रहा हूं। यदि आप फिलोरिडा आजायें तो वहाँ आपके लिये यहाँ की अपेक्षा और भी अधिक कर सकता हूँ। क्योंकि वहाँ यहाँ की अपेक्षा फिज़ियोथेरेपी सम्बन्धी प्रयोगों का अधिक सुअवसर मिल सकेगा। विशेषतया जाड़ों के समय में जब कि इस देश के इस भाग में बाहरी जीवन सुगम नहीं होता।

प्रिय डाक्टर आशा है कि हम जल्दी ही मिलेंगे।

आपका अति स्नेही,<br>
जोन हार्वे कैलोग।

पुनश्चय,

मि० गांधी और उनके कार्य्यों के प्रति मेरे हृदय में बड़ा स्थान है। आशा है आप उनको पूर्णतया स्वस्थ छोड़कर आये होंगे।

१४१

श्री एच० एल० शर्मा,<br>
मार्फ़त मिस्टर साइमन स्वरलिंग,<br>
६६, वोल स्ट्रीट,<br>
न्यूयोर्क सिटी।

बैटिलक्रीक सेनीटोरियम,<br>
बैटिलक्रीक, मिसीगन,<br>
१५-१०-३५

प्रिय महोदय,

आपका ११ अक्तूबर का ख़त मिला।

मेरे विचार से यहां आना हर तरह अच्छा ही होगा चाहे थोड़े समय के लिये ही क्यों न हो। इससे हमारे काम का विस्तार और उन्नति की निपुणता देख सकेंगे और उन खाद्य फ़ैक्ट्रियों को भी

JOHN HARVEY KELLOGG, M.D.

CHAS. E. STEWART, M.D.
ASSOCIATE MEDICAL DIRECTOR

The Battle Creek Sanitarium
Battle Creek Michigan

October 4, 1935

Dr. H. L. Sharma,
C/o Rev. John Haynes Holmes,
26 Sidney Place,
Brooklyn, N. Y.

Dear Sir:

I have your letter of September 30.

Enclosed find a copy of a letter I have just sent your friend Rev. Holmes.

Certainly we will be glad to have you visit us here and will be able to put you in the way of becoming acquainted with the principles of physiotherapy in general and the special methods which we employ here.

As I believe I wrote you, I am leaving for the South November 1. If you should come to Florida I can do much more for you than here as we have there a somewhat better opportunity than is afforded here for the thoroughgoing employment of physiotherapeutic measures, especially in the winter time when the out-of-door life is not convenient in this part of the country.

Hoping to have the pleasure of meeting you in the near future, I remain, dear Doctor,

Very sincerely yours,

John Harvey Kellogg

P. S. I have great admiration for Mr. Ghandhi and his work. I hope that you have left him in good health.

( देखिये पन्ना—एक सौ निन्नानवे )

JOHN HARVEY KELLOGG, M.D.

CHAS. E. STEWART, M.D.
ASSOCIATE MEDICAL DIRECTOR

The Battle Creek Sanitarium
Battle Creek Michigan

October 15, 1935

Mr. H. L. Sharme,
C/o Mr. Simon Swerling,
96 Wall St.,
New York City.

Dear Sir:

I have your letter of October 11

I think it would by all means be wise to come here if only for a short time to see something of the magnitude of our work and the perfection of its development and also to visit the great food factories which are located here, which are by far the greatest in the world, and thus to make yourself as thoroughly familiar as possible with the development of the Battle Creek Idea.

I shall be very glad indeed to see you in Florida and you will find there a climate more like your own and very congenial surroundings. I enclose a picture of my Florida place.

Assuring you it would be a pleasure to meet you and to do all I can for you, not only for your own sake but for the sake of Mr. Ghandhi, for whom I have great admiration, I am

Sincerely yours,

John Harvey Kellogg

( देखिये पन्ना—दो सौ )

देख सकेंगे जो यहाँ हैं और जो संसार भर में सबसे बड़ी समझी जाती हैं और इस प्रकार बैटिलक्रीक के विचारों की उन्नति से यथा सम्भव आप भली प्रकार अवगत हो सकेंगे।

आपके फिलोरिडा आने से मुझे वास्तव में बड़ी प्रसन्नता होगी। वहाँ आप अपने ही देश जैसा जलवायु पायेंगे। और वहाँ का वातावरण भी आपको बहुत अनुकूल ही मिलेगा। मैं अपने फिलोरिडा के स्थान का एक चित्र इस पत्र के साथ ही भेज रहा हूँ।

मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि आप से मिलकर और आपकी यथा सम्भव सहायता करके मुझे प्रसन्नता होगी और यह न केवल आपकी ही ख़ातिर बल्कि मि० गांधी के प्रति अपने विश्वास तथा आदर के निमित्त।

मैं हूं
आपका शुभचिन्तक,
जोन हार्वे कैलोग।

डा० होम्स के द्वारा मुझे अमेरिका के सर्कारी महकमों से काफ़ी मदद मिली। स्वास्थ्य तथा खाद्य विभाग की मुझे पूरी जानकारी कराने के लिए वहाँ के मैयोर (Mayor) द्वारा कई इन्सपेक्टरों को आदेश दे दिये गये थे जो मुझे अपनी-अपनी गाड़ियों में न्यूयोर्क से साठ सत्तर मील की दूरी तक ले जाकर वहाँ की प्रशंसनीय दुग्धशालाओं का प्रारम्भ से अन्त तक का सब कार्य भली भांति समझाते थे तथा वहाँ के मुर्गों व मछली पालन के सब ढङ्ग दिखाते और बताते थे। एक बार मुझे न्यूयोर्क का ज़िबहख़ाना भी देखने जाना पड़ा यद्यपि वहाँ बाहर वालों को जाने की इजाज़त आमतौर पर नहीं मिलती थी। मैं लगभग ढाई घन्टे तक वहाँ रहा और वहाँ की शुरू से आख़िर तक की सब क्रियायें मैंने देखीं।

वहाँ की कोलम्बिया यूनीवर्सिटी में मुझे किसी भी प्रेक्टिकल क्लास में बैठने की अनुमति डा० होम्स की कृपा से यूनीवर्सिटी के डीन (Dean) द्वारा

मिल चुकी थी। तथा समाज कल्याण के कार्यों में वहाँ की प्रतिष्ठित कार्यकर्त्री श्रीमती सिमकोविच ( Mrs. Simkovitch ) तथा ( Henery Street Settlement ) हैनेरी स्ट्रीट सेटिलमेन्ट की मिस हैलिन बेट ( Miss Helen Batt) और डा० जोन लवजोय इलियट (Dr. John Lovejoy Elliott ) द्वारा वहाँ की ग़रीब बस्तियों की समस्याओं का अध्ययन करने का मुझे बड़ा अच्छा अवसर मिला।

डा० होम्स मेरे लिए आये दिन वहाँ के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को पत्र लिखते रहते थे और फिर वह प्रतिष्ठित व्यक्ति दूसरे बड़े अधिकारियों को आदेश जारी कर देते थे जिससे मुझे वहाँ के स्वास्थय तथा खाद्य और समाज कल्याण सम्बन्धी इत्यादि सभी बातों को भली भांति देखने और सीखने की सुविधायें प्राप्त होती रहीं। वहाँ का अधिकारी वर्ग भी इतना कार्यदक्ष था कि किसी भी बात का उत्तर उनसे तुरन्त पूरे विवरण के साथ मिल जाता था। उदाहरण के लिये नीचे के कुछ पत्र इसी सम्बन्ध में हैं जो डा० होम्स तथा अन्य अधिकारियों द्वारा मेरे अध्ययन काल में मेरी सुविधा के लिए वहाँ लिखे गये :

१४२

नवम्बर* २१, १६३५

प्रिय डा० इलियट,

मैं आपको यह पत्र डा० एच० एल० शर्मा का परिचय कराने के हेतु लिख रहा हूं। यह गाँधी जी के मित्र और शिष्य हैं और महात्मा के पत्र लेकर मेरे पास आये हैं।

डा० शर्मा इस देश में स्वास्थ्य प्रबन्ध, दुग्ध वितरण, तथा भोजन

---

* प्रसंगवश यह पत्र तारीख़ों के सिलसिले को तोड़कर यहां रख दिया है। (लेखक)

THE COMMUNITY CHURCH

OF NEW YORK

MINISTER
JOHN HAYNES HOLMES

STUDY
28 SIDNEY PLACE
BROOKLYN, N.Y.

November 21, 1935.

Dear Dr. Elliott:

I am writing this letter to introduce to you, Dr. H. L. Sharma, a friend and disciple of Gandhi, who has come to me with letters from the Mahatma. Dr. Sharma is in this country studying problems of health administration, milk distribution, dietary regulations, etc., and is now working at Columbia and with the New York Health Department. He is very desirous of learning something about the life of the poor in this city, and [illegible] of housing, etc., in the socalled slum districts.

I felt sure that you would be glad to meet Dr. Sharma, and help him so far as possible in his quest for information and observation. He is planning to return to India, after study and investigation in England, Denmark, and Germany, to serve his people in the cities and villages in the interest of higher standards of public health.

Very sincerely yours,

John Haynes Holmes

Dr. John Lovejoy Elliott,
2 West 64th Street,
New York City.

( देखिये पन्ना—दो सौ दो )

परिचर्या आदि समस्याओं का अध्ययन कर रहे हैं और इस समय यह कोलम्बिया में तथा न्यूयोर्क स्वास्थ्य-विभाग के साथ कार्य कर रहे हैं। यह इसके बड़े इच्छुक हैं कि इस नगर के निर्धन लोगों के जीवन के बारे में और कथित बस्तियों में रहने की व्यवस्था के बारे में कुछ ज्ञान प्राप्त कर सकें।

मुझे विश्वास है कि आपको डा० शर्मा से मिलकर प्रसन्नता होगी और उनकी अनुसंधान तथा ज्ञान प्राप्ति की जिज्ञासा में आप यथा सम्भव उनकी सहायता करेंगे।

यह इंगलैण्ड, डेन्मार्क और जर्मनी में भी अपना अनुसंधान और अध्ययन कर चुकने के बाद भारतवर्ष को लौटेंगे जिससे अपने देश के नगरों और गाँवों में सार्वजनिक स्वास्थ्य के उच्चतर माप दण्ड के अनुसार जनता की सेवा कर सकें।

डा० जोन लवजाय इलियट,<br>
२ वेस्ट ६४ वीं स्ट्रीट,<br>
न्यूयोर्क सिटी।

आपका अति स्नेही,<br>
जोन हेनेज होम्स।

143

October, 22. 1935.

Mr. Henry Jeffers, Pres.,<br>
Walker-Gordon Laboratories, inc.<br>
Plainsboro, N. J.

My Dear Mr. Jeffers,

This letter will introduce Dr. H. L. Sharma of

Delhi, India, who is making a study of sanitary production and handling of milk as controlled by the Newyork City Department of Health. Commissioner Rice is anxious that every facility and courtesy be extended to Dr. Sharma in furtherance of his work.

It is suggested that he visit the Walker-Gordon Farm at Plainsboro where the highest type of milk sanitation methods are carried out.

I also shall esteem it a great favour if you will help Dr. Sharma to understand our American methods, specially those employed by the Walker-Gordon Company.

Very truly yours,
Wld/Rf W. L. Dougherty, Chief
Division of Milk Inspection.

१४३

मिस्टर हेनरी जैफर्स अक्तूबर २२-१६३५
अध्यक्ष
वाकर गोर्डन लेबोरेटरीज इनकोर्पोरेटेड
प्लेन्स बोरो (एन० जे०)

मेरे प्रिय मिस्टर जैफर्स,

इस पत्र द्वारा दिल्ली, (भारतवर्ष) के डा० एच० एल० शर्मा से

( देखिये पन्ना—दो सौ छः )

चित्र—८
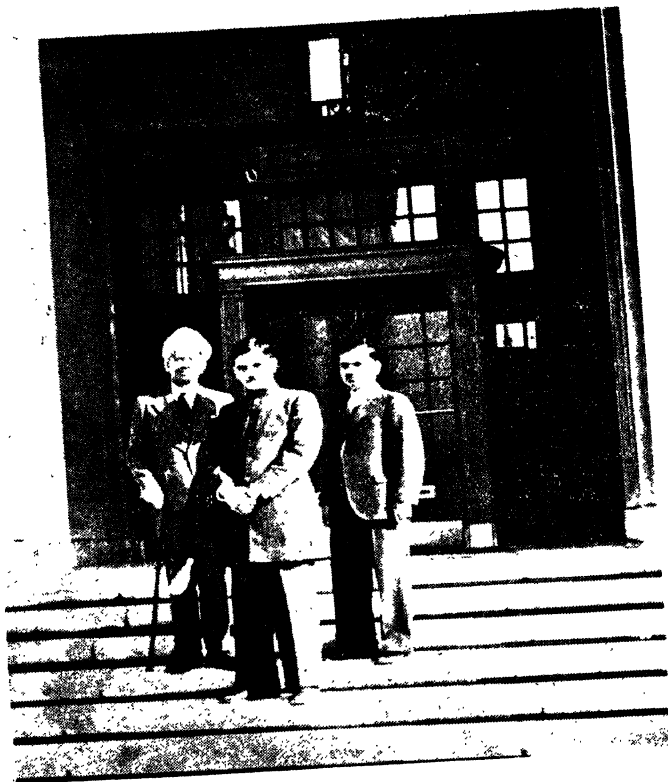
न्यूयार्क इन्टरनेशनल हाउस में लेखक—श्री कोदण्डराव तथा
डाक्टर डी० एल० श्रीवास्तव के साथ
(यून्यार्क के इन्टरनेशनल हाउस के वार्षिक बुलेटिन, १९३६)

आपका परिचय होगा। डा० शर्मा न्यूयोर्क सिटी के स्वास्थ्य विभाग द्वारा दूध का किस प्रकार स्वास्थ्य प्रद विधि से प्रबन्ध आदि होता है उसका अध्ययन कर रहे हैं।

कमिश्नर राइस की प्रबल इच्छा है कि डा० शर्मा को इनके कार्य सिद्धी के हित में प्रत्येक प्रकार की सहूलियत और आतिथ्य सत्कार की चेष्टा की जाय।

( उनके लिये ) यह तजवीज़ किया गया है कि वह प्लेन्सबोरो के वाकर-गोर्डन फार्म में जायँ क्योंकि वहाँ दुग्ध सम्बन्धी स्वास्थ्य प्रद विधियों का उच्चतम नमूना काम में लाया जाता है।

मैं स्वयं भी आप की कृपा का आदर करूँगा यदि आप डा० शर्मा को हमारे अमरीकन विधियों की विशेषकर जो गोर्डन कम्पनी द्वारा काम में लाई जाती हैं, उनको भली भाँति समझाने में सहायता दे सकेंगे।

भवदीय,
डब्लू० एल० डोरोटी
अध्यक्ष—दुग्ध प्रमुख विभाग
निरीक्षण।

अमेरिका में मुझे प्रतिदिन लगभग १८ घन्टे काम करना पड़ता था। वहाँ के स्वास्थ्य-प्रद दुग्ध को तैयार करने की क्रियायें सीखने के दिनों में तो इससे भी अधिक समय काम करना पड़ा। दूध के इन्सपेक्टर रात्रि को दो बजे आकर मुझे साथ ले जाते थे और सुबह सात बजे छोड़ते थे। इन पाँच घन्टों में पचासों मील के फार्म की गउओं का सैकड़ों मन दूध दुहने से लेकर दूकानदार के यहाँ दूध पेस्टयूराईज़ ( Pesteurize ) होकर बोतलों में पहुँच जाने तक की सब क्रियायें सीखने में आ जाती थीं। कार्य की इतनी अधिकता होते

हुए भी बापू को पत्र लिखने का समय तो मैं निकाल ही लेता था। किन्तु अब हवाई डाक से भेजने के बजाय मैं उन्हें सादा डाक से पत्र भेजने लगा था; क्योंकि बापू भी पैसे की बचत के कारण ऐसा ही करते थे जिससे मुझे उनके पत्र बहुत देरी से मिलते और मैं तड़पा करता था। बापू के पास जब मेरे पत्र भी देरी से पहुँचे तो उन्हें भी बेचैनी होने लगी। उन्होंने निम्नपत्र अपनी इसी प्रकार की बेचैनी में लिखा है।

उन दिनों सरवेन्टस आफ इण्डिया सोसाइटी के श्री कोदण्डाराव भी अमेरिका आये हुये थे और हमारे इन्टरनेशनल हाउस में ही ठहरे थे। बापू ने उनके लिए भी उसी दिन पत्र लिखा था। किसी तरह से उनका पत्र मेरे पते वाले लिफ़ाफे में बन्द हो गया और मेरा पत्र श्री कोदण्डाराव के लिफ़ाफे में चला गया। वह दिन हम दोनों का ही एक दूसरे की खोज करने में व्यतीत हुआ। आख़िर जब शाम को हम दोनों मिले तब ही अपने-अपने पत्र पढ़ पाये।

१४४

मगनवाड़ी
ता० २५-१०-३५

चि० शर्मा,

जब तक स्टीमर में थे तब तक तो लम्बे सुन्दर ख़त आते ही रहते थे। अमेरिका पहुँच गये तो ख़त ही बन्द हो गये। बोस्टन पहुँचने के पहिले लिखा हुआ ख़त मिला। उसके बाद एक भी नहीं। यह बड़ी आश्चर्य की बात है। स्टीमरों के बन्दर पर मैं नहीं पहुँच सका। अब मैं क़रीब हर हफ्ताह लिखने की कोशिश करता हूँ तो तुमारे ही ख़त बन्द हो गये हैं। प्रति सप्ताह राह देखता हूँ और प्रति सप्ताह निश्फल होता हूँ। दिल तो यही कहता है कि तुमने तो ख़त लिखे हैं लेकिन न्यूयोर्क से यहाँ ख़त पहुँचने में ही वक्त़ चला गया है। डाक

पत्र--१४४

मगनवाडी
ता. २५. १०. ३५ वर्धा

चि. शर्मा,

जबतक स्टीमरमें थे तबतक तो लंबे सुन्दर खत आते ही रहते थे। अमेरिका पहुंच गये तो खत ही बंद हो गये। बोस्टन पहोंचने के पहले लिखा हुआ खत मिला। उसके बाद एक भी नहीं। यह बड़ी आश्चर्य की बात है। स्टीमरों के अंदर पत्र मैं नहीं पहुंचा सका। अब मैं करीब हरहफ्ताह लिखने की कोशिश करता हूं। तो तुम्हारे ही खत बंद हो गये हैं। प्रतिसप्ताह राह देखता हूं और प्रतिसप्ताह निष्फल होता हूं। दिल तो यही कहता है कि तुमने तो खत लिखे है लेकिन न्युयोर्क से यहां खत पहोंचने में ही वख्त चला गया है। डाक कल आनेवाली है उसमें तुम्हारा खत आना चाहिये। बोस्टन से लिखने के बाद अब तीन हफ्ते हुए। तुमने ईग्लेंड के लिये खत मांगा था, वह तो भेज दिया है, मिल गया होगा।

द्रौपदी के खत नहीं आते हैं। मैं लिखता हूं। अन्तमें शायद नियमबद्ध खत लिखेगी। तुम्हारा ठीक चलता होगा।

बापुके आशीर्वाद

( देखिये पन्ना—दो सौ छः )

कल आने वाली है उसमें तुमारा खत आना चाहिये। बोस्टन से लिखने के बाद अब तीन हफ़्ते हुये। तुमने इंगलैण्ड के लिये खत मांगा था वह तो भेज दिया है, मिल गया होगा।

द्रौपदी के खत नहीं आते हैं। मैं लिखता हूं। अन्त में शायद नियम बद्ध खत लिखेगी। तुमारा ठीक चलता होगा।

बापू के
आशीर्वाद

दूसरे दिन ही मैं मिशिगन में डा० कैलोग की बैटिलक्रीक वाली संस्था को चला गया जहाँ मुझे उनके भिन्न-भिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थों के बनाने की विधि सीखनी थी। डा० कैलोग की प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति की अपेक्षा मुझे उनका खाद्य सम्बन्धी विभाग सचमुच अधिक लाभजनक लगा। उनकी चिकित्सा पद्धति तो सिर्फ धनी व्यक्तियों के लिये ही देखी गई। बैटिलक्रीक से बापू को मैंने एक लम्बा पत्र लिखा था जिसमें उनके पत्रों के न मिलने की शिकायत भी थी। बापू ने एक बार मुझसे कहा था कि पश्चिमी देशों में जाकर मैं खुल जाऊँगा। अब मैं अमेरिका में था। इसलिए उनके 'खुल जाओगे' शब्द का अर्थ भी उनसे मैंने पूछा था। यह पत्र मैंने हवाई डाक से भेजा था। और बापू ने भी उसके उत्तर में यह निम्न पत्र हवाई डाक से ही भेजा जो मुझे फ्लोरिडा में डा० कैलोग के म्यामी (Miami) वाले सैनीटोरियम में मिला। यह एक हज़ार तीन सौ सत्तासी मील का सफ़र मैंने मिशीगन से म्यामी तक वहाँ की रोडवेज़-बस द्वारा किया था ताकि वहाँ की रोडवेज़ विभाग की व्यवस्था भी भली प्रकार देख सकूँ।

१४५

चि० शर्मा,

तुमारा खत बहुत इंतज़ारी के बाद मिला। ताज्जुब की बात है

—दो सौ साव

कि मेरी तरफ़ से एक भी ख़त अमेरिका में तुमको नहीं मिला है। कम से कम तो तीन ख़त मिलने चाहिये थे ही। मेरे पास पोस्ट करने की तारीख़ है इस ख़त के अन्त में तारीख़ दी जायगी, क्योंकि रोज़-निशी* में से ढूंढ़ना होगा। लेकिन मैं लिखूँ या न लिखूँ तुमारे तो हर हफ़्ताह लिखना ही था ऐसा हमारा क़रार था। यहाँ से मुझको कुछ ज्यादा लिखने का भी नहीं हो सकता है लेकिन तुमारे तो हमेशा नई-नई बात लिखने की होनी ही चाहिये। ख़ैर, जो हुआ सो हुआ, अब तो प्रति सप्ताह तुमारे ख़त की इंतज़ारी में रहूंगा। मैंने तुमारे ख़त द्रौपदी को और रामदास को भेजने का सिलसिला भी जारी कर दिया है। रामदास ने ख़सुस (न) माँगा था। द्रौपदी को ऐसे ही भेजने का आरम्भ कर दिया था। इसका एक नतीजा यह हुआ है कि द्रौपदी उसके उत्तर में कुछ न कुछ भेजने के लिये मजबूर हो जाती है, अन्यथा वह कहाँ से मुझको लिखने वाली थी?

अमेरिका में जल्दी से स्वावलम्बी बन जाओगे ऐसी तो मैं कोई आशा नहीं रखता था, लेकिन ऐसा ज़रूर माना था कि कम खर्च में रहना मुश्किल नहीं होगा। कैसे भी हो, अब तो अमेरिका में हो, जब तक तुमको संतोश न मिले तब तक रहो। जब ऐसी प्रतीती हो जाय कि तुम को नैसर्गिक दृष्टि से कुछ भी अधिक नहीं मिलने वाला है तब ही वहाँ से छूटना। जो अनुभव अमेरिका में होते हैं, वही क़रीब-क़रीब इंगलैण्ड में भी होने वाले हैं। वहाँ भी नैसर्गिक की दृष्टि से ज्यादा नहीं पाओगे। लेकिन तुम को पश्चिम में जाना आवश्यक था ही। कई प्रकार के भ्रम रहते हैं जो अनुभव बिना दूर होते ही नहीं, इस दृष्टि से तुमारा जाना बेकार नहीं समझता हूं।

---

*रोजनिशी—रोज़नाम्चा।

चि. शान्ता

तुम्हारा खत बहुत इन्तजारी के बाद मिला। नारणदासभाई कहते हैं कि मेरी तरफसे एक भी खत अमेरिका में तुमको नहीं मिला है। कमसे कम तो तीन खत मिलने चाहिये थे। मेरे पास पोस्ट करनेकी तारीखें हैं, इस खतके अन्तमें तारीखें दी जायगी, क्योंकि रोजनिशीमें से ढूंढना होगा। लेकिन मैं लिखूं या न लिखूं तुम्हारे तो हरहालतमें लिखना ही था। ऐसा हमारा करार था। यहांसे मुझको कुछ ज्यादा लिखनेका भी नहीं हो सकता है लेकिन तुम्हारे तो हमेशा नई नई बात लिखनेकी होनी ही चाहिये। और, जो हुआ सो हुआ, अब तो प्रतिसप्ताह तुम्हारे खतकी इन्तजारीमें रहूंगा। मैंने तुम्हारे खत द्रौपदीको और रामदासको भेजनेका सिलसिला भी जारी कर दिया है। रामदासने खसूस मांगा था। द्रौपदीको पहले ही भेजने का आरंभ कर दिया था। इसका एक नतीजा यह हुआ है कि द्रौपदी उसके उत्तरमें कुछ न कुछ भेजनेके लिये मजबूर हो जाती है। अन्यथा वह कहांसे मुझको लिखने वाली थी?

अमेरिका में जल्दीसे स्वावलंबी बन जाओगी ऐसी तो मैं कोई आशा नहीं रखता था, लेकिन इतना जरूर माना था कि कम

तुमने शेल्टन* का स्थान नहीं देखा होगा तो अवश्य देखो गोविन्द उसकी बड़ी तारीफ़ करता था। उसकी हेल्थ स्कूल सेन ऐनटोनियो टेक्सास (में) है।

तुमने इंगलैंड के लिए एक ख़त माँगा था सो मैंने भेज दिया था। मिल गया होगा।

अमेरिका जाकर तुम खुल जाओगे ऐसा मैंने कहा था उसका अर्थ तुमने मांगा है। इसका अर्थ यह था कि जो एक प्रकार की अस्वाभाविकता याने एक प्रकार का टेढ़ापन कहो कि जो कुछ था वह दूर हो जायगा और सबके साथ मिलझुलकर रहने की आदत बन जायगी।

तुमारा हिसाब मिला है। भाई ब्रिजमोहन† को ख़त लिखा करो। उनको हिसाब भेजने की आवश्यकता नहीं है। तुमारे 'हरिजन' मिलता होगा। मेरे ख़त और 'हरिजन' डा० होम्स के ठिकाने से आज तक तो गये हैं। अब तुमने जो ठिकाना डा० कैलोग का भेजा है उस ठिकाने पर यह ख़त भेजता हूं। डा० कैलोग का जो ख़त मेरे पर आया था वह तो मैंने तुमको भेज ही दिया था। तुमारे

* बापू का पत्र मिलने से पहिले ही मैं अमेरिका के लगभग सब ही प्राकृतिक चिकित्सकों से मिल चुका था तथा उनकी संस्थायें भी देख लीं थीं। उनमें सेन एनटोनियो (San Antonio), (Texas) में हरबर्ट शैल्टन का हेल्थ स्कूल (Herbert Shelton's Health School) भी सम्मलित था तथा मैकफेडन इत्यादि जैसे शरीर विशेषज्ञों से भी मिल चुका था। इन सबको देखने के बाद ही मैंने डा० बेनेडिक्ट लस्ट तथा डा० जोन हार्वे कैलोग (Dr. Benedict Lust & Dr. J. H. Kellogg) को अपने कार्य के लिये चुना था। इन दोनों में भी मैंने डा० लस्ट को ही तर्जीह दी थी।

† श्री ब्रिजमोहन बिरला।

—दो सौ नौ

शरीर के बारे में यहाँ से मैं क्या लिखूँ? इतना तो है कि ठण्डी से बचो, नित्य कम से कम दस मील घूमो। दूध और फल अच्छी तरह खाओ। सेलाड (Salad) भाजियाँ की खाओ। इतना करने से अवश्य शरीर अच्छा रहेगा। प्राणायाम का अभ्यास रक्खा जाय।

मगनवाड़ी
७-११-३५

बापू के
आशीर्वाद

अमेरिका भेजे हुए ख़त की तारीख़।

(१) २० सेप्टेम्बर : शुक्र (२) ३ अक्तूबर : गुरु* (३) १० अक्तूबर : शुक्र। तीन ख़त।

बापू

बापू का उपरोक्त पत्र पढ़कर मैंने अपनी पत्नी को लिखा था कि उसे बापू को पत्र लिखने के लिये समय निकालना ही चाहिये। उधर मुझे अपने देश के समाचार अमेरिका में सही नहीं मिल पाते थे जिसके लिये श्री देवदास भाई ने मुझे 'हिन्दुस्तान टाइम्स' भेजने का निश्चय कर लिया था। इस विषय में बापू ने लिखा :

१४६

चि० शर्मा,

तुमारा ख़त मिला था। "हिन्दुस्तान टाइम्स" तुमको यों ही मिलता रहेगा। देवदास यहाँ है। उसने क़बूल कर लिया है। द्रौपदी

* बापू का इस तारीख़ का पत्र मुझे अमेरिका में नहीं मिला।

—दो सौ दस

का खत आया है। वह खुश रहती है ऐसा लिखती है और अब हमेशा खत लिखती रहेगी।

वर्धा
२१-११-३५

बापू के
आशीर्वाद

मिआमी (Miami) में डा० कैलोग का प्राकृतिक चिकित्सालय उनके बैटिलक्रीक के हस्पताल से अधिक सुन्दर और रमणीक तो ज़रूर था किन्तु चिकित्सा पद्धति वहाँ भी बैटिलक्रीक की भांति अधिकतर मिकेनिकल तथा इलेक्ट्रीकल यन्त्रों द्वारा ही की जाती थी जिसे प्रायः वहाँ के धनी व्यक्ति ही करा पाते थे। डा० कैलोग ने ही इन यन्त्रों का आविष्कार किया था। उन यन्त्रों का उपयोग और लाभ सिखाकर उन्होंने मुझे वह सब यन्त्र ख़रीदने की सलाह दी तथा मेरे लिए ५० फ़ीसदी उनका मूल्य भी कम कर दिया। किन्तु न तो प्राकृतिक चिकित्सा की दृष्टि से वह मुझे पसन्द आये और न उन यन्त्रों द्वारा अपने देश के गाँव की ग़रीब जनता का कोई लाभजनक उपयोग ही मुझे दिखलाई दिया इसलिए मैं उन यन्त्रों के ख़रीदने के झगड़े में नहीं पड़ा और जो चीज़ मुझे पसन्द आई उसी पर विशेष ध्यान दिया। श्री ब्रिजमोहन बिरला ने तो अपने एक पत्र में लिखा भी कि 'उन यन्त्रों के बिना प्राकृतिक चिकित्सा का सफल प्रयोग मैं यहाँ कैसे कर सकूंगा' किन्तु मैंने अपने उपरोक्त विचार उन्हें लिखते हुये यह सलाह दी कि यदि वह अपने तथा अपने साथियों के निजी प्रयोग के लिये ऐसे यन्त्र ख़रीदना चाहें तो मैं उनके लिए ख़रीद सकता हूँ।

मिआमी (Miami) में रहते हुए एक भारी दुर्घटना होने से ईश्वर ने मुझे बचा लिया जिसकी याद आज भी ताज़ी बनी हुई है।

वहाँ एक दिन बड़ा भारी तूफ़ान आया जिसके लिये कहा जाता था कि वह अपने ढङ्ग का भयङ्कर तूफ़ान था और सैकड़ों वर्षों के बाद आया था। मिआमी (Miami) एक छोटा सा शहर है। वहाँ मकानों की छतें अधिकतर

टीन अथवा ऐसबेस्टस की थीं। केवल डा० कैलोग के चिकित्सालय की इमारत ही वहां एक विशाल और मज़बूत इमारत थी। उस तूफ़ान ने मिआमी (Miami) शहर के मकानों को क्षण भर में लगभग नष्ट सा ही कर दिया था और वहाँ की आम जनता के लिये डा० कैलोग की इमारत ही दो रात्रि तक सुरक्षा का स्थान बनी रही। मैं सुबह टहलने का आदी था। प्रकृति के प्रकोप का वह दृश्य देखने के लिये मैं दूसरे दिन पाँच मील से भी दूर निकल गया। वृक्ष सब उखड़े पड़े थे। बिजली तथा तार के खम्मे सड़क पर बिछे पड़े थे। रास्ते भर मुझे कोई भी मनुष्य दिखाई नहीं दिया। लौटती बार दो मील ही मैंने पार किये थे कि कुछ ही फ़ासले पर बीचसड़क पर एक बड़ा लम्बा मोटा चीता सामने शाही ढङ्ग से खड़ा दिखाई दिया। एक क्षण के लिये मैं ठिठका किन्तु तुरन्त ही बहुत धीमी चाल से वापिस हो लिया, और पीछे फिरकर देखने का मुझे साहस नहीं हुआ। लेकिन क़रीब दो फर्लाङ्ग लौटने के बाद सड़क के मोड़ पर जब पीछे को देखा तब भी वह चीता अपने स्थान पर उसी तरह खड़ा हुआ ऐसा लगा मानों मुझ जैसे छोटे से जीव के आने जाने का उसे ख्याल ही नहीं था। थोड़ी दूर पर बिजली वालों का एक ट्रक मुझे मिला तब उनको मैंने यह सारा हाल सुनाकर प्रार्थना की कि वह मुझे डा० कैलोग के चिकित्सालय तक पहुँचा दें। कितने अच्छे थे वह कर्मचारी कि उन्होंने मेरी प्रार्थना क़बूल की और एक दूसरे रास्ते से मुझे मेरे स्थान पर पहुँचा दिया। डा० कैलोग बहुत वृद्ध थे। उन्होंने जब यह सब हाल सुना तो मुझे अपने पास बुला भेजा और मेरे हाथ चूम कर मुझे हिदायत दी कि मैं बिना उनकी इजाज़त के फिर कभी इस तरह इतनी दूर न जाया करूं।

डा० कैलोग के यहाँ बाईबिल की भी शिक्षा दी जाती थी। मुझे याद है कि वहाँ की मिस नोरमैन (Miss. Norman) नाम की एक महिला मुझे बाई-बिल पढ़ाने के अपने कर्तव्य से एक दिन भी नहीं चूकी। मिआमी में ही बापू का यह एक और निम्न पत्र मिला जिसके बाद फिर मुझे एक महीने तक उनका कोई पत्र नहीं मिल सका :

वर्धा
१४-१२-३५

चि० शर्मा,

तुमारे खत आने शुरू हो गये हैं। यह अच्छी बात है। द्रौपदी का एक छोटा सा पत्र आ गया था। तुमारे खत रामदास को और उसको भेजता रहता हूं। कैलोग को मैंने दूसरा खत नहीं लिखा है तुमारे वहाँ जाने के बाद आवश्यकता समझी जायगी तो अवश्य लिखूँगा। भली बुरी सब चीज़ वहाँ देख रहे हो यह अच्छा ही है। यहाँ के लायक़ की कोई चीज़ देखी जाय तो मुझे बता देना।

हर जगह पर हमेशा दो प्रकार की दूकान रहती हैं। एक ग़रीब लते में और दूसरी धनिक लोगों के लते में। ग़रीब लते में रहती हैं वहाँ कोई वक्त बहुत काम की चीज़ सस्ती मिल जाती है ऐसा तजुरबा मुझे लंडन और पेरिस का है। न्यूयोर्क में ग़रीब हिस्से भी देख लिये जायँ। शेल्टन का हैल्थ होम देखोगे।

अमतुल सलाम यहीं है। तुमारे खत पढ़ लेती है। मुझे मालूम नहीं था कि तुमको वह बिल्कुल लिखती नहीं। रामदास अब तक बम्बई में है। स्थिर नहीं हुआ। तुमारा खुराक सादा और अच्छा दीखता है। शरीर को तो अच्छा बनाही दोगे।

बापू के
आशीर्वाद

जैसा मैंने अपनी अन्य पुस्तकों में प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी अनेक पद्धतियों के सिलसिले में लिखा है मुझे डा० कैलोग की प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति की अपेक्षा उनके स्वास्थ्य-प्रद खाद्य पदार्थों के बनाने की विधियाँ अधिक

पसन्द आई थीं। सोयाबींस ( Soya Beans ) पर वह लम्बा लेख मैंने वहाँ ही अनेक प्रयोग करने के बाद बापू को न्यूयोर्क से लिखा था जिसे बापू ने ४-१-३६ के 'हरिजन' अख़बार में ज्यों का त्यों छापा था और अब वह 'डाइट एन्ड डाइट रिफोर्म्स' ( Diet & Diet Reforms ) नाम की उनकी पुस्तक में भी सफा नं० १४४ से १५० तक दिया गया है।

डा० कैलोग के यहां जो अनेक प्रकार के यन्त्र थे उनमें मुझे नेत्रों द्वारा रोग परीक्षा का 'आइरिस माइक्रसकोप' ( Iris-Microscope ) नाम का यन्त्र बहुत पसन्द आया। किन्तु यह यन्त्र जरमनी के डा० श्नैबिल (Doctor Rudolf Schnabel) की ईजाद थी। अतः डा० कैलोग के यहाँ मैं इस यन्त्र के विषय में अपनी इच्छानुसार अधिक ज्ञान प्राप्त न कर सका और उसके बारे में पूर्णतया जानकारी हासिल करने की धुन उस समय तक मुझे लगी रही जब तक कि जर्मनी के म्यूनिच (Munich) शहर में डा० स्नैबिल के यहाँ स्वयं जाकर मैंने इसके विषय में ठोस ज्ञान प्राप्त न कर लिया।

डा० कैलोग के यहां सब प्रकार की सुविधा होते हुए बापू के पत्र आने बन्द हो जाने से मेरा चित्त उदास रहता था उनको मेरे पत्र हर हफ्ते हवाई डाक से जाते थे परन्तु उधर से मुझे कोई पत्र नहीं मिल पाता था। बापू के बीमार हो जाने की ख़बर रेडियो पर मिली तो थी किन्तु बी० बी० सी० उनकी बीमारी का पूरा सही विवरण नहीं देता था। इसलिये मैं मिश्रामी और अधिक दिन न रह सका और न्यूयोर्क आगया। न्यूयोर्क में डा० होम्स ने मुझे सूचना दी कि बी० बी० सी० की रिपोर्ट के अनुसार बापू की हालत इतनी नाजुक बतलाई गई है कि उनकी मृत्यु किसी क्षण हो सकती है। यद्यपि दूसरे दिन ही डा० होम्स ने टेलीफोन पर मुझे काफ़ी तसल्ली देने का प्रयत्न किया लेकिन मेरा दिल घबराने लगा और अधिक दिन वहाँ रहना मैंने उचित नहीं समझा। न्यूयोर्क में मेरे मित्र डाक्टर डी० एल० श्रीवास्तव* और

* आजकल इंडिया ड्रग इंस्टीट्यूट (India Drug Institute, Lucknow) के डिप्टी डाइरेक्टर हैं।

सैद अन्सारी* थे। इन्होंने मित्रता के नाते मुझे काफ़ी प्रसन्न रखने का प्रयत्न किया किन्तु वहां का अपना सब प्रोग्राम रद्द करके मैं 'वाशिंगटन' नाम के जहाज़ से सीधा बोस्टन पहुँचा और बोस्टन से 'महसीर' नाम के पहिले कार्गो जहाज़ से दूसरे दिन लन्दन रवाना हो गया।

एटलांटिक महासागर में वह मेरे दस दिन जैसे कष्ट के साथ गुज़रे वह वर्णन नहीं किये जा सकते। लन्दन बन्दरगाह पर पहुँचते ही मैंने मिस अगाथा हैरीसन को टेलीफोन किया तो मालूम हुआ कि श्री सी० एफ० एनड्रूज़ (C. F. Andrews) भी उन्हीं के यहाँ दोपहर का भोजन लेने आये हुये थे। मैं अपना सब सामान जहाज़ पर ही छोड़कर मिस अगाथा हैरीसन के यहां पहुँचा और श्री एनड्रूज़ से चिपट कर रो पड़ा। श्री सी० एफ० एन्ड्रूज़ ने मुझे बापू की बीमारी के सब हाल सुनाये और मुझे विश्वास दिलाया कि बापू अच्छे हो रहे हैं। दूसरे दिन अमेरिका से लौटी हुई मेरी डाक मुझे मिली उसमें महादेव भाई का हवाई डाक द्वारा भेजा हुआ यह निम्न ख़त भी था।

१४८

वर्धा
११-१-३६

प्रिय शर्मा जी,

आपकी सब चिट्ठियाँ समय पर मिलती रही हैं। पिछले चार हफ़्ते की चिट्ठियाँ बापू के साथ नहीं रखी जा सकीं। सार† पत्र उन्हें कहा गया; क्योंकि डाक्टरों की सख़्त मुमानियत है कि उनके

---

* श्री सैद अन्सारी आजकल जामेमिलिया, ओखला (दिल्ली) की संस्था के प्रिंसिपल हैं।

† सार = सारांश।

पास न चिट्ठी, न कुछ लिखने का काम लिया जाय। उनकी प्रकृति दो हफ़्ते तक तो काफ़ी चिन्ताजनक रही और ब्रिटिश यूनाइटेड एजेन्सी ने तो उन्हें मार भी डाला—इन लोगों का Exploitation (एक्स-प्लोईटेशन) कितनी नीच हद तक जाता है।

दो हफ़्ते तक Blood Pressure (ब्लड प्रेसर) २१० और १२० तक रही। सम्पूर्ण आराम, शान्ति, बिछोने पर रात दिन लेटे रहने के बाद भी उतरा नहीं। आख़िर डाक्टरों ने बहुत कारण ढूँढ़ कर दाँतों में कारण पाया। चार दाँत निकाले गये। ब्लड प्रेसर उतरा तो सही लेकिन अब भी नार्मल के पास तो नहीं है। सम्भव है कुछ हफ़्ते का और आराम लेने के बाद नार्मल हो जाय.........अम्तुल सलाम आजकल देहली है उनको उनकी चिट्ठी पहुँचा दी गई है और सुरेन्द्र जी को सुरेन्द्र जी की।

आपका सेवक
महादेव देसाई

उपरोक्त पत्र पढ़कर १६ जनवरी को मैं चैन से सोया था कि सुबह को उठते ही ब्रिटिश यूनाइटेड एजेन्सी द्वारा दी गई यह ख़बर अख़बारों में पढ़ने को मिली कि 'बादशाह जार्ज पँचम का रात्रि को १२ बजे के लगभग स्वर्गवास हो गया है' प्रभु की कैसी विचित्र माया है!

बापू ने मिस अगाथा हैरीसन को लिखा था कि लन्दन में मेरे रहने का प्रबन्ध किंग्सले होल में किया जाय और वहां को ग़रीब बस्तियों का मुझे अध्ययन भी कराया जाय। अतः मैं प्रारम्भ में किंग्सले हॉल में ही ठहरा। दूसरे दिन ही श्री सी० एफ० एन्ड्रूज़ का यह निम्न पत्र मुझे मिला जो उन्होंने कैमब्रिज जाते समय लिखा:

as at [?]
Pembroke College
Cambridge
Jan 2[?]

My dear Harilal,

I am so glad you are settled for the time being at Kingsley Hall. It is very dear to Bapu and it is of the utmost importance to keep that loving touch with Bapu quite strong. That is why he wanted you to be there. I am sure you will, very soon, make true friends. You will also be able [illegible] to make your plans for the future.

I think that there is no doubt that after a week the Indian Students Hostel 112 Gower St. will have room for you. I will do my utmost to get that offer made to you, if Aryabhavan cannot receive you. The Indian Students Hostel will certainly be much better than 21 Cromwell Road. Students go back to Oxford and Cambridge on January 22 - 25. Then there is not so much pressure either at the Indian Students Hostel or at 21 Cromwell Road. Students do not go to Aryabhavan usually in [illegible]. I hope

After a few days at Kingsley Hall you will be much more able to see things clearly and while you are there you should be making your plans and also making friends.

I am going abroad at once to Cambridge (probably on Monday) and shall be there in residence. If you like to write to me any time I shall be most glad to answer! My time will be taken up entirely with Cambridge duties when once the new term begins. With my love

Your affectionate friend
C. F. Andrews.

( देखिये पन्ना—दो सौ सतरह

१४६

लिखा मानो पोम्ब्रोक कॉलिज
कैमब्रिज से,
जनवरी २२

मेरे प्रिय हीरालाल,

मुझे बहुत प्रसन्नता है कि आपके रहने की व्यवस्था किंग्सले हॉल में इस समय तो ठीक हो गई। यह स्थान बापू को बहुत प्रिय है और बापू के इस स्नेह को दृढ़ बनाये रखना अति आवश्यक है। यही कारण है कि उन्होंने आपके वहाँ रहने पर इतना बल दिया। मुझे विश्वास है कि वहां आप शीघ्र सच्चे मित्र बना लेंगे और आगे के लिये भी अपनी योजना तैयार कर सकेंगे।

मेरे विचार से निःसंदेह एक सप्ताह बाद इंडियन स्टूडेन्टस होस्टिल ११२ गावर स्ट्रीट में आपके लिए जगह हो ही जायगी। यदि 'आर्य-भवन' आपको न ले सका तो मैं आपके लिये 'इण्डियन स्टूडेन्टस होस्टिल' में स्थान दिलाने का यहाँ से यथा शक्ति प्रयत्न करूँगा। इंडियन स्टूडेन्टस होस्टल निःसन्देह (आर्यभवन) २१ कोर्नवाल रोड की अपेक्षा अधिक अच्छा रहेगा। छात्र २२, २५ जनवरी को ओक्सफोर्ड और कैमब्रिज वापिस चले जाते हैं। इसलिये इण्डियन स्टूडेन्टस होस्टिल अथवा २१ कोर्नवाल रोड पर इतना जोर नहीं रहता। जहाँ तक मुझे मालूम है छात्र आर्यभवन नहीं जाते हैं।

किंग्सले हॉल में कुछ दिन रहने के पश्चात् आप स्वयं सब बातें भली भांवि जानने में समर्थ हो जायँगे। और वहाँ रह कर अपनी योजनायें तैयार कर पायँगे तथा मित्रता का क्षेत्र बढ़ा सकेंगे।

मैं अभी शायद सोमवार को ही कैमब्रिज जा रहा हूँ और वहाँ ही रहूँगा। आप जिस समय मुझे लिखेंगे आपके पत्रों के उत्तर देने में

मुझे प्रसन्नता होगी। नया कार्य काल प्रारम्भ होते ही मेरा समय पूर्णतया कैमब्रिज के प्रति कर्त्तव्य पालन में ही लगेगा। प्यार के साथ।

आपका स्नेही मित्र,
सी० एफ० एन्ड्रूज

मिस अगाथा को भी मेरे लिये स्थान की काफ़ी चिन्ता रहती थी क्योंकि किंग्सले हॉल में उन दिनों अधिक दिन रहने का प्रबन्ध नहीं था और मैं किसी होटल में या ११२ गावर स्ट्रीट वाले इंडियन स्टूडेन्टस होस्टिल में रहना पसन्द नहीं करता था। किंग्सले हॉल के बाद मेरी इच्छा वहां किसी ब्रिटिश परिवार के साथ रहने की थी। किंग्सले हॉल की एक मिस हिल्डा मेरी (Miss. Hilda Mary) ने मेरे इस काम में बड़ी सहायता की और उनके द्वारा मुझे पहिले २५, टिन्डेल रोड, लेटन में एक स्थान मिला और फिर कुछ दिन बाद एक उच्च परिवार की मिस बीट्रिस (Miss. Beatrice) ने, जो मेरे साथ लंडन कालिज ऑफ़ डाइटेटिक्स में अध्ययन करती थी, अपने ७५, लैटिन पार्क रोड वाले बड़े मकान में मुझे रहने के लिये दो कमरे दे दिये। वहां मुझे सब तरह का आराम तो मिला ही किन्तु उनके फैले हुए बड़े परिवार के प्रत्येक मेम्बर से मेरा परिचय हो जाने के कारण एक बड़ी बात यह हुई कि मैंने प्रेक्टिकल योगासनों की एक क्लास वहां जारी कर दी जिसके दस मेम्बर वहां तुरन्त बन गये। इस तरह दस पौंड प्रतिमास की आमदनी मुझे होने लगी तथा किराया कमरों का मेरा माफ़ी में रहा। पश्चिमी देशों में मैंने देखा कि वहां योगासनों द्वारा शरीर को स्वस्थ रखने का ज्ञान प्राप्त करने में अधिक दिलचस्पी थी।

मुझे स्वास्थ्य-प्रद खाना खाने के साथ ही भांति भांति के खाने बनाने का भी शुरू से ही शौक रहा है। जो भी नई, सादा, स्वादिष्ट तथा स्वास्थ्य-प्रद खाने की चीज जहां कहीं भी मेरे देखने और खाने में आती थी मैं उसकी विधि तुरन्त लिख कर फिर समय मिलने पर उसे स्वयं तैयार करता था। मैं अक्सर अपने

चित्र—९

किंग्सले हॉल, लन्दन में बापू का चर्खा

( देखिये पन्ना—दो सौ अट्ठारह )

( देखिये पन्ना—दो सौ उन्नीस )

चित्र—१०

लेखक—लन्दन में अपने मकान पर आमंत्रित शाकाहारी मित्रों के साथ

( देखिये पन्ना—दो सौ उन्नीस ) चित्र—११

पश्चिम में प्राकृतिक चिकित्सकों के भोजन के एक कमरे का दृश्य

पत्र—१५०

2, CRANBOURNE COURT,
ALBERT BRIDGE ROAD,
S.W.11.
BATTERSEA [illegible]

Sunday

Dear Mr Sharma,

I am glad to hear you are settled. Before I got your letter I spoke to Mr Santwan at 112 Gower Street-but he said they were full up. Though they always know of places near(there is a hotel opposite) where they can refer people-who can then have their meals in the Hostel But such an arrangement would cost you 5/or 6/ a night without food. And now you are settled this will not be n eded.

I have written to Mr Oldfield and asked him to write straight to you so always call in at Kingsley Hall-for until I get your new address-I will send your letters there.

Thank you for asking me and my sister to come and have a meal with you. May we do this a little later on-for just at present another sister of mine who lives in the flat above-is ill-and that keeps us both busy.

Yours sibcerely,

Agatha Harrison

( देखिये पन्ना—दो सौ उन्नीस )

मित्रों को अपने खाने पर निमन्त्रण देता रहता था। लन्दन में लेटन पार्क वाले अपने नये मकान से मिस अगाथा को भी मैंने एक दिन निमन्त्रण भेजा। यद्यपि उस दिन वह न आ सकीं किन्तु बाद में कई बार उन्होंने मेरे यहाँ हिन्दुस्तानी भोजन लेने की कृपा की। एक बार मिस्टर एन्ड्रूज़ ने भी मेरे यहाँ अपनी सर्व प्रिय खिचड़ी खाने की कृपा की थी। शाकाहारी एक बड़े परिवार के साथ मेरे रहने का प्रबन्ध हो जाने पर मिस अगाथा ने मुझे यह निम्न पत्र लिखा :

१५०

१०२ क्रेन बोर्न कोर्ट,<br>
एलबर्ट ब्रिज रोड,<br>
लन्दन (एस० डब्लू ११)<br>
रविवार

प्रिय शर्मा जी,

मुझे यह सुनकर प्रसन्नता हुई कि आपको आराम की जगह मिल गई। आपके पत्र मिलने से पहिले मैंने मि० सन्तवान*, ११२ गावर स्ट्रीट से बात चीत की थी परन्तु उन्होंने कहा कि उनके पास सब जगह भर गई हैं। यद्यपि आस-पास के स्थानों की जानकारी उन्हें रहती है और वह उन लोगों को बताते भी रहते हैं जो होस्टिल में खाना खाते हैं। एक होटल तो उनके सामने ही है किन्तु इस प्रकार के प्रबन्ध में आपको बिना भोजन के एक रात्रि के लिये ५ या ६ शिलिंग खर्च करने पड़ेंगे किन्तु अब आपने अपनी निवास व्यवस्था ठीक कर ली है अतः इसकी आवश्यकता ही नहीं रही।

* इण्डियन स्टूडेन्टस होस्टिल के मैनेजर।

मैंने डा० ओल्डफील्ड* को लिख दिया है और सीधे आपको लिखने के लिये भी कह दिया है। आपका नया पता मुझे मालूम होने तक आप किंग्सले हॉल आते रहें उस समय तक मैं आपकी डांक वहीं भेजती रहूंगी।

मुझे और मेरी बहन को जो आपने अपने यहां आने तथा आपके साथ भोजन करने का निमंत्रण दिया है उसके लिये धन्यवाद। अच्छा हो यदि यह किसी और दिन के लिए स्थगित कर दिया जाय क्योंकि इस समय मेरी एक और बहन, जो इस भवन में ऊपर रहती हैं, बीमार हैं और हम दोनों उन्हीं की सेवा में व्यस्त हैं।

आपकी शुभचिंतक,
अगाथा हैरिसन

बापू को मेरे पत्र हर हफ्ते जाते रहते थे। लन्दन में मेरे ख़र्च के लायक़ पैसे कमाने के मुझे जो साधन प्राप्त हो गये थे वह मैं उनको लिख चुका था। किन्तु बापू को फिर भी मेरे ख़र्च का ख्याल रहता ही था। बापू के स्वास्थ्य सम्बन्धी समाचार महादेव भाई द्वारा मुझे मिलते रहते थे। इसी विषय पर उनका पत्र मुझे लन्दन में मिला :

१५१

गुजरात विद्यापीठ,
अहमदाबाद,
२३-१-३६

प्रिय शर्मा जी,

आपका ठीक चल रहा होगा। बापू का स्वास्थ्य अब बहुत सुधर

---

* डा० जोशिया ओल्डफील्ड बापू के बड़े पुराने मित्र थे। इंगलैण्ड में उनसे मुझे मेरे अनुसंधान में सहायता मिली थी।

गया है। ब्लड प्रेसर कम हो गया है। और ख़ुराक भी आजकल काफ़ी ले रहे हैं। दूध छोड़ा था वह अब शुरू किया। रोटी भी कल से लेंगे। ताक़त काफी प्रमाण में आ रही है और कुछ ३०-४० मिनट तक चल भी लेते हैं।

आपको पैसे की ज़रूरत है क्या? बापू मानते हैं कि ब्रिजमोहन जी ने विलायत के एजेन्ट को भी क्रेडिट* नोट भेजी होगी। आपका स्वास्थ अच्छा होगा।

आपका,
महादेव देसाई

बापू के पुराने मित्र डा० जोशिया ओल्डफील्ड के द्वारा लन्दन में मुझे वहां के स्वास्थ सम्बन्धी कई संस्थाओं में काम सीखने का सुअवसर प्राप्त हुआ। नीचे के पत्र कुछ ऐसी ही चीजों से सम्बन्धित हैं।

152

7th. February, 1936.

Dear Mr. Sharma,

I enclose you a letter which I have just received from the Royal Institute of Public Health, and I send the syllabus referred to in Dr. Rawlinson's letter.

With kind greetings,
Josiah Oldfield.

*लन्दन में बड़ी सुगमता से मेरे ख़र्च के योग्य पैसा कमाने का साधन प्राप्त हो जाने से मैंने स्वयं ही ब्रिजमोहन बिरला जी को ख़र्च भेजने के लिये मना लिख दिया था।

१५२

७-२-१९३६

प्रिय श्री शर्मा,

इस पत्र के साथ में आपको एक पत्र भेज रहा हूँ। जो मुझे रायल इन्सटीट्यूट ऑफ पब्लिक हैल्थ से अभी मिला है। और मैं आपको वह पाठ्य-क्रम भी भेज रहा हूं जिसका संकेत डाक्टर रोलिनसन के पत्र में है।

हार्दिक शुभ इच्छायें,

जोशिया ओल्डफील्ड

153

The Princess Louise Kensington Hospital for Children,
St. Quintin Avenue,
North Kensington, W. 10

Telephone :
Park. 7610-7611.

14. 2. 36.

Dear Mr. Sharma,

I think I shall be able to arrange to teach you satisfactorily and give you the experience you require.

—दो सौ बाइस

Will you come to the Charing Cross Medical School on Saturday to-morrow at 2, O'clock for the first lesson.

Yours sincerely,
B. Candess.

१५३

दी प्रिंसेस लूईस केन्सिंगटन होस्पिटल फॉर चिल्डरन,
सेन्टक्विन्टन ऐवेन्यू,
नोर्थ केन्सिंगटन, डब्ल्यू १०

टेलीफून—पार्क, ७६१०-७६११

१४-२-३६

प्रिय शर्मा जी,

मैं समझती हूँ कि जिस अनुभव की आपको आवश्यकता है मैं आपके लिये उसका सन्तोषप्रद विधि से प्रबन्ध कर सकूँगी।

क्या आप कल शनिवार को दो बजे प्रथम पाठ के लिये चेयरिंग क्रौस मेडीकल स्कूल में आ सकेंगे ?

आपकी शुभचिन्तक,
बी० केन्डिस

इंगलैएड के प्राकृतिक चिकित्सकों से मेरा परिचय वहाँ के डा० विलियम आर० लूकस के जरिये आसानी से हो गया था। किन्तु यह देखकर मुझे दुःख हुआ कि इंगलैएड के प्राकृतिक चिकित्सकों में सहयोग तथा संगठन होने की अपेक्षा वहाँ भी आपसी ईर्ष्या और द्वेष काफी मात्रा में था। आडम्बर

तथा अतियशोक्ति तो वहां का गुण है ही। डा० लूकस ने भी मेरी इस बात को अपने निम्न पत्र में किसी हदतक स्वीकार किया था :

154

Sunday.

Dr. H. L. Sharma,
75 Leyton Park Road,
London, E. 10

Dear Dr. Sharma,

As promised when I had the pleasure of seeing you on Monday last, I rang up Dr. Clark* and prepared the way for your visit to him of yesterday, which I trust was mutually profitable.

I have also written to Dr. Davidson† of Newcastle-upon-tyne and enclose herewith a carbon copy for your interest. When you meet Dr. Davidson, as I hope you will be able to do in near future, I hope you will receive a warm welcome..........

Our beloved movement will never make progress, while there is much petty jealousy, apathy and cold heartedness prevalent. However, do not think

* The Principal of the British Naturopathic College, London.

† The Principal, of the Davidson College of Natural Therapeutics, New Castle-upon-tyne.

too hardly of English Naturopaths. Excuse them with the thought : "They know not what they do."

With every good and friendly wish,

Yours fraternally,
William R. Lucas.
The Lucas Health Service.

१५४

रविवार

डा० एच० एल० शर्मा,
७५, लेटन पार्क रोड,
लन्दन, ई० १०

प्रिय शर्मा जी,

मुझे पिछले सोमवार को आपसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था उस समय अपने कहे अनुसार मैंने डा० क्लार्क को फोन किया और उनसे आपको मिलने के लिए कल के वास्ते रास्ता तैयार कर दिया था और मुझे आशा है कि वह आप दोनों के लिए लाभकारी सिद्ध हुआ होगा।

मैंने न्यूकेसिल-अपोन-टाइन के डा० डेविडसन को भी लिख दिया है और आपके लिये भी उसकी एक कारबन प्रतिलिपि भेज रहा हूँ। जब आप डा० डेविडसन से मिलेंगे, जैसी कि मुझे आशा है कि आप जल्दी ही मिल सकेंगे, मेरा ख़्याल है कि वहाँ आपका हार्दिक स्वागत होगा और आपकी वार्तालाप आपके हित में और आपकी यात्रा को सफल बनाने में ठीक ही सिद्ध होगी......

हमारा परम इच्छित आन्दोलन कभी भी उन्नति नहीं कर सकता जब तक छोटी छोटी बातों पर द्वेष, उदासीनता और विरोधी भावनायें बनी रहेंगी। तो भी आप हम अंग्रेज नेचरोपैथ्स के बारे में बुरी भावना न बनाना और यह सोचकर ही उन्हें क्षमा कर देना कि "वह यह नहीं जानते कि वह क्या कर रहे हैं"।

मेरी पूर्ण शुभ इच्छाओं के साथ,

आपका भ्राता,<br>
विलियम आर० लूकस।<br>
दी लूकस हेल्थ सरविस।

विज्ञान के प्रेमियों को सत्य की खोज के वास्ते नरक में भी जाने के लिये कोई हिचकिचाहट नहीं होती। उन दिनों लन्दन में मेरी मुलाक़ात मि० जोन डब्लू० आर्मस्ट्रोंग (John W. Armstrong) नाम के एक व्यक्ति से हुई जो अपने सभी प्रकार के रोगियों को केवल उनका मूत्र पिलाकर ही इलाज करता था और इसी के साथ साथ रोगियों से उपवास भी कराता था। श्री आर्मस्ट्रोंग सज्जन थे। अपनी चिकित्सा पद्धति में उन्हें अनुभव था और श्रद्धा भी थी तथा उनके तरीक़े इलाज में सचाई का भी अंश था किन्तु उनमें अतिश्योक्ति भी काफी मात्रा में थी जो किसी भी चिकित्सक के लिये शोभनीय नहीं कही जा सकती। श्री आर्मस्ट्रोंग ने बाद में "Water of life" "जीवन जल" नाम की अपनी एक पुस्तक भी इंगलैण्ड से मुझे भेजी थी। उनकी इस चिकित्सा पद्धति का ज़िक्र मैंने अपनी अन्य तत्सम्बन्धी पुस्तकों में किया भी है।

लन्दन से फ्लाइङ्ग स्कॉचमैन (Flying Scotchman) नाम की विख्यात रेलगाड़ी द्वारा मैं न्यूकेसिल-अपोन-टाईन तथा एडिन्बर्ग होता हुआ एबरडीन ( Aberdeen ) गया। एडिन्बर्ग ( Edinburgh ) के डा० जे० सी० टीमसन के कार्य से मैं बहुत प्रभावित हुआ। टीमसन-परिवार मुझे

इंगलैण्ड के सर्वश्रेष्ठ प्राकृतिक चिकित्सकों में प्रतीत हुआ। डाक्टर जे० सी० टोमसन मुझे बापू के अनुयायी भी प्रतीत हुए। स्कोटलैण्ड की सरकार से उनका किसी विषय पर पुराना मतभेद चल रहा था। अभाग्यवश मेरे उनसे मिलने के एक घण्टे बाद ही उनको गिरफ्तार कर लिया गया था। किन्तु यह सब कुछ होने पर भी टोमसन परिवार के अन्य सदस्यों ने मुझे अपने यहाँ की सब पद्धतियों से भलीभांति परिचित कराया और नेत्र द्वारा परीक्षा के यंत्र* (Iris-microscope) की उपयोगिता की जानकारी भी मुझे वहां अच्छी तरह हो सकी।

डा० टोमसन के गिरफ्तार हो जाने से उनकी धर्मपत्नी तथा परिवार के अन्य सदस्यों के आग्रह पर मुझे वहां कुछ अधिक दिन ठहरना पड़ा, चूंकि डा० टोमसन ने जेल में जाते ही अनशन ले लिया था। लेकिन कुछ दिन बाद ही वहां की सरकार ने बिना शर्त के उन्हें जेल से छोड़ दिया जैसा कि उनके पत्रों से आगे चलकर मुझे मालूम हुआ।

एबरडीन ( Aberdeen ) में मुझे पता चला था कि महात्मा ई० डी० बेबिट ( E. D. Babbitt ) का प्रिन्सिपिल्स ऑफ लाइट एन्ड कलर (Principles of Light & Colour) नाम का अमूल्य पुराना ग्रन्थ वहां एक वृद्ध प्रोफ़ेसर के पास था। इस ग्रन्थ का पूरा अध्ययन करने की मेरी बहुत पुरानी इच्छा थी। न्यूयोर्क जैसे संसार के प्रसिद्ध पुस्तकालय में भी यह ग्रन्थ मुझे उपलब्ध नहीं हो पाया था। इसलिये एबरडीन ( Aberdeen ) में मुझे एक हफ्ता रहना पड़ा। इस ग्रन्थ के कुछ आवश्यक भाग मैंने वहां टाइप भी कर लिये। एबरडीन ( Aberdeen ) के वृद्ध प्रोफ़ेसर द्वारा मुझे यह भी पता मिला कि स्विट्ज़रलैंड में ऐजिल्स ( Aigles ) नाम के एक छोटे से क़स्बे में एक वृद्ध विधवा के पास भी यह ग्रन्थ था जिसे वह बेचना चाहती थी। उसका पूरा पता नोट करके मैं वापिस लन्दन आया तो वहाँ महादेव भाई तथा बापू के यह दो निम्न पत्र हवाई डाक से प्राप्त हुए :

---

* आइरिस माइक्रसकोप (Iris-microscope)

१५५

वर्धा
१७-२-३६

प्रिय शर्मा जी,

इस वक्त तो बापू जी ने ही लिखा है। अब आप खुशी से उन्हीं को लिखिये। प्रकृति में Fluctuations (फलक्चुएशान्स) तो होते रहते हैं परन्तु पहिले से तो कहीं अच्छी है। वजन ११५ तक बढ़ गया। अब डा० लोग कहते हैं वजन अधिक बढ़ना खतरनाक है। डाक्टर भी एक अजीब सा प्राणी मालूम होता है। आप के दोनों पत्र भेज दिये हैं। पंडित जी कौन ? उदित मिश्र* ? मैं उदित जी को ही भेज रहा हूँ।

आपका,
महादेव देसाई

१५६

चि० शर्मा,

तुमारा ख्याल तो आया ही करता है। अब थोड़े खत लिखने की इजाजत ले ली है। इसलिये आज दो शब्द लिखता हूँ। लंडन में ठीक

* श्री उदित मिश्र बिरला बन्धुओं के बिरलापार्क में एक पंडित थे। उन्होंने एक पत्र मुझे बापू की मार्फत इंगलैण्ड भेजा था। उस पत्र का उत्तर मैंने भी उनको बापू के ही मार्फत कलकत्ते के लिए भेज दिया था।

( देखिये पन्ना—दो सौ अट्ठाइस )

( देखिये पन्ना—दो सौ उन्तीस ) चित्र—१२

किंग्सले हॉल, लन्दन की ग़रीब बस्ती में प्रत्येक रविवार को बच्चों के साथ लेखक का मनोरंजन

( देखिये पन्ना—दो सौ उन्तीस। )

चित्र—१३
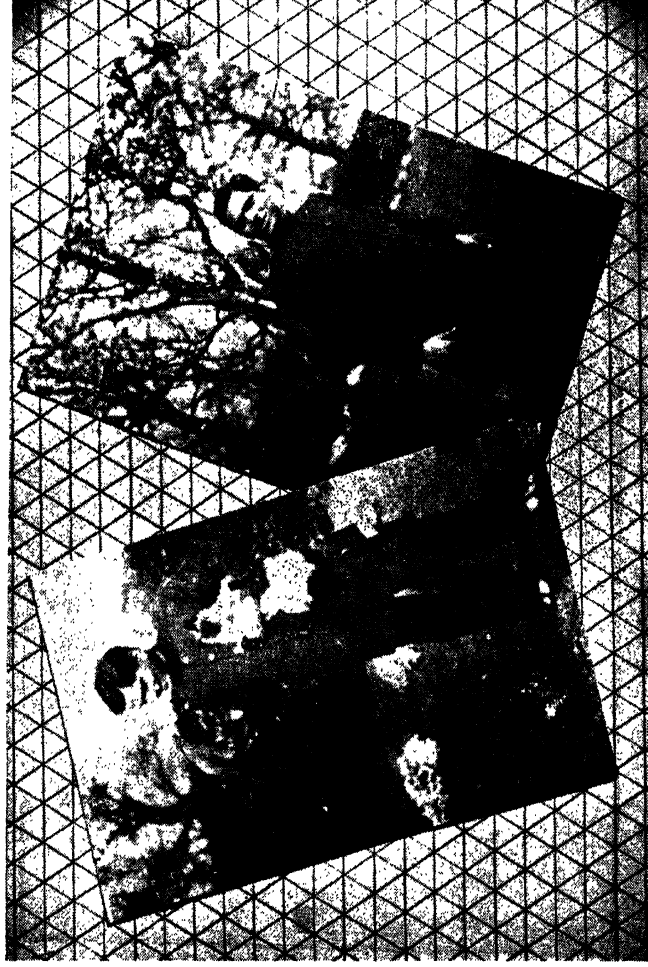
किंग्सले हॉल, लन्दन की ग़रीब बस्ती में रविवार का दिन

अनुभव मिलता लगता है। अब मुझे बताओ क्या २ पढ़ते हो, कहाँ २ क्या खाते हो? कपड़े पहिनने ओढ़ने के लिये संकोच मत रखो। शरीर गरम रहना चाहिये। मुझे अब ठीक है। दो दिन में वर्धा* जायँगे। मार्च मास दिल्ली में जायगा। बाद में वर्धा। मिस एगाथा हैरिसन का परिचय कैसे जचा?

१७-२-३६

बापू के
आशीर्वाद

लन्दन में मेरे मनोरञ्जन का साधन किंग्सले हॉल के समीप की ग़रीब बस्ती के बच्चे थे। मैं हर इतवार को किंग्सले हॉल में ही बच्चों के साथ खेलता था और वहाँ ही अपना खाना लेता था। हर इतवार के दिन वहाँ के बच्चे भी मेरी प्रतीक्षा करते थे। उनके लिए एक बड़ी मनोरंजक बात यह होती थी कि वहाँ एक पड़ोसिन का तोता मेरे पहुँचते ही 'हल्लो, हल्लो' कहता हुआ मेरे कन्धे पर आकर बैठ जाता था और उसी पड़ोसिन की छोटी बिल्ली मेरे पैरों से अपने बदन को रगड़ने लगती थी यह सब देखकर वहाँ के बच्चे बड़े हँसते और कूदते थे।

वयोवृद्ध डा० जोशिया ओल्डफील्ड का दफ्तर लन्दन में था और उनका निवास स्थान केन्ट के डोडिंग्टन (Doddington) नाम के गाँव में था। पिछले हफ़ते मैं उनसे लन्दन में मिला तब उन्होंने अपने गाँव के लिए मुझे निमन्त्रण दिया था। उनकी इच्छा थी कि अपनी छुट्टी के एक दो दिन मैं उनके साथ गाँव में बिताऊँ। उनका यह लिखित निमंत्रण भी पिछले हफ्ते से आया हुआ था:

---

* यह पत्र बापू ने गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद से लिखा है जहाँ वह अपनी बीमारी के समय चले गये थे।

Lady Margaret Fruitarian Hospital,
Doddington, Kent.
Phone: "Doddington Three"
16th. Feb. 1936.

Dear Mr. Sharma,

It gave me great pleasure to meet you and your friend this morning, and if you are free on the 24th., or 25th., instt., I shall be happy to welcome you as my guest at my little cottage here, from either the Friday or Saturday until Monday.

The charm of England is greatly increased when the weather is dry and sunny, and I never advise anyone to come out with a view of seeing the country-side when it is very wet or cold. The train service is as below :—

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| Vict. | Each day. | 2.10– | Sitting B. | 3.23 | bus to Dod. | 4.40 |
| „ | Friday | 3.20– | „ | 4.32 | „ | 4.40 |
| „ | Saturday | 3.30 | „ | 4.41 | „ | — |
| „ | Friday | 4.5 | „ | 5.26 | „ | 6.10 |

If you will let me know which train you are coming by I will have you met at Sittingbourne Station. Our little cottage up here is about a mile and a quarter from Doddington.

With kind greetings,

Josiah Oldfield.

—दो सौ तीस

लेडी मारगेरट फ्रूटेरियन होस्पिटल,
डोडिंग्टन, केन्ट,
फोन, डोडिंग्टन ३.
१६ फरवरी, १६३६

प्रिय शर्मा,

आज प्रातःकाल आपसे तथा आपके मित्र से मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। यदि आपको २४, २५ तारीख को अवकाश मिले तो शुक्रवार या शनिवार से सोमवार तक आपको अपने झौंपड़े पर आपका स्वागत अतिथि रूप में करने में मुझे प्रसन्नता होगी।

यदि मौसम शुष्क और धूपदार होता है तो इंगलैंड की छटा बहुत कुछ बढ़ जाती है। ठंडे बरसात के मौसम में देहात देखने के विचार से यहाँ आने की मैं कभी किसी को राय नहीं देता।

रेलों का क्रम इस प्रकार है :

| विक्टोरिया | प्रत्येक दिन | २.१० | सिटिंगबोर्न | ३.२३ | बस | डोडिंग्टन को | ४.४० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ,, | शुक्रवार | ३.२० | ,, | ४-३२ | ,, | ,, | ,, ४.४९ |
| ,, | शनिवार | ३.३० | ,, | ४.४१ | ,, | ,, | ,, — |
| ,, | शुक्रवार | ४.५ | ,, | ५.२६ | ,, | ,, | ,, ६.१० |

यदि आप मुझे सूचित करदें कि आप कौनसी ट्रेन से आ रहे हैं तो मैं आप से सिटिंगबोर्न के स्टेशन पर मिल लूँगा।

हमारा छोटा सा झौंपड़ा डोडिंग्टन से कोई सवा मील दूर है।

शुभ कामनायें
जोशिया ओल्डफील्ड

—दो सौ इकतीस

केन्ट स्थित तपेदिक़ के हस्पताल के सुपरिन्टेन्डेन्ट—डा० पीयर्स तथा डा० हैमिल्टन ने बड़े उत्साह से अपने यहां के रोगियों की सेवा सुश्रुषा के तथा उनके इलाज के तरीक़े दिखाये। उधर बस्ती में खेती करने वाले किसान परिवारों से मिलकर तथा उनके साफ़ सुथरे मकानों को देखकर मैं बड़ा प्रभावित हुआ और अपने देश के किसानों की दुर्दशा का स्मरण हो आया। वहाँ किसानों की भेड़ तथा मुर्गियों के अलग-अलग लम्बे चौड़े और हरेभरे फ़ार्म देखने में बड़े भले लगते थे। इस तरह डोडिंग्टन (केन्ट) में दो दिन की छुट्टी डा० ओल्डफ़ील्ड के साथ बड़े आनन्द से व्यतीत करके मैं वापिस लन्दन आया और कोन्टीनेनट ल ट्रैफिक मैनेजर (Continental Traffic Manager) को योरुप में अपने सफ़र करने का यह निम्न नक्शा भेजकर टिकिट के लिए आर्डर दे दिया।

इसी नक्शे की एक कापी बापू को भेज दी थी। चौबीस मार्च को हाउस ऑफ़ लोर्डस तथा हाउस ऑफ़ कोमन्स (House of Lords & House of Commons) देखने गया। वहां दर्शकों के रजिस्टर में २८७ नं० पर अपने दस्तख़त करके सवा छः बजे से साढ़े नौ बजे रात्रि तक वहां के दृश्य देखे।

लन्दन में मेरे पड़ोस की एक बूढ़ी जरमन महिला-डाक्टर रात्री को यौगिक क्लास में आया करती थी। उसका पुत्र बर्लिन ( जरमनी ) में 'मारटिन लूथर (Martin Luther) हस्पताल' में तपेदिक़ का अपना इलाज करा रहा था। अपने लड़के को देखने के लिए यह महिला-डाक्टर भी बर्लिन जाने वाली थी। इसकी इच्छा थी कि इसके बीमार लड़के को मैं भी देखूं। इसी कारण इस महिला-डाक्टर ने एडोल्फ़ जुस्ट (Dr. Adolf Just) के स्थान तक जरमनी में मेरे साथ रहना स्वीकार कर लिया। डा० जुस्ट के स्थान पर पहुँचने के लिये जरमनी के पहाड़ों में होकर कई रास्ते तय करने पड़ते हैं। और जरमनी में अँग्रेज़ी भाषा का उन दिनों बिलकुल प्रचार नहीं था। अतः इस जरमन महिला-डाक्टर का सत्संग मेरे सफ़र में कुछ दूर तक के लिये सुविधाजनक साबित हुआ। यद्यपि डा० एडोल्फ़ जुस्ट के पौत्र का एक पत्र मैंने अपने साथ रख लिया

चित्र—१४
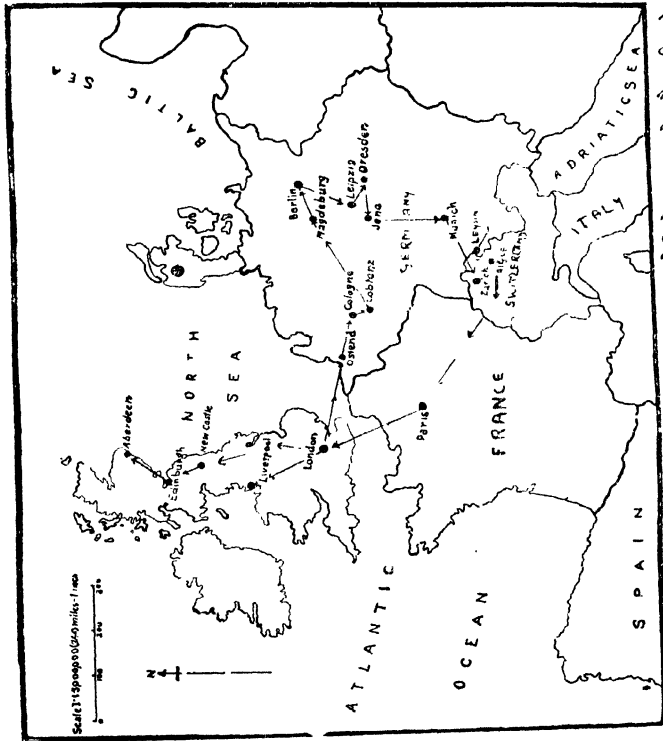
( देखिये पन्ना—दो सौ बत्तीस )

था किन्तु इस जरमन महिला के साथ होने से मुझे रास्ते में उस पत्र के कहीं दिखाने की आवश्यकता नहीं पड़ी।

हमारी कोन्टीनेन्टल एक्सप्रेस ( Continental Express ) विक्टोरिया स्टेशन से चलकर डॉवर ( Dover ) साढ़े तीन बजे पहुँची। वहाँ से ( Princess Marie Jose ) 'प्रिन्सेस मेरी जोस' नाम के स्टीमर से हम ओस्टेन्ड ( Ostand ) साढ़े सात बजे पहुँच गये। ओस्टेन्ड में अपना खाना खाकर साढ़े नौ बजे रात्रि की ट्रेन से कोलन (Cologn) के लिये रवाना हो गये। हमने बेलजियम और जरमनी की सीमा (Frontier) सुबह चार बजे पार किया जहाँ मुझे पहिली बार जरमनी के हृष्ट-पुष्ट कर्मचारियों को देखने का अवसर मिला। सात बजे सुबह को हम कोलन (Cologn) पहुँच गये। वहाँ हिटलर के आने की वजह से ख़ासतौर पर सजावट की गई थी और शहर में बड़ी चहल पहल थी। कोलन में मुझे एक दूसरे डा० जुस्ट ( Dr. Zust ) से मिलना था जो नेत्रों द्वारा शरीर की परीक्षा करने के एक नामी डाक्टर कहलाते थे। कोलन के प्रसिद्ध डोम होटल (Dome Hotel) में स्नानादि से फारिग़ होकर अपने साथी महिला-डाक्टर से (Dr. Zust) डा० जुस्ट को टेलीफोन कराया और दोपहर का खाना डा० जुस्ट के यहां लिया। महिला-डाक्टर ने दुभाषिये का काम किया। आइरिस डाइगनोसिस (Iris-Diagnosis) पर मेरे अनेक लिखित प्रश्नों का मुझे सन्तोष जनक उत्तर मिला और इस यंत्र के प्राप्त करने का स्थानादि मालूम करके जब हम छः बजे अपने होटल वापिस आरहे थे तब रास्ते में हमारी मोटरकार रोककर एक तरफ खड़ी कर दी गई। हिटलर की मोटरों का काफ़िला बराबर से गुज़रा। उस समय कुतुहलवश मैंने अपनी मोटर में ही खड़े होकर हिटलर का अभिनन्दन किया। रात्रि को आठ बजे हिटलर का व्याख्यान सुनने के लिये डा० जुस्ट (Dr. Zust) के कठिन परिश्रम से मुझे एक पास मिल गया और वहां पहिली बार मैंने हिटलर को बोलते हुए देखा। दूसरे दिन साढ़े आठ बजे सुबह की गाड़ी में सवार होकर राइन नदी (Rhine River) का सुन्दर

दृश्य देखते हुये हम कोबलेन्ज़ (Coblenz) पहुँच गये। शहर कोबलेन्ज़ में दो घंटे घूम कर जंगबोर्न ( Jungborn ) के लिये स्टेशनमास्टर की सलाह के अनुसार हमने मेनलाईन (Main Line) ११ बजे पकड़ी। और शाम को सात बजे गन्सटन स्टेशन (Gunsten Stn.) आये। यहाँ से सात बजकर सात मिनिट पर बिजली की ट्राम जैसी छोटी गाड़ी द्वारा सात बजकर सत्ताईस मिनिट पर ऐचिन्सलेनिन स्टेशन (Aschinslelen Stn.) पर उतरे। यहां से तीसरी ट्रेन द्वारा आठ बजकर पांच मिनिट पर हेलबरस्टेड स्टेशन (Halberstadt Station) आये और वहां फिर चौथी ट्रेन आठ बजकर ३५ मिनिट पर चली जो ईकरस्टल स्टेशन (Eckerstal Stn.) पर दस बजकर ४६ पर पहुँची। तार द्वारा अपने पहुँचने की सूचना मैं पहिले ही दिला चुका था। ईकरस्टल स्टेशन (Eckerstal Station) पर डा० एडोल्फ जुस्ट के पौत्र हमको मिल गये और वहां से मोटर द्वारा दस मिनिट में ही हम उस प्रसिद्ध जंगबोर्न (Jung born) में पहुँच गये जो बापू को प्राकृतिक चिकित्सा की दृष्टि से परम प्रिय था और जहां केवल मिट्टी द्वारा ही रोगों का इलाज होता है। जंगबोर्न में (Dr. Adolf Just) डा० एडोल्फ जुस्ट के परिवार में भी बापू के प्रति काफ़ी श्रद्धा और प्रेम देखने में आया जैसा कि आगे उनके पत्रों से मालूम होगा। यदि यह बूढ़ी जरमन डाक्टर महिला वहाँ तक आने में मेरे साथ न होती तो निस्सन्देह इस स्थान तक पहुँचने में मुझे बड़ा कष्ट उठाना पड़ता।

मिट्टी द्वारा चिकित्सा करने वाले प्रसिद्ध डा० एडोल्फ जुस्ट (Dr. Adolf Just) की तो मृत्यु पिछले जनवरी मास में ही हो चुकी थी लेकिन उनकी इलाज पद्धति उनके पुत्र और पौत्र द्वारा बदस्तूर क़ायम थी। ऐडोल्फ जुस्ट के पुत्र और पौत्र की धर्मपत्नियां अंग्रेज़ी भाषा जानती थीं इसलिये मुझे वहां हर प्रकार की सुविधा रही। जरमन डाक्टर महिला वहां से अपने पुत्र को देखने बर्लिन चली गई और मैंने बर्लिन पहुँचने का समय एक हफ्ते बाद का रक्खा। जंगबोर्न (Jungborn) में सिर्फ एक वहां की न्यूडिस्ट क्लास (Nudist Class) को छोड़कर मैंने उनके सभी कार्यक्रम में पूरा भाग लिया और

( देखिये पन्ना—दो सौ तैंतीस )

चित्र—१५

चित्र—१६
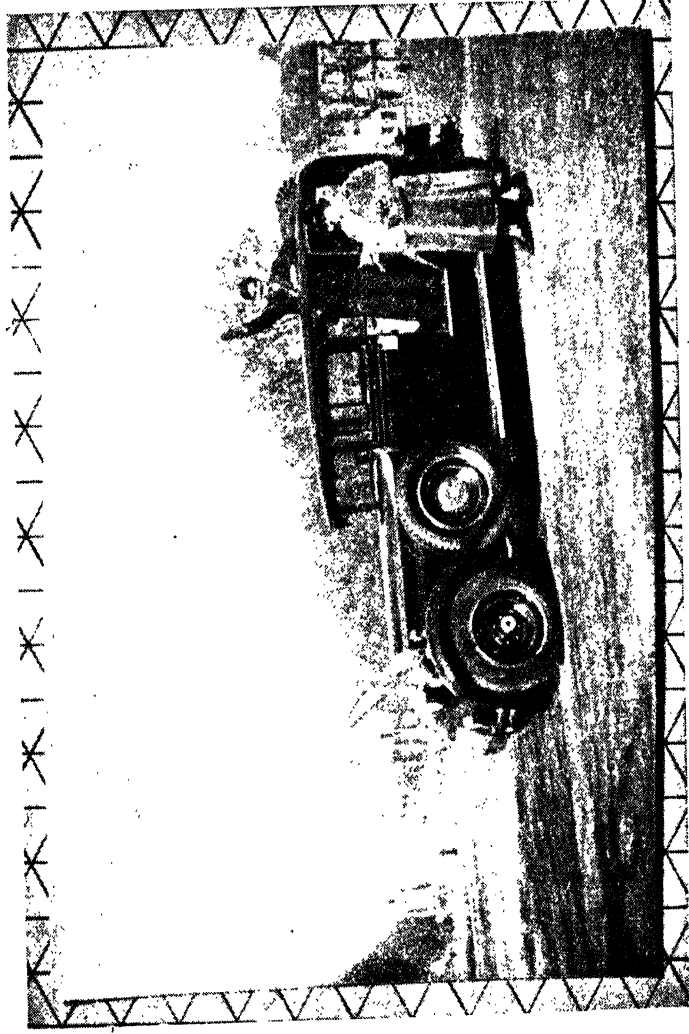
डा० एडोल्फ जुस्ट का 'जॅगबोर्न' सेनीटेरियम
( देखिये पन्ना—दो सौ चौंतीस )

चित्र—१७
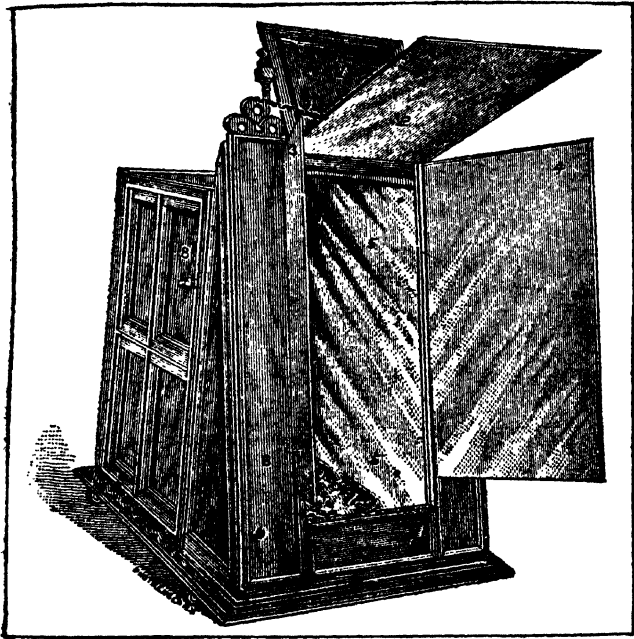
अमेरिका तथा जर्मनी के सेनीटेरियम्स में लेखक द्वारा
तैयार कराए गए थर्मोल्यूम्स का एक नमूना

( देखिये पन्ना—एक सौ अट्ठानवे व दो सौ पैंतीस )

वहां की इलाज पद्धति से बड़ा प्रभावित हुआ। ऐडोल्फ जुस्ट के परिवार ने भी मेरे साथ घर का सा ही वर्ताव करके प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति अपने स्नेह का परिचय दिया। सूर्य-स्नान के दो प्रकार के दो यंत्र—थर्मोल्यूम (Thermo-lume) बनवा कर उन्होंने भी अपने सेनीटोरियम में रक्खे जिसका उन्होंने ७० मार्कस मुझे दिया। डा० जुस्ट-परिवार का आठ दिन मेहमान रहकर मैं बर्लिन को रवाना हुआ तो उस समय जुस्ट-परिवार ने अपने ही सेनीटोरियम में पैदा किये हुये स्वादिष्ट फलों से भरी एक पिटारी तथा कुछ पुस्तकें मेरे साथ रख दीं और परिवार के सब लोग मुझे स्टेशन तक पहुँचाने आये।

जरमनी की रेलगाड़ियों में यह एक अच्छा प्रबन्ध देखने में आया कि वहां सिगरेट इत्यादि न पीने वालों के लिये रेलगाड़ियों में दो-तीन डिब्बे अलग होते हैं। जिनके आगे "नॉन स्मोकर्स" (Non-Smokers) का बोर्ड जरमनी भाषा में लगा रहता है जैसा कि साथ के चित्र से मालूम होगा। क्या ही अच्छा हो जो हमारे देश का रेल विभाग भी यहाँ की प्रत्येक ट्रेन में ऐसे ही कुछ डिब्बों का यात्रियों के लिये प्रबन्ध करादे।

बर्लिन स्टेशन पर मुझे जरमन डाक्टर मिल गई। उसने वहां के मशहूर होटल सेविगनी (Hotel Savigny) में मेरे ठहरने का इंतजाम किया हुआ था। 'मारटिन लूथर (Martin Luther) हस्पताल' में उसके पुत्र की हालत अच्छी थी। हस्पताल की नर्सों ने तथा वहाँ के डाक्टरों ने हस्पताल में घुमाकर मुझे वहां के रोगियों के वार्डस (Wards) दिखाये और रोगियों के लिये सूर्य-स्नान का प्रबन्ध हस्पताल की छत पर बड़े आकर्षित ढंग से हुआ देख मुझे बड़ी खुशी हुई। जरमनी के इस हस्पताल में सूर्य के प्रकाश का डाक्टरी ढंग से उपयोग होता हुआ मैने वहां पहिली बार देखा। बर्लिन से आगे का तमाम जरमन सफ़र मुझे अकेले करना पड़ा लेकिन उसमें कोई खास तकलीफ नहीं हुई।

बर्लिन से मैं लाईपज़िग (Liepzig) में डा० लुईश कुहिने के यहाँ पहुँचा और दो दिन डा० कुहिने के पुत्र डा० एफ० कुहिने (Dr. F. Kuhne)

का मेहमान रहा। वह सादगी जो कुहिने के वक्त की बताई जाती थी वहाँ देखने में नहीं आई। कई प्रकार के मसनूई स्नान वहां सम्मलित कर लिये गये थे तथा खुराक में भी काफी परिवर्तन हो गये थे। डा० एफ० कुहिने ने अपने पिता की सब पुस्तकें मुझे बड़े प्रेम से भेंट कीं। इसके बाद मैं ड्रेसडन (Dresdon) आगया। डेसडन में मेरे लिये बहुत कुछ देखने और सीखने को था। पहिले तो मैं वहां डा० लाहमेंन (Dr. Lahmann) के सेनीटोरियम में रहा जहां अधिकतर डाइट क्योर (Diet Cure) तथा रेस्ट क्योर (Rest Cure) होता था। जरमनी में यह सब से बड़ा नेचरक्योर सेनीटोरियम है। जरमनी में ड्रेसडन (Dresdon) को प्राकृतिक चिकित्सा तथा प्राकृतिक चिकित्सकों का केन्द्र कहा जाय तो अतिश्योक्ति न होगी। ड्रेसडन ( Dresdon ) में ही एक सुन्दर रमणीक पहाड़ी पर डा० मोलर (Dr. Moller) का सेनीटोरियम देखने का मुझे अवसर मिला।

डा० मोलर (Moller) वहाँ उपवास चिकित्सा में प्रसिद्ध थे। डा० रेगनर-बर्ग (Doctor Ragnar Berg) तथा डा० मिकिल हिनहाइड ( Dr. Milkel Hinhide ) दोनों ही आदर्शनीय प्राकृतिक चिकित्सकों से मिलकर मुझे बड़ा हर्ष हुआ। यह दोनों ही डाइट-क्योर (Diet Cure) के विद्वान डाक्टर अपने सिद्धान्तों के अनुसार स्वयं तो चलते ही थे—अपने स्त्री-बच्चों को भी उन्हीं सिद्धान्तों पर चलाकर अनेक अनुभव डाइट-क्योर (Diet Cure) में हासिल कर चुके थे। डा० रेगनरबर्ग (Dr. Ragner Berg) ने तो एक (Dictionary of Food) 'भोजन सम्बन्धी कोष' भी लिखा था जिसमें प्रतिदिन की सादा, सस्ती तथा स्वास्थ्य-वर्धक खुराकों के विषय में अच्छी ठोस जानकारी दी है। मेरा ख्याल है कि अमेरिका में उसका अंग्रेज़ी अनुवाद भी हो गया है।

उपरोक्त विशेषज्ञों के साथ एक हफ्ता रहने के बाद मुझसे ड्रेसडन के प्राचीन डा० बिल्ज़ (Dr. Bilz) के परिवार ने बिल्ज़ सेनीटोरियम (Bilz Sanitorium) में कुछ दिन रहने का आग्रह किया। बिल्ज़-परिवार को बापू

चित्र—१८

लेखक—जर्मनी में डा० एडोल्फ जुस्ट के परिवार के साथ

चित्र—१९
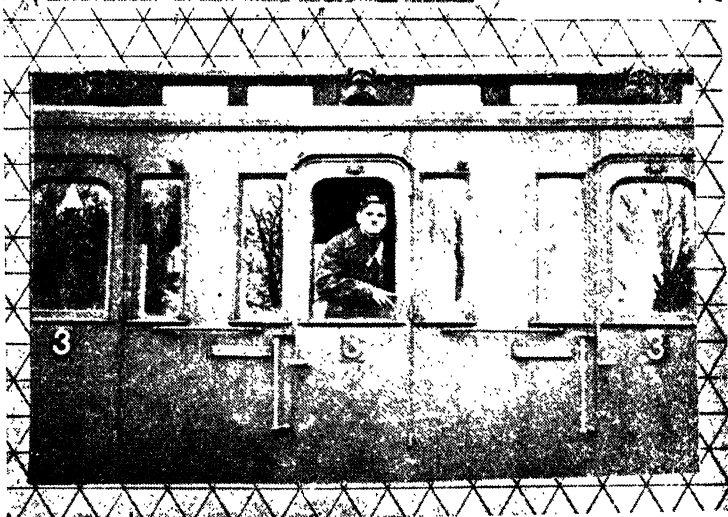
जर्मनी के रेल गाड़ियों में 'नॉन-स्मोकर्स' (Non-smokers) का डिब्बा

( देखिये पन्ना—दो सौ पैंतीस )

( देखिये पन्ना—दो सौ छत्तीस ) चित्र—२०

लेखक—जर्मनी में 'लाहमेन सेनीटेरियम' के डाक्टरों के साथ

( देखिये पन्ना—दो सौ सैंतीस ) चित्र—२१

लेखक—जर्मनी के विल्ज़ सेनाटेरियम में डा० विल्ज़ परिवार के साथ

( २ )

( देखिये पन्ना—दो सौ सैंतीस )

का बड़ा प्रशंसक पाया गया। जब डा० बिल्ज़ की पुत्री, पुत्र और पौत्र ने मेरा स्वागत किया उस समय उनका प्रेम उमड़ा पड़ता था। बिल्ज़ सेनीटोरियम अभी भी अपनी प्राचीन परम्परा पर क़ायम था। वहाँ की चिकित्सा प्रणाली जंगबोर्न (Jungborn) की भांति ही सादा और सरल पाई गई। ड्रेसडन में यह मेरा दूसरा सप्ताह भी अपने घर के ही समान बड़े सुख से व्यतीत हुआ। डा० बिल्ज़ के यहां इंगलैन्ड की डाक मुझे मिली उसमें दिल्ली से लिखा हुआ बापू का यह निम्न पत्र भी था :

१५८

चि० शर्मा,

तुमारा खत मिला है। उस पर से मैंने द्रौपदी को यहाँ बुलाई। परिणाम में यह खत मिला। मैंने फिर भी उसे आने का लिखा है।

तुम अनुभव ठीक ले रहे हो। यहाँ आने पर कालिजों में सीखने का बाक़ी न रहे तो अच्छा होगा। वहां जब तक कुछ ज्ञान पाने का बाक़ी रहे तब तक रहो। बाक़ी मेरे विचार तो हैं ही कि नैसर्गिक उपचार के लिये भिन्न साधना ही है। हाँ शरीर के प्रत्येक अवयवों का ज्ञान और रसायण शास्त्र का अत्यावश्यक* है सही।

१४-३-३६

बापू के
आशीर्वाद

*बापू ने प्राकृतिक चिकित्सकों के लिये ऐनेटमी, फ़िजिओलॉजी तथा केमिस्ट्री इत्यादि तो मेरे कहने से ही आवश्यक मान लिया था। यदि सच पूछा जाय तो साधना ही प्राकृतिक चिकित्सकों के लिये मुख्य चीज़ है और अन्त में केवल साधना ही को बापू ने सर्व प्रधान रक्खा जैसा कि उनके अन्तिम दिनों के तत्सम्बन्धी लेखों से प्रतीत होता है।

इसी डाक से एडिनबर्ग (Edinburgh) के डा० जे० सी० टोम्सन (Dr. J. C. Thomson) की धर्मपत्नी का यह सुन्दर पत्र भी मिला :

१५६

१६ मार्च, १६३६

प्रिय डा० शर्मा,

आपका कृपा पत्र आज प्रातःकाल मिला। धन्यवाद। आपके आगमन की तथा आपकी कही हुई अनेक लाभजनक बातों की सुस्मृतियाँ हमें भी बनी हुई हैं। मेरे पतिदेव से भी मुझे एक पत्र मिला है—कहते हैं कि वे स्वस्थ हैं। आपके बारे में कहते हैं कि उन्हें खेद है कि परिस्थिति-वश वह और आप साथ साथ* बातें भी न कर पाये।

मैं आपको एक तुच्छ भेंट के तौर पर स्काटिस मलमल का कढ़ा हुआ टुकड़ा भेज रही हूं जिस पर हमारा देशीय चिन्ह "थिसिल" कढ़ा हुआ है यदि आप उसको अपनी बहिन की ओर से अपने एडिनबर्ग में आगमन के स्मृति रूप में स्वीकार कर लेंगे तो हम सबको बड़ी प्रसन्नता होगी।

भविष्य के लिए नई नई शुभकामनायें और हम सबकी ओर से प्रेम स्मृतियाँ।

मैं हूँ आपकी शुभचिन्तक,
जोइन एम० टोमसन।

---

* लेखक के एडिनबर्ग पहुँचते ही डा० टोमसन को गिरफ़्तार कर लिया था। अतः उनसे कुछ देर भी बातें न हो सकीं।

( देखिये पन्ना—दो सौ उनतालीस ) चित्र—२२

लेखक—शहर जैना (जर्मनी) में प्रसिद्ध प्रोफेसर कोसचाऊ
के साथ उनकी खाद्य लेबॉरेटरी में

(देखिये पन्ना—तीन सौ आठ) चित्र—३७

सेवाग्राम में बापू के समक्ष सर्दार पटेल की बीमारी के विषय में लेखक का बम्बई के एक होम्योपेथ डाक्टर के साथ विचार विमर्श

(Dresdon) ड्रेसडन में अपने प्रोग्राम से कुछ अधिक ठहर जाने के कारण मेरे जरमनी के सफ़र का समय बढ़ गया और मैं जैना (Jena) के प्रसिद्ध प्रोफेसर कोसचाऊ (Prof. Kotschau) के यहाँ दो दिन की देरी से पहुँचा! प्रोफेसर कोसचाऊ (Prof.Kotschau) जैना शहर के प्रसिद्ध डाईटिशियन (Dietitian) थे। उनकी प्रसिद्ध प्रयोगशाला में उनके साथ खाद्य पदार्थों पर मुझे कुछ अनुसन्धान करने थे। उन्हीं के सहयोग से मुझे आइरिस डाइगनोसिस (Iris-Diagnosis) का यंत्र जैना शहर की ज़ाइस कम्पनी (Zuiss Co.) के यहां से सस्ती क़ीमत पर मिल सका। प्रोफेसर कोसचाऊ (Prof. Kotschau) ने ही म्यूनिच (Munich) के डा० रूडोल्फ स्नैबिल (Dr. Rudolf Schnabel) को टेलीफून पर मेरा परिचय दे दिया था जिन्होंने आइरिस-डाइगनोसिस (Iris-Diagnosis) पर जरमन भाषा में अनेक पुस्तकें लिखी हैं तथा रोग निदान की इस सरल प्राचीन प्रणाली को वैज्ञानिक ढंग से संसार के सामने रखकर भारी उपकार किया है।

(Jena) जैना में ही ज्यूरिच (Zurich) के प्रसिद्ध डाइटिशियन (Dietitian) डा० बिरहर बैनर (Dr. med. M. Bircher Benner) का मुझे यह निम्न पत्र मिला :

१६०

६, अप्रैल ३६

प्रिय श्री एच० एल० शर्मा

आपका पत्र आज ही शाम को मिला। बिल्ज सेनीटोरियम के पते से उत्तर देने का समय तो नहीं रहा इसलिये आपको आपके जैना (Jena) के पते पर उत्तर भेज रहा हूँ।

कृपया लिखिये कि ज्यूरिच (Zurich) आप किस ट्रेन से आ रहे हैं। हम आपसे स्टेशन पर मिलने का भरसक प्रयत्न करेंगे। यदि मुझे या मेरे प्रतिनिधि को स्टेशन पर आप न भी मिल पायँ तो आप

टैक्सी वाले को इस पत्र का सरनामा दिखा दें और वह आपको मेरे घर ले आयेगा।

आपका शुभचिन्तक,
बिरहर बैनर

जैना (Jena) से रवाना होकर मैं म्यूनिच (Munich) में डा० रुडोल्फ स्नैबिल (Dr. Rudolf Schnabel) का दो दिन मेहमान रहा। डा० स्नैबिल उन दिनों बर्लिन गये हुए थे। उनकी पुत्री ने अपने पिता की प्रयोगशाला में आइरिस-डाइगनोसिस (Iris-Diagnosis) पर किये हुये अनेक महत्वपूर्ण परिणाम मुझे दिखाये तथा इस विषय की पुस्तकें भेंट कीं। डा० स्नैबिल से न मिल सकने का खेद उन्होंने स्वयं अपने एक पत्र में ज़ाहिर किया है जो आगे जाकर मुझे लंदन में मिला।

(Munich) म्यूनिच से मुझे ज्यूरिच (Zurich) जाना था। ज्यूरिच (Zurich) स्विटज़रलैंन्ड ( Switzerland ) में है। डा० बिरहर बैनर (Dr. Med.Bircher Benner) ने मेरे वहाँ पहुँचते ही बापू की पिछली ब्लड प्रेसर (Blood Pressure) की बीमारी का ज़िक्र किया और कहा कि यह डा० बैनर की ही तजबीज़ थी कि गांधी जी के दाँतों की ख़राबी से उन्हें ब्लड प्रेसर रह रहा था। उन दिनों वहां इटली से मुसोलिनी (Mussoolini) का निजी डाक्टर (Personal Physician) डा० बैनर की मशहूर सेब-की-प्लेट (Apple-Plate) के बनाने की विधि जानने के लिये आया हुआ था। डा० बिरहर बैनर (Dr. Bircher Benner) की इस स्वादिष्ट तथा स्वास्थ्य-वर्धक सेब-की-प्लेट* (Apple-Plate) के सिलसिले में उन दिनों कुल योरुप में धूम मची हुई थी।

* अपने देश में भी केन्द्र के अनेक मिनिस्टर इसी (Apple-Plate) सेब-की-प्लेट का प्रयोग कर रहे हैं। जिसके विषय में लेखक के पास इसके अच्छे परिणामों के समाचार आते रहते हैं।

पत्र—१६०

Tele 26890


DR MED. M. BIRCHER-BENNER
CHEFARZT DES SANATORIUM „LEBENDIGE KRAFT“
ZÜRICH { SPRECHSTUNDE. KELTENSTR 48
WOHNUNG KÖLLIKERSTR. 16


6. April 1936

Dear Mr. R. L. Sharma,

Your letter came in my hand only this evening, too late for an answer to the Bilz-sanatorium, so I send my answer to Jena.

Let me know with wich train you arrive in Zürich and we shall do our best to find you at the station. If ever we should not met me or my representant at the station, you may show this letters head to the man of the taxi and he will bring you to my home

sincerly yours

Bircher Benner

( देखिये पन्ना—दो सौ उनतालीस )

चित्र—२३

MOUNTAIN CLIMBING BY TRAIN

( देखिये पन्ना—दो सौ इकतालीस )

डा० बिरहर बैनर ने चार दिन तक अपने यहां के भाँति-भाँति के स्वादिष्ट, स्वास्थ्य-वर्धक तथा सस्ते और सरल खाद्य पदार्थों से भली भाँति परिचित कराया। उधर अपने आठ दस मील टहलने का अभ्यास होने के कारण स्विटज़र-लैंन्ड की सैर भी अच्छी हो गई थी। (Zurich) ज्यूरिच से चलकर मैं अपने पुराने मित्र डा० रोलियर (Dr. Rollier) के प्रसिद्ध सन-रे-क्लीनिक (Sun-Ray-Clinic) के लिये रवाना हो गया। संसार का यह प्रसिद्ध क्लीनिक लेज़िन (Leysin) मुक़ाम पर है जो एलपाइन पर्वतों (Alpine Mts.) की चोटी पर बना हुआ है। एजिल्स (Aigles) स्टेशन से पहाड़ी रेलगाड़ी में सवार होना पड़ता है जो ट्राम जैसी दो डिब्बों की ही होती है। एजिल्स (Aigles) से इस पहाड़ी गाड़ी द्वारा एलपाइन पहाड़ों (Alpine Mts.) की चोटी पर लेज़िन (Leysin) स्थान तक पहुँचने में एक घन्टा लगा। लेज़िन स्टेशन (Leysin Stn.) से सेनीटोरियम के लिये चन्द मिनिट का ही रास्ता है जहाँ संसार के हर कोने से हड्डी की तपेदिक़ (Bone-Tuberculosis) के रोगी इलाज के लिये जाते हैं और जहां केवल सूर्य की रश्मों-द्वारा उनका इलाज करके उन्हें पूर्णतया स्वस्थ किया जाता है।

सूर्य चिकित्सा मेरा खास विषय होने के कारण वहां की हर एक चीज़ को मैंने बड़े ध्यान से देखा। डा० रोलियर वृद्ध हो गये थे और बाहर कम निकलते थे। उन्हें मेरी पुस्तक Light and Colour in The Medical World के दो भाग कभी भेजे गये थे उन पुस्तकों की याद उन्हें तुरन्त आगई और बड़े स्नेहपूर्वक उन्होंने १० दिन तक मुझे अपना मेहमान रक्खा तथा वहाँ के प्रत्येक रोगी के पास मुझे स्वयं लेजा कर अपने यहां के सब तरीक़े इलाज समझाये जो बिलकुल सादा और सरल थे। यहां मुझे अपने प्रोग्राम के खिलाफ़ ६ दिन अधिक ठहरना पड़ा। उपरोक्त सब स्थानों के तरीक़े इलाज अपने निजी अनुभवों के साथ तत्सम्बन्धी मेरी अन्य पुस्तकों में दिये गये हैं।

डा० रोलियर (Dr. Rollier) के ही पते पर मुझे पेरिस के एक

प्रसिद्ध ओस्टियोपैथ* ( Osteopath ) का भी निमंत्रण मिला लेकिन मेरे सफ़र ( Continental Tour ) के टिकिट की अवधि समाप्त होने को आगई थी इसलिये पेरिस में मैं दो दिन से अधिक नहीं ठहर सका।

एजिल्स (Aigles) एक छोटी सी बस्ती है जहां एक वृद्ध महिला के पास महात्मा ई० डी० बेबिट (E. D. Babbitt) के प्रसिद्ध ग्रंथ प्रिन्सिपिल्स ऑफ़ लाइट एन्ड कलर (Principles of Light and Colour) का मुझे एबरडीन (Aberdeen) में पता लगा था। मैं इसका भेद किसी को बताना नहीं चाहता था। इसलिये डा० रोलियर (Dr. Rollier) के सेक्रेटरी को एजिल्स (Aigles) तक अपने साथ न आने की प्रार्थना करके उन्हें वहीं रोक दिया और लेज़िन (Leysin) से पहाड़ी गाड़ी द्वारा अकेला ही पहाड़ से उतर कर ऐजिल्स (Aigles) आया। उस वृद्ध महिला से मिलने तथा वह अमूल्य ग्रन्थ उससे प्राप्त करने में मुझे वहां दो दिन लग गये। ऐबर-डीन (Aberdeen) में मुझे तीन पौंड में इस ग्रन्थ के मिल जाने की संभावना बताई गई थी परन्तु मुझे चार पौंड देने पड़े यद्यपि मैंने इससे अधिक मूल्य में भी इस ग्रन्थ को लेने का निश्चय कर रक्खा था। उस अमूल्य ग्रन्थ को प्राप्त करके मुझे बड़ा हर्ष हुआ और मैं तीसरे दिन ऐजिल्स (Aigles) से १.४५ की गाड़ी से चलकर साढ़े दस बजे रात्रि को पेरिस (Paris) पहुँचा। इस गाड़ी में पेरिस के लिये अलग डिब्बा था जो तीसरे दर्जे का होते हुये हमारे देश की गाड़ी के प्रथम श्रेणी के डिब्बे से भी अधिक साफ़-सुथरा और सुसज्जित था। मैं पेरिस में सिर्फ़ दो दिन ठहर सका और योरुप के सफ़र से अनेक ठोस तथा लाभदायक अनुभव प्राप्त करके बापू के आशीर्वाद से मैं आनन्द के साथ २६ अप्रैल को लंदन वापिस आगया। लंदन में मेरी डाक काफ़ी आई पड़ी थी उनमें से पाठकों के लिये यहां सिर्फ़ तीन पत्र देने योग्य हैं :

*ओस्टियोपैथ्स (Osteopaths) रीढ़ की हड्डी (Spinal Cord) के द्वारा ही रोगों का इलाज करते हैं।

Bad Harzburg, April 4th, 1936
am Breitenberg.

Dear Mr. Sharma,

your letter from Dresden was received with great pleasure. Many thanks for the two snapshots. Please, find enclosed the three pictures which Dr. Just and his wife took when you were leaving. We hope you will enjoy them as much as we did yours.

Dr. Just asks me to tell you that he is sorry not to be able to send you a copy of the Jungborn cinematograph. The time allowed for copying was too short.

We wonder how you will have got along, and whether you met all the people whose adresses you got from Dr. Just. We would be particularly interested to hear some more about your trip.

After all we wish you a good home-coming. Will you please give our best regards to Mr. Ghandi, and do not forget to send the promissed books.

My father-in-law, Mr. Rudolf Just, regretted very much not to have met you when he heard of your visit at his return. We regret just as much that you cannot be here now to see spring which is coming into the country with sunshine, flowers and blossoming trees!

"All members of our family, who know you, send you their kindest regards, and — „bon voyage"!

Else Just.

( देखिये पन्ना—दो सौ चौवालीस )

"Jungborn"
April, 14. 1936.

Dear Mr. Sharma,

Your letter from Dresdon was received with great pleasure. Many thanks for the two snapshots. Please find enclosed the three pictures which Dr. Just and his wife took when you were leaving. We hope you will enjoy them as much as we did yours. Dr. Just asks me to tell you that he is sorry not to be able to send you a copy of the "Jungborn" Cinematograph. The time allowed for copying was too short.

We wonder how you will have got along, and whether you met all the people whose addresses you got from Dr. Just. We would be particularly interested to hear some more about your trip.

After all we wish you a good home-coming. Will you please give our best regards to Mr. Gandhi, and do not forget to send the promised books*.

My father-in-law, Mr. Rudolf Just regretted very much not to have met you when he heard of your visit at his return. We regret just as much that you cannot be here now to see Spring which is

*Author's publications

coming into the country with sun-shine, flowers and blossoming trees.

All members of our family, who know you, send you their kindest regards and—

'bon voyage'

Else Just.

१६१

जंगबोर्न,
१४-४-३६

प्रिय श्री शर्मा,

ड्रेसडन से भेजा हुआ आपका पत्र मिला। बड़ी प्रसन्नता हुई। दोनों चित्रों के लिये धन्यवाद। साथ में यह तीन तस्वीरें भेज रही हूं जो डा० जुस्ट और उनकी धर्मपत्नी ने आपकी विदा के समय यहाँ ली थीं। आशा है आपको भी इनसे ऐसी ही प्रसन्नता होगी जैसी हमें आप वाले चित्रों से हुई है। डा० जुस्ट लिखवाते हैं कि उन्हें खेद है कि जंगबोर्न सिनेमाचित्र की वह एक प्रति नहीं भेज सके क्योंकि उसके लिए समय बहुत थोड़ा था।

हम सोचते हैं आपकी यात्रा कैसी होगी और आप उन सब लोगों से मिल सके या नहीं जिनका पता डा० जुस्ट ने आपको दिया था। आपकी यात्रा के बारे में यदि आप कुछ और लिखें तो हमें विशेष प्रसन्नता होगी।

हम तो यही चाहते हैं कि आप घर सकुशल पहुँचेंगे। कृपया गांधी जी से हमारी शुभकामनायें कह दीजिये और जिन (अपनी) पुस्तकों को भेजने का वायदा आपने किया था भेजना न भूलिये।

*From The Edinburgh School of Natural Therapeutics* ∽ *Phone Edinburgh 217881*

22nd April, 1936.

Dear Dr. Sharma,

I think Mrs. Thomson has given you most of the news. Just a word to say how much we all appreciate your attitude and particularly myself for helping out my family during the trying time they went through as a result of my incarceration. In many ways it was worse for them than it was for me, and your philosophical outlook made all the difference.

At the moment our energies are largely turned in the direction of the Peace movement, but of course there is a very large percentage of the people in Britain who are convinced our destiny is to rule other peoples. However, there is no need for me to expound this theme - you must be altogether too painfully aware of this national idiosyncracy.

The hopeful thing is that over eleven million of our people have testified to their belief in peaceful methods.

Personally I believe that the Nature Cure philosophy is the real solution of most of these difficulties. If the individual would be willing to readjust his life to conform to natural symbiosis, our brotherhood with our fellow man would be emphasized along with our relationship to plant life.

I have no doubt you are finding plenty to do in London, but it is a pity that 400 miles does constitute a very real barrier at this stage of our development.

With every good wish for your constructive work,

Yours sincerely,

James C. Thomson

ESNT

*James C. Thomson*
*Principal*
*11 Drumsheugh Gardens*
*Edinburgh, 3*

( देखिये पन्ना—दो सौ सैंतालीस )

मेरे श्वसुर जी—मि० रुडोल्फ जुस्ट ने अपनी वापिसी पर आपके यहाँ आने का हाल सुना तो उन्हें आपसे न मिल सकने का बड़ा खेद हुआ। हमें खेद है कि जब देहात में बसन्त ऋतु धूप, फूलों, और फूलते फलते वृक्षों के साथ आ रही है आप यहाँ न हो सके।

कुटुम्ब के सभी लोग जो आपको जानते हैं आपको अपनी शुभ-कामनायें भेजते हैं और

"यात्रा सफल"

एल्स जुस्ट

162

Edinburgh,
22nd. April, 1936.

ear Dr. Sharma,

Mrs. Thomson has given you most of news. Just a word to say how much we all ppreciate your attitude, and particularly myself or helping out my family during the trying time hey went through as a result of my incarceration. n many ways it was worse for them than it was or me, and your philosophical outlook made all he difference.

At the moment our energies are largely turned

in the direction of the Peace movement, but ofcourse there is a very large percentage of the people in Britain who are convinced our destiny is to rule other peoples. However, there is no need for me to expound this theme—you must be altogether too painfully aware of this national idiosyncracy.

The hopeful thing is that over eleven million of our people have testified to their belief in peaceful methods.

Personally I believe that the Nature Cure philosophy is the real solution of most of these difficulties. If the individual would be willing to readjust his life to conform to natural symbiosis, our brotherhood with our fellow-man would be emphasized along with our relationship to plant life.

I have no doubt you are finding plenty to do in London, but it is a pity that 400 miles does constitute a very real barrier at this stage of our development.

With every good wish for your constructive work,

Your's sincerely,
James C. Thomson.

—दो सौ छियालिस

एडिनबर्ग
२२-४-१६३६

प्रिय डा० शर्मा,

मेरा ख्याल है कि मेरी धर्मपत्नी ने बहुत कुछ समाचार आपको दे दिये होंगे। आपकी मनोवृत्तियों का हम सब तो आदर करते ही हैं लेकिन विशेष कर मैं करता हूँ क्योंकि मेरे परिवार की आपने ऐसे समय में मदद की कि जब मेरे परीक्षा काल में मेरे जेल जाते समय उन्हें भारी विपत्ति सहन करनी पड़ी थी। वस्तुतः वह समय मेरे लिये इतना खराब न था जितना कि मेरे परिवार वालों के लिये था और आपके दार्शनिकों जैसे दृष्टिकोण द्वारा उन्हें जो शान्ति मिली उनका वर्णन करना कोई सहज कार्य नहीं।

इस समय तो हमारी सारी शक्तियाँ शान्ति आन्दोलन की ओर लगी हुई हैं किन्तु स्वभावतः ब्रिटेन में ऐसी जन संख्या अधिकतर है जिनका यह विश्वास है कि अन्य जातियों पर शासन करना तो वह भाग्य में लिखाकर आये हैं फिर भी इस विषय की कोई आवश्यकता नहीं। इस जातीय झक्कीपन से आप स्वयं ही दुःख के साथ अवगत होंगे।

आशाप्रद बात तो यह है कि हमारी जाति के एक करोड़ से अधिक लोगों ने शान्तिमय विधियों में अपना विश्वास प्रमाणित कर दिखाया है।

व्यक्तिगत तो मेरा विश्वास यह है कि प्राकृतिक चिकित्सा विज्ञान ही ऐसी बहुत सी कठिनाइयों का वास्तविक हल है। यदि कोई व्यक्ति अपना जीवन प्राकृतिक सहजीवन के अनुसार बना लेने के लिये

प्रस्तुत हो तो मानव समाज में भ्रातृत्व भावनाओं पर भी उतना ही बल दिया जायगा जितना उद्भित सृष्टि के सम्बन्ध पर।

मुझे सन्देह नहीं कि आपको लन्दन में व्यस्त रहने की बहुत सी सामग्री प्राप्त हैं किन्तु खेद है कि ४०० मील की दूरी हमारी उन्नति की इस श्रेणी के समय एक बहुत बड़ी रुकावट सिद्ध हो रही है।

आपके रचनात्मक कार्यों के लिये बहुत बहुत शुभ कामनायें।

आपका शुभचिन्तक,
जे० सी० टोमसन

यूरोप के सफ़र को रवाना होने से पहिले ही मैंने जहाज़ की 'सिटी एन्ड हॉल लाइन' (City & Hall Line) नाम की कम्पनी को यह इत्तला दे दी थी कि हिन्दुस्तान जाने वाले किसी कार्गो जहाज़ में मेरी यात्रा का प्रबन्ध कर दिया जाय। मेरे फ्री पेसेज (Free Passage) को कराने में यहाँ भी बिरला बन्धुओं के एजेन्ट ने मेरी सहायता की थी। इस सिलसिले में जहाज़ की कम्पनी के दफ्तर में जब गया तो मुझे मालूम हुआ कि 'सिटी ऑफ न्यूकेसिल' (City of Newcastle) नाम का कार्गो जहाज़ हिन्दुस्तान जाने वाला है और उसी में मुझे स्थान मिला है। इस बात की पुष्टि के लिए मुझे जहाज़ की कम्पनी का यह पत्र मिला :

163
City and Hall Lines.

London E. C. 3.
April 25th. 1936

Dr. H. L. Sharma,
75 Leyton Park Road,
Leyton, E. 10

Dear Sir,

S. S. "City of Newcastle"

With reference to your passage by the above

चित्र—२४

RUDOLF JUST
LEITER DER KURANSTALT
JUNGBORN

JUNGBORN (HARZ), DEN 31.10.1939

Herrn Dr.H.L. S h a r m a C/O
Rev. John H.Holmes
Sidney Place
Brooklyn, N e w Y o r k

Dr. med. Walter Just
Jungborn

DR. LAHMANNS SANATORIUM „WEISSER HIRSCH"
IN BAD WEISSER HIRSCH, DRESDEN

October 23, 19

Bilz-Sanatorium
Kuranstalt für naturgemäße
Lebens- und Heilweise

JUNGBORN IM HARZ
SANATORIUM
MIT NATÜRLICHER HEILWEISE

Jungborn im Harz, den 12.3.38.

Herrn H.L. S h a r m a
75, Leyton Park Road
Leyton, London, E.10.

Sehr geehrter Herr Sharma!

Es freut mich, aus Ihren Zeilen vom 9.d.M. zu ersehen, dass Sie meinen Brief vom 6.d.M. an Hand eines Diktionärs übersetzen konnten. Ich habe gern davon Kenntnis genommen, dass Sie in der 3. Märzwoche nach hier zu kommen beabsichtigen. Vielleicht ist

( देखिये पन्ना—दो सौ सैंतालीस )

चित्र—२५

( देखिये पन्ना—दो सौ अड़तालीस )

steamer, kindly note that you are requested to join the vessel at the East Float Dock, Birkenhead, between 4 & 5 P. M. on the 1st. May.

Yours faithfully,
Manager.

१६३

सिटी एन्ड होल लाइन्स

डा० एच० एल० शर्मा,
७५, लेटन पार्क रोड,
लेटन, ई० १०

लन्दन ई० सी० ३
२२-४-३६

प्रिय महोदय,

एस० एस० "सिटी ऑफ न्यू केसिल"

उपरोक्त स्टीमर द्वारा आपकी यात्रा के सम्बन्ध में निवेदन है कि कृपया ध्यान रखिये कि उपरोक्त जहाज़ पर एक मई को शाम के चार और पाँच के बीच ईस्ट फ्लोट डौक ब्रिकेनहैड पर आने के लिये आप से प्रार्थना की जाती है।

आपका विश्वसनीय,
मैनेजर

हिन्दुस्तान जाने का प्रबन्ध हो जाने से मुझे बेफिक्री हो गई थी अतः तीन दिन की छुट्टी मनाने के लिये मैं बैडफोर्ड (Bed Ford) चला गया। लंदन में उस समय मेरे पास अमेरिका, इंगलैंड तथा यूरोप के प्रसिद्ध लेखकों की तत्सम्बन्धी पुस्तकों की पेटियाँ बढ़ गई थीं इन पेटियों के अतिरिक्त और कोई

विशेष सामान मेरे पास नहीं था। वह सब पुस्तकें मेरी मकान-मालिका ने स्वयं पैकिंग करके जहाज़ कम्पनी के कर्मचारियों द्वारा ब्रिकेनहैड (Brikenhead) पहुँचा दी थीं।

बैडफोर्ड (Bed Ford) गाँव में अपनी तीन दिन की छुट्टी व्यतीत करके मैं लन्दन वापिस आया और वहाँ अपने अनेक मित्रों से विदाई लेकर ब्रिकेनहैड (Brikenhead) रेल द्वारा ४-४५ पर पहुँच गया तथा ठीक समय पर अपने "सिटी आफ न्यूकेसिल" (City of New Castle) नाम के जहाज़ पर सवार हो गया। ब्रिकेनहैड में जहाज़ पर मुझे विदाई की शुभ कामनाओं के अनेक तार मिले उनमें एडिनबर्ग के टोमसन परिवार का तार उल्लेखनीय है :

१६४

एडिनबर्ग | १ मई, सन् १९३६

डा० शर्मा सिटी ऑफ न्यूकेसिल

ब्रिकेनहैड

टोमसन परिवार की ओर से सुखमय यात्रा के लिये शुभकामनायें तथा सप्रेम स्मृतियाँ।

टोमसन परिवार।

"सिटी ऑफ न्यूकेसिल" (City of NewCastle) जहाज़ पर मैं अकेला ही प्रथम श्रेणी का यात्री था। मुझे फ्री पैसेज इस शर्त पर मिला था कि मैं जहाज़ की छोटीसी डिस्पेन्सरी का इंचार्ज रहकर काम करूँगा। इसके लिये मुझे दो शिलिंग प्रतिदिन मेरे जेब ख़र्च को अलग मिला तथा जहाज़ की डिस्पेन्सरी का अनुभव भी अच्छा हो गया।

मैं तीस मई को कलकत्ता बन्दरगाह पर पहुँचा जहाँ बिरला बन्धुओं के कर्मचारी मुझे मिल गये थे। उन्हीं के द्वारा सब से प्रथम मुझे डा० अन्सारी
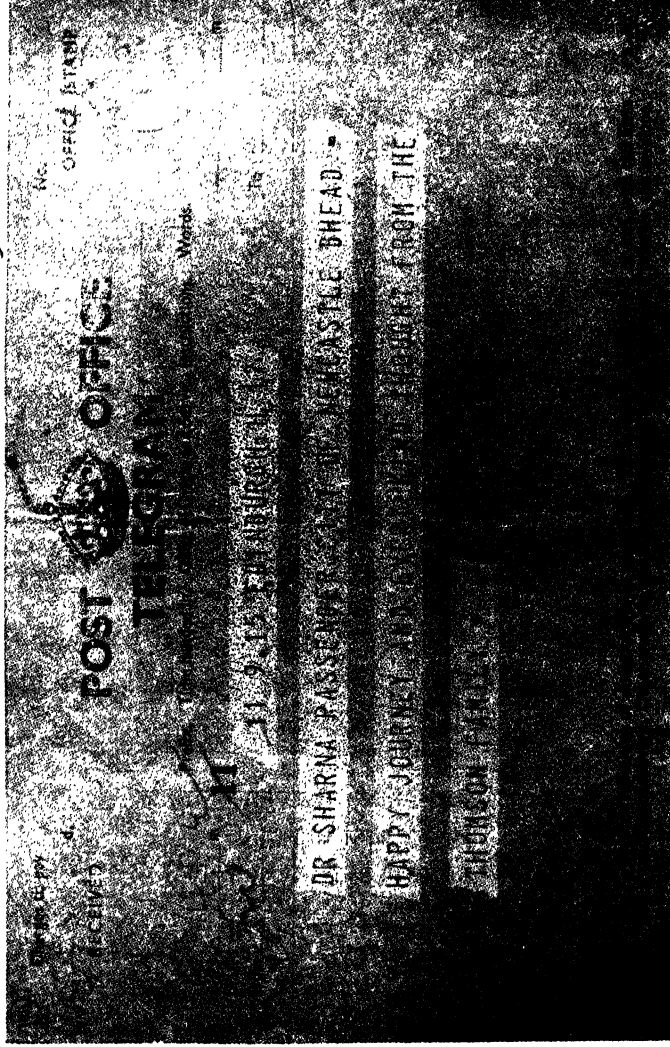
चित्र—२६
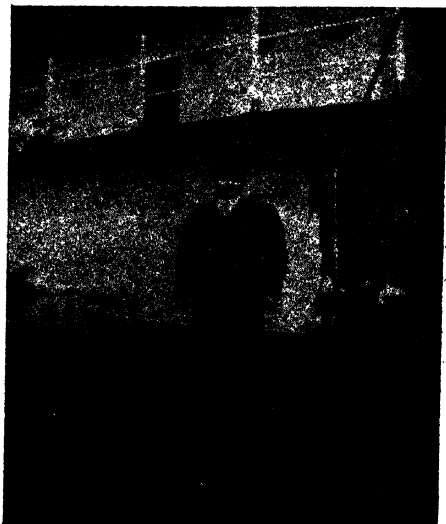
लेखक—'सिटी ऑफ न्यूयार्क' नाम के
कार्गो जहाज़ पर
( देखिये पन्ना—दो सौ पचास )

पत्र—१६५

( देखिये पन्ना—दो सौ इक्यावन )

साहब की मृत्यु के शोक समाचार मिले तथा इसी के समान दूसरा शोक समाचार एक पत्र द्वारा यह मिला कि मेरे बड़े भाई का इकलौता पुत्र भी चल बसा और परिवार के सब व्यक्ति इस जवान मौत के होने से बड़े दुःखी थे। यह दोनों हृदय-बेधक समाचार सुनकर मुझे बड़ा धक्का सा लगा। बापू को मेरे आने की तिथि मालूम थी वह इन दिनों बंगलोर में थे।

उनको मैं अपनी पहुँच का तार बंगलोर भेजकर तुरन्त खुर्जा रवाना हो गया। खुर्जा पहुँचते ही पहिली जून का लिखा हुआ बापू का यह निम्न पत्र मिला :

१६५

चि० शर्मा,

१२ मई का तुमारा खत कल रात को बंगलूर पहुँचने पर मिला। अब तो खुर्जा पहुँचे होगे। प्रकृति अच्छी होगी। मैं वर्धा १५ ता० को अवश्य पहुँचूंगा। तब आ जाना। दरम्यान मुझे Banglore City लिखो।

बापू के
आशीर्वाद

१-६-३६

उपरोक्त पत्र मिलते ही मैंने बापू को खुर्जा के सब हाल लिख भेजे। किन्तु उन्हें मेरा पत्र मिलने भी न पाया था कि उनका दूसरा यह निम्न पत्र बंगलोर से फिर मिला :

—दौ सौ इक्कावन

१६६

चि० शर्मा,

तुमको एक खत भेजा सो मिला होगा। तुमारा तार यहाँ मिला। उस वक्त तुमने वर्धा तो पास ही किया होगा। अम्तुल सलाम दिल्ली में बीमार है। वहाँ जाओ, तुमारे नये ज्ञान का प्रयोग करे और बाद में जब आ सको वर्धा आ जाओ। वर्धा १४ को पहुँचेंगे।

५-६-३६

बापू के
आशीर्वाद

( देखिये पन्ना—दो सौ बावन )

## सातवाँ अध्याय

बापू का आदेश मिलते ही घर के रोगियों को छोड़कर पहिले मैं दिल्ली गया और एक हफ्ते अमतुल सलाम के इलाज की व्यवस्था करके फिर खुरजा आगया। यहाँ घर के रोगियों की व्यवस्था कर ही पाया था कि बापू का यह तीसरा पत्र फिर मिला :

१६७

चि० शर्मा,

तुमारे दो खत आये हैं। घर के हाल सुनकर दुःख होता है। अगर उपचार के बारे में आत्मविश्वास आ गया है तो मरीजों का उपचार करो। अथवा उनको छोड़ दो। मामूली उपचार करते रहेंगे।

तुमारे क्या करना, द्रौपदी को क्या करना यह सब बातें करने के लिये आ जाओ। मैं तो सेगाँव में पड़ा हूं। यह कोई बात नहीं है। मगनवाड़ी से नित्य आ जा सकते हैं। यहाँ हवा बहुत ठंडी है बारिश काफ़ी पड़ा है। अब भी पड़ रहा है। सफ़र में सब मिलाकर कितना खर्च हुआ? जो पाना था सो पाया? वहाँ से सीखने का कुछ बाक़ी रहा? शरीर शास्त्र का ज्ञान पर्याप्त पाया?

बापू के
आशीर्वाद

१७-६-३६

घर के रोगियों को कुछ आराम होने के बाद मैं सेवाग्राम चला गया। उन दिनों बापू एक छोटी सी झौंपड़ी में रहते थे। दूसरी फूस की लम्बी झौंपड़ी में दो तीन कार्यकर्ता रहते थे। महादेव भाई आदि सब मगनवाड़ी में रहते थे और वहाँ से ही प्रतिदिन बापू के पास सेवाग्राम आते जाते थे। मैं सेवाग्राम की दूसरी लम्बी झौंपड़ी में ही बापू के पास रहने लगा। बापू को मैंने अपनी आमदनी तथा ख़र्च का सब हिसाब दे दिया और जो २०० पौंड कलकत्ते में मैंने अपने ख़र्च के लिये सिटी बैंक ऑफ न्यूयोर्क में जमा करवाये थे उनमें से बचे हुए २० पौंड बापू को वापिस कर दिये। ख़र्चे का पर्चा देखकर बापू को तो आश्चर्यजनक प्रसन्नता हुई ही; किन्तु जब ब्रिजमोहन बिरला जी को यह पता चला तो उन्होंने मुझे यह निम्न पत्र हरद्वार से लिखा :

168

Birla House,
Hardwar,
4th. July 1936.

My Dear Dr. Sharma,

Your letter of the 28th. June is to hand. I am glad that after all the letter reached you. I was wondering what happened to it.

I am glad to learn that you had a good trip and also were able to save some money which is most surprising. It seems one could manage quite cheaply in foreign countries if one wished it.

—दो सौ चौवन

पत्र—१६८

Birla House,
Hardwar, 4th July 1936.

My dear Dr. Sharma,

Your letter of the 28th June is to hand. I am glad that after all the letter reached you. I was wondering what happened to it.

I am glad to learn that you had a good trip and also were able to save some money which is most surprising It seems.one could manage quite cheaply in foreign countries if one wished it.

Regarding your chair, I am writing to the Munim to send it to you as soon as possible.

Yours sincerely,

[signature]

( देखिये पन्ना—दो सौ चौवन )

Regarding your chair, I am writing to the Munim to send it to you as soon as possible.

Yours Sincerely,
B. M. Birla.

१६८

बिरला हाउस,
हरद्वार,
४-७-३६

मम प्रिय डा० शर्मा,

आपका २८ जून का पत्र अभी-अभी मिला। प्रसन्नता है कि आखिर मेरा पत्र आपको मिल ही गया। मैं तो सोच रहा था कि उसका हुआ क्या !

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि आपकी यात्रा अच्छी रही। सबसे बड़ा अचम्भा तो यह है कि आप कुछ रुपया भी बचा सके। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि यदि कोई चाहे तो विदेशों में भी कम खर्चे से रह सकता है।

आपकी कुर्सी के बारे में शीघ्रातिशीघ्र आपको भेजने के लिये मुनीम को लिख रहा हूँ।

आपका शुभचिन्तक,
बी० एम० बिरला

—दो सौ पचपन

उपरोक्त पत्र में मेरी एक कुर्सी का ज़िक्र है यह डेकचेयर ( Deck-chair ) अमेरिका जाते समय २ रु० १४ आने की कलकत्ते से ख़रीदी थी। मेरे कुल सफ़र में यह कुर्सी साथ रही और अन्त में हिन्दुस्तान भी मेरे साथ आई। इस कुर्सी से मुझे एक प्रकार का मोह हो गया था अतः मैंने बिरला जी को इस कुर्सी के लिये ख़ास तौर से लिखा था कि वह उसका विशेष ध्यान रक्खें और उसे मेरे पास भिजवा दें। आज भी वह कुर्सी मेरे खेतों की झौंपड़ी के बरामदे में उसी तरह मौजूद है और मेरी विदेश यात्रा की सुस्मृतियां ताज़ा रखने में मदद देती रहती है।

सेवाग्राम में रहते हुये मैं अपने आगे के कार्यक्रम के बारे में बापू से विचार विमर्श करता रहता था। मेरी इच्छा थी कि प्राकृतिक चिकित्सा का देश में कहीं एक प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किया जाय जहाँ इलाज के अतिरिक्त शरीर को स्वस्थ रखने की भी शिक्षा अमली रूप में दी जाय।

बापू के मस्तिष्क में ऐसा चित्र तो खिंचा प्रतीत होता था परन्तु उस समय वह स्वयं उस चित्र को स्पष्ट रूप में नहीं देख पाये थे इसलिये यह योजना उस समय विचाराधीन ही रही।

सेवाग्राम का असल नाम "सेगाँव" था। यह गांव बापू की झौंपड़ी से थोड़ी ही दूर है। इस गांव से लगभग तीन चार फर्लाङ्ग पर "बड़ौदा" नाम का एक दूसरा स्थान था जहां मीरा बहिन रहती थीं। उन दिनों बापू मीरा बहिन को अपने से अलग रहने का अभ्यास करा रहे थे। मीरा बहिन ने उन दिनों एकतार वाला सितार जैसा कुछ बना रक्खा था और उस पर वह भजन गाया करती थीं तथा बापू के नियत किये हुये समय पर थोड़े वक्त के लिये उनसे मिलने आती थीं। 'सेगांव' के बच्चे, बूढ़े, स्त्री, पुरुष सब ही बापू के पास अपने अपने रोग की औषधि पूछने के लिये आते रहते थे। एक दिन धोबी परिवार की एक पचहत्तर वर्ष की बूढ़ी बापू के पास आकर मिट्टी के खिट्टे से अपने बदन को रगड़ने लगी। वह रोती जाती थी और कहती थी कि ख़ारिश उसे खाये जाती है। बापू ने मुझे समीप के खेतों पर से बुलवाया जहां मैं नई आई हुई कुछ गऊओं

( देखिये पन्ना—दो सौ छप्पन ) चित्र—२७

सेवाग्राम में बापू के साथ सुबह का भ्रमण

टक्कर मारने के समान था और फिर मेरे लिये तो यह संभव ही नहीं था कि उनके दिये हुये आदेश के बाद मैं उसके विपरीत कुछ बोलता। लेकिन साथ ही साथ गांव में एक बार बसकर दूसरों की तरह वहाँ से मैं हटना भी नहीं चाहता था इसलिये इसमें इतना सुधार मैंने अवश्य चाहा कि 'कोई भी गांव हो किन्तु वह यू० पी० में हो तो वहाँ मेरे लिये कई तरह की सुविधायें रहेंगी— जैसे भाषा, रहन-सहन, खान-पान, तथा रीति-रिवाज़ इत्यादि इत्यादि।

मेरी प्रार्थना यथार्थ थी अतः बापू को उसे स्वीकार तो करना था ही हॉलाँकि बापू चाहते यही थे कि मैं उधर सी० पी० के ही किसी गाँव में बस जाऊँ। लेकिन इसमें मुझे यह डर था कि 'गाँव में बस जाने वाले' बापू के निर्णय को पूर्णरूप से मैं निभा न सकूँगा। इसलिये मैं तीन महीने सेवाग्राम रहकर अपने पसंद के गाँव की तलाश में खुर्जा आगया तथा गंगा किनारे के किसी छोटे से गांव की खोज करने में लग गया। ऐसे किसी भी स्थान के लिये मैंने शहर की अपनी जायदाद बेच देने का भी निश्चय कर लिया था।

स्विट्ज़रलैन्ड से प्राप्त किया हुआ महात्मा ई० डी० बेबिट का ग्रन्थ बापू स्वयं पढ़ना चाहते थे अतएव पिछले महीने से वह अमूल्य ग्रन्थ बापू के ही पास था इसके अतिरिक्त बापू के रूमालों के लिये मैंने बारीक सूत कात कर उन्हें दिया था और उसी सूत के साथ मेरे कुर्तों के लिये कते हुये सूत का एक बंडल भी था। सेवाग्राम से रवाना होते समय यह तीनों ही चीज़ें वहां नहीं मिली थीं। इसका बापू को बड़ा दुःख था। मेरे खुर्जा आजाने के बाद इसी सम्बन्ध में उनके मुझे यह निम्न पत्र मिले :

१६६

चि० शर्मा,

*बेबिट की खोज हो रही है। अब तक पता नहीं चला, †सूत

*बेबिट का ग्रन्थ।

†मेरे कुरतों के लिये मेरा कता हुआ सूत।
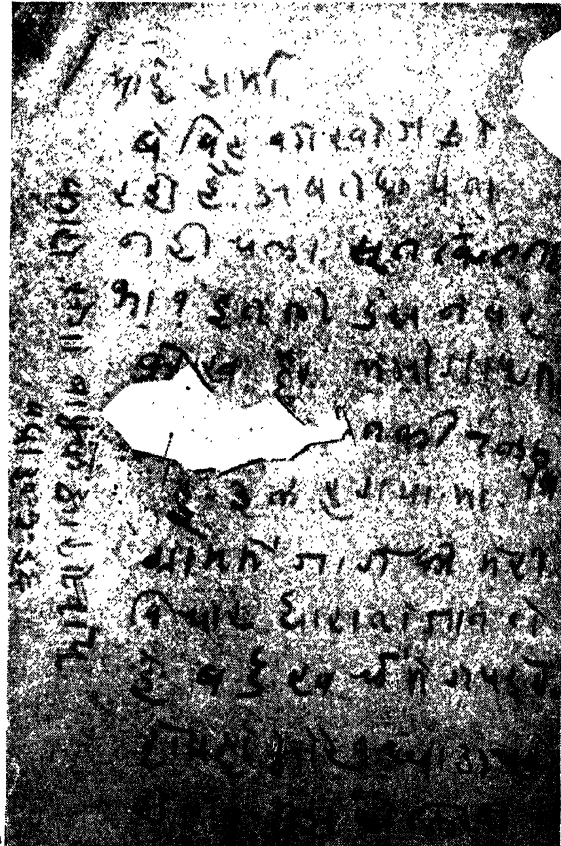
( देखिये पन्ना—दो सौ अट्ठावन )

पत्र—१७०

( देखिये पन्ना—दो सौ उनसठ )

कितना था ? इतनी उस नम्बर की खद्दर भेजी जायगी। बारीक सूत* को तलाश में हूँ भूल ही गया था। ग्राम में जाने की मेरी विचारधारा तो जानते हो। बड़े खर्च में न पड़ो। द्रौपदी और बच्चा अच्छे होंगे। मुझको लिखा करो।

सेगाँव, वर्धा
३०-७-३६

बापू के
आशीर्वाद

१७०

चि० शर्मा,

तुमारा पत्र मिला। मैं लज्जित होता हूँ कि बेबिट अब तक नहीं मिलता। मिल तो जायगा। सूत† दूसरे सूत के साथ मिल गया। तुमारे मेरे पास से खादी‡ का स्वीकार करना चाहिये।

सेगाँव, वर्धा
१०-८-३६

बापू के
आशीर्वाद

बापू के लिये रुमालों वाला बारीक सूत उन्हें मिल जाने की खुशी में मैं बेबिट के ग्रन्थ के गुम हो जाने का दुःख भूल गया था तथा बापू को भी ऐसा ही लिखकर उनसे बेबिट के ग्रन्थ का विषय भूल जाने की मैंने प्रार्थना की थी। तब उन्होंने इस विषय पर यह निम्न पत्र लिखा :

---

*बापू के रुमालों के लिये मेरा कता हुआ बारीक सूत।

†बारीक सूत रुमालों के लिये जो बापू को मैंने दिया था वह उन्हें मिल गया था।

‡मेरे कुरतों का सूत नहीं मिला था इसलिये बापू ने अपने कते हुये सूत की खद्दर भेज दी थी।

१७१

चि० शर्मा,

......बेबिट के पुस्तक का पूरा नाम दो। तुमको इसके गुमने का दुःख भले न हो वह पुस्तक न मिले तब तक मैं अवश्य बेचैन रहूँगा। ऐसे पुस्तक क्यों गुम हो सकता है ? इसी तरह खादी का। लेकिन हां उसके गुम होने का दुःख इतना नहीं जितना बेबिट जाने का। मैं तो अभी भी आशा रखता हूं कि पुस्तक हाथ में आयेगा।

सेगाँव, वर्धा<br>२१-८-३६

बापू के<br>आशीर्वाद

आश्रम के रोगियों के विषय में कभी कोई विशेष बात मालूम करनी होती तो बापू मुझसे उनके विषय में लिखकर दरियाफ्त करते रहते थे और आवश्यकता पड़ने पर मैं स्वयँ भी सेवाग्राम हो आता था। नीचे का पत्र इसी सम्बन्ध में उन्होंने किसी रोगी के विषय में लिखा है :

१७२

चि० शर्मा,

दो दर्दी तो मेरे पास ही हैं। दोनों को बुखार। एक को आठ दिन से है ६६ से नीचे गया ही नहीं। दूसरा है शिमला में। ऐसों का क्या करोगे ? दूसरे दर्दी भी यों तो काफ़ी हैं। घर के सब अच्छे होंगे।

सेगाँव, वर्धा<br>६-१०-३६

बापू के<br>आशीर्वाद

## पत्र—१७२

चि. शर्मा,

सेगांव

बापूके आशीर्वाद

( देखिये पन्ना—दो सौ इकसठ )

इधर एक बड़े जमींदार ने मुझे अनूपशहर के इलाक़े में गंगा किनारे २० एकड़ ज़मीन इस शर्त पर देने का वचन देदिया था कि मैं उस ज़मीन को अपने ख़र्च से ठीक करालूँ और कुछ अर्सा वहाँ रहकर देखलूँ। यदि वह स्थान मेरे अनुकूल प्रतीत होगा तो वह उस ज़मीन को मुझे मोल दे देगा। मैंने सीधी तरह उसकी यह बात मान ली। उस समय उस ज़मीन को ठीक कराने में मेरा लगभग ५०० रु० लगा और मैं वहीं अनूपशहर के समीप अपने बच्चों सहित जाकर रहने लगा। उस स्थान का जलवायु अच्छा साबित हुआ इसलिये मैंने भविष्य में वहीं बस जाने का सोच लिया था।

पश्चिमी देशों में मैंने अपनी तीन डायरियाँ बना रक्खी थीं :

(१) मेरा रोज़नामचा (२) प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी मेरे वहाँ के अनुभवों का संग्रह; तथा (३) समाज कल्याण के सम्बन्ध में मेरे समाजवादी विचारों का संग्रह। मेरी इस तीसरी डायरी का नाम था "Loose Leaves from a Socialist Diary" (एक समाजवादी की डायरी के खुले पन्ने) इस तीसरी डायरी को सही तौर पर टाइप करके उसकी पाण्डुलिपि मैंने बापू के पास देखने के लिये भेजना चाहा था इसके उत्तर में बापू ने लिखा :

१७३

सेगाँव
११-७-३७

चि० शर्मा,

तुमारा खत मिला। तुमारी पुस्तक अवश्य भेजो पढ़ने की कोशिश करूँगा। तुमारा काम चलता होगा। मेरा कुछ ऐसा ख़्याल है कि तुमारे अगले खत में कुछ उत्तर देने की बात नहीं थी। अम्तुल सलाम यहाँ है।

बापू के
आशीर्वाद

—दो सौ एकसठ

श्री रामदास को दक्षिण अफ्रीका भेज देने का मेरा दो वर्ष पहिले का सुझाव बापू के पुराने मित्र मि० केलनवैक को भी अच्छा लगा था। अतः जब वह बापू से मिलने भारत आये तब अफ्रीका लौटती बार श्री रामदास को भी अपने साथ ले गये थे। मेरे अनूपशहर में रहते हुये ही श्री रामदास का मोमबासा से मुझे यह पत्र मिला :

174

Mombasa.
11th. Augt. 1937.

My dear Bhai Sahib,

Being on my way to S. Africa naturally my thoughts go to you. I cannot forget the services both you and Draupadi Behn have rendered to me. I feel thankful and indebted to you. But I must say that you took me only half way. I am sure had you not given me up I should not have had to take the course to S. Africa. Well I suppose you could not help doing otherwise. Do let me know what you are doing and how do you feel. As for myself I am far away from my ambition and goal. I am not sure of making anything of myself this life. It is hoped that something should turn out of this trip. Will you find time and write to me.

With Namaskars to Draupadi Behn and love to your children.

पत्र—१७४

Mombasa, 11th August
1937.

My Dear Bhaisaheb,

Being on my way to
S. Africa naturally my thoughts go to you.
I cannot forget the services both you
& Draupadi behn have rendered to me. I
feel thankful & indebted to you. But
I must say that you took me only
half way. I am sure had you not
given me up I should not have
had to take the course to S. Africa.
Well I suppose you could not help
doing otherwise. Do let me know
what you are doing & how do you
feel. As for myself I am far away
from my ambition & goal. I am
not sure of making anything of
myself this life. It is hoped that
something should turn out of this life.
Will you find time and write

to me.

With Namaskars to Droopadi Behn & love to your children

Sending it to be easy writing in English I have written to you in a foreign language.

I hope you are well,

Yours Sincerely
Ramdas

My Add:-
C/o M. M. Gandhi
C/o "Indian Opinion"
Phoenix
Via Durban
S. Africa

( देखिये पन्ना—दो सौ बासठ )

Finding it to be easy writing in English I have written to you in a foreign language.

I hope you are well.

My address—
c/o M. M. Gandhi,
c/o "Indian Opinion"
Phoenix—Via Durban.
S. Africa.

Yours Sincerely,
Ramdass.

१७४

मोमबासा,
११-८-३७

मेरे प्रिय भाई साहब,

मेरे दक्षिण अफ्रीका जाते हुए यह स्वाभाविक ही है कि मेरे विचार आपकी ओर जायँ। जो सेवायें आपने और द्रौपदी बहन ने मेरे प्रति की हैं मैं उनको कभी नहीं भूल सकता। मैं अपने को आपके प्रति ऋणी और कृतज्ञ महसूस करता हूँ। किन्तु मुझे कहना पड़ता है कि आपने मुझे केवल अधबिच ही छोड़ा। मुझे विश्वास है कि यदि आपने मुझे न छोड़ा होता तो मुझे दक्षिण अफ्रीका काहे को जाना पड़ता। लेकिन मैं समझता हूँ कि आप इसके अतिरिक्त करही क्या सकते थे। कृपया लिखिये तो कि आप क्या कर रहे हैं और आपका स्वास्थ कैसा है? मेरे बारे में मैं तो अपनी आकांक्षा और आदर्श से बहुत दूर जा पड़ा हूँ। आशा नहीं कि इस जीवन में अपना कुछ बना

सकूँगा। आशा करता हूँ कि इस यात्रा से कुछ न कुछ फल निकल ही आयेगा। क्या मुझे पत्र लिखने का समय निकाल सकोगे?

द्रौपदी बहन को नमस्कार और बच्चों को प्यार। अंग्रेजी में लिखना सुगम प्रतीत हुआ इसलिये विदेशी भाषा में आपको पत्र लिखा है।

आशा है आप अच्छी तरह होंगे।

मेरा पता : आपका शुभचिन्तक,
द्वारा, एम० एम० गाँधी, रामदास
मार्फ़त "इंडियन ओपीनियन"
फिनिक्स (दरबान)
दक्षिण अफ्रीका।

श्री रामदास के अफ्रीका जाने के शुभ समाचार पढ़कर मुझे खुशी तो हुई किन्तु मैं उनके साथ नहीं गया इसका मुझे अफ़सोस रहा। इसी विषय का एक ख़त मैंने बापू को लिखा उसके उत्तर में उन्होंने यह ख़त भेजा :

१७५

चि० शर्मा,

तुमारा ख़त मिला। अम्तुल सलाम यहाँ पहुँच गई है। रामदास के साथ तुमारा जाना असम्भवित सा था क्योंकि रामदास ही मि० केलनबैक के साथ गया। देखें अभी क्या होता है?.........मुझे बताओ कि किस तरह के दर्दी रखते हो? वहाँ फल मिलते हैं? सब्जी मिलती है? गाय का दूध मिलता है?

सेगाँव, वर्धा बापू के
४-९-३७ आशीर्वाद

—दो सौ चौंसठ

अनूपशहर में गंगा के किनारे उपरोक्त सब कुछ खाद्य वस्तुयें तो मैंने स्वयं अपने यहाँ पैदा करलीं थीं और बाक़ी के लिये प्रयत्न कर रहा था। किन्तु मैं वहाँ अधिक दिन रह न पाया। उस ज़मीन में काफ़ी सुधार हुआ देख ज़मीदार अपने दिये हुये वचन से हट गया और वहाँ उसने साधु-आश्रम तथा विधवा-आश्रम खोलने की अपनी इच्छा ज़ाहिर करके मुझे वह ज़मीन मोल नहीं दी यद्यपि ऐसा कोई भी आश्रम वहाँ आज तक न खुल पाया। हताश होकर मैंने खुर्जा तहसील में अछूत कहलाने वाली जाति के एक छोटे से गाँव के समीप अपना डेरा जमा दिया और आज बीस वर्ष बाद भी वहीं से मानो बापू की छाया में बैठा हुआ यह संस्मरण लिख रहा हूं।

अँधेरी के बाद जैसे उजाली की आशा रहती है उसी तरह आने वाले उज्ज्वल भविष्य की आशा में मैं आज भी वह स्वप्न देख रहा हूँ कि जब कम से कम हमारा समाज कल्याण कहलाने वाला विभाग तो सूझ-बूझ से काम लेकर तथा प्राकृतिक चिकित्सा को अपना ही एक आवश्यक अंग जानकर ग्रामीण जनता की इसके द्वारा सच्ची सेवा करेगा और बापू की अन्तिम आशाओं को सफल बनाने में सहायक बनेगा। अतः मेरे यहां बसने से पूर्व इस स्थान के तथा यहां के रहने वालों के विषय में पाठकों को थोड़ी जानकारी करा देना अयुक्त प्रतीत नहीं होगा :

इधर छोटे से गांव को 'नगला' कहते हैं। यह नगला जी० टी० रोड पर जाटवों की बस्ती है। मेरे यहां आने से पहिले इस नगला का नाम "नगला हत्यापुर" था। और यथा नाम तथा गुणः वाली कहावत यहाँ पर पूर्णरुपेण चरितार्थ होती थी। दिन छिपे बाद तो इधर से निकलना ख़तरे से ख़ाली था ही नहीं बल्कि दोपहर को भी इधर राहगीर का लुटजाना एक साधारण सी बात रहती थी। इसी 'नगला हत्यापुर' की बगल में एक गांव 'हज़रतपुर' नाम का है जहां ठाकुरों की आबादी है। 'हज़रतपुर' की कहानियाँ वहां के बड़े-बूढ़े आज भी बच्चों को सुनाया करते हैं कि "यहां के लोग दिल्ली के आस पास तक से लूटमार करके रातों रात घोड़ों पर लौट आते थे" आज वह बातें तो

बहुत दूर गईं किन्तु यहां की पुलिस के लिए यह गांव अब भी एक सरदर्द बना रहता है।

इस गाँव में आते ही सबसे प्रथम तो हमने इसका नाम "नगला नवाबाद" रक्खा। प्रारम्भ के कुछ महीने तो यहाँ के निवासी हमको सन्देह तथा भय की दृष्टि से देखते रहे किन्तु धीरे-धीरे वह हमसे मिलने जुलने लगे। मेरी स्त्री यहाँ के मैले कुचैले बच्चों को बुला लेती थीं, उनके बढ़े हुये नाख़ून काटकर उन्हें स्नान करातीं तथा आँखों में काजल डालतीं, साबुन देकर उनके कपड़ों को उनसे धुलवातीं और फटे कपड़ों की स्वयं मरम्मत करती थीं। दिन छिपे उनकी माताओं को भी एकत्रित करके उन बच्चों के प्रति ऐसा ही करने का उपदेश देती रहती थीं। उधर मैंने अपनी ज़मीन को साफ-सुथरी करके उसमें साग-भाजी बो दी थी और दो गऊ रख ली थी जिसकी छाछ लेने के लिये सुबह से ही गाँव की औरतें आजाती थीं और उस वक्त हमको उनसे खाने-पीने सम्बन्धी बातों पर कुछ चर्चा करने का अवसर मिल जाता था। दूध इस गाँव में 'नहीं' के बराबर था। रोगियों को हरी भाजी भी हमारे यहाँ से मिलती थी। कुछ दिन बाद गाँव की औरतों ने अपने नये पुराने कपड़ों को भी सिलवाना शुरू कर दिया। यह सब कुछ करते हुये हमने अपना मुख्य कार्य—ग्राम-सुधार का करना प्रारम्भ किया। धीरे-धीरे गाँव में अखाड़े बने, एक पाठ-शाला खोली गई, खेतों पर कुओं के सहारे थोड़ी थोड़ी हरी भाजियां उगाने का भी शौक हुआ तथा दूध के जानवरों का भी धीरे-धीरे चाव बढ़ा और फिर गांव की सफाई की ओर भी सबका ध्यान आकर्षित कराया गया। समय के परिवर्तन के साथ पद-प्रतिष्ठा की इच्छा भी यहाँ जाग्रत हुई तो यहां के ही एक नवयुवक को प्रधान भी बनाया गया। मुझे यह लिखते हुये हर्ष होता है कि आज इस गांव की सब्ज़ियां शहर में बिकने के लिये जाती हैं और शहर के लोग सुबह शाम यहाँ का दूध लेने स्वयं आते हैं। यद्यपि चोरी, लूटमार, नशा-बाज़ी तथा जूआ इत्यादि यहां सब समाप्त से ही हो चुके हैं फिर भी आस-पास के खेतों का अब भी यहां के स्त्री पुरुष कभी-कभी नुकसान कर बैठते हैं और अपने इस कार्य से मुझे भी नहीं बख्शाते। इस पिछड़े हुए गांव की सुधरती

चित्र—२८

( देखिये पन्ना—दो सौ पैंसठ )

चित्र—२६
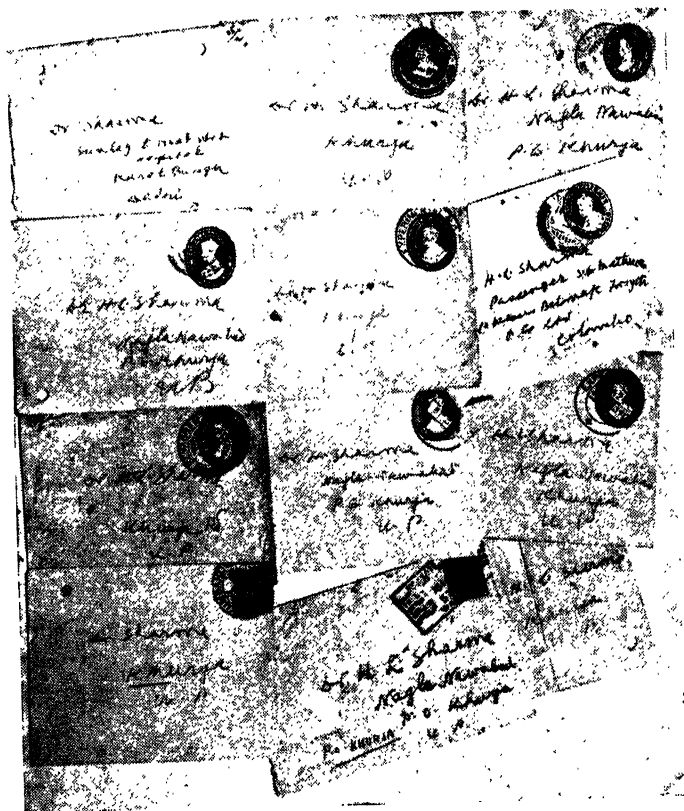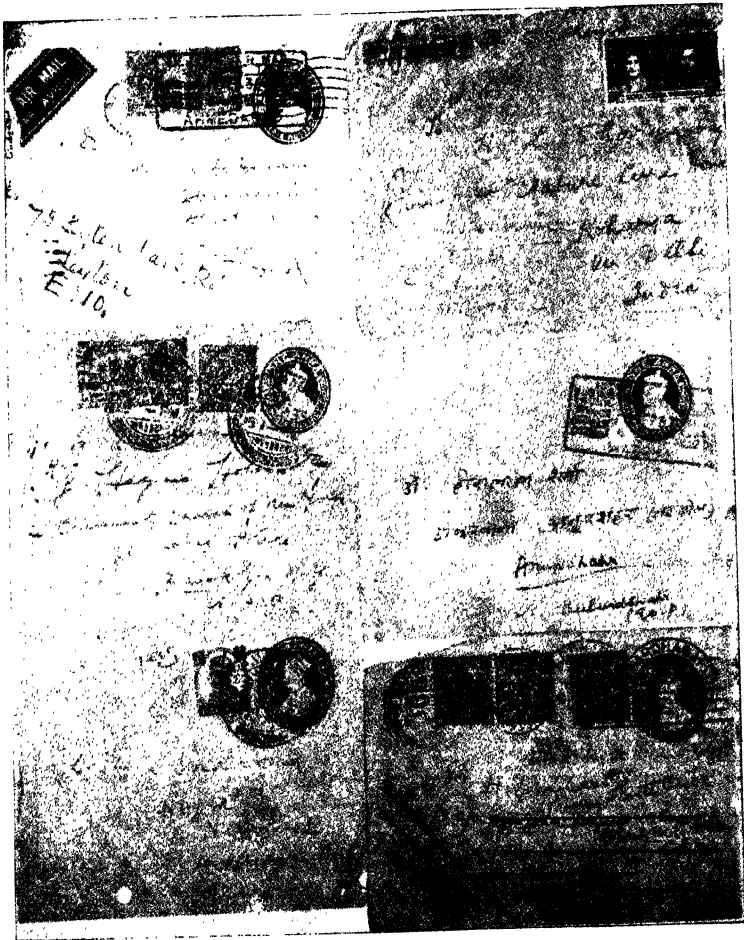
( देखिये पन्ना—दो सौ छासठ )

हुई हालत देखकर शहर के कुछ कांग्रेसी नेता श्री नेहरूजी को भी यहां एक नाला खोदने की रस्म अदा कराने के लिये ले आये थे और यह खुशी की बात है कि तभी से यहाँ के निवासी अपने को नेहरूपुर के निवासी कहने लगे हैं। इस प्रकार आज यहां के बाशिन्दों को अपने से कहीं आगे बढ़ता देखकर मुझे आश्चर्यजनक हर्ष होता है। दुःख केवल यही है कि अब धीरे-धीरे यहाँ के नवयुवकों का ध्यान शहर की बनावटी बातों की ओर बढ़ने लगा है और वह अपने गाँव के प्रति कम रुचि रखने लगे हैं तथा शहर के नवीन राजनीतिज्ञों के साथ ही अपना अधिक समय नेतागिरी में गँवाने लगे हैं। इस ओर यदि तुरन्त ध्यान न दिया गया तो शहर की बुरी और आडम्बरी बातों का प्रभाव गांवों में भी फैल जाने का डर है जिससे गांवों का अस्तित्व ही नष्ट हो सकता है। इसीलिये मेरा बराबर यह कहना रहा है कि 'राजनीति' से अलग रहकर यदि देश के प्रत्येक गांव में नवयुवक कार्यकर्ता कुटुम्ब सहित रहने लगें और निर्माण कार्य में लग जायं तो ग्रामीणों की मानसिक तथा शारीरिक अनेक व्याधियां थोड़े ही अर्से में आसानी से दूर हो सकती हैं। मुझे विश्वास है कि हमारी सरकार कम से कम अपने समाज-कल्याण विभाग द्वारा अपने प्रशिक्षण केन्द्र खोलकर ऐसे नवयुवक तैयार करेगी जो जीवनपर्यन्त राजनीति से अलग रहकर गांव में ही रहने की प्रतिज्ञा लेकर वहां सुधार का काम करेंगे और इतना ही नहीं बल्कि मैं तो सरकार से भी यह अनुरोध करूँगा कि वह अपने रचनात्मक कार्यकर्ताओं का उसी तरह मान करे जैसा कि एक मिशनरी का किया जाता है क्योंकि मेरी दृष्टि में बिना रचनात्मक कार्य के उनकी राजनीति एक पहिये की गाड़ी के समान है।

हाँ तो उपरोक्त 'नवाबाद' में अपना कार्य करने के लिये मुझे पहले पैसे की आवश्यकता हुई। बापू के आग्रह करने पर भी मैंने उनसे या किसी संस्था से पैसा लेना उचित नहीं समझा। अतः स्वयं ही अपनी पैतृक जायदाद पर कुछ पैसा कर्ज़ लेकर अपने गांव के कार्य में लगा दिया था और वहां एक कुआँ तथा फूस की कुछ झोंपड़ियां बनवा लीं थीं और बग़ीचे के लिये एक जोड़ी बैल भी ले लिये थे। बापू के आदेशानुसार मैं साप्ताहिक रिपोर्ट उन्हें भेजता ही रहता था।

—दो सौ पचपन

इसी रिपोर्ट के साथ मैंने शहर के कुछ उद्दंड व्यक्तियों की आलोचना की थी जो चार आने चंदा मात्र देकर ही कांग्रेसी नेता बन बैठे थे। उसके उत्तर में बापू ने यह निम्न पत्र लिखा :

१७६

चि० शर्मा,

तुमारे प्रयोग मैं ध्यान से देख रहा हूँ चाहता हूँ कि तुमको सफलता मिले। आँखों से देखना तो असम्भव सा लगता है लेकिन ईश्वर असम्भव से भी सम्भव पैदा कर सकता है।

खुर्जे के कांग्रेस के बारे में तुमने मुझको हकीकत तो कुछ भी नहीं दी इस हालत में मैं क्या कर सकता हूँ ? नाम और निशान के साथ कुछ हकीकत भेज दोगे तो मैं वह खत अवश्य जहाँ जाना चाहिये वहाँ भेज दूंगा।

सेगाँव, वर्धा बापू के

८-१०-३७ आशीर्वाद

इसके बाद बापू स्वास्थ्य के कारण तीथिल चले गये थे। अतः मैंने कुछ अर्से तक ईरादतन उन्हें पत्र लिखने बन्द कर दिये। किन्तु जब मेरा दिल गाँव के जीवन से ऊब जाता था या वहां की कोई नवीन समस्या हल करने की उलझन मेरे सामने आ जातीं थी तो मैं तुरन्त सेवाग्राम बापू के पास भाग जाता था।

एक बार महादेव भाई के एक पत्र से मुझे मालूम हुआ कि ब्लड प्रेसर के लिये बापू सर्पगँधा नाम की जड़ी का अपने ऊपर प्रयोग कर रहे थे। सर्पगँधा का मुझे भी कुछ अनुभव था। उधर मेरे गांव की भी कुछ ऐसी जटिल समस्यायें मेरे सामने आ गईं थीं कि उनको भी हल करने का मार्ग ढूँढ़ने के लिये जनवरी

( देखिये पन्ना—दो सौ छाछठ ) चित्र—३०
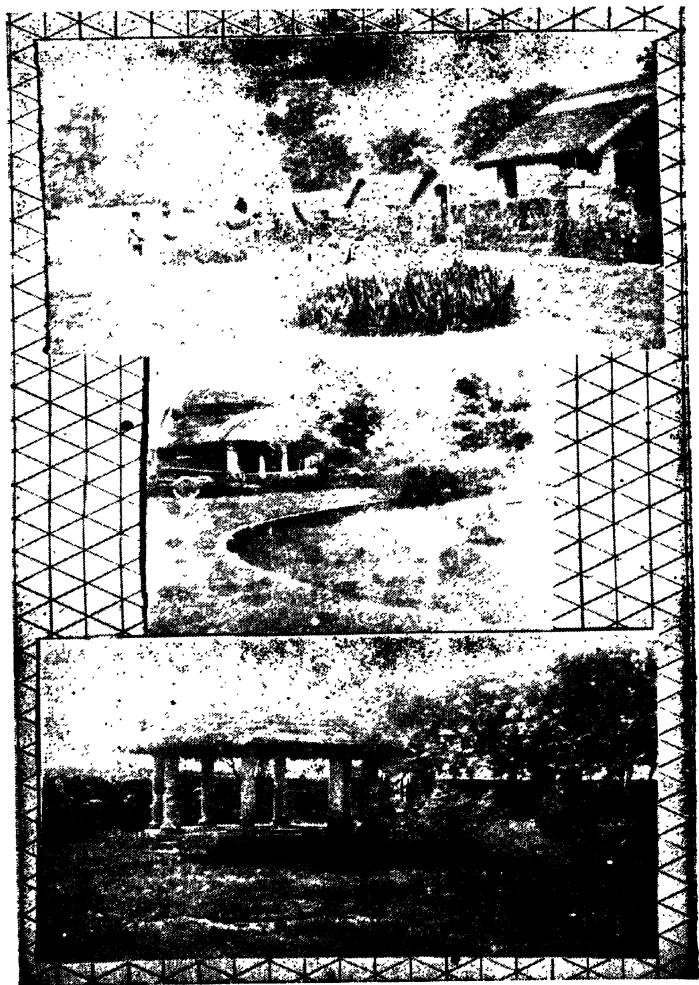
ग्राम-नगला नवाबाद ( यू० पी० में जी० टी० रोड पर लेखक का स्थायी कैम्प

चित्र—३१

लेखक—सेवाग्राम में बापू ( × ) के समक्ष कुष्ठ रोगी—श्रीपरचुरे शास्त्री का आयरिस-माइक्रसकोप द्वारा स्वास्थ्य परीक्षण करते हुए

( देखिये पन्ना—दो सौ उनहत्तर )

चित्र—३२

लेखक—परचुरे शास्त्री की नेत्रों द्वारा स्वास्थ्य परीक्षा करते हुए बापू (×) के साथ

(देखिये पन्ना—दो सौ उनहत्तर)

मास में मैं बापू के पास चला गया। उन दिनों बापू के पास सेवाग्राम में एक परचुरे शास्त्री नाम के उनके पुराने जेल के परिचित व्यक्ति आगये थे। परचुरे शास्त्री कुष्ट रोग से पीड़ित थे। और बापू सुबह के भ्रमण के बाद प्रतिदिन परचुरे शास्त्री की कुटिया पर जाकर स्वयं उनके इलाज की देख रेख किया करते थे। अब की बार सेवाग्राम जाते वक्त मैं जरमनी से प्राप्त किया हुआ नेत्रों द्वारा रोग निदान करने का यंत्र (Iris-Microscope) भी ले गया था।

मैं अपने चालीस वर्ष के निजी अनुभव के आधार पर यह लिखता हूं कि कुष्ट रोग के लिये सूर्य चिकित्सा लाभदायक साबित हुई है वशर्ते कि शरीर की कुछ आवश्यक ग्रन्थियां (Glands) नष्ट न हो गई हों। इस विषय पर यहां अधिक लिखना तो इस पुस्तक का उद्देश्य नहीं है। यहां तो परचुरे शास्त्री के प्रसंगवश इतना ही लिखा जा सकता है कि इस कुष्ट रोगी के प्रति बापू को इतना स्नेह था कि उन्होंने स्वयं पास बैठकर इस यंत्र द्वारा परचुरे शास्त्री की मुझसे परीक्षा कराई तथा बड़े ध्यान से उनकी आवश्यक ग्रन्थियों (Glands) की बिगड़ी हुई दशा को सुना जो उस समय उस यंत्र द्वारा मुझे नष्ट हुई प्रतीत हुई थीं।

इसी प्रंसग में यहां एक और बात लिखनी आवश्यक है जो कुष्ट रोगियों की सेवा में लगे हुये अथवा उनकी सेवा करने या कराने का विचार रखने वाले उत्साही कार्यकर्ताओं के लिये उपयोगी साबित हो सकती है।

एक दिन परचुरे शास्त्री की मानसिक दशा बहुत ख़राब थी। वह बहुत सुस्त और बेचैन थे। बापू को उसका दुःख था। उस दिन शाम तक कई बार बापू ने उनकी बाबत दरियाफ्त भी किया था और शाम को भी टहलने के वक्त उन्हीं की कुटिया की ओर से होकर गये थे। मैं वर्धा हस्पताल में एक दूसरे रोगी को देखने शहर गया था। सायँकाल को लौटने पर बापू ने परचुरे शास्त्री का यह सब हाल सुनाया। दूसरे दिन मैंने उनके बदन का सब कपड़ा हटा कर उन्हें धूप में लिटा दिया तो मक्खियां एकदम उनके शिश्न के मुँह पर बैठने लगीं। उस स्थान को ग़ौर से देखने पर मालूम हुआ कि शिश्न के घूँघट

की खाल बिलकुल चिपकी हुई थी। और ऊपर को चढ़ाने से चढ़ती ही नहीं थी। चिकनाई लगा २ कर क़रीब बीस मिनिट में खाल ऊपर चढ़ पाई और एक सफ़ेद बदबूदार मोटी तह मैल की उतारी गई जो तोलने में चार आने भर वज़न से कुछ ही कम थी। उस तमाम भाग को पुटास परमेंगनेट से धोकर उसे आधा घंटा धूप दी। यह सब करने के थोड़ी देर बाद से ही शास्त्री जी सदा की तरह खुश मिजाज़ दीखने लगे। कुष्ट रोगी का यह भाग सदैव साफ रखना अति आवश्यक है क्योंकि कुल शरीर की नसों (Nerves) का यह केन्द्र है।

यह सब हाल जब बापू ने देखा तो उन्हें तुरन्त अफ्रीका के क़ैदियों का ख्याल आगया और कहने लगे कि "अफ्रीका की जेलों में जेल का डाक्टर क़ैदियों को एक लाइन में खड़ा करके उनके शरीर के इस भाग की खाल को प्रत्येक क़ैदी से ऊपर चढ़वा कर देखता था"। बापू ने कहा कि ऐसा उन्होंने वहां स्वयं देखा था।

उन दिनों होने वाली हरीपुराकांग्रेस के लिये बापू के पास कांग्रेस के नेताओं के आने जाने का ताँता लगा हुआ था। श्री सुभाषचन्द्र बोस से मुझे बड़ा स्नेह था तथा उनका मैं बड़ा आदर करता था। उनके आने का समाचार सुनकर मैं उन्हें वर्धा स्टेशन पर लेने गया था। दो फरवरी को सुभाष बाबू सेवाग्राम में ही बापू के पास रहे और दूसरे दिन उनके साथ काफ़ी देर तक हमारा सत्संग रहा।

आठ फरवरी को बापू ने मुझे सुबह नाश्ते के वक्त बुलाया और हरीपुरा-कांग्रेस में उनके साथ चलने के लिये दरियाफ्त किया। किन्तु मुझे सेवाग्राम में बापू के कुछ नये प्रयोगों का अध्ययन करना था अतः मैं वहां ही डेढ़ महीने रहकर अपने गांव वापिस आ गया। इसके बाद बापू ने अनियिमत काल के लिये मौन ले लिया था। इसलिये महादेव भाई द्वारा ही उनको मेरे गाँव के हालात मालूम होते रहते थे।

इधर हमारे यहां इर्द-गिर्द के दूसरे गाँवों के लोग भी अपने रोगों के लिये

चित्र—३३

लेखक—परचुरे शास्त्री की स्वास्थ्य परीक्षा करते हुए
( देखिये पन्ना—दो सौ उनहत्तर )

( देखिये-पन्ना—दो सौ सत्तर ) चित्र—३४

सेवाग्राम में लेखक—सुभाषचन्द्र बोस के साथ

( 'बाम्बे क्रानिकल' से )

औषधियाँ लेने के विचार से आने लगे थे लेकिन उन दिनों हमारे यहां औषधियाँ तो थी ही नहीं। हम तो पानी मिट्टी आदि का ही उपयोग कराते थे। उन लोगों के भी अधिक सम्पर्क में आने के विचार से मैंने कलकत्ते के श्री सतीश-चन्द्रदास गुप्ता द्वारा बनाई गई ग्रामवासियों के लिये चीप रिमेडीज़ का अध्ययन करलेना तथा उनके बनाने की विधि सीख लेना आवश्यक समझा। बापू ने इसका अनुमोदन किया तथा श्री सतीश बाबू को उन्होंने इस विषय का एक पत्र भी लिख दिया। कुछ दिन बाद बापू का इसी सम्बन्ध में यह पत्र मिला :

१७७

चि० शर्मा,

तुमको महादेव तो लिखते ही हैं। मैं आजकल बहुत कम लिख सकता हूँ। शरीर की रक्षा आवश्यक है। थोड़े समय में ज्यादा काम करने में बहुत ध्यान छोड़ना पड़ता है। कोई खास कारण मेरे लिखने का था नहीं। सतीश बाबू के पास जाने की सम्मति मिल गई है। अच्छा चलता होगा।

सेगाँव
२४-७-३८

बापू के
आशीर्वाद

मैं श्री सतीश बाबू के साथ कलकत्ता लगभग तीन महीना रहा। सतीश बाबू ने बापू की इच्छानुसार 'गांव का डाक्टर' (Village Doctor) नाम की एक पुस्तक अंग्रेजी में लिखी थी। उस पुस्तक में दी हुई तमाम औषधियों के बनाने की विधि सतीश बाबू ने बड़े प्रेम से मुझे सिखा दी थीं। मेरे कलकत्ता के अध्ययन काल में बापू का यह पत्र मुझे पेशावर से मिला :

चि० शर्मा,

तुमारा खत मिला। कलकत्ता के अनुभव लिखो। सतीश बाबू दुर्बल हो गये हैं। उनका कुछ हो सके तो करो। कि नैसर्गिक बात सब खो बैठे? यह मज़ाक* है। मेरा यहाँ रहना ६ नवम्बर तक होगा। बाद सेगाँव।

पेशावर
२०-१०-३८

बापू के
आशीर्वाद

श्री सतीश बाबू की चीप रिमेडीज़ बनाने का कुल सामान मैंने ८५० रु० में ख़रीद लिया था। इसमें ३०० रु० की गोलियाँ बनाने की मशीन भी थी। यह ८५० रु० की रक़म भी मैंने अपनी शहर की जायदाद पर ही लेकर ख़र्च कर दी थी क्योंकि इस अपनी जायदाद को मैंने अपने गांव के कार्य में ही लगा देने का निश्चय कर रक्खा था। बापू को अभी तक मैंने यह सब ज़ाहिर नहीं होने दिया था लेकिन मासिक खर्च का हिसाब उन्हें भेजते वक्त ८५० रु० की रक़म दिखानी पड़ी थी। क़र्जा का नाम तो बापू को पसंद था ही नहीं। दूसरी बात मेरे लिये आजीविका की थी। इस बारे में मेरे दो बिचार थे। वह यह कि या तो शहर में अपनी दो घंटे की प्रेक्टिस से आजीविका कमाई जाय और या शहर में शुद्ध तथा स्वास्थय-प्रद खाद्य पदार्थों का एक स्टोर खोल दिया जाय जहां गांव का शुद्ध घी, हाथ चक्की का आटा, घानी का तेल तथा शहद इत्यादि खाद्य वस्तुयें भेज दी जाया करें जिससे आजीविका के लायक़ पैसा निकल सकता

---

*बापू का मज़ाक भी अर्थ से ख़ाली नहीं होता था। चीप रिमेडीज़ के अध्ययन के लिये मुझे कलकत्ते में काफ़ी वक्त लगाते देख बापू ने इस मज़ाक द्वारा ही मुझे अपने असल कार्य की याद दिलाई। ऐसा मैंने समझ लिया।

पत्र—१७८

( देखिये पन्ना—दो सौ बहत्तर )
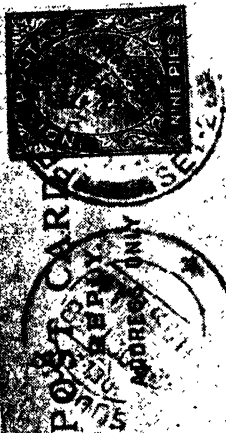
POST CARD
REPLY
ADDRESS ONLY
INDIA POSTAGE
NINE PIES
Shri H. Sharma
Khadi Pratisthan
Sodepur
via Calcutta

था। लेकिन बापू चाहते थे कि मेरा निजी मासिक खर्चा वह किसी संस्था से दिलावें। इसी सम्बन्ध में बापू से लिखा पढ़ी चल रही थी तो इस सिलसिले में उन्होंने यह नीति पूर्ण पत्र लिखा :

१७६

चि० शर्मा,

तुमारा स्पष्ट ख़त मिला। ३० रु०* का टेबलोइड मशीन लिया जाय। पैसे मैं दूंगा।

आजीविका के बारे में मुझे विश्वास नहीं है कि इस काम को अंजाम पहुँचा सकोगे। इसमें मेरा भय यह है कि किसी न किसी तरह तुमारा ख़र्च बढ़ जायगा। असली मुराद थी कि अत्यंत सादगी से रहोगे वह छूट जाती है। व्यापार और परोपकार साथ-साथ नहीं चल सकते हैं। द्रौपदी के साथ बैठकर तुमारे अपने ख़र्च की मर्यादा बना लेनी चाहिये और उससे आगे बढ़ना ही नहीं ऐसा निश्चय कर लेना चाहिये। ऐसा किया जाय तो तुमारा मासिक ख़र्च किसी संस्था में से निकाला जाय।

८५० रु० के कर्ज़ा के बारे में मैं क्या कहूँ। यह कर्ज़ा करने में ही प्रारम्भिक भूल हुई है मैं तो इतना ही कह सकता हूँ कि कर्ज़ा अदा होने ( तक ) सब परमारथ को भूल जाना और किसी जगह ऐसी नौकरी लेना जिससे ख़र्च निकले और कर्ज़ा अदा हो सके। अगर घर में कुछ ज़ेवर या दूसरी मिल्कियत है तो उसे बेचकर कर्ज़ा अदा किया जाय। यह सख़्त इलाज है लेकिन मेरा विश्वास है कि सच्चा इलाज भी यही है। दुबारा कभी कर्ज़ा नहीं करना है यह भी तय किया जाय। तब प्रश्न हो जायगा जो काम

* यहाँ ३०० रु० के बजाय बापू ३० लिख गये हैं।

उठाया है उसका क्या किया जाय। इस बारे में मेरी बुद्धि नहीं चलती है। मेरे पास बैठ जाने की बात तो मौजूद है ही। लेकिन तुम समाज में रहने की बर्दाश्त कर सकते हो या नहीं सोचने की बात है। छोटी बच्ची अच्छी होगी।

सेगाँव
५-१२-३८

बापू के
आशीर्वाद

बापू के उपरोक्त पत्र के बाद शहर की अपनी जायदाद बेचने के सब हाल उन्हें लिख देने के लिये मैं विवश हो गया और "कर्ज़ा" शब्द का कुल विवरण भी उन्हें लिख भेजा। 'आजीविका' के सम्बन्ध में बापू से मैं पूर्णतया सहमत नहीं हुआ। खाद्य पदार्थों के स्टोर आदि के शहर में खोलने से तो व्यापारिक-लाइन पर पड़ जाने का डर हो सकता था किन्तु दो-तीन घन्टे की शहर में प्रेक्टिस करके अपनी आजीविका लायक़ पैसा कमा लेने में मुझे कोई भय नज़र नहीं आता था किन्तु सामाजिक सेवा करने के एवज़ में किसी संस्था से अपना निजी मासिक खर्चा लेने को मैं पसंद नहीं करता था। अतः बापू के पत्र से जो मुझे दुःख हुआ वह सब उन्हें स्पष्ट लिख भेजा था। उस पर उन्होंने फिर उपदेश भरा यह पत्र लिखा जिसको पढ़कर मुझे शांति हुई :

१८०

सेगाँव
३१-१२-३८

चि० शर्मा,

तुमने ठीक कहा है, समय हमारा शत्रु हो रहा है। विचार श्रेणी में तुमको अन्तर नहीं लगता यह मेरे लिये बहुत संतोषजनक बात है। लेकिन सबसे ज्यादा संतोष मुझे तुमारे निश्चय से होता है। तुमारा धर्म घी बेचने का नहीं है। तुमारा धर्म नैसर्गिक तथा अन्य लेकिन ग्राह्य

( देखिये पन्ना——दो सौ तिहत्तर )

उपचारों से रोगियों को दुरुस्त करना है। और अब शहर में ऐसे उपचार करके आजीविका पैदा करोगे यह मुझे अच्छा लगता है। 'स्वधर्मे निधनं श्रेयः' यह भगवत गीता के एक श्लोक का हिस्सा है और उसका अर्थ यह है कि अपने धर्म में नाश भी अच्छा है। पर धर्म में तो हमेशा भय ही है कभी लाभ नहीं है।

अगर अच्छा लगे तो छोटी सी पत्रिका* भी निकाल दो। जो निवेदन पुस्तकों को छोड़ते समय किया था उसका उल्लेख करके। अब क्या करोगे यह बता दिया जाय। मुझे खबर देते रहो।

एक परीक्षा में तुमारे उत्तीर्ण होना होगा। सबके साथ आसानी से और उनमें भी मेरे साथ रहने वालों के साथ आसानी से रहने की कला हस्तगत करना।

बापू के
आशीर्वाद

बापू इतने महान थे तथा उनके लक्ष्य इतने ऊँचे थे कि मुझ जैसा उनका अत्यधिक मानवी तथा दुर्बल अनुगामी उनकी एक छोड़ कई परीक्षाओं में उत्तीर्ण नहीं हो सका। इसका मुझे खेद तो है ही किन्तु हर्ष भी है।

खेद तो इस लिये है कि मैं अपने वास्तविक स्वभाव को 'एक अच्छे राजनीति कुशल' ( Diplomate ) की भाँति या एक अवसरवादी की तरह उसे छिपाकर वह 'कला हस्तगत' न कर सका जिससे बापू को खुश करता; और हर्ष इसलिये है कि बावजूद अनेक कठिनाइयों के ईश्वर ने मेरे पग बापू के मार्ग पर ऐसे समय भी आज तक जमाये रक्खे जबकि मेरे अनेक उन साथियों ने, जो बापू को अपने प्रति खुश रखने के लिये उनके चरणों को अथवा उनके चरणों की धूल को माथे से लगाते थे तथा भीतर से उनके उपदेशों को ठुकराकर उन्हें श्रद्धांजलियाँ अर्पण करते थे, तथा उनके व्यक्तित्व को अपावन मानकर उनके

*मासिक या साप्ताहिक पत्रिका।

शरीर को पावन माना करते थे; तथा उनके सिद्धान्तों में अविश्वास करके उनमें अपना अटूट विश्वास दिखाते थे, अपनी वह सब 'कलाएँ' मेरी दृष्टि में ही नहीं बल्कि संसार की दृष्टि में आज निकम्मी साबित कर दीं ; क्योंकि अवसर पाते ही ऐसे 'कलाबाज़' बापू के जीवन काल में ही उनको अकेला छोड़ अपनी 'कृत्रिम कलाओं' का हुन्डी के रूप में भुगतान लेने के प्रयास में जुट पड़े जब कि देश को वास्तव में उनकी अत्यधिक सेवाओं की आवश्यकता थी।

उपरोक्त पत्र में बापू ने एक "पत्रिका" निकालने की सलाह दी थी। किन्तु जो कार्य मैंने हाथ में ले लिया था उसमें पत्रिका निकालने का समय ही नहीं था। दूसरे मेरे सामने गाँव की अछूत कहे जाने वाली जाति की दशा उन दिनों ऐसी बिगड़ी हुई थी कि उसके सुधारने में मुझे मेरा ही अन्त अर्थात् डिस्ट्रक्सन (Destruction) हो जाना नज़र आरहा था। पत्रिका का काम तो मेरी दृष्टि में कोन्सट्रक्शन (Construction) के समय की चीज़ थी। गाँव में रहते हुये मुझे मेरी एक और कमज़ोरी भी नज़र आ रही थी जो मुझे सदैव खटकती रहती थी :

मैं तथा मेरी स्त्री ग्रामवासियों की यथाशक्ति सभी प्रकार की सेवा तो करते थे लेकिन ग्रामवासियों को मैं अपना "एक कुटुम्ब" जैसा मानकर नहीं चलता था और वहाँ के बच्चों के साथ अपने बच्चों को खेलने के लिये पूरी स्वतंत्रता भी नहीं दे पाता था; इसके अतिरिक्त कोई भी बात यदि मेरी मर्ज़ी के ख़िलाफ होती थी या कोई आडम्बर जैसी चीज़ मुझे प्रतीत होती थी तो मैं अपनी तुनक मिजाज़ी के कारण सहिष्णुता भी खो बैठता था। आज मैं अपनी उस तुनक मिजाज़ी की जब याद करता हूँ तो मुझे हँसी आती है। यह सब बातें मैं बापू को लिखता रहता था और छोटी-छोटी बात पर भी अशाँत हो जाने वाले अपने स्वभाव की मिसाल उस कुत्ते से दे बैठा था जो अपनी मर्ज़ी के ख़िलाफ होती हुई किसी भी बात पर अपने स्वामी के भी प्रति गुस्सा कर बैठता है। मेरे इसी प्रकार के अनेक पत्रों पर बापू ने यह शिक्षाप्रद पत्र लिखा :

सेगाँव, वर्धा
२-२-३६

चि० शर्मा,

बारदोली में इतने काम में फंस गया था कि बीमार होकर आज आया। यही कारण है तुमारे ख़त का देरी से उत्तर भेजने का। चिन्ता की बात नहीं है ठीक हो जायगा।

*३-२-३६

लेकिन मैं किसी को एक लाइन भेजने का कह सकता था कि उत्तर जल्दी नहीं भेजा जायगा। यह नहीं किया क्योंकि शीघ्र उत्तर भेजने की आशा बनी रही।

डिस्ट्रक्शन (Destruction) कोन्सट्रक्शन (Construction) साथ चलने वाली चीज़ हैं। तुमारा डिस्ट्रक्शन कुछ ऐसा लगता है कि उसको तुम बर्दाश्त न कर सको। आज एक करें कल दूसरा ऐसा न बनने पाये।

पत्रिका मैं नहीं लिख सकता हूं। तुमने ठीक ही लिखा है जबतक कोन्सट्रक्शन शुरू नहीं हुआ तब तक सब बात बेकार है जो चल रहा है उसमें पत्रिका को शायद स्थान भी नहीं।

तुमारे अगले ख़त में कुछ सिद्धान्त की बात थी कि समाज और कुटुम्ब अलग बात है और होनी चाहिये अगर दोनों एक समझते हो लेकिन आज वहाँ तक नहीं पहुँचते हो तो कहना क्या? मेरे साथ रहने वाले और तुममें भेद नहीं है यह बात अमल में बता दोगे तब मेरा काम हो गया समझूँगा।

---

* बापू ने इस ख़त को दो दिन में पूरा किया मालूम होता है।

—दो सौ सतहत्तर

कुत्ता की मिसाल तो कठोर है लेकिन बात सही है। यों तो हम सब कुत्ते के जैसे हैं। सहिष्णुता नहीं है। लेकिन समाज में रहना और असहिष्णु रहना बड़ी विपरीत बात है।

बापू के
आशीर्वाद

राजकोट में दीवान वीरबाला के दमन चक्र चालू करने पर सरदार पटेल और वहाँ के ठाकुर साहब के बीच २६ दिसम्बर १६३८ को एक समझौता हो गया था। इस समझौते को ठाकुर साहब ने वहाँ के चुनाव के समय भंग करके सरदार पटेल के साथ एक प्रकार का विश्वासघात किया था। इस विषय पर बापू बड़ी गम्भीरता से विचार कर रहे थे। मेरे विचारानुसार विश्वासघात करना एक मानसिक रोग है और किसी भी प्रकार के मानसिक रोग को एक नैसर्गिक उपचारक भली-भाँति दूर कर सकता है। बापू के कुछ लेखों से मुझे ऐसा लगा था कि वह खुद राजकोट जाने का इरादा कर रहे थे। बापू को राजकोट के झगड़े से बचाने के ख्याल से मैंने उन्हें लिखा था कि वहाँ के ठाकुर साहब के मामले को वह अपने किसी नैसर्गिक उपचारक के सुपुर्द कर दें। इसके उत्तर में बापू ने यह पत्र लिखा :

१८२

सेगाँव, वर्धा
१३-२-३९

चि० शर्मा,

तुमको तार भेजा था सो मिला था? यहाँ तो उत्तर मिला था "Many Sharmas, Wire undelivered"*

---

* बापू ने तार, बजाय गाँव भेजने के, शहर के पते पर भेज दिया था।

—दो सौ अठहत्तर

( २ )

( देखिये पन्ना—दो सौ अठहत्तर )

एक ही बात का उत्तर देना है ना? नैसर्गिक उपचार का इतना गहरा अर्थ न लिया जाय। ऐसा अर्थ करने का उसी को अधिकार है जो उसकी प्रसिद्ध अर्थ को अमल में ला सका हो। हम सब अहं ब्रह्मास्मि थोड़े कह सकते हैं? जेल जाने का तुमारा समय आयेगा तब भगवान रास्ता खुल्ला कर देगा। यों भी मैं जो कल्पना कर रहा हूँ जेल जाने की नहीं है। इसलिये अपने काम में रत रहो।

बापू के
आशीर्वाद

लेकिन अन्त में यह सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ कि इस विश्वासघात का सामना करने के लिये बापू स्वयं राजकोट में जा ही फँसे तथा तीन मार्च से वहाँ उपवास शुरू कर दिया। उस समय मेरे दो तीन पत्र लगातार बापू को मिले थे जिनमें कुछ दलीलों के साथ मैंने उनसे उपवास छोड़ देने की अपील की थी; लेकिन सौभाग्य से ७ मार्च को बापू ने स्वयं अपने उस उपवास की कुछ त्रुटियाँ देखकर उसे तोड़ दिया और उसके बाद यह पत्र लिखा:

१८३

चि० शर्मा,

ऐसा कहाँ हमारा क़रार था कि जब २ तुमारे खत आवें तब २ मुझे लिखना ही था। मैं ऐसी तरह फँसा था कि कुछ दूसरा कर ही नहीं सकता था। मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। राजकोट से पहिली तारीख को निकलेंगे। मुंबई ५,६ तक। बाद में सरहद। उदर विकार कैसे हुआ और कच्चे दूध* का उसके साथ सम्बन्ध क्या रहा? तुमारे लिये

* मैंने अपने शरीर का कुछ वज़न बढ़ाने के लिये गाय के कच्चे दूध का प्रयोग किया था। जिन गउओं का दूध मेरे लिये आता था उसमें ग़लती से एक बीमार गऊ का भी दूध शामिल किया जा रहा था जिसके कारण मुझे कुछ उदर विकार हो गया था।

—दो सौ उन्नासी

फिजिओलॉजी वग़ैरा की किताबें मंगवाई थीं उनके नाम ठाम भेजो। वे किताब अनुभव में कैसी थीं ? सेगाँव में एक कार्यकर्ता के लिये ऐसी किताब की दरकार है।

राजकोट
२८-५-३६

बापू के
आशीर्वाद

बापू ने अपने उपरोक्त पत्र द्वारा कुछ पुस्तकें भेजने का आदेश दिया था मैंने उनसे दरियाफ्त किया कि वह पुस्तकें डाक द्वारा पार्सल से भेज दी जांय ? बापू के सरहद से लौटने के बाद महादेव भाई द्वारा मुझे यह पत्र मिला :

१८४

सेगाँव, वर्धा
२-८-३६

प्रिय डा० शर्मा,

आपका ३० तारीख का पत्र बापू जी को मिला। मैं तो कलकत्ते गया था वहाँ से आज ही आया। बापू के तो प्रोग्राम हर रोज़ नहीं हर घंटा बदलते रहे। क्या कहूँ जब ऐबटाबाद से चले उसके थोड़े घंटे पहिले काश्मीर दीवान के साथ मेरी टेलीफून से बातचीत हो रही थी। उस समय निश्चित नहीं था कि काश्मीर जाना होगा या नहीं होगा।

रामदास आजकल टाटा कम्पनी में साबुन की एजेन्सी कर रहे हैं। खुश हैं। उनकी पत्नी और बच्चे यहाँ हैं। पुस्तक के बारे में लिखा सो ठीक। अभी जल्दी नहीं है। जब कोई देहली से आते होंगे तब आपको इत्तला दे देंगे। बापू जी का स्वास्थ अच्छा है। ब्लड प्रेसर की तो तकलीफ है ही नहीं।

आपका
महादेव देसाई

पहिली सितम्बर सन् १६३६ को संसार का द्वितीय युद्ध छिड़ गया और ३ सितम्बर से भारत को भी बिना उसकी मर्ज़ी के उसमें घसीट लिया गया। देश में उन दिनों कांग्रेस के अन्दर बड़ी सरगर्मी थी। बापू बम्बई में सन् १६३४ से ही कांग्रेस से अलग हो गये थे। अब स्थिति ऐसी आई कि बापू के बिना कांग्रेस किसी स्थिति पर पहुँच भी नहीं सकती थी और बापू के कठोर नियमों का पालन करने के लिये उनके अनुशासन में आने को झिझकती भी थी। कितने ही वाद-विवाद के बाद तथा कई बार गांधी-वाइसराय-मिलन के पश्चात् यही निर्णय हुआ कि 'बापू ही कांग्रेस की बागडोर अपने हाथ में लें'। उन दिनों बापू के ऐतिहासिक ब्यान कुछ ऐसे निकले जिनसे यह प्रतीत होने लगा कि बापू सत्याग्रह आरम्भ करेंगे।

इधर हमारा काम गाँव में जम गया था और रोगियों की तादाद बढ़ने के कारण मैं शहर की अपनी जायदाद का अधिक भाग बेचकर अपने गांव में आठ नौ हज़ार रुपये से भी अधिक वहां मकान इत्यादि में लगा चुका था और मेरे गांव में अच्छी ख़ासी चहल-पहल रहने लगी थी। परन्तु बापू के ब्यानों को समाचार पत्रों में पढ़कर मेरा चित कुछ विह्वल होने लगा और मैंने बापू को यह सब हाल लिख भेजा। इस पर बापू ने महादेव भाई द्वारा यह पत्र लिखवाया :

१८५

सेगाँव
२६-१०-३६

प्रिय डा० शर्मा,

बापू को आपका पत्र मिल गया। बापू कहते हैं कि देशव्यापी सत्याग्रह की कोई बात ही नहीं है। आपको अपने काम में डटे रहना चाहिये। और जितनी सेवा होती है वह चालू रखनी चाहिये। देश-

व्यापी जंग अगर कभी शुरू हुआ तो देखा जायगा। सम्भावना नहीं सी है। कुशल होंगे।

आपका सेवक,
महादेव देसाई

कुछ ही दिन बाद बापू का एक ब्यान समाचार पत्रों में फिर ऐसा आया जिससे मुझे यह स्पष्ट ही लगने लगा कि वह सत्याग्रह जल्दी ही प्रारम्भ करेंगे और उनके उस ब्यान से जैसी मुझे प्रतीती हुई वह मैने उन्हें लिख दी। उस पर श्री प्यारेलाल द्वारा लिखा हुआ फिर मुझे यह पत्र मिला :

१८६

सेगाँव,
३०-११-३६

भाई डा० शर्मा,

आपका ता० २७-११-३६ का पत्र बापू जी को मिला। आपकी बात वह समझे हैं। उस लेख में तो उस समय जो भावना उनके मन में उठी वही उन्होंने क़लमबन्द कर दी। बाक़ी समय आने पर वह क्या करेंगे वह खुद नहीं जानते। उनके काम ऐसे यांत्रिक या कोरे न्याय-वाद के आधार पर नहीं लिये जाते। आप निश्चिंत रहिये।

भवदीय,
प्यारेलाल
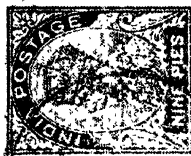
( २ )

एक रात्रि को अपने गांव में कहीं आग बुझाने के लिये जाते समय मेरे पांव में एक शीशा गुभ गया था उसके कारण मेरा पैर पक गया। महादेव भाई द्वारा यह हाल जब बापू को मालूम हुआ तब उन्होंने लिखा :

१८७

चि० शर्मा,

पुस्तक की फ़हरिस्त हाथ आयेगी तो ज्यादा मंगवाऊँगा अन्यथा जो पुस्तक लाहौर से मिली थीं वह भेजना। तुमको क्या हुआ है ? तुम ही बीमार रहोगे तो दूसरों को कैसे दुरुस्त करोगे ? मैं ता० ५ को दिल्ली पहुँचूँगा।

बापू के
आशीर्वाद

ता० २६-१-४०

उपरोक्त पत्र पढ़कर डाक्टरी की कुछ पुस्तकें तो बापू को मैंने भेजदीं लेकिन प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी पुस्तकों की तादाद बहुत अधिक होने के कारण उनकी एक फ़हरिस्त बना कर बापू को भेजी थी ताकि बापू आवश्यकतानुसार उनमें से पुस्तकें मंगा सकें। इस फ़हरिस्त के वर्धा पहुँचने से पहले ही बापू ५ फरवरी को वाइसराय के निमंत्रण पर दिल्ली आगये थे। इसलिये पुस्तकों की फ़हरिस्त की एक नक़ल उनके लिये मैं दिल्ली भी ले गया।

दिल्ली ५ ता० को मैं बच्चों सहित पहुँच गया था। बापू ने हमारे गांव सम्बन्धी अनेक बातों पर मेरी स्त्री से पूँछ-ताछ की और सब बच्चों की कमर ठोकी। प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी पुस्तकों की लम्बी फ़हरिस्त में से जो पुस्तकें बापू ने पसंद कीं उन सब पर निशान लगा कर हम अपने गांव वापिस आ गये और

एक लकड़ी की पेटी में उन पुस्तकों को बंद करके उन्हें रेल द्वारा भेजने की बापू से इजाज़त मांगी।

उधर १३ जनवरी १६४० के 'हरिजन' अख़बार में बापू का एक लेख छपा था जिसमें लिखा था "............उन पर (श्री सुभाषचन्द्र बोस* पर) **प्रतिबन्ध लगाने के काम में मैं कठोर होकर पूरी तरह शामिल था"।** इसे पढ़कर मैंने बापू को लिखा था कि श्री सुभाष बाबू की रुग्णावस्था का ख़्याल करते हुये बापू को उनके प्रति अपने कठोर प्रेम का प्रदर्शन नहीं करना था। उपरोक्त दोनों बातों का उत्तर देते हुये बापू ने लिखा :

१८८

चि० शर्मा,

पुस्तक डाक से नहीं किसी के साथ ही भेजो। दूसरा जो तुमने इशारा किया है वह मैं नहीं समझा हूं। कठोर प्रेम क्यों ? मैं १५ को बंगाल जाता हूँ २८ के नज़दीक वापिस आने का होगा।

सेगाँव
१३-२-४०

बापू के
आशीर्वाद

चूंकि बापू ने अपने उपरोक्त पत्र में खुल कर नहीं लिखा अतः मैंने श्री सुभाष बाबू के विषय पर फिर अधिक लिखना उचित नहीं समझा। हालाँकि उस समय सुभाष बाबू के प्रति बापू के व्यवहार से मुझे संतोष नहीं हो पाया।

---

*ब्रेकिट में शब्द लेखक के हैं।
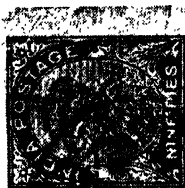
POST CARD
ADDRESS ONLY
BULANDSHAHR
FEB 40
NINE PIES
Sharma
Khurja
U.P.

किताबों की पेटी मैंने श्री देवदास भाई के पास दिल्ली भेज दी और उन्हें लिख दिया कि सेगाँव जाने वाले किसी व्यक्ति के साथ वह पेटी बापू को भिजवादें। बापू की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ पुस्तकों की पेटी रेल या डाक द्वारा पैसे ख़र्च करके भेज देना हममें से किसी के लिये भी एक मुसीबत मोल ले लेनी हो सकती थी अतः ऐसी साधारण सी बातों पर भी हम एक दूसरे से सलाह लेकर चलते थे। इसी ख्याल से श्री देवदास भाई के पास पुस्तकों की पेटी पहुँचने पर उन्होंने मुझे लिखा :

१८६

प्रिय डा० शर्मा,

Medical ( मेडीकल ) किताबों को डाक द्वारा भेजने में क्या आपत्ति है ? मुझे भी शायद सेवाग्राम जाने वाला कोई भाई न मिले तो डाक या रेल-द्वारा भेज दूं क्या ?

न्यू दिल्ली
२६–३–४०

आपका
देवदास गांधी

उपरोक्त पत्र के उत्तर में मैंने श्री देवदास को पुस्तकों की पेटी के बारे में बापू के ज्यों के त्यों शब्द लिखकर भेज दिये तो उनका भी यह साहस न हुआ कि वह उस पेटी को पैसे ख़र्च करके रेल द्वारा सेवाग्राम भेजते। इस तरह महीनों तक किसी भाई के सेवाग्राम जाने के इंन्तज़ार में वह पेटी दिल्ली ही पड़ी रही। कुछ अर्से बाद मैंने बापू से पुस्तकों की पहुँच के बारे में पूछा और साथ ही उनसे आगामी सत्याग्रह प्रारम्भ करने के विषय में तथा उसी सम्बन्ध में अपने लिये भी उनके विचार मालूम करने चाहे तो प्यारेलाल भाई द्वारा बापू ने यह पत्र लिखवाया :

१६०

सेवाग्राम
२६-४-४०

प्रिय डा० शर्मा,

आपका पत्र बापू जी को मिला था। पुस्तकें अभी तक दिल्ली में देवदास के पास ही पड़ी हैं।

आपने जो प्रश्न पूछा था उसके जवाब में बापू कहते हैं कि तुमारे वैसे ही डटे रहना है अपने काम पर। और दूसरे सत्याग्रह अभी कोई दरवाज़े पर आया खड़ा है। ऐसे भी नहीं है।

भवदीय
प्यारेलाल

आख़िर किसी के बिना पैसे ख़र्च हुये ही तीन महीने बाद किसी जाने वाले आदमी के साथ पुस्तकों की पेटी दिल्ली से सेवाग्राम पहुँच पाई। तब बापू का यह पत्र मिला :

१६१

चि० शर्मा,

तुमारा ख़त मिला किताब भी मिल गई। मैंने पहुँच भेजने का सु०* बहन को कह तो दिया था। किताब चाहिये थीं शंकरन के लिये जो डिसपेन्सरी में काम कर रहा है। प्रति मास एक ख़त को इंतजारी में रहूँगा।

सेवाग्राम, वर्धा
२०-६-४०

बापू के
आशीर्वाद

---

*डा० सुशीला नायर।

पत्र—१९१

( देखिये पन्ना—दो सौ छियासी )
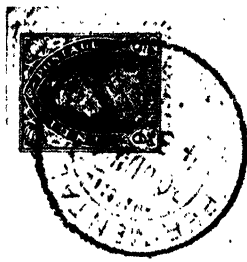
पिछले महीनों में मेरे पैर में जो शीशा गुभ गया था पैर को आराम न मिलने के कारण वह ज़ख्म जब एक साइनस के रूप में हो गया तब उस पर विशेष ध्यान देना पड़ा। उधर पुलिस की भी कुछ जबरदस्ती मेरे साथ होनी शुरु हो गई थी। महादेव भाई द्वारा बापू को जब यह सब मालूम हुआ तो मेरी लापरवाही पर बापू बहुत नाराज़ हुये और मुझे डाँटते हुये यह पत्र लिखा :

१६२

सेगाँव
२१-७-४०

चि० शर्मा,

क्या बात है साइनस तक पहुँचे और कुछ नहीं किया? कहाँ गई तुमारी डाक्तरी? और द्रौपदी और बच्चों को वहाँ रखकर क्या करोगे? तुमारा काम मेरी समझ में नहीं आता है। जबरदस्तियों के बारे में देख लूँगा।

आशीर्वाद

१६४० के संकटकालीन कांग्रेस की बागडोर काँग्रेसी नेताओं के आग्रह से बापू ने अपने हाथों में ली तो ज़रूर लेकिन कांग्रेसियों के लिये नियम बड़े कठोर बनाये गये थे। अतः किसी भी स्थान के कांग्रेसियों का उन नियमों के विरुद्ध चलने से बापू को महान दुःख हो सकता था। इस खयाल से मैंने यहां खुरजा के कुछ कथित कांग्रेसियों के घृणित तथा लज्जाजनक कार्यों से बापू को आगाह कर दिया था और उनकी जांच के लिये किसी ज़िम्मेदार व्यक्ति को मेरे पास भिजवाने की प्रार्थना भी की थी। बापू ने मेरा वह पत्र उचित जगह भेजकर उस पर उचित कार्यवाही की। उधर पुलिस का मेरे प्रति दिन प्रति दिन कठोर

बर्तावा देखकर मैं ज़िले के कलक्टर से मिलने की भी सोच रहा था और बापू को भी यह सब लिख चुका था। नीचे का पत्र उनका इसी संम्बन्ध में है :

१६३

सेवाग्राम, वर्धा
१७-८-४०

चि० शर्मा,

मैंने तुमारे खत का पूरा उपयोग किया है। अब मुझे पूछते हैं जो नमूने तुमने दिये हैं उनके नाम ठाम भेजे जांय। मंगनी* तो ठीक लगती है। तुमने लिखा है जो लोग तुमारी शिकायत के बारे में तहकीक़ात करना चाहें तुमारे पास आवें। अब मुझे सब हक़ीकत भेज दो—शीघ्रातिशीघ्र। तुमारे पैर का क्या हुआ। तुमने बहुत बेदरकारी बताई है।

बापू के
आशीर्वाद

तुमारे अपने बारे में क्या हुआ ? उसका पूरा हाल भी लिखो। क्या कलेक्टर के पास गये थे ?

सन् १६४० का "व्यक्तिगत आन्दोलन" बड़े महत्व की चीज़ थी। देश की स्थिति सामूहिक आन्दोलन छेड़ देने योग्य नहीं थी। बापू यह भली भांति जानते थे कि "देश उनके साथ हैं" यह कोरा बहाना है। बापू के इस ऐतिहासिक "व्यक्तिगत आन्दोलन" की शक्ति के बारे में जहां भ्रम और निराशा के बादल छाये हुये थे वहां बापू के घनिष्ट निकट रहने वाले तथा उनकी विचार श्रेणी को समझने वाले उनकी इस योजना के महत्व से पूर्णतया परिचित भी

*मंगनी—मांग

સેવાગ્રામ SEVAGRAM, سیواگرام
વર્ધા સી.પી. WARDHA, C.P. وردھا-سی-پی

17-8-40

ચિ. શાન્તિ,

[illegible]

( २ )

[illegible]

तुम्हारे अपने बारे में क्या हुआ ? उस का पूरा हाल भी लिखो. क्या कलेक्टर के पास गये थे ?

( देखिये पन्ना—दो सौ अट्ठासी)

सेवाग्राम                    ४-९-४०                    سیواگرام
वर्धा होकर (मध्यप्रांत)                    وردھا ہوکر (سی۔ پی۔)

( देखिये पन्ना—दो सौ नवासी )

थे। यद्यपि बापू स्वयं अपने "व्यक्तिगत आन्दोलन" की रूप-रेखा भली भांति तैयार नहीं कर पाये थे लेकिन इतना तो वह ज़ाहिर कर ही चुके थे कि उनके उस आन्दोलन में दिखावट या किसी प्रकार की सामूहिक भड़कन नहीं होगी। बापू की विचार श्रेणी को समझते हुये, उस आन्दोलन के श्रीगणेश होने से पहिले तथा उसके बाद, उनसे मेरा पत्र-व्यवहार कुछ बढ़ गया था। "बापू व्यक्तिगत आन्दोलन का श्रीगणेश किससे करायेंगे ? बापू का वह आन्दोलन राजनैतिक आधार पर होगा या नैतिक आधार पर" ? ऐसी ही अनेक बातें जानने के लिये बापू के सभी अनुयायी बड़े उत्सुक जान पड़ते थे तथा भांति २ की अटकलें लगा रहे थे। बाबू राजेन्द्र प्रसाद तो उन दिनों बीमार थे, श्री कृपलानी जी के कन्धों पर कांग्रेस-दफ्तर का भार तो था ही लेकिन आन्दोलन की पवित्रता को क़ायम रखने के लिये वह देश का निरन्तर दौरा भी कर रहे थे, श्री नेहरू जी की ओर हमारा यह ख्याल था कि उनके प्रति देश का अपार प्रेम तथा उनकी तुनक मिजाज़ी शायद बापू के लिये रुकावट डाले।

इसी प्रकार की अनेक शंकाओं के बीच मैंने बापू को एक पत्र लिखा था। उसका कोई स्पष्ट उत्तर न देकर केवल संकेत के रूप में उनका यह छोटा सा पत्र मिला :

१६४

सेवाग्राम, वर्धा
४-६-४०

चि० शर्मा,

तुमारा खत मिला। तुमारे शीघ्र अच्छा हो जाना चाहिये। यहाँ अति वृष्टि हुई। नुक़सान हुआ है। कुछ ध्यान खींचे ऐसी साधारण यहाँ नहीं हुई है।

बापू के
आशीर्वाद

—दो सौ नवासी

किन्तु उपरोक्त पत्र के एक महीने बाद ही बापू का निम्नलिखित पत्र पढ़ कर मुझे बेहद ख़ुशी हुई और मैं यह समझा कि बापू 'व्यक्तिगत आन्दोलन' का श्रीगणेश शायद मुझ से करायेंगे।

१६५

सेवाग्राम, वर्धा
६-१०-४०

चि० शर्मा,

तुमारा खत मिला। मैं तुमको लड़ाई में शीघ्र बुलाना चाहता हूं अब तो तबीयत अच्छी करो।

बापू के
आशीर्वाद

बापू का यह पत्र पढ़कर मेरे मन में पैदा हुए उपरोक्त विचारों की पुष्टि करने के हेतु मैंने उनसे दो प्रश्न पूछ लिये : पहला यह कि रोगियों के लिये मैंने अपने यहां कुछ तम्बू भी मांग कर लगा रक्खे थे। उनके वापिस करने के लिये बापू से दरियाफ्त किया था, दूसरी बात यह थी कि पिछले कुछ वर्षों से मेरे लड़के की पढ़ाई छिन्न-भिन्न हो गई थी उसकी पूर्ति मैं स्वयं उसे पढ़ाकर कर रहा था। इस विषय में बापू से पूछा था कि उसको किसी विद्यालय में दाखिल कर दूं? इन दोनों बातों का बापू ने यह उत्तर दिया :

१६६

सेवाग्राम, वर्धा
१४-१०-४०

चि० शर्मा,

जब तक तुमारे पास रहने दें उसे रक्खो। दे देने की कोई जरूरत

—दो सौ नव्वे

पत्र—१६५

सेवाग्राम

वर्धा होकर ( मध्यप्रांत )

( देखिये पन्ना—दो सौ नव्वे )

पत्र—१६७

सेवाग्राम

वर्धा होकर ( मध्यप्रांत )

( देखिये पन्ना—दो सौ इक्यानवे )

(२)
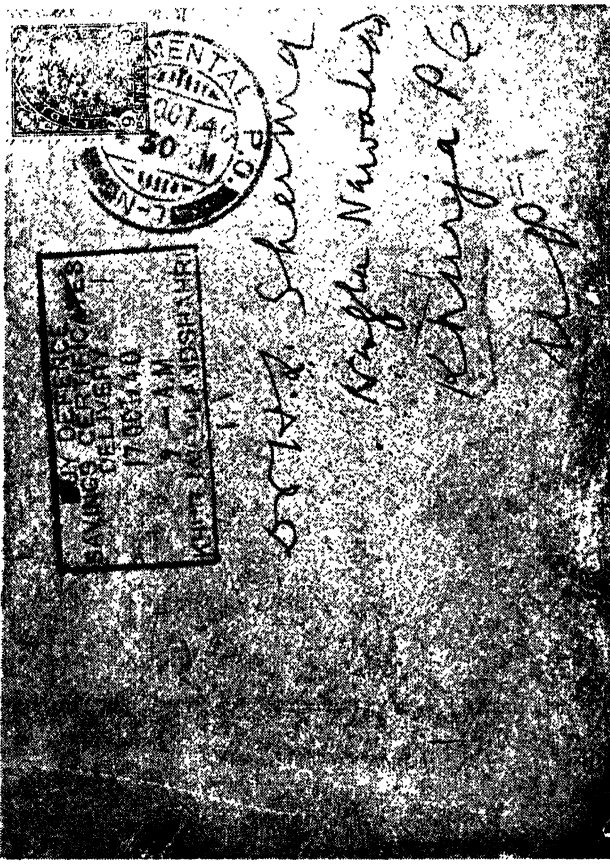
( देखिये पन्ना—दो सौ नव्वे ) चित्र—३५

लेखक के ग्राम नगला नवाबाद में रोगियों के लिए तम्बू

नहीं है। देवी प्रसाद को भेजना अच्छा है विद्यालय से प्रथम पूछ लेना।

बापू के
आशीर्वाद

बापू के उपरोक्त दोनों पत्रों के बाद मैं अपने गाँव के काम को समेटने की सोच रहा था किन्तु शिमले से लौटती बार बापू का ख्याल यकायक विनोबा जी की ओर चला गया और १७ ता० को विनोबा जी द्वारा बापू ने "व्यक्तिगत आन्दोलन" का श्रीगणेश करा कर १६ ता० को मुझे यह पत्र लिख भेजा।

१६७

सेवाग्राम, वर्धा
१६-१०-४०

चि० शर्मा,

आज का सी० डी०* और पुराने में बहुत फर्क है शायद ही और किसी को बुलाना पड़े। तुमारा नाम तो मेरे पास है ही लेकिन कोई खास तैयारी न की जाय ऐसा समझो कि किसी को बुलाया नहीं जायेगा। सब रचनात्मक† कार्य करते रहें।

आशीर्वाद

*सिविल डिसओबीडिएन्स।

† शिमले से लौटतीबार ही बापू को यह ख्याल आया मालूम हुआ कि 'वह अपने रचनात्मक कार्यकर्ताओं को "व्यक्तिगत आन्दोलन" से अलग रक्खें।'

१६६

सेवाग्राम, वर्धा
४-११-४०

चि० शर्मा,

तुमारी बात समझा हूँ। सब ईश्वर के हाथों में है उसी के हाथ में हम सब हैं वह चाहेगा मेरे से करायेगा। तुमारे अपने काम में ध्यानावस्थित हो जाना है।

बापू के
आशीर्वाद

आन्दोलन की पवित्रता पर धब्बा लगाने के लिये बिहार और लाहौर में दो एक ऐसी दुर्घटनायें हो गईं जहाँ जनता के उत्तेजित होने से उस पर लाठी-चार्ज हो गया था। "इस प्रकार की उत्तेजना भविष्य में फिर न हों" इस ख्याल से बापू को मैंने अपना एक विनम्र सुझाव यह भेजा कि 'युद्ध विरोधी' नारे लगा कर सत्याग्रह करने की अपेक्षा 'युद्ध विरोधी प्रार्थनायें' करते हुए प्रभात फेरी निकाल कर सत्याग्रह किया जाय तो सत्याग्रही के साथ अधिक भीड़ इकट्ठा न हो सकेगी और सत्याग्रही "युद्ध विरोधी प्रार्थना" करता हुआ शांति से गिरफ्तार हो सकेगा। किन्तु बापू को मेरा यह सुझाव पसंद न आया और बहन अमृतकौर द्वारा मुझे यह पत्र भेजा। बहन अमृतकौर* उन दिनों बापू के पत्र-व्यवहार में उन्हें मदद देती थीं।

*आजकल केन्द्र में स्वास्थ्य मंत्री पद पर हैं।

२००

सेवाग्राम, वर्धा
६-१२-४०

भाई शर्मा जी,

पूज्य बापू जी को आपका खत मिला। वे कहते हैं कि आपकी प्रार्थना की तजवीज़ कुछ दिल को लगती नहीं। उनका दबाव अब मामूली पर आ गया है। थकान आस्ते-आस्ते उतर रहा है और सब कुशल है।

आपकी
अमृतकौर

अब बापू ने अपने लेखों द्वारा यह पूर्णतया स्पष्ट कर दिया था कि वह अपने रचनात्मक कार्यकर्ताओं को आन्दोलन में शरीक होने की सलाह नहीं देंगे और ऐसा ही संकेत उन्होंने अपने २३-१२-४० के एक पत्र में मुझे भी किया कि "तुमारा नाम तो मेरे पास है ही। लेकिन जब तक मैं तुमसे रचनात्मक कार्य लेना चाहूं तब तक क्यों भेजूं?"

जब मुझे यह स्पष्ट हो गया कि बापू अपने रचनात्मक कार्यकर्ताओं को आन्दोलन में नहीं लेंगे तो फिर मैंने इस प्रकार के पत्र-व्यवहार में उनका अधिक समय लेना नहीं चाहा और उनसे क्षमा मांगी किन्तु उस समय की अपने हृदय की भावनाओं को दबाने में मुझे भारी कष्ट तो हुआ ही। मेरी बेचैनी को देखकर बापू ने मुझे फिर यह निम्न पत्र लिखा :

—दो सौ चौरानवे

(२)

( देखिये पन्ना—दो सौ चौरानवे )

( २ )

POST CA

ADDRESS

BUY DEFENCE SAVINGS CERTIFICATES

Dr. H. L. Sharma

Nafta Nawaby

Khurja P.O.

U. P.
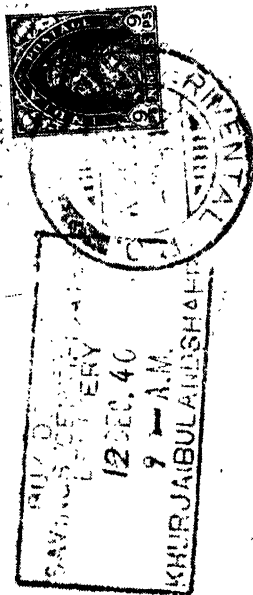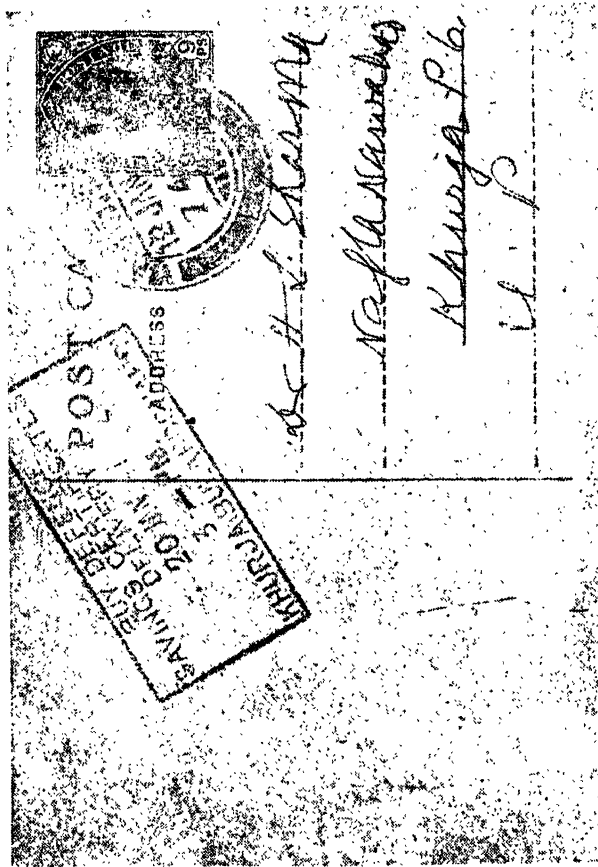
सेवाग्राम, वर्धा
१७-१-४१

चि० शर्मा,

तुमारे दोनों खत मिले। तुमको क्षमा तो सहाय है। तुमारा आग्रह होगा तो मैं तुम्हें अभी जाने दूंगा अगर धीरज रखोगे तो अच्छा होगा वहाँ काम तो कर ही रहे हो लेकिन अशांति रहे तो मैं भेजने को तैयार हूं।

बापू के
आशीर्वाद

बापू का उपरोक्त पत्र पाकर मैं इस विषय पर चुप तो हो गया किन्तु मुझे पूर्ण शान्ति नहीं मिली। इधर अपने गाँव के कार्य में मैं नौ-दस हज़ार रुपया लगा चुका था और काम दिन प्रति दिन इतना बढ़ता गया कि भविष्य में मुझे उसका अकेले ही संभालना कठिन प्रतीत होने लगा। अतः मैं स्वयं सेवाग्राम बापू के पास गया।

'व्यक्तिगत आन्दोलन' में शरीक होने की प्रबल इच्छा के साथ ही मेरा यह भी ख्याल था कि मुझे जेल में थोड़ा आराम मिल जायगा। मेरे हृदय की इस आराम चाहने की कमज़ोरी को बापू ने पकड़ लिया। फिर उन्हें दया कहाँ! उन्होंने तुरन्त मुझे मेरे गाँव के कार्य की पूरी रिपोर्ट लिखित रूप में उन्हें पेश

करने का आदेश दिया तथा रचनात्मक कार्यों की अहमियत का सबक़ देने लगे और मुझे मेरे काम पर जुटे रहने का आदेश दे दिया। मैं हताश होकर एक महीने बाद फिर अपने गांव 'नगला नवाबाद' में आ गया। उधर बापू ने मुझे विह्वल देख कर मेरे लिये एक नया व्यूह रचने की योजना बना ली थी जो मुझे भविष्य में भी जंज़ीर की तरह गाँव के कार्य्य में ही बांधे रक्खे।

यहाँ से मेरी 'पिलग्रिम्स प्रोग्रेस' (Pilgrim's Progress) का अथवा मेरी परीक्षाओं का एक नया अध्याय प्रारम्भ हुआ जो पाठकों को विशेष रूप से शिक्षाप्रद तथा रोचक प्रतीत होगा।

---

## आठवाँ अध्याय

सेवाग्राम से आये हुए मुझे एक पखवाड़ा ही हुआ था कि वर्धा से श्री कृष्णदास जाजू जी* का मुझे यह ख़त मिला :

२०२

वर्धा

३-४-४१

प्रिय शर्मा जी,

ता० १४-३-४१ को सेवाग्राम में आपने अपने नर्सिंग होम के विषय में जो पत्र दिये थे वे बापू ने मुझे दिये हैं। पंडित हरिभाऊ जी† आपके कार्य को देख लें ऐसी पूज्य बापू जी की सूचना पहिले थी। परन्तु वह काम अब पूज्य बापू जी ने मुझे सौंपा है। मैं तालीमी संघ की सभा में शामिल होने के लिये लगभग ता० १२ से १६ तक दिल्ली में होऊँगा। आप वहाँ आकर मुझे खुर्जा ले जाकर अपना सेवा सदन दिखला दे सकते हैं। मुझे जामिया नगर (दिल्ली) ता० १३ को सवेरे पहुँचना है ऐसा हो सकता है कि बजाय १३ ता० के ता० १२ को दिल्ली पहुँचू। और आप ग्रॉंड ट्रंक ऐक्सप्रेस पर मुझे दिल्ली स्टेशन

* श्री कृष्णदास जाजू जी अखिल भारतवर्षीय खादी उद्योग के मंत्री थे।

† श्री हरिभाऊ जी आजकल अजमेर में चीफ़ मिनिस्टरी के पद पर हैं।

पर मिलकर वहीं से सीधा खुर्जा ले जावें और खुर्जा से मैं ता० १३ को सवेरे दिल्ली लौट आऊँ। आप कृपया तुरन्त ही मुझे यहीं के पते पर लिखें।

आपका

कृष्णदास जाजू
मंत्री

श्री जाजू जी अपने लिखे प्रोग्राम के अनुसार न आ सके और फिर १६ ता० को वह स्वयं हमारे गाँव पधारे तथा चार दिन हमारे साथ रहे।

श्री जाजू जी का जीवन सादा था और स्वाभाव के तो वह कंजूस थे ही। उन दिनों हमारी झौंपड़ियों के पीछे पपीता तथा अनेक प्रकार की भाजियाँ लगी हुई थीं। गऊ के ताज़ा दूध की पेस्टयूराइज्ड बोतलें मैं प्रातःकाल अंधेरे ही बच्चों के लिये तैयार कर लेता था। अतः श्री जाजू जी की मेहमान-नवाज़ी में हम को तनिक भी दिक्क़त नहीं हो पाई।

श्री जाजू जी ने हमारे प्रत्येक काम को बड़ी बारीकी से देखा तथा हमारी कठिनाईयों को बड़े ध्यान से सुना। और हमारे यहाँ के सब हाल चार दिन तक देखने के बाद वर्धा वापिस चले गये तथा पन्द्रह दिन के भीतर ही मुझे उनके यह समाचार मिले कि "बापू ने आप के काम को आगे बढ़ाने का हुक्म दिया है तथा अब तक जो आपने सात आठ हज़ार रुपये की रक़म गाँव के मकान आदि में लगाई है वह सब आपको दान करके एक सार्वजनिक ट्रस्ट बना देने का आदेश मिला है और साथ ही बापू ने १५०००) रु० आपको मकान के काम के लिये देने के आदेश जारी किये हैं।" इसके साथ ही १०००) रु० का एक तथा ५००) रु० का दूसरा ड्राफ्ट भी मुझे तुरन्त भेज दिये गये ताकि इमारतों के बढ़ाने का काम मैं तुरन्त आरम्भ कर दूँ।

बापू के 'सार्वजनिक ट्रस्ट बना देने के' आदेश को पढ़कर मैं बड़ा ख़ुश हुआ और मैंने सोचा कि मैं अब अपने कार्य भार से मुक्त होकर अपनी संस्था में एक

( लेखक का निवास स्थान ) चित्र—३६

लेखक का परिवार अपने कृषी फार्म पर श्री जाजूजी की प्रतीक्षा में
( देखिये पन्ना—दो सौ इक्यानवे )

कार्यकर्ता के नाते ही काम करूँगा किन्तु श्री जाजू जी ने अपने एक पत्र में लिखा कि "एक ट्रस्ट्री आप ही रहेंगे"। मैं ट्रस्टी न बनकर स्वतन्त्र रूप से काम करना चाहता था लेकिन बापू को मेरी ऐसी स्वतन्त्रता पसंद न थी। अतः ६ ता० को फिर जाजू जी का समाचार मिला कि "एक ट्रस्टी आप अवश्य रहने चाहियें।"

यह पत्रव्यवहार चल ही रहा था कि कुछ बड़े बड़े व्यक्तियों की मोटर गाड़ियां प्रति दिन मेरे गांव में आने जाने लगीं। पश्चिम से श्री वियोगी हरि जी आये तो उनके बाद दिल्ली के नामी सेठ लक्ष्मीनारायण जी गाडोदिया सपत्नीक चले आये; उधर पूरब से श्री विचित्र नारायण जी ने भी आने का कष्ट किया।

बिचारा ग़रीब सुदामा तो एक ही नारायण के दर्शन करके चकाचौंध हो गया था यहां इन अनेक नामधारी नारायणों के मेरी कुटिया पर आने से मुझ ग़रीब का क्या बना सो पाठक आगे चल कर स्वयं देखेंगे।

बापू की इस माया को देखकर मैं घबरा गया और फिर सेवाग्राम की ओर उनके पास भागा। बापू ने मुझे खूटें से बांधने के लिये मेरा ट्रस्टी बनाना निश्चय कर ही रक्खा था। इसलिये इस विषय पर मेरी कोई दलील वहां काम न आयी। लेकिन जब मैंने यह सुना कि दूसरे ट्रस्टियों में बापू किसी धनी वर्ग के एक व्यक्ति को भी ट्रस्टी रखना चाहते हैं तो उनके इस विचार से मैं असमंजस में पड़ गया। क्योंकि मैं धनी पुरुषों के सम्पर्क में कम रहा हूँ और उनको प्रसन्न रखने की कला मुझमें बिल्कुल नहीं है। मैं दो दिन तक तो इससे बच निकलने का मार्ग सोचता रहा किन्तु निकल न सका। श्री जाजू जी के साथ जब मेरी फिर पेशी हुई तो मैंने दबी जुबान से श्री घनश्याम दास बिरला का नाम बापू के सामने रक्खा। धनी व्यक्तियों में मेरी दृष्टि उन दिनों उन्हीं की ओर जा सकती थी; क्योंकि बिरला बन्धुओं के स्वभाव का थोड़ा सा परिचय मुझे मेरी पश्चिम यात्रा के दिनों में मिल गया था।

बापू ने श्री जाजू जी को तत्सम्बन्धी विषय पर श्री घनश्यामदास बिरला से तुरन्त पत्रव्यवहार आरम्भ करने का आदेश दे दिया और यह निश्चय हुआ कि ट्रस्ट का मसविदा बनाकर मैं श्री जाजू जी द्वारा बापू को भेजूँगा; और

कोई भी अन्य दो ट्रस्टी बापू चुनेंगे। मुझे अपने गांव वापिस आते ही श्री घनश्यामदास बिरला को जाजू जी द्वारा भेजे हुए पत्र की यह नक़ल वर्धा से मिली :

२०३

(नक़ल) १७७१ ६-५-४१

मान्यवर श्री घनश्यामदास जी बिड़ला,

खुर्जा के पास क़रीब दो ढाई मील की दूरी पर डा० श्री शर्मा जी ने रक्त और चर्म रोगों का इलाज सूर्य प्रकाश से करने के लिये एक हस्पताल खोला है। वे विदेश जाकर यह चिकित्सा सीख आये हैं। उसमें उनको आपसे मदद मिली है। उन्होंने पूज्य बापू जी से बातचीत करके इस काम को सार्वजनिक बनाकर ट्रस्ट करने का विचार किया है। नवाबाद में शर्मा जी ने जमीन लेकर कुछ मकानात बाँधें हैं उनमें क़रीब सात-आठ हज़ार रुपये खर्च हो गये होंगे। पूज्य बापू जी अपनी अँकित निधि में से उनको १५,०००) रु० तक मदद देंगे। इस ट्रस्ट में ट्रस्टी कौन हों उस पर विचार चल रहा है। डा० शर्मा जी ने अपनी इच्छा प्रगट की है कि आप उसके ट्रस्टी हो सकें तो बहुत ही अच्छा है.........आपकी राय लिखने की कृपा करें। यह काम बहुत जल्दी करना है इसलिये उत्तर जल्दी मिलने से सुविधा होगी।

यहाँ कुशल हैं आप प्रसन्न होंगे।

आपका

जाजू

इधर मैं अपने गांव से ट्रस्ट-डीड की धारायें बनाकर बापू की स्वीकृति के लिये श्री जाजू जी द्वारा सेवाग्राम भेज रहा था और उधर सेवाग्राम में बापू की सम्मति से श्री जाजू जी मनोनीत अन्य ट्रस्टियों के साथ पत्र व्यवहार कर रहे थे।

—तीन सौ

POST CARD

INDIA POSTAGE

9 PS NINE PIES 9 PS

( देखिये पन्ना-तीन सौ एक )

इसी बीच में श्री जाजू जी ने सम्भवतः बापू की सम्मति लेकर एक नई धारा यह लिख कर भेजी कि "डा० शर्मा की मृत्यु के बाद यदि प्राकृतिक चिकित्सा का काम न चल सके तो चिकित्सालय की इमारत को बेचकर उसका कुल पैसा गांधी सेवासंघ को मिल जायगा"। इस पर मेरी स्त्री चौंक पड़ी और उसने जाजू जी की उपरोक्त धारा में यह संशोधन रक्खा कि "चिकित्सालय की इमारत बिकने पर उसका आधा पैसा उसके बच्चों को मिलेगा"।

व्यापारिक दृष्टि से इन दोनों ही प्रस्तावों को कुछ स्थान मिल सकता था किन्तु धार्मिक दृष्टि से यह दोनों ही प्रस्ताव दुर्गन्धयुक्त थे इसलिये इस विषय पर पहिले बापू की राय जानने की इच्छा से मैंने जाजू जी को लिखा कि "उनकी इस नई धारा पर मेरी कोई स्पष्ट राय न भेजने से यदि बापू को ग़लत फ़हमी न हो तो यह मामला उन्हीं से तय करा लिया जाय और जो बापू कहेंगे वही माननीय समझा जाय"। मेरा वह पत्र बापू को दिया गया। किन्तु बापू की दृष्टि सदैव हृदय परिवर्तन की ओर रहती थी ऐसे मामलों में वह आग्रह कम करते थे। इस विषय पर मेरा कोई स्पष्ट मत न देखकर उन्होंने अपने विचार इस प्रकार प्रकट किये :

२०४

सेवाग्राम
१२-८-४१

चि० शर्मा,

तुमारा ख़त मिला। मेरी ग़लत फ़हमी नहीं है। तुमने तो कहा ही है कि आख़िर मैं कहूँ सो सही होगा। यह काफ़ी नहीं है। तुमारा अभिप्राय स्पष्ट नहीं है तो मेरा निर्णय निकम्मा माना जाय। द्रौपदी की भी हार्दिक सम्मति नहीं है तो भी यह दान दूषित समझा जाय।

—तीन सौ एक

कोई त्याग वग़ैर वैराग्य के अचल नहीं रहता है। मैंने तो नैतिक बात उठाई है।

बापू के
आशीर्वाद

बापू का उपरोक्त पत्र मेरी स्त्री के गले नहीं उतर पाया। इसलिये मैंने बापू को लिखा कि "यद्यपि द्रौपदी देवी का प्रस्ताव नैतिक दृष्टि से निसंदेह अयोग्य है परन्तु यदि मैं मर जाऊँ या मेरे जीवनकाल में ही यह प्राकृतिक चिकित्सालय किन्हीं परिस्थितियों वश असफल हो जाय तो मेरे परिश्रम का फल यह भी नहीं होना चाहिये कि उसकी इमारत केवल जाजू जी ही की तजवीज़ के अनुसार बेचकर उसका कुल पैसा किसी एक संस्था को दे दिया जाय।"

मेरे पत्र में दूसरा इशारा डा० सुशीला नायर को ओर था। बापू के घनिष्ठ सम्पर्क में रहने से डा० सुशीला नायर का बापू की नेचर क्योर योजना के साथ स्नेह तथा श्रद्धा होना स्वाभाविक समझकर मैंने बापू को लिखा था कि उनसे भी संस्था के कार्य में किसी प्रकार को मदद मिल सके तो क्यों न ली जाय। वह पत्र मैंने १६ ता० को भेजा था लेकिन बापू के उत्तर आने में देरी लगी तो २५ ता० को मैंने यह तार दिया :

205

Khurja, 25th. August, 1941

Gandhiji, Wardha.

Please wire receipt my letter sixteenth. Anxious.

Sharma.

—तीन सौ दो

POST CARD

ADDRESS ONLY

Khurja

U.P.

( देखिये पन्ना—तीन सौ तीन )

२०५

खुर्जा — २५-८-४१

गाँधी जी, वर्धा

कृपया मेरे १६ ता० के पत्र की पहुँच तार द्वारा दीजिये। चिन्तित हूँ।

शर्मा

उत्तर में बापू का यह पत्र मिला :

२०६

सेवाग्राम
२५-८-४१

चि० शर्मा,

तुमारा १६ ता० का खत मिला है। आज तार मिला है। तार क्यों? मैं कैसे तार से उत्तर दूं? मेरा मतलब स्पष्ट था। जो वस्तु दे दी गई है उसमें से हम और हमारे आशा न रक्खें इसमें द्रौपदी की दलील को स्थान नहीं है। तुमारा कहना ठीक है कि तुमारे परिश्रम का नतीजा यह न होना चाहिये कि उस वस्तु का दूसरा उपयोग न हो। इतना भय क्यों? अविश्वास क्यों? तुमारे कार्य में रत रहो और सब अच्छा ही हो जायगा।

डा० सुशीला से भी मदद तो हम ले सकेंगे। यह वर्ष उनके लिये कठिन है एम० डी०* की तैयारी कर रही है।

बापू के
आशीर्वाद

---

* एम० डी० हो जाने के बाद डा० सुशीला नायर दिल्ली विधान सभा की अध्यक्ष-पद पर आसीन हुईं।

मेरी दृष्टि में 'भय' अथवा 'अविश्वास' जैसी किसी चीज़ का तो कोई प्रश्न नहीं था यहाँ तो प्रश्न एक उसूल का था। अतः बापू का और अधिक समय इस विषय पर न लेने की इच्छा से मैने ट्रस्ट की इस धारा को एक नया ठोस रूप देकर बापू के पास भेज दिया। वह था यह कि "किसी कारण से यह संस्था सूर्य चिकित्सा तथा अन्य नैसर्गिक उपचारों से जनता की सेवा करने में असफल हो जाय तो ट्रस्ट मज़कूर के ट्रस्टियों को यह हक़ होगा कि वे इस संस्था को जनता की अन्य किसी भी उचित सेवा के लिये जिसे वह मुनासिब समझें और जिसमें आम जनता का सच्चा लाभ हो, काम में ला सकते हैं—जैसे हरिजन-सेवा, ग्राम-सेवा, शिक्षा सम्बन्धी कोई सेवा, इत्यादि। लेकिन ट्रस्ट मज़कूर के ट्रस्टियान को किसी वक्त और किसी हालत में भी इस संस्था की इमारत को या इसकी इमारत के किसी भाग को बेचने का हक़ कभी भी नहीं होगा"।

सौभाग्य से मेरी उपरोक्त बनाई हुई धारा पर बापू, श्री जाजू जी तथा मेरी धर्मपत्नी—तीनों ही रज़ामन्द हो गये।

बाद में मुझे मालूम हुआ कि घनश्यामदास बिरला जी ने अपनी किन्हीं मजबूरियों के कारण ट्रस्टी बनना स्वीकार नही किया। अतः बापू ने दिल्ली के नामी सेठ लक्ष्मीनारायण गाडोदिया जी को तथा मेरठ खादीआश्रम के मैनेजर—श्री विचित्र नारायण जी* को ट्रस्टी बनाना स्वीकार कर लिया। जाजू जी ने भी इस सम्बन्ध में मुझे यही सूचना दी कि "ट्रस्टडीड का मसविदा पूज्य बापू जी ने पसन्द किया है इसके साथ भेजता हूँ" तथा "ट्रस्टी तीन रहने की बात तय है। (१) आप (२) श्री लक्ष्मी नारायण गाडोदिया और (३) श्री विचित्रनारायण जी*।"

इस प्रकार १६ सितम्बर १९४१ को मैंने १०००० (दस हज़ार) मालपियित की अपनी संस्था का एक सार्वजनिक ट्रस्ट खुर्जा रजिस्ट्री आफिस में रजिस्टर करा दिया तथा उसकी कापियाँ ट्रस्टियों की खिदमत में भेज दीं।

* श्री विचित्रनारायण जी भी आज यू० पी० सरकार में समाज निर्माण (P. W. D.) के मंत्री पद पर आसीन हैं।

पत्र—२०७

( देखिये पन्ना—तीन सौ पाँच )

ट्रस्ट रजिस्टर होते ही हमारी संस्था के सौभाग्य से धनी वर्ग के रोगियों में सबसे प्रथम उसे अपने ही तीसरे ट्रस्टी—कोषाध्यक्ष जी तथा उनकी धर्मपत्नी की सेवा करने का सुअवसर प्राप्त हुआ जिसका श्री गणेश मेरे मित्र—श्री वियोगी हरि जी* के निम्न लिखित पत्र द्वारा हुआ :

२०७

हरिजन निवास, दिल्ली
३-७-४१

प्रिय भाई हीरालाल जी,

श्री जमनालाल जी के साथ एक दिन यहाँ श्रीमती सरस्वती देवी† गाडोदिया आई थीं। वह चाहती हैं कि आप एक दिन के लिये दिल्ली कृपा कर आ जावें, और साथ में वह यंत्र‡ भी लावें जिससे की आपने उनके स्वास्थ की परीक्षा की थी। मुझे लिखने के लिये कहा था। मैं भूल गया। और कई दिनों बाद यह पत्र आपको लिख रहा हूँ।

एक कष्ट और देता हूँ। मेरे साथ जो श्री......आपका आरोग्य मंदिर देखने गये थे उनकी बहन को जो अभी १६ वर्ष की हैं थोड़ा श्वेत कुष्ट हो गया है अभी ज्यादा नहीं फैला है। घरवालों को काफ़ी चिन्ता हो गई है। अभी उसकी शादी नहीं हुई है। क्या कृपा कर आप कोई ऐसा उपाय बता सकेंगे जिससे वह बिलकुल ठीक हो जाय? आप कहेंगे तो आपके यहाँ उसे भिजवा दूंगा। आशा है प्रसन्न होंगे।

हरिजन निवास,
किंग्सवे, दिल्ली

आपका
वियोगी हरि

* हरिजन निवास के प्रसिद्ध लेखक व कवि।

† संस्था के तीसरे ट्रस्टी कोषाध्यक्ष जी की धर्मपत्नी।

‡ आइरिश माइक्रोस्कोप जो मैंने जर्मनी में खरीदा था।

हमारे कोषाध्यक्ष जी रोगनिदान की इस सरल पद्धति से बड़े प्रभावित हुये और उन्होंने मुझे दिल्ली में ही उनकी धर्मपत्नी सहित उनका इलाज करने की सलाह दी।

चिकित्सालय के ग़रीब रोगियों की उपेक्षा करके एक दो धनी वर्ग के रोगियों की ख़ातिर चिकित्सालय से बाहर अपना अधिक समय देना मेरे स्वभाव के तो विपरीत था किन्तु पहिले मैं खुद मुख्तार था। अब एक संस्था का संचालक ट्रस्टी बन बैठा था। इसलिये अपने स्वभाव को बदलना ही था। दूसरे अपने संस्था के कोषाध्यक्ष जी को हर प्रकार की सहूलियत देकर तन मन से उनकी सेवा करके उन्हें प्रसन्न करने को भी मेरी इच्छा थी ताकि भविष्य के लिये संस्था के पोषण करने का भी कुछ सहारा हो जाय। इन सब बातों का ध्यान करके उनका बहुत लम्बा इलाज होते हुये भी उनकी सेवा का भार मैंने उन्हीं की शर्तों पर क़बूल कर लिया।

अपने गाँव से दिल्ली तक आने जाने में १० रु० लगता था वह पैसा भी ओडिटर की शिकायत न होने तक संस्था का ही लगता रहा क्योंकि संस्था को न तो अपनी सेवाओं की सफलता में कोई शक था और न ही उसे अपने इन धनी रोगियों की ओर से उसके पोषण के लिये उसकी सेवाओं का उचित पारितोषिक मिलने में कोई भय था। संस्था भी एक अर्थ में अब कोषाध्यक्ष जी की ही थी अतः संस्था की सेवाओं का उनके साथ कोई रक़म तय करने का या उनसे उसका कोई क़ानूनी पट्टा लिखाने का ख्याल भी कैसे हो सकता था। इसी विचार को लेकर उनकी सेवा प्रारम्भ हो गई जिसके लिये आठवें नवें दिन मेरा अथवा संस्था के किसी भी कर्मचारी का दिल्ली जाना आवश्यक हो गया था तथा पत्र-व्यवहार भी काफी बढ़ गया था। यह सिलसिला लगभग तीन साल तक जारी रहा और इन तीन वर्षों में उनके इलाज के सम्बन्ध में क़रीब-क़रीब डेढ़ सौ पत्रों तथा तारों का संस्था के साथ आदान-प्रदान भी हुआ जो आज भी सुरक्षित रक्खा है। यद्यपि इस बीच में संस्था सम्बन्धी बातों पर कोषाध्यक्ष जी से मेरा मन मुटाव भी रहा, उधर मैं कुछ दिन जेल में भी रहा

तथा संस्था से बाहर भी रहा किन्तु संस्था की ओर से उनकी सेवा में कोई अन्तर नहीं आने पाया।

उन्हीं दिनों सरदार पटेल नज़र बन्द कर लिये गये थे। उनका स्वास्थ्य बिगड़ चला था। बम्बई में इलाज कराने से जब उन्हें कोई लाभ होता दिखाई न दिया तो बापू ने उन्हें अपनी देख-रेख में सेवाग्राम में ही रख लिया था तथा श्री किशोरीलाल मशरुवाले से मुझे यह पत्र लिखवाया :

२०८

सेवाग्राम
२-११-४१

श्री शर्मा जी,

पूज्य बापू जी ने यह पत्र लिखवाया है। सरदार पटेल बीमार हैं और १२ रोज़ से पूज्य बापू ज़ी की देख रेख में हैं। उनकी शिकायत को डा० लोग Spatic Colon कहते हैं। दिन रात उन्हें Colon में spasms हुआ करते हैं। एक होम्योपैथ यहाँ आये हैं यह मानते हैं कि एक बाजू पर Hernia भी पैदा हो रहा है और शायद उसमें Colon चले जाने का प्रयत्न करता है पर यह बात किसी डा० ने नहीं कही है। बम्बई में होम्योपैथी से कुछ फ़ायदा हुआ फिर रह गया। यहाँ भी कुछ होम्योपैथी दवाई दी तो गई हैं पर मुख्यतया बापू जी के इलाज चलते हैं उसमें मट्टी की पट्टी और Hip-Bath और Vegetable Soup मुख्य हैं। कमज़ोर हो गये हैं Partial Fasting के कारण Spasms कम हैं पर बन्द नहीं हैं। डाक्टरों का कहना है कि Aorta dialated है। Gases पैदा होने पर बहुत बेचैनी होती है स्वांस पर और Heart पर दबाव पड़ता है दस्त की हाजत होती है पर घंटे-घंटे तक दस्त नहीं होता था। पर इसमें अब

कुछ फर्क होने लगा है। इस विषय पर इतने से अगर आप कुछ सुझाना चाहें तो पू० बापू जी को सुझावें।

आपका
किशोरीलाल मशरुवाला

केवल पत्र में दी हुई रिपोट से मुझे संतोष नहीं हो पाया। इसलिये सेवाग्राम जाकर ही सरदार पटेल के स्वास्थ्य की मैंने स्वयं परीक्षा की तथा जो होम्योपैथ व अन्य डाक्टर आये हुये थे उनसे बापू के समक्ष विचार विमर्श किया।

सरदार पटेल को नेचर क्योर के प्रति तो विशेष श्रद्धा कभी नहीं रही किन्तु बापू के प्रति उनकी अटूट श्रद्धा होने के कारण उन्होंने कुछ दिन अपनी सेवा करने का मुझे अवसर दे दिया तथा भोजनादि के बताये नियमों का पूर्णतया पालन करके अपने स्वास्थ्य में कुछ उन्नति भी दिखाई। उनको हरनिया हो जाने का मुझे भी भय था इसलिये डाक्टरों की राय में हरनिया बेल्ट के प्रयोग कराने से मैं भी सहमत था लेकिन उनके भोजन में विशेषतया पत्तेदार कच्ची भाजियों पर मेरा अधिक ज़ोर था। एक हफ्ते तक पानी मिट्टी तथा कच्ची पत्तेदार भाजियों की उपयोगिता दिखाकर मैं अपने गाँव लौट आया।

सरकार की दमन नीति अन्य स्थानों की भाँति इस जिले में भी काफ़ी ज़ोर पकड़ती जा रही थी। यहाँ के श्री स्टब्स (Mr. Stubbs) नाम के अंग्रेज़ कलेक्टर से कई बातों पर मेरा मनमुटाव चल रहा था। इधर चिकित्सालय की नई इमारत के बनने का तथा रोगियों का काम भी बढ़ रहा था। फिर दिल्ली से कोषाध्यक्ष जी की धर्मपत्नी के इलाज के सम्बन्ध में हफ्ते से पहिले भी बुलावे आते रहते थे। मेरी स्त्री को रोगियों के रोगों के अनुसार भाँति भाँति के अलग भोजन तैयार करने से फुर्सत नहीं मिलती थी। इस तरह हम काम की अधिकता से कभी-कभी परेशान भी हो जाते थे। बापू को यह सब हाल मालूम रहता था। उन्होंने हमको गाँव में बाँध तो दिया था लेकिन स्वयं भी हमारी ओर से चिन्तित रहते थे। बारदोली से उन्होने लिखा:

( देखिये पन्ना— तीन सौ सात )

*From The Edinburgh School of Natural Therapeutics — Phone Edinburgh 21788I*

19th March, 1936

Dear Dr. Sharma,

Thank you for your most kind letter received this morning. We, too, have such happy memories of your visit and of the many helpful things you said. I have had a letter from my husband - he tells me he is well. He speaks of you, regretting so much that it had been made impossible for you to talk together.

I am sending a little gift of Scottish linen embroidered with the emblem of our country - the Thistle - which we shall all be glad if you will accept for your sister as a Souvenir of your visit to Edinburgh.

With renewed good wishes for the future and kindest messages from us all,

I am

Yours very sincerely,

James C. Thomson

E.S.N.T.
James C. Thomson
Principal
11 Drumsheugh Gardens
Edinburgh, 3

( देखिये पन्ना—दो सौ अड़तीस )

( देखिये पन्ना—तीन सौ नौ )

बारदोली
१३-१२-४१

चि० शर्मा,

तुमारा कैसे चलता है ? दिन कैसे जाता है ? मैं थोड़ा सा चिन्तित रहता हूं । मैं यहाँ ६ जनवरी तक हूँ ।

बापू के
आशीर्वाद

जीवन की कुछ ही घड़ियाँ विघ्न रहित कटने पाईं थीं कि झगड़े फिर प्रारम्भ हो गये । यहां के अँग्रेज़ कलेक्टर ने अजीब ढंग के फ़रमान जारी करने शुरू कर दिये । किसी भी प्रकार के इमारती सामान के इस्तेमाल पर रोक लगा दी गई । बांस, फूंस, बल्ली, चटाई आदि छोटी-छोटी चीज़ों तक के लिये तहसील के परमिट की आवश्यकता पड़ने लगी । हमारी संस्था के स्टोर में एकत्रित किये हुये इमारती सामान के उपयोग करने का भी मुझे हक़ नहीं रहा । उस सामान की फ़हरिस्त बनाकर तहसील में पेश कर देने के लिये मुझे आदेश मिल गये । यहां तक कि नागरिकों को मुर्दे के लिये भी बांस अथवा चटाई आदि की आवश्यकता पड़ती थी तो उसके लिये भी पहिले परमिट चाहिये था जिसके हासिल करने के लिये घंटों व्यतीत हो जाते थे । कलेक्टर के इस प्रकार के बेहूदे फ़रमानों से मेरा दम घुटने लगा और बापू को मैंने यह सब हाल लिख भेजा । मेरा वह ख़त बापू को रवाना ही हुआ था कि खुर्जा शहर में स्कूल और कालिजों के विद्यार्थियों पर बेगुनाह लाठी चार्ज हो गया । यह समाचार मिलते ही मैं स्वयं शहर गया तो देखा कि विद्यार्थी सड़क पर लेटे हुये थे और उनके बदन पर पुलिस की लाठियाँ पड़ रही थीं तथा स्कूल और कालिज के उच्च

अधिकारी गण तथा शहर के प्रतिष्ठित लोग सब हाथ बांधे ख़ामोशी से इस दृश्य को देख रहे थे। यह पागलपन के करतूत उस समय का एक डिप्टी कलक्टर श्री.........अपनी उपस्थिती में तथा अपने हुक्म से इस बेहयाई और बेरहमी से करवा रहा था मानों वह कभी किसी स्कूल या कालिज में पढ़ा ही न हो या उसने अपने बच्चों का कभी मुंह ही न देखा हो। सौभाग्य से उसके पागलपन का उसे जल्दी ही बोध हो गया हालाँकि उससे नौबत मेरी हाथापाई तक पहुँच गई थी। यह सब शिकायतें मैंने ज़िले के कलेक्टर को जाकर कीं लेकिन उसने अनसुनी कर दी। उसी दिन बापू को यह सब हालात एक दूसरे पत्र द्वारा मैंने लिखकर भेज दिये थे। उन मेरे दोनों पत्रों का बापू ने यह उत्तर दिया :

२१०

सेवाग्राम
ता० २५-५-४२

चि० शर्मा,

तुमारे दो ख़त मिले। हृदय द्रावक हैं मैं छोटी सी नोट "हरिजन" के लिये भेज रहा हूं देखें क्या होता है तुमारा धर्म ऐसे मौक़े पर मरने तक लड़ने का है कैसे यह यहाँ से नहीं बताया जा सकता है जैसे कि बांस मजरी लेवे और लाश उठा जाय, मकान बाँधते रहे इत्यादि। तुमने बाँधना बंद तो किया है अगर अब तक हुक्म जारी हैं तो नोटिस देकर बाँधना शुरू कर सकते हैं। हर चीज़ में मुझे पूछने की आशा न रक्खी जाय। मैं "हरिजन" में आजकल लिख रहा हूँ सो देखते होगे।

आशीर्वाद

— तीन सौ दस

( देखिये पन्ना—तीन सौ दस )

इसके बाद कलेक्टर को नोटिस देकर उसके वह सब लंगड़े क़ानून मैंने तोड़ दिये तथा इमारत के बनने का काम फिर जारी कर दिया और बापू को इसकी इत्तला दे दी। उस पर श्री किशोरीलाल मशरुवाले द्वारा बापू का यह संदेश मिला :

२११

सेवाग्राम
ता० ३०-५-४२

प्रिय शर्मा जी,

आपका पत्र मिला। पू० बापू जी को सुनाया। आपको उनका पत्र मिला होगा। और उसमें आपके विचार को उन्होंने अनुमोदन दिया है सो देखा होगा। ईश्वर आपकी सहायता में है।

आपका
किशोरीलाल मशरुवाला

इमारत के बनने का काम फिर शुरू होने पर कलेक्टर ने मुझे कुछ दिन के लिये जेल में बंद कर दिया तो मेरी स्त्री ने काम को बदस्तूर जारी रक्खा। उधर बापू ने 'हरिजन' द्वारा सरकार को लतारा तो अंत में कलेक्टर को अपने वह सब बेहूदा हुक्म वापिस ले लेने पड़े तथा हमारी इमारत का काम ज़ोरों से चलता रहा।

"करो या मरो" "Do or die" आन्दोलन के समय हमारी संस्था को भारी कष्ट उठाने पड़े। पुलिस ने हमारी चिकित्सा सम्बन्धी एक छोटे से गांव की संस्था की निगरानी करके अपने पागलपन का सबूत दिया; उधर सरकार ने बापू को "आग़ाखां महल" में बँद करके भारत में अपने रहने की अंतिम घड़ियों की प्रतिक्षा करनी प्रारंभ करदी; इधर हमारी संस्था के तीसरे ट्रस्टी श्री विचित्र

नारायण जैसे खादी कार्य कर्ता को भी गिरफ्तार करके इधर के सरकारी कर्मचारियों ने भविष्य में आम गिरफ्तारियाँ करने के अपने इरादे का मानों पूर्व परिचय दे दिया। ऐसे संकट काल में हमारे देश के व्यापारीवर्ग का अधिकांश भाग १६१४ की लड़ाई में जरमनी के यहूदियों की भाँति समय का अनुचित लाभ उठाकर दौलत इकट्ठा करने में जुट गया।

हमारी संस्था के कोषाध्यक्ष जी ने भी खादी के नाम से अपना व्यापार क्षेत्र इतना बढ़ा दिया कि उनके लिये इस ग़रीब संस्था के वास्ते तथा उनके प्रति इसको दी हुई सेवाओं के लिये समय की कोई पाबंदी क़ायम रखना उनके लिये असम्भव सा हो गया। इधर मैं अपनी परिस्थितियों वश उनकी सेवा के निमित नियत किये हुये समय से अधिक बार न तो दिल्ली जा सकता था और न वहां एक दिन से अधिक ठहर ही सकता था। अतः कोषाध्यक्ष जी की अपेक्षा प्रायः उनके दूसरे रोगी की ही देखभाल करके लौट आना पड़ता था। कोषाध्यक्ष जी को अब ऐसे सेवक की आवश्यकता थी जो उन्हीं के समयानुकूल तथा उन्हीं की इच्छानुसार दिल्ली ठहर कर उनकी सेवा कर सके। इन दो विपरीत परिस्थितियों के उत्पन्न होने से उन दो वर्षों में जो अनेक कड़ुवी गोलियाँ मुझे अपने गले उतारनी पड़ीं वह सब तो अब समय के परिवर्तन के साथ हज़म भी हो चुकी हैं अतः उनकी कड़ुवाहट का हाल लिखने से न तो कोई लाभ ही है और न इस पुस्तक का ऐसा उद्देश्य ही है। किन्तु प्रसंगवश उनमें से किसी का कोई हवाला भी न देने से बापू के अगले कुछ महत्वपूर्ण पत्रों का यहाँ छापना बेकार सिद्ध न हो इसलिये संस्था सम्बन्धी किसी २ बात का ज़िक्र सूक्ष्म रुप से यहाँ करना ही पड़ा है ताकि पाठक उन घटनाओं से उचित शिक्षा प्राप्त कर सकें।

हमारे ज़िले में श्री हार्डी नाम के कलेक्टर ने आकर भारी आतंक मचा दिया था उसने आते ही मेरे सब हथियार ज़ब्त कर लिये तथा उनमें से मेरी अति क़ीमती बन्दूक़ सरकारी महाफ़िज़ खाने में जमा न करके क़ानून के विरुद्ध उसे ख़ुद अपने निजी प्रयोग में ले ली। उस वक्त हमारी संस्था में एक लम्बी

इमारत की छत का लिन्टल पड़ने को था और मैं इस कलेक्टर के वास्तविक मन्शा को समझकर इस काम को जल्दी से जल्दी समाप्त कराने की फिक्र में था।

यों तो संस्था के ट्रस्टियों की प्रत्येक बैठक प्रारम्भ से ही दिल्ली में, कोषाध्यक्ष जी के मकान पर होने का सिलसिला पड़ गया था किन्तु उस वक्त की परि-स्थितियों को देखकर ट्रस्टियों की एक बैठक संस्था के भवन में करना आवश्यक था जिसके लिये २० अगस्त निश्चित हो चुकी थी। किन्तु कोषाध्यक्ष जी नहीं आये और एक हफ्ते बाद उनका यह पत्र आया :

२१२

दिल्ली
२७-८-४२

श्रीमान् डाक्टर साहब,

कार्ड आपका मिला। मौजूदा परिस्थितियों के कारण २० ता० को मैं न आ सका। मीटिंग आप मेरे मकान पर कर सकते हैं एक हफ्ते तक मैं बाहर नहीं जा रहा। आप आवें तब मशीन* लेते आना।

ल० ना० गाडोदिया

उपरोक्त आदेशानुसार इस आवश्यक मीटिंग के लिये मैंने ३१ अगस्त दिल्ली में उन्हीं के मकान पर रक्खी। लेकिन मेरा वह दिन भी उन्होंने अपनी चिकित्सा सम्बन्धी बातों में तथा निदान करने की 'मशीन' के प्रदर्शन कराने में ही व्यतीत कर दिया तथा संस्था सम्बन्धी आवश्यक कार्य फिर उनकी किसी अनुकूल तिथि के लिये उन्होंने स्थगित कर दिया। इसी तरह अनेक बार यह खेल होता रहा। यहां तक कि कोषाध्यक्ष जी को खुर्जा में भी अपने खादी

*आइरिस-माइक्रोस्कोप-नेत्रों द्वारा रोग निदान करने का यंत्र।

व्यापार के सिलसिले में आना जाना रहता था। किन्तु शहर तक आने पर भी संस्था की ओर वह कोई भी ध्यान न देकर तत्सम्बन्धी किसी विषय पर बात भी करने के लिये मुझे दिल्ली आने का ही आदेश दे जाते थे।

आख़िर दो अक्तूबर कों वह अपने 'गाडोदिया ग्रामोद्योग ट्रस्ट' नाम की अपनी खुर्जा की शाखा का उद्घाटन करने सपत्नी खुर्जा शहर आये तो उनकी धर्म पत्नी के आग्रह पर वह पहिली बार पन्द्रह मिनिट के लिये हमारी संस्था में पधारे और वहाँ भी अपनी चिकित्सा सम्बन्धी कुछ आवश्यक वस्तु लेकर बिना कुछ देखे भाले ही बनती हुई इमारत पर अपना संतोष प्रगट कर दिया। उन दिनों हमारे कोषाध्यक्ष जी को सरकार ने बन्दूक़ का एक लाइसेन्स स्वीकार किया था अतः उन्हें बन्दूक़ की ज़रूरत थी। इस सिलसिले में मेरी ज़ब्त हुई बन्दूक़ को लेने की कुछ बातें करके तुरन्त दिल्ली चले गये तथा मुझे फिर दिल्ली आने का आदेश दे गये। यहां तक कि हमारी संस्था के कुछ ग़रीब रोगी भी उनके दर्शन करने को तरसते रह गये। उनके इस लापरवाही के व्यवहार मानों मेरा दम घुटने लगा और मैं अशांत हो उठा और उनके द्वारा संस्था को कोई लाभ होता न देखकर उसी दिन मैने श्री जाजू जी को यह निम्न तार भेज दिया तथा उसकी एक कापी कोषाध्यक्ष ज़ी को भी सूचनार्थ भेज दी।

213

**Khurja.** **2-10-42.**

Krishnadass Jajuji, Wardha.

Institution in danger due general arrests. Gadodiaji proved absolutely careless and selfish Intervene. Come or select new trustee, Wire please.

Sharma.

अखिल भारत चर्खा संघ
All India Spinners' Association
वर्धा

पत्र संख्या 2045 WARDHA ...194

8th Oct, [illegible]

Dear Dr. Sharmaji,

Your telegram addressed to Pujya Bajajji has been received by this office yesterday. You are perhaps aware that Pujya Bajajji has been arrested in the last month and his advice cannot be obtained from jail. We shall, however show your telegram to the Secretary, Gandhi Seva Sangha, if he can do anything in this matter. He has gone to Bombay and shall probably return here tomorrow.

Yours sincerely,

J. M. Bhatt
Secretary

( देखिये पन्ना—तीन सौ पन्द्रह )

२१३

खुर्जा                                                                 २-१०-१९४२

कृष्णदास जाजू जी, वर्धा

सार्वजनिक गिरफ्तारियों के कारण संस्था ख़तरे में है। गादोदिया जी बिलकुल लापरवाह और स्वार्थी निकले आपका मध्यस्थ होना जरूरी है स्वयं आइये या नया ट्रस्टी चुन लीजिये कृपया तार द्वारा सूचित कीजिये।

शर्मा

अभाग्यवश श्री जाजू जी भी उधर गिरफ्तार हो चुके थे जैसा कि उनके दफ्तर से आये हुये नीचे के पत्र से मुझे मालूम हुआ :

214

Wardha,
8th. October, 1942

Dear Sharmaji,

Your telegram addressed to Jajuji has been received by this office yesterday. You are perhaps aware that Pujya Jajuji has been arrested in the last month, and his advice cannot be obtained from jail. We shall, however, show your telegram to the Secretary Gandhi Seva Sangh if he can do

any thing in this matter. He has gone to Bomba
and shall probably return here tomorrow.

Yours Sincerely
J. M. Bhatt. Sec.

२१४

वर्धा
८ अक्तूबर १९४२

प्रिय शर्मा जी,

आपका तार पूज्य जाजू जी के नाम इस दफ़्तर में कल पहुँचा। आपको कदाचित मालूम होगा कि पूज्य जाजू जी पिछले मास में गिरफ़्तार हो गये और जेल से उनका परामर्श प्राप्त नहीं हो सकता। फिर भी हम आपका तार गांधी सेवा संघ के सेक्रेटरी को दिखा देंगे। देखें, वह इस मामले में क्या कर सकते हैं। वह बम्बई गये हुए हैं और कदाचित कल लौटेंगे।

आपका शुभचिन्तक
जे० एम० भट्ट
सेक्रेटरी।

वर्धा से फिर कोई समाचार नहीं आये और कोषाध्यक्ष जी मेरे उपरोक्त तार देने से बिगड़ गये जैसा कि उनके पत्रों से आगे ज्ञात हुआ। कुछ दिन बाद संस्था की बनती हुई इमारत के लिये सदा की भाँति जब उनको संस्था का रुपया भेजने के लिये लिखा गया तो उन्होंने यह उत्तर दिया :
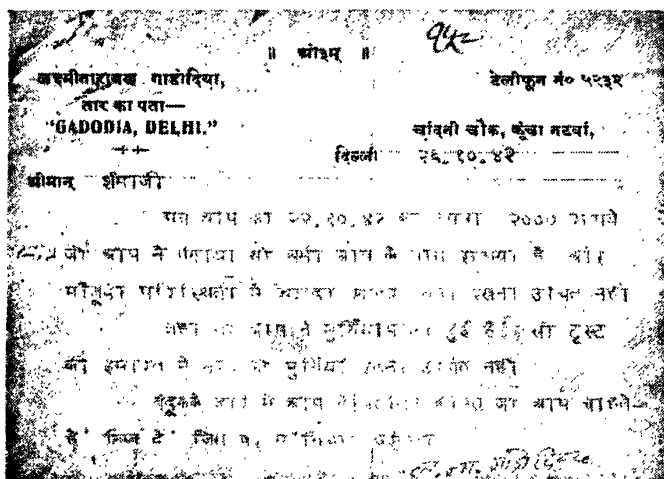
दिल्ली
२६-१०-४२

श्रीमान शर्मा जी,

पत्र आपका २२-१०-४२ का मिला। दो हज़ार रुपये जो आपने मांगे सो अभी आपके पास रुपया है और मौजूदा परिस्थितियों में ज्यादा रुपया वहाँ रखना उचित नहीं।

वहाँ जो आपने मुर्गियां पाली हुई हैं सो ट्रस्ट की इमारत में आपको मुर्गियाँ रखनी उचित नहीं।

बन्दूक़ के बारे में आप डेफिनिट क़ीमत जो आप चाहते हैं लिख दें जिस पर मैं विचार करूँगा।

डा० हीरालाल शर्मा — ल० ना० गोडोदिया
नवाबाद—खुर्जा।

संस्था की गोशाला में गऊओं तथा बैलों की सफ़ाई के लिये तीन मुर्गियां रक्खी हुई थीं। उनके रखने का उन्हें कारण लिख भेजा तथा बैंक का हिसाब भेज दिया। और साथ ही अपनी बन्दूक के बारे में लिख दिया कि 'उसको कलेक्टर के कब्जे से तो निकाल ही लेना चाहिये। क़ीमत का पता नहीं है वह तो बाद में भी हल हो सकेगा।' इसपर कोषाध्यक्ष जी ने लिखा :

—तीन सौ सत्तरह

२१६

दिल्ली
३०-१०-३२

श्रीमान शर्मा जी,

पत्र आपका मिला। बन्दूक़ का दाम मुझे नहीं लिखना। मुर्गियों की बाबत मैं आपके उत्तर से संतुष्ट नहीं। आपसे मेरा सहयोग संभव नहीं और मैं आपको रुपया नहीं भेज सकता।

ल० ना० गाडोदिया

मैंने उन्हें फिर लिखा कि वह अपने व्यक्तिगत द्वेश को संस्था के कार्य से अलग रखकर अपनी ज़िम्मेदारी का खयाल करते हुये संस्था के प्रति अपना सहयोग जारी रक्खें तो अच्छा है। इसका उत्तर उन्होंने दिया :

२१७

दिल्ली

प्रिय डा० शर्मा,

पत्र आपका मिला। मुझे आपके प्रति व्यक्तिगत द्वेष स्वप्न में भी नहीं है फिर भी मैं जो कुछ लिख चुका हूँ उन विचारों में कोई परिवर्तन नहीं। सेठ घनश्यामदास बिड़ला आजकल यहीं हैं उनसे आप मिल लें वह कहें तो मैं रुपया दे दूंगा।

डा० हीरालाल शर्मा
नवाबाद, खुर्जा।

भवदीय
ल० ना० गोडोदिया

—तीन सौ अड़सठ

सेठ घनश्यामदास बिड़ला से हमारी संस्था के कोष का न तो कोई सम्बन्ध था और न उन जैसे बड़े व्यक्ति के पास संस्था की इमारत में तीन मुर्गियों के रखने या न रखने का बेढंगा प्रश्न लेकर जाना मैं उचित समझता था। अतः मैंने कोषाध्यक्ष जी के गुस्से को स्वतः शांत होने के लिये छोड़ दिया तथा संस्था की इमारतों का काम बदस्तूर जारी रक्खा। यहाँ मेरी स्त्री ने अपने स्त्री धन का लगभग ३,००० रु० संस्था को देकर उसकी छतों के लिन्टल का कार्य समाप्त करा दिया और वह रक़म बाद में संस्था मे ही विलय हो गई जैसा की ओडिट रिपोर्ट में दिखाया गया।

यहां देखने योग्य बात यह थी कि इतना विरोध करते हुए भी हमारे कोषाध्यक्ष जी अपने निजी स्वार्थ को नहीं भूल पाये। उनसे पत्र-व्यवहार बन्द हुये अभी दस दिन ही हुये थे कि उनकी धर्मपत्नी के लिये मुझे औषधियां तुरन्त भेजने का आदेश इस तार द्वारा प्राप्त हुआ :

218

Delhi 15th. Nov. 1942

Doctor Hiralal sharma, Khurja.
Send medicines immediately.

Gadodia.

२१८

दिल्ली १५ नवम्बर, १९४२

डा० हीरालाल शर्मा, खुर्जा
औषधियां तुरन्त भेजिये।

गाडोडिया

—तीन सौ उन्नीस

संस्था की इमारत का आवश्यक भाग बन जाने पर कोषाध्यक्ष जी को कुछ बोध हुआ और ढाई महीने बाद उन्होंने संस्था की बैंक के नाम संस्था के कोष में से दो हजार रुपये का निम्न ड्राफ्ट भेज दिया तथा मेरी बन्दूक खरीदने की भी कुछ चर्चा चलाई लेकिन उसका समय बीत चुका था अर्थात मुझे उसे बेचने की एक वर्ष की अवधि समाप्त हो चुकी थी और हार्डी कलेक्टर उसे खुद हज़म कर चुका था ।*

219

Ref: 082

Delhi,
11th. Jan. 1943

Dr. Hiralal Sharma,
Surya-Chikitsalaya and Dadheech Seva Sangh,
Nawabad, Khurja.

Dear Sir,

We are enclosing herewith D/Draft. No. 26/3 on the Central Bank of India for Rs. 2000/-

Please acknowledge receipt.

Yours faithfully,
For Prop: L. N. Gadodia
Shankerlal.

*स्वर्गीय श्री रफ़ीअहमद किदवई ने भी अपनी होम मिनिस्ट्री के समय मेरी बन्दूक़ निकालने का प्रयत्न किया लेकिन वह निकाल न पाये। तदन्तर उन्हें मेरे हथियारों के लिये नये लाइसेन्स देने के आदेश जारी करने पड़े।

Telephone: 5232

Telegram: "GADODIA" DELHI.

**L. N. GADODIA & SON LTD.**

Registered Office: BOMBAY

Branches: Ahmedabad, Delhi, Amritsar, and Cawnpore.

P. BOX NO. 17

Gadodia Buildings Chandni Chowk,

Delhi 11th January, 1943.

Ref: 082

Dr. Hiralal Sharma,
Surya Chikitsalaya & Dadhich Seva Sangh,
Nawabad,
Khurja.

Dear Sir,

We are enclosing herewith D/Draft No.26/3 on The Central Bank of India for Rs.2000/-.

Please acknowledge receipt.

Yours faithfully,
Per Pro. L. N. Gadodia & Son Ltd.
[signature]

( देखिये पन्ना—तीन सौ इक्कीस )

रेफ० ०८२

दिल्ली
११ जनवरी १६४३

डा० हीरालाल शर्मा,
सूर्य चिकित्सालय तथा दाधीच सेवा संघ,
नवाबाद, खुर्जा।

प्रिय महोदय,

हम इसके साथ सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के नाम २००० रु० का डी ड्राफ्ट नं० २६।३ भेज रहे हैं; कृपया पाने की सूचना दें।

आपका शुभचिन्तक,
वास्ते प्रोप्राइटर एल० एन० गाडोडिया
शंकरलाल।

संस्था की ओर से उपरोक्त ड्राफ्ट तथा पत्र का कोषाध्यक्ष जी को धन्यवाद भेज दिया गया तथा एक लम्बा पत्र उनकी धर्मपत्नी के नाम मैंने भेजा जिसमें कोषाध्यक्ष जी के पिछले बर्तावे का कड़े शब्दों में विरोध प्रगट करते हुए उनसे प्रार्थना की कि वह मेरा पत्र कोषाध्यक्ष जी को सुना दें तथा संस्था ने जो उनकी सेवाएँ की हैं उनका उचित पारितोषिक भी उसके पोषण के लिये भेजने की कृपा करें।

उधर 'आग़ा खाँ महल' में बापू का तीन हफ्ते का ऐतिहासिक अनशन दस फरवरी की दोपहर से प्रारम्भ होने के समाचारों से देश में बड़ी उदासी छा गई

थी। उपवास शुरू होते ही बापू का स्वास्थ्य एक दम गिरने लगा यहाँ तक कि एक दिन यह अफ़वाह भी उड़ने लगी कि सरकार ने उनके दाह संस्कार के लिये काफ़ी परिमाण में चंदन की लकड़ी जमा करली थी। जब २० फरवरी के बुलेटीन में यह बतलाया गया कि बापू की हालत ख़राब हो गई है और बहुत गंभीर है तो हार्डी कलेक्टर ने २१ फरवरी को बिना किसी अपराध के मुझे मेरे गाँव में नज़र बन्द कर दिया जिसके कारण मैं अपने नियत समय पर अपने रोगियों की ख़िदमत के लिये दिल्ली न जा सका। किन्तु ईश्वर की कृपा से ३ मार्च को बापू का उपवास निर्विघ्न समाप्त हो गया तथा किसी अप्रिय घटना के होने से देश बच गया। इसी प्रकार के अनेक मानसिक कष्टों के साथ हमारा वह मुसीबत का वर्ष भी समाप्त हुआ। उधर कोषाध्यक्ष जी की धर्मपत्नी ने, मेरे नियत समय पर दिल्ली न पहुँचने से तथा मेरे उपरोक्त पत्र के उत्तर में, मुझे यह पत्र लिखा :

२२०

दिल्ली
२६-३-४३

श्रीमान् शर्मा बन्दे,

आपने एक हफ़्ते तक आने के लिये कही थी और आज बारह दिन हो गये क्या आकर चले गये अथवा किसी कार्यवश बालकों को बुला ही लिया गया आप नहीं आ सके?

आपने अपने मन में मैल नहीं रक्खा यह तो ठीक ही किया। शुद्ध आत्मा रखने वाले को चाहिये भी वैसा ही। मैंने चिट्ठी उन्हें* सुना दी थी तो वह कहने लगे कि हमें उसमें ज़रा भ्रम हो गया था कोई बात

---

*अपने पतिदेव को अर्थात् संस्था के कोषाध्यक्ष जी को।

POST CARD

ADDRESS ONLY

( देखिये पन्ना—तीन सौ बाइस )

नहीं जब वह मिलेंगे सफाई हो जायगी। खैर यदि तुम्हें अब न आना हो तब मैं तो बुलाऊँगी नये सम्वत् में। इस बीच मेरा नतीजा लिखने का प्रयत्न कर लें ताकि मुझे रास्ता चलने में रुकावट न हो मैं आपके प्रोग्राम के अनुसार ही चलती रहूँ। अत्र कुशलमं तत्रास्तु।

तुम्हारी बहन,
सरस्वती गाडोदिया।

पूँजीपतियों का सम्वत् शुरू अप्रैल में बदलता है जब वह अपने मुनाम, गुमाश्तों तथा अन्य सेवकों को उनकी सेवाओं के अनुसार पारितोषिक के रूप में कुछ धन बाँट देते हैं। मेरी संस्था के ग़रीब रोगियों के लिये मुझे पैसे की बड़ी आवश्यकता थी। अतः मैं बड़े चाव से नये सम्वत् की प्रतिज्ञा करने लगा। किन्तु दरिद्रों की अभागी संस्था के लिये सम्वत् अच्छा नहीं आया और भविष्य में पूर्ण रूप से आराम हो जाने पर संस्था के लिये भरपेट धन देने की आशा दे दी गई। हताश होकर मुझे बम्बई तथा शोलापुर के रोगियों का निमंत्रण स्वीकार करके १५ दिन के लिये अपने ग़रीब रोगियों के ख़ातिर बाहर जाना पड़ा जहाँ से लगभग २०००) रु० लाकर मैंने संस्था के खाते में जमा कराया जिससे संस्था का काम एक वर्ष तक चल सका जैसा कि ओडिट रिपोर्ट में आगे दिया है।

•

अब बापू आग़ा खां महल से सेवाग्राम आ गये थे। हमारे कोषाध्यक्ष जी अपने किसी व्यापार के सिलसिले में बम्बई जा रहे थे। रास्ते में सेवाग्राम में बापू से भी उन्होंने मिल लेना उचित समझा। इधर ६ अक्तूबर को कोषाध्यक्ष जी के यहाँ का दिल्ली से मुझे यह तार मिला :

221

Delhi, 6th. Oct. 1944

Dr. Hiralal Sharma, Khurja.
Mother ill come immediately.

Ramoomal Gadodia.

२२१

दिल्ली ६ अक्तूबर, १९४४

डा० हीरालाल शर्मा, खुर्जा।
माता जी बीमार हैं शीघ्र आइये।

रामूमल गाडोदिया।

उपरोक्त आदेशानुसार मैं दिल्ली में दो दिन कोषाध्यक्ष जी की धर्मपत्नी की सेवा सुश्रुषा करके अपने गाँव वापिस आया तो चार अक्तूबर का लिखा हुआ बापू का यह निम्न पत्र मुझे मिला :

२२२

सेवाग्राम
४-१०-४४

चि० शर्मा,

तुमको लिखना चाहता था इतने में गाडोदिया जी आगये।

—तीन सौ चौबीस

चित्र—३८

लेखक—बापू की छाया में
( देखिये पन्ना—तीन सौ पचीस )

चित्र—३६

लेखक के खिलाड़ी पुत्र—चि० देवी प्रसाद
को बापू के आशीर्वाद

चि देवी को
बापूके आशीर्वाद
२९-१०-४४

**तुम्हारे काम से उनको कुछ संतोष नहीं है वे कहते हैं कुछ काम होता नहीं। मैंने कहा ऐसा हो नहीं सकता। सही क्या है ? आ सकते हो तो थोड़े दिनों के लिये यहाँ आजाओ।**

बापू के
आशीर्वाद

यह है रचनात्मक कार्यकर्ताओं की वह दुनियां जहां उन्हें ग़रीबों के बीच काम करना है तथा ज़िन्दा रहते हुए मरने का अभ्यास करना है। कोषाध्यक्ष जी के इस अमल से मुझे आश्चर्य तो हुआ ही अपितु मैं धर्म संकट में भी पड़ गया। "इस तुच्छ गन्दे तथा दुर्गन्धित कॉंड का 'सही क्या है' इसका बापू को क्या कहूंगा" ! "इस लम्बी दुःखभरी कहानी को सुनाने में उनका समय लैने का साहस भी कैसे होगा !" इसी प्रकार की अनेक उधेड़बुन में मैं सेवाग्राम बापू के पास पहुँच गया।

बहुत प्रयत्न किया कि संस्था सम्बन्धी बातों का सूक्ष्म हाल कम से कम समय में ब्यान देकर ख़त्म करदूँ लेकिन बापू को इतने से कहाँ चैन मिलने वाला था। अतः १९४१ से १९४४ तक की फ़ाइलों का पूर्णतया उन्हें निरीक्षण करने के लिये तथा कोषाध्यक्ष जी के परिवार के प्रति संस्था की सेवाओं के सम्बन्ध में जो पत्र-व्यवहार हुआ था वह सब उनके सामने रख दैने के लिये मैं विवश हो गया; तब कहीं जाकर बापू को संतोष हुआ और उन्होंने मामले को वहीं समाप्त कर देना चाहा। किन्तु मैंने कोषाध्यक्ष जी से संस्था की सेवाओं के उचित पारितोषिक की मांग क़ायम रक्खी। इसपर बापू ने यह कहकर मुझे संतोष दे दिया कि वह तत्सम्बन्धी मेरी सब बातें कोषाध्यक्ष जी को लिखकर भेजेंगे। मैं खुश हो गया। और अपने गाँव चला आया। लेकिन जब दो महीने तक इस सम्बन्ध में कहीं से कोई समाचार नहीं मिले तो मैंने बापू को लिखा कि "धनाभाव के कारण संस्था को भारी कष्ट उठाने पड़ रहे हैं। यदि कोषाध्यक्ष जी संस्था का प्रबन्ध अपने हाथों में ले लें तो मैं संस्था की इस

कमी को पूरी करने का प्रयत्न कर सकता हूँ और उसमें मुझे अधिक प्रसन्नता रहेगी।" इस विषय पर मैं और अधिक बातें करने के लिये सेवाग्राम जाना भी चाहता था। किन्तु कोषाध्यक्ष जी के केवल दो शब्दों से शुरू में बापू जितने अधीर हुए प्रतीत होते थे वह सब सही हाल जान लैने के बाद संस्था की उचित मांग के विषय में उतने चिन्तित होते प्रतीत नहीं हुए और उन्होंने साधारण सा यह पत्र लिख भेजा :

२२३

सेवाग्राम
१६-१-४५

चि० शर्मा,

तुमारा ख़त मिला। मैंने अब तक तुमारी कही सब बात गाडोदिया जी को लिखी नहीं है कारण तो अनावकाश ही था। लेकिन ऐसी बात होते हुए तुम उनके मातहत जाना चाहते हो? क्या यह अच्छा नहीं कि तुम जैसे हो ऐसे रहो वे लोग दख़ल न दें और तुम अपने धनिक मरीज़ों से धन पैदा करो और वहाँ काम करो और आगे क़दम चलो। यहाँ आना है तो अवश्य आ जाओ लेकिन मैं अनावश्यक मानता हूँ ख़तों से सब काम हो सकेगा।

बापू के
आशीर्वाद

किसी सार्वजनिक संस्था में काम करने के लिये अफ़सरी या मातहती के प्रश्न की तो मेरी दृष्टी में कोई अहमियत नहीं थी किन्तु संस्था का संचालक ट्रस्टी होने के नाते किसी धनिक मरीज़ पर उसकी सेवाओं का उचित पारितोषिक छोड़ देने को भी मैं तैयार नहीं था। अतः बापू को यह सब लिखते हुये मैंने उन्हें यह भी संकेत किया कि कोषाध्यक्ष जी को लिखने के लिये यदि बापू के

तो धन पैदा करो और
वहां काम करो और
आनो का हल पढ़ो.
यहां आना है तो अवश्य
आ जाओ. लेकिन मैं
अनावश्यक मानता हूं.
स्वतंत्र रह कर काम हो
सकेगा.

बापु के आशीर्वाद

( देखिये पन्ना—तीन सौ छब्बीस )

पास अवकाश न हो तो मैं स्वयं संस्था की सेवाओं का मुआवज़ा उनसे ले सकूँगा। इस पर बापू कुछ दुविधा में पड़ गये प्रतीत हुये और मुझे यह पत्र लिखा :

२२४

सेवाग्राम
२८-१-४५

चि० शर्मा,

तुमारा खत मिला। अगर तुमारे सब कुछ गाडोदिया जी के हस्तक करना है तो करो तब मुझे उसमें मत डालो। मैं तो उनको तुमको कहा था ऐसा ही खत लिख सकता हूँ। अब मैं कुछ नहीं लिखूँगा तुमारे करना है सो करो। मुझको इजाज़त दोगे तो मैं ज़रूर लिखूँगा। तब वे सब कारोबार छोड़ देंगे। जैसे कहो ऐसा करूँ।

बापू के
आशीर्वाद

देश में धनी वर्ग के व्यक्तिगत स्वभावों से तथा उनकी मनोवृत्तियों से बापू को गहरा अनुभव था। क्योंकि उनका सम्पर्क धनी वर्ग से काफ़ी रहता था। किन्तु मेरे विचार से कोषाध्यक्ष जी ने शोषण करने के अतिरिक्त हमारी संस्था का कोई और काम नहीं किया था इसलिए यदि उनके प्रति की हुई सेवाओं का उचित मुआवज़ा मांगने मात्र से ही वह 'सब कारोबार छोड़ देंगें' तो मैं उसमें संस्था का कोई दोष भी नहीं मानता था। लेकिन बापू के उपरोक्त पत्र में मुझे स्वयं कोई सीधी कार्यवाही न करने की काफी गुंजाइश दीख पड़ी। अतः मैंने उनको अपने विचार लिखकर यह विनम्र प्रार्थना की कि 'वह जो चाहें सो करें लेकिन संस्था की सेवाओं का उसे उचित मुआवज़ा मिल ही जाना चाहिये'। इस पर बापू ने इस मामले को तुरन्त श्री जाजू जी तथा श्री गांधी आश्रम मेरठ के मैनेजर—श्री विचित्र नारायन जी को सौंप दिया। उधर श्री जाजू जी ने भी

तत्सम्बन्धी अपना कार्य भार श्री विचित्र नारायन जी को ही देते हुये उनको हमारी संस्था का आँखों देखा हाल भेजने का आदेश दिया।

१६ तारीख़ को श्री विचित्र नारायन जी की मुझे यह सूचना मिली कि वह हमारी संस्था का तथा तत्सम्बन्धी अन्य सब बातों का स्वयं निरीक्षण करना चाहते हैं। संस्था ने उसी समय उन्हें तार द्वारा निमंत्रण भेज दिया। उन्होंने यहाँ गांव में आकर दो दिन क़याम किया तथा संस्था का आँखों देखा सब हाल १८ तारीख़ को मेरठ से बापू को तथा जाजू जी को लिख कर भेज दिया और अपनी रिपोर्ट की एक नक़ल हमारी संस्था को भेजी। उसमें संस्था की इमारत का पूर्ण विवरण तथा ग़रीब रोगियों के इलाज और उनके खाने पीने की व्यवस्था के विषय में विस्तार पूर्वक लिखते हुए संस्था की आमद तथा ख़र्च का इस प्रकार ब्योरा दिया :

२२५

श्री गांधी आश्रम, मेरठ
१८-११-४४

पूज्य जाजू जी,

आपका खुर्जा के औषधालय की रिपोर्ट के सम्बन्ध में पत्र पाते ही मैंने डा० शर्मा को लिख दिया था। उनका तार परसों मुझे वहाँ बुलाने को मिला था। कल मैं वहाँ गया था। आज आपको उसकी बाबत रिपोर्ट दे रहा हूं।..................................

हिसाब यहां का तीन बार ओडिट हुआ और ठीक पाया गया। अब तक कुल २१४०४ रु० पौने आठ आने की आमदनी है। जिसमें मोटी रक़में निम्न हैं।

१५००० रु० बापू जी से इमारत के लिये।

३१४७ रु० साढ़े आठ आने (संस्था के कोष से रुपया न मिलने के कारण) डा० की धर्मपत्नी का लगा।

१००० रु० रोगियों से।

२२०२ रु० हाल में डा० साहब द्वारा (बम्बई तथा शोलापुर के) रोगियों से।

५५ रु० पौने आठ आने—पुस्तकों की बिक्री आदि से।

खर्च की ओर—

१६७३२ रु० ढ़ाई आना तथा
१२७८ रु० पौने आठ आने। } इमारत में।

६६३ रु० ३ आने—गाड़ी आदि।
१०८ रु० आठ आने—रजिस्ट्रेशन।
२८ रु० पौने सात आने—पोस्ट।
१६६ रु० पन्द्रह आने—रौशनी।
१०७ रु० तीन आने—पुस्तकालय।
२०३ रु० ढाई आने—सफर।
२४ रु० साढ़े चार आने—बाग़।
६ रु० साढ़े चौदह आने—बैंक कमीशन।
३२ रु० नौ आने—स्टेश्नरी।
५ रु० साढ़े चार आने—लगान ज़मीन।
१२ रु० आठ आना—एडवांस।
२०१६ रु० पौने चार आना—बैंक में।
१२ रु० ग्यारह आना—रोकड़।

……माहवारी खर्च काफ़ी कम है। जो बड़े खर्च हैं वे भी मासिक बहुत ज्यादा नहीं मालूम होते। जैसे १४ रु० पांच आने गाड़ी खर्च। २६ रु० कृषि अर्थात बैलों का ख़र्चा। ख़र्च व रोगियों का हिसाब लगाने में यह भी स्मरण रखना होगा कि बीच में डा० साहब को बाहर भी रहना

—तीन सौ उनतीस

पड़ा है जैसे कुछ समय जेल में या कुछ दिनों बीच में अन्यत्र रहे। पर कुछ खर्च ऐसे थे जो बाद में भी मुतवातिर होते रहे।...........

भवदीय
विचित्र नारायन

बापू अपने स्वास्थ्य के कारण उन दिनों पँचगनी गये हुए थे। श्री विचित्र नारायन की रिपोर्ट पढ़ने के बाद जो उन्होंने पत्र लिखा उसकी यह एक नक़ल बापू ने हमारी संस्था को भेज दी :

२२६

नकल — पंचगनी
डा० शर्मा, — ६-६-४५

चि० विचित्र,

तुमारा ख़त मिला। समस्या कठिन है। गाडोदिया जी से तुम निडर होकर पत्र-व्यवहार करो और लिखो कि वह क्या चाहते हैं। वह निकलना चाहे तो निकलें। जाजू जी से भी पूछो। डा० शर्मा किन की नियुक्ति चाहते हैं सो जानना। समय बचाने के लिये एक पत्र से ही चला लेता हूं नहीं तो तीन पत्र लिखने पड़ते।

बापू के
आशीर्वाद

बापू के उपरोक्त पत्र से श्री विचित्र नारायन को कोषाध्यक्ष जी के साथ तत्सम्बन्धी पत्र व्यवहार करने का साहस हुआ और उन्होंने उनको जो पत्र लिखे उनकी जो प्रतिलिपियां हमारी संस्था में आईं वह यह हैं :

श्री गाँधी आश्रम, मेरठ
ता० १३-६-४५

श्री लक्ष्मी नारायन गोडोदिया जी,
चांदनी चौक देहली।

प्रिय गोडोदिया जी,

पिछली बार जब सूर्य चिकित्सालय की बैठक हुई तो आपके दर्शन नहीं हो सके। मैं जब जेल चला गया था तब जो मीटिंग हुई उनमें मैं हाज़िर नहीं हो सका इससे चिकित्सालय के सम्बन्ध में आपसे कभी भी विचार विनिमय का सुअवसर नहीं मिला। एक संस्था के ट्रस्टी होने के नाते हम लोगों के लिये यह दु:ख की ही बात है।

सम्भवत: आप अनिच्छा से ही न आये हों क्योंकि डा० शर्मा से जैसा मालूम हुआ है आपके और उनके बीच में काफ़ी मतभेद बढ़ गया है। बात पूज्य बापू तक भी जा चुकी है आपने ही शायद बापू का ध्यान इधर आकृष्ट किया।

जो भी हो यह स्थिती ट्रस्ट के लिये शोभनीय नहीं है। हम सिर्फ तीन व्यक्ति इस संस्था के ट्रस्टी हैं। और अगर हम तीन भी मिलकर काम नहीं कर सकें तो ट्रस्ट के लिये कैसे सुन्दर भविष्य की आशा की जा सकती है। मैंने इन्हीं आशंकाओं को लेकर एक पत्र पूज्य बापू जी को लिखा था उसकी प्रतिलिपी आपकी सेवा में भेजता हूं पूज्य बापू जी का जो पत्र आया है उसकी प्रतिलिपी भी साथ में भेजता हूँ पूज्य बापू जी का आदेश पाकर ही आपकी सेवा में पत्र लिख रहा हूँ।

पूज्य बापू जी ने आपको इस ट्रस्ट का भार लेने का कष्ट कुछ आशाओं को लेकर ही दिया था। आपकी दिलचस्पी भी इस तरह के

प्रयोगों में है। तो क्या यह सम्भव है कि आपका तथा डा० शर्मा का खुला सहयोग एक दूसरे को प्राप्त हो सके ? मेरी धारणा ऐसी है कि अगर आप दोनों व्यक्ति इच्छुक हों तो परस्पर सहयोग हो ही सकता है। इस विषय में अगर मेरी सेवाओं को आप किसी भी तरह उपयोग कर सकते हैं तो मुझे बहुत आनन्द होगा। मैं आपकी सेवा में आकर आपकी बात समझने के लिये समय दे सकूँगा यदि आप इससे कोई लाभ होता देखें।

डा० शर्मा का पत्र आपको मालूम ही है। जहां तक पूज्य बापू जी से आप ने क्या कहा था यह बात ऐसी है जो छोड़ी जा सकती है। पूज्य बापू के पास हमारी कोई भी बात जाय उसकी शिकायत हममें से कोई भी नहीं कर सकता।

दूसरी बात डा० शर्मा की है कि उन्होंने आपकी तथा बहन सरस्वती देवी की इधर दो तीन साल से सेवा की है और चूंकि उनका समय तो अब चिकित्सालय का है इसलिये उस सेवा का मुआवजा चिकित्सालय को आपकी ओर से मिल जाय।

मेरा विश्वास है इसमें भी आपको कोई आपत्ति न होगी क्योंकि आप इसे उचित ही समझेंगे और ईश्वर के अनुग्रह से आपको किसी किस्म का अभाव भी नहीं। आसानी से ऐसा कर सकेंगे। इसके अलावा भी कोई प्रश्न होगा तो वह सामने आ ही जायेगा।

इस विषय में आपका क्या विचार हैं लिखने की कृपा करें इस पत्र की एक प्रति मैं पूज्य बापू को तथा पूज्य जाजू जी को भेज रहा हूं।

भवदीय
विचित्र नारायन

उसी तारीख को श्री विचित्र नारायन ने यह निम्न पत्र मुझे लिखा :

२२८

मेरठ
१३-६-४५

प्रिय भाई शर्मा जी,

पूज्य बापू जी को पत्र लिखा था । उसका उत्तर* आपकी सेवा में भेज रहा हूं । पूज्य बापू के आदेशानुसार गाडोदिया जी को लिख रहा हूं । मैं जानता हूँ आप इस सब को समय का अपव्यय समझते होंगे । आपको गाडोदिया जी से कोई आशा नहीं । पर मेरी धारणा है उन्हें अवसर देना चाहिये । इससे इस विषय में आप मुझे थोड़ी स्वतन्त्रता अवश्य देंगे । हां आपका काम न रुके और एक चौथा व्यक्ति हम ट्रस्टी रख लें इस विषय में पूज्य बापू जी की इच्छा से पूज्य जाजू जी से परामर्श कर रहा हूँ । अगर कोई व्यक्ति हो तो मुझे लिखें । यह कहने की जरूरत तो शायद अब नहीं कि जिन व्यक्ति का नाम आप सुझावें वह काफ़ी परखे हुए व्यक्ति हों ताकि आपके काम में फिर कोई रुकावट न पड़े ।

भवदीय
विचित्र नारायन

कोषाध्यक्ष जी की तरफ से श्री विचित्र नारायन को जब कोई उत्तर उनके पत्र का नहीं मिला तो उन्होंने यह दूसरा पत्र मेरे किसी अन्य पत्र के उत्तर में देहरादून से मुझे भेजा :

*बापू अपने पत्र की नक़ल स्वयं मुझे भेज चुके थे ।

श्री गांधी आश्रम मेरठ।
२३-७-४५
( देहरादून से लिखा )

प्रिय डा० साहब,

आपका पत्र मुझे देहरादून मिला। मैं आगामी बुद्धवार तक मेरठ जा रहा हूं। आपके ट्रस्ट की बाबत जाजू जी का पत्र आया था कि अगर गाडोदिया जी ने स्तीफा नहीं दिया है तो चौथा ट्रस्टी मुक़र्रिर कर लेना चाहिये। मैंने आपकी राय भी उन्हें लिख दी थी कि डाक्टर साहब खुर्जा के ही किसी ऐसे व्यक्ति को ट्रस्टी बनाना चाहते हैं जिससे उनके काम में मदद मिले। इसका कोई उत्तर नहीं आया। गाडोदिया जी से मुझे कोई उम्मेद नहीं पर फिर भी लिखना आवश्यक था। उसका उत्तर भी कोई नहीं आया। मैंने एक बार सोचा कि खुद ही उनके पास चला जाऊँ। मैं दिल्ली गया भी कई बार पर फिर मुझे स्वयं यह विचार बहुत अच्छा न लगा इससे न गया लेकिन गाडोदिया जी से आशा निराशा का सवाल तो आता ही नहीं। उनकी वजह से अपना काम तो नहीं रुकना चाहिये। शेष कुशल।

भवदीय,
विचित्र नारायन

लेकिन संस्था की सेवाओं के उचित मुआवज़े की मांग तो मेरी कोषाध्यक्ष जी से जारी थी। अतः जब एक महीने बाद कोषाध्यक्ष जी की तरफ से श्री विचित्र नारायन को उनके पहिले पत्र का उत्तर मिला तो उन्होंने कोषाध्यक्ष जी को फिर यह निम्न पत्र लिखा :

श्री गांधी आश्रम, मेरठ
२५-७-४५

प्रिय गाडोदिया जी,

आप का कृपा पत्र ता० १८ जुलाई का मिला। आपमें तथा डा० साहब में मतभेद है यह तो डा० साहब से ही मुझे मालूम हुआ था पर यह चीज़ तो गौण है असली चीज़ है आपका सहयोग भविष्य में भी सम्भव होगा? आप मीटिंग आदि के लिये समय निकाल सकेंगें?

इसके अतिरिक्त आपने इस विषय पर कुछ नहीं लिखा कि जो सेवा आपकी तथा आपकी पत्नी की डा० साहब ने की उस विषय पर आपने क्या विचार किया है? डा० साहब स्वभावतः चाहते हैं उसका मुआवज़ा चिकित्सालय को मिले। शेष कुशल।

भवदीय
विचित्र नारायन

(१) कापी—श्री जाजू जी, सेवाग्राम।
(२) श्री डा० हीरालाल जी, खुरजा।

श्री विचित्र नारायन जी के दुबारा यह लिखने पर कि 'संस्था की सेवाओं का मुआवज़ा उसे मिलना चाहिये', कोषाध्यक्ष जी ने हमारी संस्था का कोई इलाज कराने से ही साफ़ इन्कार कर दिया। अतः श्री विचित्र नारायन और

कोषाध्यक्ष जी के बीच यह निश्चित हुआ कि ४-९-४५ को ट्रस्ट की मीटिंग श्री गांधी आश्रम दिल्ली में रक्खी जाय और वहाँ इसका निपटारा कर लिया जाय। तदानुसार मुझे आदेश मिला कि इसी विषय का नोटिस जारी कर दूँ। संस्था की ओर से ४-९-४५ की मीटिंग का नोटिस जारी हो गया तथा कोषाध्यक्ष जी ने भी अपनी स्वीकृति भेज दी और साथ ही साथ उन्होंने मुझे यह निम्न पत्र लिखा :

२३१

दिल्ली
२५-८-१९४५

श्रीमान् प्रिय शर्मा,

आपका २४-८-४५ का पत्र मिला। ट्रस्टीज़ की मीटिंग के लिये देहली में ४-९-४५ को साढ़े पाँच बजे का समय मुझे अनुकूल है। मीटिंग का ऐजन्डा तथा आय-व्यय की रिपोर्ट एवं चिकित्सा कार्य की रिपोर्ट मुझे भेज दें। मशीन से देखने की फ़ीस आपको हरबार १० रु० दी गई इसके अतिरिक्त कोई चिकित्सा आपसे नहीं कराई गई। यदि चिकित्सा सम्बन्धी आपका कुछ शेष था तो आपको उसी समय माँग लेना चाहिये था फिर भी यदि आप कुछ शेष समझते हैं तो डिटेल (detail) बिल मुझे भेज दें।

श्री हीरालाल शर्मा
संस्थापक ट्रस्टी,
सूर्य चिकित्सालय तथा दाधीच सेवा संघ, खुर्जा।

भवदीय,
ल० ना० गाडोदिया

कापी १ पूज्य बापू जी, पूना।

२ श्री विचित्र नारायन जी, मेरठ।

॥ ओ३म् ॥

लक्ष्मीनारायण गाडोदिया,   टेलीफून नं० ५२९२

तार का पता—

"GADODIA, DELHI."

चांदनी चौक, कूंचा नटवां,

दिल्ली २५. ८. १९४५.

श्रीमान् प्रिय शर्मा जी,

आपका २४.८.४५.का पत्र मिला ट्रस्टीज की मीटींग के लिए देहली मे ४.९.४५.का ५.३०. बजे का समय मुझे अनुकूल है. मीटींग का एजन्डा तथा आय व्यय की रिपोर्ट एवं चिकित्सा कार्य की रिपोर्ट मुझे भेज दे. मशीन से देखने की फीस, प्रत्येक को हर बार १०/ दी गई इस के अतिरिक्त कोइ चिकित्सा आप से नहीं कराई गई. यदि चिकित्सा सम्बन्धी आपका कुछ लेना था तो आपको उसी समय मांग लेना चाहिए था. फिर भी यदि आप कुछ लेना समझते हो तो डिटेल (detail) बिल मुझे भेज दे.

भवदीय,
ल. ना. गाडोदिया

श्री हीरालाल शर्मा,
प्रबन्धक ट्रस्टी,
[illegible] चिकित्सा [illegible] सेवा [illegible],
[illegible]

कापी,

१. [illegible] शास्त्री, [illegible]
२. [illegible], [illegible]

( देखिये पन्ना—तीन सौ छत्तीस )

सौभाग्य से उपरोक्त पत्र की एक कापी बापू को चली जाने से इस मामले की असलियत पर वह आसानी से पहुँच सके जैसा कि आगे की घटनाओं से प्रतीत हुआ।

इधर निश्चित तिथि के अनुसार ४-६-४५ को जब हमारी संस्था की मीटिंग श्री गांधी आश्रम दिल्ली में साढ़े पाँच बजे हुई तो श्री कोषाध्यक्ष जी वहाँ भी नहीं आए; अतः ६ बजे श्री विचित्र नारायन ने स्वयं उन्हें यह निम्न पत्र लिखा और उसे आश्रम के मैनेजर—श्री कालकाप्रसाद जी से कोषाध्यक्ष जी के मकान पर भिजवाने को कहा :

२३२

देहली
४–६–१६४५

प्रिय गाडोदिया जी,

आज की मीटिंग की सूचना तो आपको मिल ही गई थी आपकी स्वीकृति भी मिल गई थी। हम दोनों व्यक्ति यहां उपस्थित हैं अगर आप भी शीघ्र आजायँ तो कार्य शुरू हो जाय। अगर आप को यहां आने में कष्ट हो तो हम दोनों वहीं सेवा में उपस्थित हो जायँ।

पत्र वाहक द्वारा उत्तर देने की कृपा करें।

ह० हीरालाल शर्मा

भवदीय
विचित्र नारायन

श्री विचित्र नारायन के उपरोक्त पत्र को खोलकर कोषाध्यक्ष जी ने पढ़ा किन्तु बिना कुछ उत्तर दिये उसे वापिस लौटा दिया तथा पीओन बुक पर हस्ताक्षर करने से भी इंकार कर दिया।

—तीन सौ तैंतीस

संस्था के ट्रस्टियों के प्रति कोषाध्यक्ष जी के इस बर्तावे ने मुझे बेचैन कर दिया। मेरी दृष्टि में संस्था की तथा संस्था के अन्य ट्रस्टियों की यह एक भारी मान हानि थी अतः बापू के सामने यह सब कुछ रखने के लिये मैंने श्री गांधी आश्रम दिल्ली के मैनेजर—श्री कालका प्रसाद जी से इस वाक़यात का हाल लिखित रूप में मुझे भेजने की प्रार्थना की जिस पर उन्होंने अपने एक पत्र द्वारा यह सूचना दी :

२३३

श्री गाँधी आश्रम,
शाखा—देहली

प्रिय भाई,

......... जिन सज्जन द्वारा मैंने पत्र भेजा था वह आश्रम के जिम्मेदार कार्य-कर्ता हैं मैं उन्हीं का वक्तव्य उन द्वारा ही लिखा हुआ भेज रहा हूं : भवदीय, कालका प्रसाद :

"............ ता० ४–६–४५ को श्री विचित्र भाई ने मुझे एक पत्र श्री० एल० एन० गाडोदिया जी के नाम लिख कर दिया और कहा कि तुम इसे गाडोदिया जी के पास ले जाओ और इसका जवाब भी लेते आना। पहिले मैं क़रीब ६ बजे शाम के लगभग श्री गाडोदिया जी के यहां गया। वहाँ जाने पर उनके आदमियों से पता चला कि सेठ जी डेयरी की तरफ गये हैं आठ बजे के करीब आयेंगे। फिर मैं वापिस चला आया और क़रीब आठ बजे शाम पुनः पत्र को पीओन बुक पर चढ़ाकर ले गया। वहाँ जाकर मैंने सेठ जी के नौकर को पत्र पीओन बुक के साथ दे दिया और कह दिया कि इसका जवाब भी लेते आना। क़रीब दस मिनिट बाद वह आदमी बाहर आया और वह पत्र जो मैं ले गया था उसे तथा पीओन

बुक को बिना पाने वाले के हस्ताक्षर के वापिस दे गया। जब मैंने उससे जवाब के लिये कहा तो उस नौकर ने कहा कि सेठ जी ने पत्र पढ़लिया है और उन्होंने कहा है कि कुछ जवाब नहीं देना है और जब पीओन बुक पर भी हस्ताक्षर नहीं देखा तो मैंने कहा कि इस पर हस्ताक्षर तो करा दो तब नौकर ने कहा कि उन्होंने हस्ताक्षर भी नहीं किये।

भवदीय,
रमेशाचन्द्र त्रिपाठी

उपरोक्त पत्र की नक़ल के साथ मैंने बापू को एक कड़ा विरोध पत्र भेजा जिसमें संस्था के अन्य ट्रस्टियों के प्रति कोषाध्यक्ष जी के ४-६-४५ के बर्तावे पर खेद प्रगट किया।

इसी बीच यहां एक अन्य घटना का ज़िक्र करना भी आवश्यक हो गया है जिससे पाठकों को यह मालूम होगा कि बापू की दृष्टि में तथा उनके हृदय में रचनात्मक कार्य-कर्ताओं की तथा राजनीतिज्ञों की योग्यता में भारी अन्तर था बापू के हृदय में राजनीतिज्ञ की अपेक्षा एक रचनात्मक कार्य-कर्ता की अधिक इज़्ज़त थी जिसे अभाग्यवश आजका शासक वर्ग केवल एक कथा वाचक के रूप में देखता है। बापू अपने रचनात्मक कार्य-कर्ताओं को राजनैतिक क्षेत्र में जाने देने के बिलकुल विरोध में रहते थे जैसा कि निम्न घटना से स्पष्ट प्रतीत होता है :

उपरोक्त झगड़ों के दौरान में मेरे बड़े भाई को दिल का दौरा पड़ा और वह तीन दिन में ही मुझे छोड़कर चले गये। मेरी उपरोक्त परेशानियों को देखकर वह कहा करते थे कि मैं भी अपने अन्य साथियों की भाँति राजनैतिक क्षेत्र में जाकर एसेम्बली द्वारा समाज सेवा करूँ। अतः अपनी मृत्यु से एक दिन पहिले अपने समक्ष बापू को उन्होंने एक ऐसा पत्र इस आशा से लिखवाया मानो बापू मुझे एसेम्बली में जाने की कांग्रेस की ओर से इजाज़त दे देंगे। मेरे इस पत्र के उत्तर में बापू ने बड़ा ही सुन्दर एक लम्बा पत्र लिखा। मुझे दुःख है कि बापू के कुछ अन्य महत्व पूर्ण पत्रों के साथ इस पत्र के भी शुरू के तीन पन्ने दीमक ने नष्ट

कर दिये तथा इसका कुछ भाग वर्षा के पानी से धुल गया लेकिन फिर भी उसमें इतना शेष तो है ही जो मेरे उपरोक्त कथन पर काफ़ी प्रकाश डालता है। यह पत्र सम्भवतः बापू ने पूना से लिखवाया है :

२३४

.........पर मेरा समय इस उपचार गृह और सेवाग्राम के बीच बट जावे। एसेम्बली में कॉंग्रेस की टिकट पर खड़ा होने की बात सुनकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ है और कुछ दुःख भी। उसके लिये मेरे आशीर्वाद मिल ही नहीं सकते हैं जो सामाजिक प्राणी है, और सब के साथ सरलता से रह सकता है, जिसमें दूसरी शक्तियाँ हैं और जो एसेम्बली के काम के सिवाय दूसरे काम की योग्यता नहीं रखता है, वही एसेम्बली में जा सकता है। इसमें ऊँच नीच की बात नहीं है, योग्यता की ही है। खादीसेवक खादी कार्य के लायक़ है, इसलिये एसेम्बली के काम के भी लायक़ है यह नहीं कहा जायगा।

सरदार जी अबतक अच्छे हुए नहीं कहे जा सकते*। उन्हें कब्ज है। कमोड पर डेढ़ दो घंटे जाते थे। उसका कारण आंतों का (Spasm) अकड़ना हो सकता है। या भीतर कुछ Adhesions होने के कारण यह सब तकलीफ हो सकती है। उनका Pelvic Loop (कोलन का) बहुत पड़ा है। पेट के अन्दर खिचाव इत्यादि भी लगता है। दिनशा जी मानते हैं कि तीन महीने तक यहाँ का उपचार लेने से, जो कष्ट उन्हे आज होता है, उसका अधिकतर हिस्सा दूर हो जायगा। २२ नवम्बर को तीन महीने पूरे होंगे। वह मेरे साथ सेवाग्राम नहीं

*सरदार पटेल उन दिनों पूना में श्री डा० दिनशा मेहता के नेचर क्योर क्लीनिक में उनसे प्राकृतिक चिकित्सा करा रहे थे।

पर मेरा समय इस उपचार गृह
और सेवाग्राम के बीच बट जावे।

असेम्बली में कांग्रेस की टिकट
पर खड़ा होने की बात सुनकर
मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ है। और
कुछ दुःख भी। उस के लिये
मेरे आशीर्वाद मिल ही नहीं सकते
हैं। जो सामाजिक प्राणी है, और
सब के साथ सरलता से रह
सकता है, जिस में दूसरी शक्तियां
हैं, और जो असेम्बली के काम के
सिवाय दूसरे काम की योग्यता नहीं
रखता है, वही असेम्बली में
जा सकता है। इस में ऊंच
नीच की बात नहीं है।

५

योग्यता की ही है। स्वादी सेवक
स्वादी कार्य को लायक है। इस
लिये स्वेच्छानी को काम के भी
लायक है यह नहीं कहा जायगा

सरदार जी अब तक अच्छे
हुए नहीं कहे जा सकते। उन्हें कब्ज
है, कमोड पर डेढ़ दो घंटे जाते
ये उसका कारण आन्तों का
(spasm) अकड़ना हो सकता है,
या भीतर कुछ adhesions
होने के कारण यह सब
तकलीफ हो सकती है। उनका
Pelvic loop (कोलन का) बहुत
बड़ा है। पेट के अन्दर
खिंचाव इत्यादि भी लगता है

आने* वाले हैं। मैं भी दो चार दिन के लिये ही सेवाग्राम जाऊँगा, और वहां से बंगाल, ऐसा आज का क्रम है। उसमें परिवर्तन हो सकता है। सरदार जी के उपचार के बारे में कुछ कहना चाहते हैं तो लिखो। यहाँ मैं २ नवम्बर तक तो हूँ। २१ तक रहना पड़ेगा तो रहूंगा।

आशीर्वाद

बापू का उपरोक्त पत्र मेरे मरने वाले भाई के सामने नहीं आ पाया। भाई की मृत्यु होने पर घरवालों की दशा से मैं व्याकुल होकर उस भयानक अर्धरात्रि का आंखों देखा हाल पत्र द्वारा बापू को लिख रहा था उधर बापू के पास कोषाध्यक्ष जी के २५-८-४५ (न० २३१) वाले पत्र की नक़ल तथा ४-६-४५ में दिल्ली में हुये वाक़यात की रिपोर्ट पहुँच ही चुकी थी इन सब बातों से बापू को कोषाध्यक्ष जी के प्रति शक पैदा होना ही था। अतः बापू ने कोषाध्यक्ष जी को स्वयं लिखने का निश्चय किया और मुझे यह निम्न पत्र भेजा :

२३५

पूना
२७–१०–४५

भा० शर्मा,

तुम्हारा रात्रि को बारह बजे लिखा हुआ पत्र मिला। तुम्हारे भाई चले गये इसका व्यवहार में तो शोक होना ही चाहिये लेकिन पारमा-

*बापू से मैंने प्रार्थना की थी कि सरदार पटेल को वह सेवाग्राम में ले आवें ताकि मैं भी वहां आ जाऊँ।

र्थिक दृष्टि से अथवा नैसर्गिक दृष्टि से मृत्यु का शोक क्या, जन्म का हर्ष क्या ? दोनों की जोड़ी है और एक के पीछे दूसरा रहता ही है ऐसी दोनों की अविछिन्न मित्रता है। इसलिये कम से कम तुम्हारे में तो इस मृत्यु की ग्लानि होनी नहीं चाहिये। तुम्हारे सामने धर्म पालन का एक विशेष कारण उत्पन्न हुआ।

एसेम्बली में जाने का विचार स्वर्गस्थ भाई के कहने से हुआ यह और भी दुःखद बात है।

गाडोदिया जी के बारे में। अगर तुम सब चीजों पर क़ायम हो तो १, २, ३, ऐसा करके मुझको लिखो, मैं उनके पास भेजने को तैयार हूँ और पंच के सामने उन चीजों को रखने की सूचना भी करूँगा।

इसमें जो शिकायत तुमने मेरे सामने रक्खी थीं वह सब आनी चाहियें। दूसरी चीजों का फैसला भले इस बात पर निर्भर रहे। आज तो मेरे मन में शक पैदा हो गया है इतना मुझे क़बूल करना होगा।

सरदार का तो अब कुछ नहीं लिख सकता हूं, सरदार और दिनशा जी बम्बई में हैं। पहली तारीख को वापिस आयेंगे। बड़े भाई के जाने से घर का कारोबार किसको संभालना हुआ ? तुम कितने भाई हो ?

बापू के
आशीर्वाद

मृतक भाई के कार्य-क्रम से निपटते ही मैंने बापू को ६ ता० को सरदार पटेल की बीमारी के सम्बन्ध में अपने विचार लिखे तथा उनके भोजन का एक चार्ट बना कर भेजा और ७ ता० को संस्था के कोषाध्यक्ष जी के प्रति संस्था की ओर से १-२-३ करके कड़े शब्दों में एक लम्बा शिकायत नामा बापू के आदेशानुसार लिख भेजा। उपरोक्त दोनों पत्रों की पहुँच की सूचना मिलने में

पत्र—२३५

प्रि. शर्मा,

( देखिये पन्ना—तीन सौ इकतालिस )

मू सेवाग्राम
२५.११.४५

श्री. डा. रामीजी

आप का २१ तारीख का पत्र कल बापू जी को मिला है। आप के हि, ? के पत्रों पर जो कारवाई कर रहे हैं उन की पहोंच तो तार द्वारा भेजी थी. मिली होगी.

आप को भाई की मृत्यु तो दुःखद
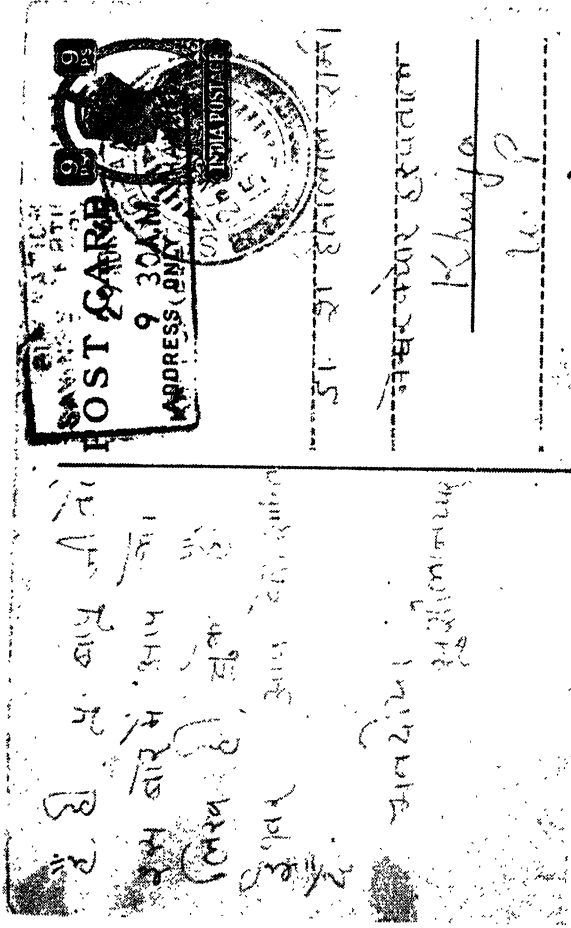
देरी होने से फिर २१ नवम्बर को एक याद्दाश्त भेजी तथा एक तार दिया। २१ नवम्बर को ही बापू ने तार द्वारा मेरे दोनों पत्रों की प्राप्ति की सूचना दी तथा २५ नवम्बर को डा० सुशीला नायर द्वारा मुझे यह निम्न पत्र मिला :

236

Wardhaganj 21. November, 1945

Dr. Sharma, Khurja.

Received both Letters.

Bapu.

२३६

वर्धागंज २१ नवम्बर १९४५

डा० शर्मा, खुरजा

दोनों पत्र मिल गये।

बापू

२३७

सेवाग्राम २५-११-४५

प्रिय डा० शर्मा जी,

आपका २१ तारीख का पत्र कल बापू जी को मिला है। आपके ६, ७, के पत्रों पर वह कार्यवाही कर रहे हैं उनको पहुँच तो तार द्वारा

भेजी थी मिली होगी। आपके भाई की मृत्यु तो दुःखद है ही। पूज्य बापू जी तो इस बारे में आपको लिख ही चुके हैं ईश्वर आपको शांति दे

भवदीया,
सुशीला नायर

चूँकि अपना शिकायत नामा बापू को भेजे हुये काफ़ी समय हो चुका था अतः मैंने बापू को उसकी याद दिलाने के तौर पर उन्हें फिर लिखा था। यह निम्न पत्र उसी के उत्तर में है। उस समय बापू अपने प्रोग्राम के अनुसार बंगाल पहुँच चुके थे।

२३८

सोदपुर
२४-१२-४५

चि० शर्मा,

तुमारा खत आज मिला। मैं अभी मिदनापुर जा रहा हूँ। इस लिये पहोंच ही भेजता हूँ। काम कठिन हो रहा है देखता हूँ क्या किया जाय।

आशीर्वाद

कितनी छोटी सी चीज़, लेकिन दिन प्रति दिन इतनी बड़ी होती चली गई कि बापू के लिये भी 'काम कठिन' तथा 'कठिन समस्या' इत्यादि जैसी बन गई। आख़िर बापू ने अपना समय बचाने के लिये तत्सम्बन्धी सब पत्र इत्यादि श्री बिचित्र नारायन जी को भेज दिये और मामले की पूरी जाँच करके इस विषय में उनको अपना मत भेजने का आदेश दे दिया। अतः श्री बिचित्र नारायन

सोदपुर २४ १२/४५

चि. प्रभा

उमा का खत आज मिला. मैं आज
मिदनापुर जा रहा हूं इस लिये
पहोंच नहीं सकता हूं- काम कठिन
हो रहा है देखना है क्या किया
जाय.

बापुके आशीर्वाद

( देखिये पन्ना—तीन सौ चौवालीस )

पत्र—२५१

( देखिये पन्ना—तीन सौ अड़सठ )

जी ने संस्था से तत्सम्बन्धी कुल फाइलें तलब कर लीं और सब बातों की स्वयं जांच करके अपना निर्णय बापू को भेज दिया जिसकी एक कापी संस्था के नाम भेजी जो इस प्रकार है :

२३६

मेरठ,
जनवरी ४, १९४६

पूज्य बापू,

सादर प्रणाम। गाडोदिया जी और डा० शर्मा के बीच जो झगड़ा चल रहा है उसमें आपने मेरी जानकारी और मत भी मांगा है। इधर गाडोदिया जी से मेरी कोई भेंट नहीं हुई। चिकित्सालय के ट्रस्टी के नाते भी हम नही मिल सके। जो मीटिंग चिकित्सालय में रक्खीं उनमें वे न आ सके। कुछ दिन मैं बीच में जेल में ही रहा, उस बीच जो मीटिंग हुईं उसमें मैं न रह सका। बाद में जो मीटिंग हुईं उनमें गाडोदिया जी नहीं आये। उनकी सहूलियत का ख्याल रखकर मीटिंग दिल्ली ही रखी पर उसमें भी वे शरीक़ न हुए।

पहिला परिचय गाडोदिया जी का और मेरा अवश्य है पर बदक़िस्मती से उसके आधार पर मैं कोई भी अच्छी धारणा उनके विषय में नहीं बना सका। दूसरों से भी जो सुना वह उनके अनुकूल नहीं सुना। पर ऐसी धारणाओं के आधार पर किसी व्यक्ति को दोषी नहीं क़रार दिया जा सकता। ट्रस्टी के नाते जो जानकारी हुई वह बहुत कुछ शर्मा जी और उनके बीच हुए पत्र व्यवहार पर। यह सारा पत्र व्यवहार आपके सामने रहेगा ही, फिर भी मैं अपना मत देने में कोई हानि नहीं देखता हूँ।

खजानची के नाते जो धन गाडोदिया जी के पास जमा रहता था उसे देने में उनकी ओर से निरर्थक देरी की गई। और उससे असुविधा

भी हुई। मुझे ऐसा लगता है यह उन्होंने चिढ़कर ही किया और शर्मा जी पर नाजायज्ञ दबाव डालने की कोशिश भी की। शर्मा जी मुर्ग़ी पालते हैं या शायद अंडे खाते हैं यह कारण न तो यथेष्ट हैं और न शुरू में सम्भवतः थे ही।

अपना तथा पत्नी का इलाज कराने में शर्मा जी तथा संस्था के साधनों का तो उपयोग किया, पर उसके एवज्ञ में संस्था को पारितोषिक देते समय सरल और सत्य व्यवहार नहीं क़ामय रख सके।

यह सही है शर्मा जी ने कोई निश्चित बात तय नहीं की थी और आज कोई ख़ास रक़म गाडोदिया जी से मांगी नहीं जा सकती है फिर भी एक समझाव सा बीच में जरूर था और उसका ज़िक्र बार बार पत्रों में हुआ है लेकिन गाडोदिया जी ने उसे सीधे तरह से 'ना' न करके कभी एक बात कहकर कभी दूसरी बात कहकर देने से इन्कार किया। कभी कहा इलाज ही नहीं हुआ, कभी कहा फ़ीस दे दी जाती थी जब कि पहिले आने जाने का किराया भी नहीं दिया गया। बाद में आडिटर की शिकायत पर ही १० रुपया वास्ते खर्च दिये गये।

शर्मा जी की बाबत भी मैं इतना ज़रूर कहूँगा और वह इसलिये कि वह शिकायत करने वाले हैं कि वे और भी सहिष्णुता दिखलाते और निभाने की कोशिश करते तो अच्छा होता। पर शर्मा जी का दृष्टिकोण यह था कि गाडोदिया जी जब झूठ से काम लेते हैं और संस्था का कोई हित साधन भी नही करते हैं तो वे ऐसा कुछ क्यों करें जो चापलूसी जैसा मालूम हो।

खादी के सम्बन्ध में मेरी जानकारी यों है। जब मैं जेल में ही था तो जो भाई पीछे रह गये थे उन्होंने गाडोदिया जी के हाथ रेशमी माल ज़रूर बेचा था और गाडोदिया जी का यह सोच लेना कि रेशम लेकर वे एक ख़तरा उठा रहे हैं और एक भला काम कर रहे हैं यह स्वाभाविक ही है। साधारणतः रेशम उनके हाथ बेचा ही नहीं जा सकता

था पर यह बात ठहरी थी कि वे दाम नहीं बढ़ायेंगे इसलिए उन्हें १० प्रतिशत बिक्री दरों पर कमीशन भी दिया गया था। पर इन भाइयों का यह कहना है कि उन्होंने बाद में दाम बढ़ाये और खूब बढ़ाये। उनके कार्यकर्ता स्वयं आकर इन लोगों से कहते थे। मैंने पक्की जांच नहीं की, पर लोग तो हिसाब आदि दुबारा प्रमाणित करने की बात भी कहते हैं। आवश्यक होने पर जांच हो सकती है।

उनका खादी कार्य परोपकार वृति से है ऐसी छाप मेरे ऊपर नहीं पड़ी। ऐसे काम की जरूरत तब रही भी हो जब हमारा काम नष्ट कर दिया गया था पर हमारे पुनः क्षेत्र में आजाने पर उन्हें उसे छोड़ देना चाहिए था। कम से कम हमारी प्रतियोगिता नहीं करनी चाहिये थी। हमारे पास तो शिकायतें आती रहीं हैं कि वे हमारे कारीगर और हमारे कार्यकर्ता एवम हमारे क्षेत्र को भी ले लेते थे। पर मैंने इसे उपेक्षा की दृष्टि से देखा।

उन्होंने प्रमाण पत्र के लिये भी मुझे लिखा था और एक ट्रस्ट जैसी चीज़ खड़ी की थी। मैंने यह कहकर प्रमाण पत्र देने से इन्कार कर दिया था कि ट्रस्ट के व्यक्तियों और नियमों को देखते हुए उसे सार्वजनिक ट्रस्ट नहीं कहा जा सकता। प्रायः सब ट्रस्टी घर के थे और गाडोदिया जी ने सब शक्तियाँ अपने हाथ में रख छोड़ी थीं। सार्वजनिक ट्रस्ट में लोक सेवा के नाते ट्रस्टी बनाये जांय यही उचित है। दाता एक दो व्यक्ति अपने रक्खे पर उससे ट्रस्ट का सार्वजनिक रूप नष्ट न होना चाहिये।

मुझे इस विषय में इतना ही कहना है।

आज्ञाकारी पुत्र,
विचित्र

एक साल और तीन महीने लगातार इस 'कठिन समस्या' की छान-बीन करने और कराने के बाद तथा श्री विचित्र नारायन जी का उपरोक्त मत प्राप्त कर लेने के पश्चात् बापू अपना क्या निर्णय देने वाले थे यहाँ अब उसका जिक्र करना तो मेरे लिये उचित नहीं प्रतीत होता क्योंकि धनी वर्ग के कूटनीतिज्ञों ने बापू को ऐसा करने से रोक दिया। श्री विचित्र नारायन की रिपोर्ट से यह भय हो गया कि वह कोषाध्यक्ष जी को संस्था के ट्रस्ट डीड की धाराओं के अनुसार उन्हें उनकी ज़िम्मेदारी के बन्धन में ला सकती थी अतः इस तमाम मामले का मार्ग बदल दिया गया जो आगे की घटनाओं से मुझे मालूम हुआ।

मुझे यहाँ यह कहने में झिझक नहीं होनी चाहिये की पूंजीवादी के शोषण के विरोधी होते हुए भी बापू पूंजीपतियों के प्रति बड़े सहिष्णु रहते थे। वह व्यवहार में धनवानों के विचारों से बहुत कम प्रभावित होते अवश्य प्रतीत होते थे किन्तु धनी वर्ग का उन पर एक तरह का नैतिक दायित्व सा भी रहता था। दूसरी बात यह भी थी कि बापू मुझे पुत्रवत् मानते थे उनके स्वभाव में यह भी था कि दूसरों का कोई अहित होता देख वह अपने तथा अपनों के हितों का त्याग भी कर देते थे। श्री विचित्र नारायन की रिपोर्ट के बाद जो इस प्रकार की उलझनें बापू के सामने आईं उनसे निकलने के लिये उन्होंने सुगम रास्ता यही सोचा कि वह मुझे सब झंझटों से हटाकर अपने पास पूना बुलालें।

बापू तीन महीने पहिले पूना में नेचर क्योर की संस्था का एक ट्रस्ट बनवाकर उसके स्वयं भी एक ट्रस्टी बन बैठे थे। अतः उन्होंने अपने उस कार्य में हाथ बटाने के ख्याल से मुझे निम्न तार द्वारा पूना बुलाया:

240

Poona. 22nd. Feb. 1946

Dr. H. L. Sharma, Khurja.
Come here Twentysixth.

Bapu.

( देखिए पत्र—तीन सौ उनचास )

वार—२४०

POSTS AND TELEGRAPHS DEPARTMENT

Khwaja

there twentysixth

Bapu

पूना । २२ फरवरी सन् १९४६

डा० एच० एल० शर्मा, खुर्जा

छब्बीस तारीख को यहाँ आओ ।

बापू

२६ ता० को मेरे पूना पहुँचते ही वहाँ के नेचर क्योर क्लीनिक का 'ट्रस्ट नामा' मेरे हाथ में देते हुये बापू ने कहा "लो इसे पढ़ो। प्राकृतिक चिकित्सा के लिये प्रशिक्षण केन्द्र खोलने के तुम्हारे विचार इससे पूरे होते हैं ? यदि होते हैं तो वहाँ के मकान छोड़ो और यहाँ आकर मेरे पास बैठ जाओ। वहाँ का सब कुछ मैं देख लूँगा" 'वहाँ' से बापू का मतलब था मेरे गाँव की संस्था से। उधर पूना के नेचर क्योर क्लीनिक के पहले संस्थापन को बिलकुल उजड़ा हुआ देखकर भी मैं हैरान हो गया था। सहस्रों रुपये का सामान जो श्री दिनशा मेहता ने अपने प्राकृतिक चिकित्सालय को सजाने के लिये विदेशों से मंगा कर वहाँ लगा रक्खा था वह बिजली की मशीनें इत्यादि सब कुछ उखड़ी हुई बाहर सहन में ऐसे पड़ी हुई थीं मानों वहां पर कोई भारी तूफ़ान या भूकम्प आया हो; लेकिन मुझे मालूम हुआ कि वह सब उलट पुलट बापू की इच्छानुसार ही वहाँ हुई थी। ट्रस्टनामा* लगभग बीस पचीस फुल स्केप पन्नों में है। अंग्रेज़ी भाषा में हैं। उस वक्त इसको पढ़ने और समझने के लिये बापू से मैंने तीन दिन मांगे।

इस ट्रस्ट नामे में तीन ट्रस्टी रक्खे गये थे—१ बापू स्वयं, २ श्री पेस्टोन

*पूना के ट्रस्ट नामे की एक प्रतिलिपि आज भी मेरी फाइल में है।

—तीन सौ उन्चास

श्री जहांगीर, तथा ३ श्री दिनशा मेहता। सरदार पटेल की इस पर गवाही थी। जितनी बार मैं इस ट्रस्टनामे को पढ़ता था उतने ही मेरे विचार उसके विरोध में अधिक जाते नज़र आते थे। बापू नेचर क्योर के लिये मुझे तो प्रारम्भ से गांवों को ही एकमात्र उपयुक्त स्थान बताते आए थे और अपने अनुभवों के आधार पर मैं स्वयं भी उनके उन विचारों का समर्थक बन चुका था फिर अब पूना जैसे शहर के लिये नेचरक्योर की वह लम्बी चौड़ी बनी हुई बापू की योजना के समर्थन करने में मुझे हिचकिचाहट का होना स्वाभाविक था। उधर चौथे दिन ही बापू को इस सम्बन्ध में मुझे अपना निर्णय देना था अतः मेरे वह तीन दिन बड़ी बेचैनी में कटे। आख़िर दूसरी मार्च को सुबह टहलते समय बापू को मैंने इस ट्रस्ट नामें के विरोध में अपना उपरोक्त मत प्रकट कर ही दिया।

यह कितनी बड़ी चीज़ थी बापू के स्वभाव में कि छोटे से छोटे आदमी की भी बात को वह बड़े ध्यान से सुनते थे और उसमें से तत्व की बात निकाल लेते थे। ट्रस्ट नामा रजिस्टर हुए लगभग तीन महीने हो चुके थे। तत्सम्बन्धी समाचार देश के कोने २ में फैल चुके थे और इसी सम्बन्ध में पत्र व्यवहार भी बहुत अधिक बढ़ गया था; लेकिन बापू सुबह के भ्रमण के बाद एकान्त में बैठे हुए बड़े गहरे विचारों में लीन थे तथा अपनी योजना को अब वह नये दृष्टि कोण से देख रहे थे। चार दिन बाद ही बापू का "जब जागो तभी सवेरा" नाम का लेख पढ़ कर मैं सहम सा गया क्योंकि बापू ने इस अपने लेख द्वारा अपनी स्थिति स्पष्ट करने में तनिक भी संकोच नहीं किया। पूना की योजना को रद्द करने के सिलसिले में ही 'उरली काँचन' नाम के गांव का इस कार्य के लिये जन्म हुआ, जहां २३ मार्च सन् १९४६ को बापू ने स्वयं बैठ कर पूना के बजाय वहां के प्राकृतिक चिकित्सालय का श्री गणेश किया। बापू का उपरोक्त लेख पाठकों के लिये यहां देना अनउपयुक्त न होगा। यह निम्न लेख बापू ने ६ मार्च सन् १९४६ को पूर्ण किया था जो १७ मार्च सन् १९४६ को "हरिजन सेवक" में छपा।

—तीन सौ पचास

## जब जागो तभी सवेरा

"जैसा कि मेरे कई साथियों ने देखा है और मैं खुद देख सका हूँ, गलतियां करके, उनको मंजूर करके और उन्हें सुधार कर ही मैं आगे बढ़ सकता हूँ। पता नहीं क्यों किसी के बरजने से या किसी की चेतावनी से मैं उन्नति कर ही नहीं सकता। ठोकर लगे और दर्द उठे तभी मैं सीख पाता हूं। जब हम सब बालक थे, तब तो इसी तरह सीखते थे। अपने ७६ वें साल में भी मेरी हालत बालक के समान ही है। अभी अभी मुझे मालूम हुआ कि मैं अन्धा होकर दीवार से सर टकराने चला था। यह दीवार इतनी बड़ी थी कि इसे देखने में कोई ग़लती नहीं हो सकती थी, फिर भी मैं तो नज़दीक पहुँचने पर ही इसे देख पाया।

मैं डाक्टर दिनशा मेहता को एक अरसे से पहचानता हूँ। उन्होंने अपनी ज़िन्दगी क़ुदरती इलाज को ही सौंप दी है और उनकी एक ही लालसा है कि हिन्दुस्तान में क़ुदरती इलाजों का एक विश्वविद्यालय बने। दुनिया में कहीं भी ऐसा विद्यालय नहीं है। पश्चिम में जो कुछ हैं वे ख़ास तौर पर धनवानों के लिये हैं। मगर वे भी विश्वविद्यालय तो हरगिज़ नहीं हैं। मुझे दृढ़ विश्वास है कि अगर ऐसा विश्वविद्यालय खुला, तो उसमें खासकर यह बतलाया जायगा कि गरीबों की बीमारियों का इलाज क़ुदरती तौर पर किस तरह किया जा सकता है।

मैं जानता हूँ कि हिन्दुस्तान के देहाती लोगों की बीमारियों को क़ुदरती तरीक़े से मिटाने की चाबी मेरे हाथ में है। और इसलिये मुझे जानना चाहिये था कि पूना जैसे शहर में गांव वालों की बीमारियों

का क़ुदरती इलाज हो ही नहीं सकता। लेकिन ट्रस्ट तो बन गया। डा० दिनशा मेहता का उपचार-गृह भी ट्रस्ट में शामिल कर लिया गया। डा० मेहता के और मेरे साथ बहुत व्यवहार कुशल जहांगीर जी पटेल भी शामिल हुए। और डा० मेहता ने जिस उपचार-गृह की रचना धनवानों के लिये की थी, गरीबों के लिये उसका उपयोग करने के खयाल से मैं दौड़ा-दौड़ा पूना पहुँचा। मैंने कुछ बड़ी बड़ी तब्दीलियां सुझाईं, लेकिन पिछले सोमवार को यानि ४ मार्च को अपने मौन में मुझे यह ज्ञान हुआ कि एक शहर में गरीब देहातियों के लिये क़ुदरती इलाज का खयाल तक करने वाला मूर्खों का सरदार होना चाहिये। मैंने अपने आपको इस रूप में देखा। और मैं समझ गया कि अगर गांव के बीमारों का क़ुदरती इलाज करना हो, तो मुझे उनके पास जाना चाहिये, न कि उनको मेरे पास आना। जहां फांकने को पुड़िया या पीने को दवा दी जाती है, वहां भी वैद्यों और डाक्टरों को बीमारों के घर जाना पड़ता है। और जो बीमार डाक्टरों के पास जाते हैं, वे भी ज्यादा तर डाक्टरों के अपने गाँव या शहर ही में रहने वाले होते हैं।

कोई देहाती शहर में आये और उससे कहा जाये कि वह पेट या पीठ पर मिट्टी की पट्टी रक्खे, नंगा होकर धूप में सोये, कटिस्नान या घर्षण स्नान करे, और अपना भोजन इस तरह पकावे कि उसका कोई हिस्सा फजूल न जाय, तो यह निरी हिमाक़त न होगी तो और क्या होगा? देहाती मरीज "जी हां" कहकर लौट जायगा लेकिन साथ ही मन में हँसेगा और क़ुदरती इलाज करने वाले को बेवक़ूफ समझेगा। वह बेचारा मेरे पास एक पुड़िया फांकने या दवा की प्याली पीकर लौटने के खयाल से आता है और यह श्रद्धा रखता है कि वह अच्छा हो जायगा।

क़ुदरती इलाज तो इस तरह नहीं होते। उनमें तो जिन्दगी जीने

का एक नया रास्ता सीखना पड़ता है। इन उपचारों के सफल होने के लिये यह ज़रूरी है कि उपचारक या इलाज करने वाला मरीज़ की झौंपड़ी के नज़दीक रहे। मरीज़ को उपचारक की "हूंफ" (सिम्पेथी) मिले, उपचारक में अखूट धीरज (पेशेन्स) हो और उसे मनुष्य स्वभाव का ज्ञान हो। जब उपचारक एक या एक से ज्यादा गांव वालों के मन को चुरा सकता है, अपने नए रास्ते को पहचान सकता है और उस रास्ते चलने लग जाता है तभी ऐसे उपचार के विश्वविद्यालय की नींव डाली जा सकती है।

इस सीधी चीज़ को समझने के लिये मुझे खास ११ दिन नहीं लगने चाहिये थे। मुझ को फ़ौरन ही यह मालूम हो जाना चाहिये था कि ऐसे इलाज के लिए एक शहरी बंगले की ज़रूरत न होनी चाहिए। मैं नहीं जानता कि अपनी इस बेवकूफी पर हँसू या रोऊँ। मैं तो हँसा हूँ, और किसी भी तरह का ख़र्च करने से पहिले मैंने अपनी ग़लती सुधार ली है।

शुरू किये काम को छोड़ना तो मैं सीखा नहीं, इसलिये मेरे वास्ते एक ही रास्ता रह गया है। किस गाँव में इसे शुरू किया जाय?

मेरी इस भूल से पाठकों को सबक़ सीखना चाहिये। महात्मा जैसे आदमी भी कुछ कहें, तो उसे मानही लेने में मनुष्यता नहीं। महात्मा की कही बात हमारे गले उतरे और दिल में पैठे तभी हमें वैसा करना चाहिये।

इस मामले में तो मेरी मूर्खता इतनी स्पष्ट थी कि वह लम्बे समय तक टिकी होती, तो भी सच्चे देहाती कभी पूना आए न होते। अगर इलाज का थोड़ा भी काम शुरू करने के बाद मैंने अपनी यह भूल देखी होती, तो मेरी इज्जत धूल में मिल जाती। क्यों कि तब मेरे पास मेरा

ब्रेकिट के शब्द लेखक के हैं।

स्वाभिमान न रहा होता। और जिस आदमी का मान उसके अपने ख्याल से मर चुका है, वह जितना नुकसान अपने को पहुँचा सकता है, उतना दूसरा कोई उसे नहीं पहुँचा सकता। इस ग़लती के बाद लोग मुझ में विश्वास न रक्खें तो मैं समझूंगा कि मैं इसी लायक़ था। लेकिन पाठक यह याद रक्खें कि इस उपचार के सिलसिले में ग़रीबों के लिये जितने पैसे निकाले थे, उनमें से अभी एक पाई भी ख़र्च नहीं हुई है।

मेरे अपने लिये तो यह बस होगा कि इस ग़फलत के बाद मैं अपने आदर्शों तक पहुँचने में ज्यादा सावधान रहूँ। गाँव के ग़रीब क़ुदरती इलाज को अपनाएँगे या नहीं, सो तो भविष्य पर निर्भर करता है। मगर इसमें तो शक की कोई गुञ्जाइश ही नहीं हो सकती कि उन्हें इसे अपनाना चाहिये।"

मोहनदास करमचंद गांधी।

"उरली कांचन" की योजना में काम करने के लिये मेरे सामने जो दो रुकावटें थीं उन्हें बड़ी विनम्रता के साथ बापू के सामने मैंने पेश करदीं। उनमें से पहिली तो यह थी कि बिना बापू के 'उरली कांचन' में मेरा स्थायी रूप से रहना मुझे कठिन लगता था; दूसरे यह कि कोषाध्यक्ष जी के साथ संस्था का चालू झगड़ा समाप्त हुए बिना मुझे "उरली कांचन" इस प्रकार के किसी झंझट को साथ लेकर जाना अच्छा नहीं लगता था। मेरी पहिली रुकावट के सम्बन्ध में तो बापू ने कहा कि वह स्वयं ही यह निश्चय कर चुके थे कि उनके जीवन का अन्तिम भाग सेवा-ग्राम और 'उरली कांचन' में विभाजित कर दिया जायगा; और मेरी दूसरी रुकावट के उत्तर में मुझे बापू से मालूम हुआ कि कोषाध्यक्ष जी श्री विचित्र-नारायन के फ़ैसले से सन्तुष्ट नहीं थे उन्हें तो संस्था की सेवाओं के किसी मुआवज़े की मांग का निर्णय किसी क़ानूनी पंच से कराना पसंद था और बापू ने भी इस झगड़े को जल्दी समाप्त हुए देखने की इच्छा से कोषाध्यक्ष जी को उन्हीं की पसंद

के ऐसे दो क़ानूनी पंचों के नाम भेजने को लिख दिया था और बापू उसके उत्तर आने की प्रतीक्षा में थे।

कोषाध्यक्ष जी के प्रति बापू की इस प्रकार की उदारता मुझे बहुत अखरी। मुझे क़ानूनी पंचों पर तो कोई आपत्ति नहीं थी। मेरी प्रार्थना केवल यह थी कि ऐसे क़ानूनी पंच या तो बापू स्वयं चुने और या वह दोनों पक्ष द्वारा ही चुने जांय; लेकिन बापू तो कोषाध्यक्ष जी को उसकी छूट दे चुके थे अतः उन्होंने मेरी मदद एक वकील के रूप में करनी चाही। बापू ने मुझे यह सलाह दी कि हमारी संस्था किसी क़ानूनी पंच के सामने अपनी सेवाओं का मुआवज़ा मांगने की अपेक्षा **'सत्य बनाम असत्य'** का अर्ज़ीदावा पेश करे। चूंकि संस्था की सेवाओं के मुआवज़े का कोई पट्टा नहीं लिखा गया था; लेकिन संस्था के तीन साल की सेवाओं का सबूत हमारे लम्बे पत्र व्यवहार से स्पष्ट था जिसे कोषाध्यक्ष जी अपने २५-८-४५ (नं० २३१) वाले पत्र द्वारा साफ इन्कार कर चुके थे अर्थात् संस्था के इस कथन को असत्य बता बैठे थे कि उसने उनका तथा उनकी धर्मपत्नी का कोई इलाज किया। इसी लिये बापू का कहना था कि यह मुक़द्दमा तो **'सत्य बनाम असत्य'** का है न कि पैसे माँगने का। लेकिन मैं बापू की इस राय से सहमत नहीं हुआ। मेरा ख़याल इस बात पर जमा हुआ था कि कोई भी व्यक्ति पंच चुने जाने के बाद तो वह पंच-परमेश्वर ही माना जाता है और जब संस्था की तीन साल की सेवाएँ कोषाध्यक्ष जी तथा उनकी धर्मपत्नी के ही लगभग १५० पत्रों से स्पष्ट हैं तो संस्था के पोषण के लिये फिर उचित मुआवज़े वाली अपनी हृदय की माँग को 'पंच-परमेश्वर' के सम्मुख क्यों छिपाया जाय ? पँच के सामने मुआवज़े का प्रश्न तो स्वाभाविकतया आना ही होगा भले ही उसका कोई क़ानूनी पट्टा न हो। क़ानून के भय से सत्य का मौलिक रूप बदलना मुझे पसंद नहीं लगा।

अतः अपने गाँव वापिस आकर मैंने जो अर्ज़ीदावा बापू के ता० २७-१०-४५ वाले पत्र नं० २३५ के आदेशानुसार पहिले १-२-३ करके भेजा था, जिसके आधार पर श्री विचित्रनारायन जी ने अपना मत बापू को उनके आदेशानुसार दे दिया

था, उसी अर्जी दावे की नक़ल मैंने इस बार भी बापू को भेज दी। उसका सारांश इस प्रकार था :

(१) यह कि कोषाध्यक्ष जी को अपने तथा अपनी धर्मपत्नी के लिए ली हुई संस्था की तीन साल की सेवाओं का उचित मुआवज़ा संस्था को देना चाहिये।

(२) यह कि कोषाध्यक्ष जी ने अक्तूबर सन् ४२ से जनवरी सन् ४३ तक संस्था की बनती हुई इमारत के समय मुर्गी इत्यादि का बहाना लेकर जो रुपया संस्था का अकारण रोका और उससे जो संस्था तथा संस्था के संचालक को हानि पहुँची उसकी कोषाध्यक्ष जी पूर्ति करें।

(३) यह कि दिल्ली में श्री गांधी आश्रम में संस्था के ट्रस्टियों की मीटिंग करने के लिये ता० ४-६-४५ की स्वयं स्वीकृति देकर फिर इरादतन वहाँ न आने का तथा उस दिन संस्था के अन्य ट्रस्टियों के साथ किये गये अपने अशिष्ट बर्तावे पर उन्हें खेद प्रगट करना चाहिये।

उधर कोषाध्यक्ष जी ने बापू की उदारता का पूर्ण लाभ उठाकर अपनी पसंद के भेजे हुए दो नामों में से किसी एक को क़ानूनी पंच बनाने के लिये उन्हें लिख भेजा। बापू के नीचे के पत्र में मेरी उपरोक्त सब ही बातों का सारांश दिया हुआ है :

२४२

उरली कांचन
२७-३-४६

चि० शर्मा,

तुम्हारा ख़त मिला। शीघ्र उत्तर नहीं दे सका। ख़त अच्छा नहीं लगा। जो जल्द बाजी तुममें थी वह अभी तुम्हारे में रही है। तुम्हें पैसे के लिये कहाँ लड़ना है ? सत्य के लिये लड़ना है। गाडोदिया जी

## पत्र—२४२

( २ )

बापू के आशीर्वाद

( देखिये पन्ना—तीन सौ छप्पन )

के साथ खतो किताबत चल रहा है। उन्होंने भूलाभाई* का नाम दिया था उनके बीमारी का लिखने पर वह कहते हैं कि अब उनको "म०" का नाम कबूल है। अब मैं "म०" जी को लिख रहा हूँ तुम्हें अपना (ब्रीफ) Brief बनाकर भेजना चाहिये उसमें लम्बी चौड़ी बात न हों। उसका उत्तर गाडोदिया जी से मागूँगा और उसका प्रत्युत्तर तुम्हें देना होगा और वह सब मैं "म०" को भेज दूंगा। उसके पहिले पंच नामे में दोनों के दस्तखत होने चाहियें। तुम्हारा ता० २२ का पत्र आज मिला।

बापू के
आशीर्वाद

'सत्य' 'असत्य' दोनों की ही सहायता करने की बापू की यह दुहरी नीति मुझे बड़ी अनोखी लगी। उधर मैं श्री 'म०' से बिलकुल परिचित नहीं था और जो कुछ उनके विषय में मैंने सुना या पढ़ा था उससे भी मेरी धारणा उनको ओर से कुछ बहुत अच्छी नहीं थी इसलिये मैंने उनके नाम का पंचनामा लिख भेजने में आपत्ति की तथा इस मामले का फैसला होने तक अपनी संस्था का काम बंद करके घर बैठकर आराम करने की अपनी इच्छा प्रकट की और अपने पहिले अर्जी दावे की भाषा थोड़ी नर्म करके फिर उसी को भेज दिया। बापू को मेरे पत्र की दोनों ही बातें अच्छी नहीं लगीं। मेरे आराम करने की बात को पढ़कर उन्होंने पूना वाली अपनी बात का फिर मुझे स्मरण कराया कि मैं यहाँ के मकान और ज़मीन को छोड़ दूँ तथा श्री "म०" के नाम पंचनामा लिख भेजने में मेरी आपत्ति देख बापू ने स्वयं पंचनामे का मज़मून लिखाकर मेरे पास भेज दिया और मुझे उस पर

---

* बम्बई के श्री भूला भाई देसाई अपने देश के एक सुविख्यात वकील थे जिन्होंने श्री सुभाष बाबू की आई० एन० ए० नाम की फौज के अभियुक्तों के ऐतिहासिक मुक़द्दमें की वकालत करके उन्हें छुड़ाया था और उसी अपने घोर परिश्रम के कारण वह बीमार हो गये थे।

केवल दस्तख़त कर देने का आदेश दे दिया। जैसा कि उनके निम्न पत्र से विदित होता है :

२४३

दिल्ली
६-४-४६

चि० शर्मा,

तुम्हारा खत मिला। इतनी जल्द बाजी जो करता है और अपना धर्म भूलता है वह कैसे नैसर्गिक उपचारक माना जाय ?

जब घर पर बैठे हो तो जमीन मकान क्यों नहीं छोड़ते हो ? तुम्हारा फरियाद नामा होना चाहिये ऐसा नहीं है लेकिन मैंने गाडोदिया जी को उत्तर के लिये भेजा है। साथ में "म०" के लिये अधिकार-पत्र है। उसमें दस्तखत करके वापिस करो। उसमें तारीख स्थान और साक्षी हों।

बापू के
आशीर्वाद

उपरोक्त पत्र के साथ बापू के ही लिखाए हुए पंचनामें का यह निम्न मज़मून है जिस पर मुझे उन्होंने दस्तख़त करने का अपने उपरोक्त पत्र में आदेश दिया :

"हम दोनों के बीच में परस्पर शिकायत हैं उनका फैसला करने का काम हम श्री "म०" को सुपुर्द करते हैं उनके फैसले को हम स्वीकार करेंगे और उसे आखिरी फैसला मानेंगे। उनके लिये हम दोनों अपने सवाल जवाब श्री "म०" को गांधी जी के मार्फत भेजेंगे और "म०" हमें पूछना चाहें तो हम वे जहां कहेंगे वहां हाजिर होंगे। और गवाह होंगे तो उनको हाजिर करेंगे। हमारे सवाल जवाब श्री "म०" को पहुँचने के बाद तीन माह के भीतर वह फैसला देने की

( देखिये पन्ना— तीन सौ अठावन )

भाई डॉ॰ शर्मा,

आप का ता: ११ का पत्र पू॰ बापु जी को आज मिला - और अधिकार पत्र भी जिस पर आपने दस्तखत किये हैं। एक गवाह के दस्तखत भी मांगे थे सो वह नहीं किये।

आप की

अमृत कौर

कैम्प नई देहली

१३-४-४६.

( देखिये पन्ना—तीन सौ उनसठ )

कृपा करें। फैसला गांधी जी को भेजने से हमको भेजा ऐसा माना जाएगा"।

बापू का आदेश पाकर तुरन्त उपरोक्त पंचनामे पर दस्तख़त करने के लिए मैं विवश हो गया और ११ ता० को उसे उन्हें वापिस कर दिया। पंचनामे पर गवाह के दस्तख़त कराने का ख्याल नहीं रहा तो दिल्ली से बहन अमृत-कौर का मुझे यह पत्र मिला :

२४४

भाई डा० शर्मा,

आपका ता० ११ का पत्र पूज्य बापू जी को आज मिला। और अधिकार-पत्र भी जिस पर आपने दस्तख़त किये हैं। एक गवाह के दस्तख़त भी मांगे थे। खैर वह नहीं दिये।

आपकी
अमृत कौर

कैम्प नई देहली
१३-४-४६

दिल्ली में बापू काफी दिन रहे और मैं भी कई दिन उनके साथ रहा लेकिन संस्था के विषय में कोषाध्यक्ष जी से बापू ने तनिक भी कोई बात करना उचित नहीं समझा।

इधर बापू के आदेश का पालन करने के बाद अर्थात उनके भेजे हुए अधिकार-पत्र (पंचनामे) पर दस्तख़त कर देने के बाद मेरे पास मेरे कुछ मित्रों के ऐसे पत्र आए जिनमें मेरे ऐसा करने पर उन्होंने मुझे कुछ गंभीर संकेत दिए थे। मैंने फिर बापू को इन पत्रों का हवाला देकर उनसे प्रार्थना की कि यदि वह इन संकेतों को कोई भी महत्व दे सकें तो पंच दोनों ही पार्टी के पंसद का रखलें। लेकिन इस पर भी बापू ने बहन अमृत कौर द्वारा मुझे यह पत्र लिखाकर मेरी प्रार्थना रद्द कर दी :

२४५

प्रिय डा० शर्मा,

आपका खत पूज्य गाँधी जी को मिला। ज्यादा काम होने के कारण आज से पहले जवाब नहीं दे सकी।

पूज्य बापू कहते हैं कि श्री "म०" को लिख दिया गया है वह हट नहीं सकता।

कैम्प नई देहली
२१-४-४६

आपकी
अमृत कौर

अधिकार-पत्र गए हुए जब लगभग साढ़े तीन महीने हो गए और उसकी अवधि भी समाप्त हो गई तो मैंने बापू को इस विषय पर फिर लिखा। उस समय बापू पंचगनी में थे। वहां से उनका यह पत्र मिला :

२४६

पंचगनी
२३-७-४६

चि० शर्मा,

तुमारा खत मिला। मैं "म०" जी को लिखता हूँ क्या होता है देखुँगा। मुझे बहुत आशा नहीं है।

बापू के
आशीर्वाद

इसके एक हफ्ते बाद मुझे श्री "म०" का यह निम्न आदेश-पत्र मिला :

पत्र—२४५

भाई डा: शर्मा

आपका खत पू: गांधीजी को मिला. ज्यादा काम होने के कारण आज से पहले जवाब नहीं दे सकी.

पू: बापु कहते हैं कि श्री 'म' .. को लिख दिया गया है. वह छूट नहीं सकता.

आपकी
अमृत कौर

केम्प. नई देहली
१८. ५. ४६.

( देखिये पन्ना—तीन सौ साठ

POST CARD
THE ANNEXED CARD IS INTEN
FOR THE ANSWER
ADDRESS ONLY
INDIA POSTAGE

Bombay,
2nd. August, 1946.

Dear Dr. Sharma,

I have received the reference papers signed by you and Mr. Gadodia from Mahatmaji appointing me Arbitrator in the matter of your dispute. I appoint Sunday, the 11th. August 1946 at 2. P. M. at my place at the above address, for the meeting in the matter. The meeting will continue on the 12th. You may produce all documents, papers and vouchers and oral evidence if any at the time. If there are any statements that you want to place before me I shall feel obliged if you will send them to me before that date.

Dr. Hiralal Sharma, Yours Sincerely,
Naturopath, Khurja. Sd. "M"

२४७

२ अगस्त, १९४६

प्रिय डा० शर्मा,

आपके मामले में मुझे "पंच" नियुक्त करते हुए महात्मा जी द्वारा आपके और श्री गाडोदिया जी के हस्ताक्षरित विवाद सम्बन्धित कागजात मिल गये हैं। इस स्थान पर इतवार– ११ अगस्त १९४६ को

दो बजे का समय मैं नियुक्त करता हूँ। बैठक १२ ता० को भी चलती रहेगी। आप चाहें तो उस समय तमाम कागज़ात, वाउचर या ज़बानी शहादत जो भी देना चाहें दे सकते हैं। यदि कोई ऐसे ब्यान हों जिसे आप मेरे समक्ष रखना चाहते हों तो मैं कृतज्ञ होऊंगा यदि आप उन्हें ता० से पहिले मुझे भेज देंगे।

आपका शुभचिन्तक

डा० हीरालाल शर्मा,
प्राकृतिक चिकित्सक, खुर्जा।

ह० "म०"

पंच महोदय श्री "म०" के आदेशानुसार बम्बई ११ अगस्त को पहुँचने के लिए मैं ८ अगस्त की सुबह को सेवा-ग्राम बापू के पास पहुँचा और वहां तीन दिन ठहर कर ११ ता० को बम्बई ठीक समय पर श्री "म०" के मकान पर पहुँच गया। लेकिन हमारे कोषाध्यक्ष जी जब वहाँ भी नहीं पहुँचे तो मुझे ऐसा लगा मानों हमारी समाज ने धनी व्यक्तियों को सब ही प्रकार के अपराधों से मुस्तसना कर रक्खा हो। हमारे पंच महोदय श्री "म०" को कोषाध्यक्ष जी ने यह सूचना भेज दी कि वह ३१ अगस्त से पहिले नहीं आ सकेंगे। किन्तु हमारे पंच महोदय ने मेरे ऊपर कृपा की और उन्हें एक्सप्रेस तार द्वारा यह ख़बर भेजी:

248

Bombay. Sunday—August, 11. 1946

Gadodia, Delhi.

Your telegram. Cannot postpone 31st. I am engaged after 20th. Sharma waiting here. Any day before 19th. suits me.

Sd. "M"

—तीन सौ बासठ

बम्बई। रविवार—अगस्त, ११-१९४६

गाडोदिया, दिल्ली

तार मिला। ३१ तक मुल्तवी नहीं कर सकता। २० के बाद मैं व्यस्त रहूंगा। शर्मा यहाँ इंतजार कर रहे हैं। १९ से पहिले कोई भी दिन मुझे अनुकूल होगा।

ह० "म०"

मैं बम्बई शहर से दूर सेन्टाक्रूज़ में ठहरा था और प्रतिदिन अपनी फाइलों का बस्ता बग़ल में दबा कर श्री पंच महोदय के मकान पर कोषाध्यक्ष जी के समाचार मालूम कर जाता था और ग़रीबों के प्रतिनिधि के नाते मन ही मन में ईश्वर से पूछता था कि उसने अपनी दुनियां में जब आने का तथा यहां से जाने का रास्ता अमीर और ग़रीब के लिये एक ही रक्खा है तो फिर थोड़े से समय के लिये इस अपनी सराय में मुक़ाम करने में ही अपने बन्दों के लिये इतनी भारी दुभांति क्यों रक्खी? उत्तर जैसा मिलता था। 'मैंने नहीं रक्खी। यह सब तुम लोगों ने की है और तुम्हीं उसे समान भी बना सकते हो।'

आख़िर १५ ता० को मुझे पंच महोदय द्वारा यह समाचार मिला कि १६ ता० को कोषाध्यक्ष जी हवाई मार्ग से आएँगे। १६ अगस्त के दिन १० बजे मैं पंच महोदय के बराम्दे में बैठा हुआ प्रतीक्षा कर रहा था कि थोड़ी ही देर में एक १४ फुटी मोटरकार दरवाज़े पर रुकी जिसमें से कोषाध्यक्ष जी तथा उनके मुतबन्ना साहब जो बम्बई में ब्याहे हैं मोटर से उतर कर सीधे कोठी में दाख़िल हो गये। मुक़दमा तुरन्त पेशी में आया और २० मिनट में समाप्त हो गया। पंच महोदय ने मेरी फाइलों में से फ्लेग लगे हुए ऐसे ९* पत्र रख लिए जिनमें

*सबूत के वास्ते मेरी फाइल में से लिये गये यह नौ पत्र बावजूद मेरे लिखने पर पंच महोदय ने फिर मुझे आजतक न वह वापिस किये और न कोई उत्तर ही दिया।

—तीन सौ तिरसठ

संस्था की सेवाओं का पारितोषिक देने के विषय में अधिक स्पष्ट रूप में आशा जनक शब्द कोषाध्यक्ष जी की धर्मपत्नी ने संस्था के नाम लिखे थे।

इन बीस मिनटों के लिये दो वर्ष से यह नाटक रचा गया था जो १६ अगस्त को सुबह १०-२५ पर समाप्त हुआ। मुक़दमें की सुनाई के समय पंच महोदय का बर्ताव मेरे प्रति एक कुशल राजनितिज्ञ (डिप्लोमेट) की भांति बड़ा सुन्दर रहा। उन्होंने अपने सहानुभूति के शब्दों द्वारा मानों मेरी ६ दिन की सब थकान उतार दी थी। मैं शाम की ट्रेन से तुरन्त सेवाग्राम के लिये रवाना होकर १७ ता० की सुबह को बापू के पास पहुँच गया तथा पंच महोदय की बुद्धिमानी की उनसे प्रशंसा की जिन्होंने २० मिनट में ही सब हाल सुनकर मुझे मुक्त कर दिया।

बापू के इस प्रश्न पर कि पंच महोदय के निर्णय के बारे में मेरा क्या ख्याल है मैंने बड़े उत्साह से उत्तर दिया कि "वह तो मुझे मेरे पक्ष में ही मालूम देते थे इसलिए निर्णय भी मेरे पक्ष में ही देंगे।"

कुछ दिन बाद जब बापू फिर दिल्ली आए तो २१ अगस्त को उन्होंने मुझे यह पत्र लिखा :

२४६

नयी दिल्ली
२१-८-४६

चि० शर्मा,

श्री "म०" का निर्णय मेरे पास आ गया है तुम्हारे कहने पर मैं समझा था कि वह तुम्हारे पक्ष में है। अब मैं पाता हूँ कि वह तुम्हारे पक्ष में नहीं है लेकिन विरुद्ध में है मेरे पास साफ नकल आने पर तुमको एक भेज दूंगा।

बापू के
आशीर्वाद

—तीन सौ चौसठ

एक हफ्ते बाद पंच महोदय श्री "म०" ने स्वयं ही मेरे पास अपना निर्णय-पत्र भेज दिया। जिसे पाठकों के पढ़ने के लिये मैं यहाँ देना उपयुक्त समझता हूँ :

250

Bombay,
6th. September, 1946

To

Dr. Hiralal Sharma,
Naturopath, Khurja.
&
Sri Laxmi Narayan Gadodia, Chandni Chowk,
Kuncha Natwan, Delhi.

Re:—Arbitration between yourselves.

Dear Sirs,

Please take notice that I have made and published my Award in the above matter. The original Award is forwarded to Sri Laxmi Narayan Gadodia and a copy to Dr. Hiralal Sharma.

Yours faithfully,
Sd. "M"
Arbitrator.

—तीन सौ पैंसठ

बम्बई,
६ सितम्बर, १९४६

सेवा में :—

डा० हीरालाल शर्मा,
प्राकृतिक चिकित्सक, खुरजा।
और
श्री लक्ष्मी नारायण गाडोदिया,
गाडोदिया बिलडिंग, चांदनी चौक,
कूचा नटवा, देहली।

विषय :—आपके बीच का पंच-निर्णय

प्रिय महोदय,

कृपया ध्यानपूर्वक समझ लीजिये कि उपरोक्त मामले में मैंने अपना निर्णय निश्चित करके प्रकाशित कर दिया है। मौलिक निर्णय श्री लक्ष्मी नारायण गाडोदिया को और उसकी एक प्रतिलिपि डा० हीरालाल शर्मा को प्रेषित की जाती है।

आपका विश्वसनीय,
ह० "म०"
पंच।

(Stamp Paper of Rs. 30/-)
copy

## निर्णय-पत्र

सेठ लक्ष्मी नारायण गाडोदिया १० अप्रैल सन् १९४६ के लिखित पत्र द्वारा तथा पंडित हीरालाल शर्मा ११ अप्रैल सन् १९४६ के लिखित

पत्र द्वारा अपना झगड़ा ही निपटवाने को एकमत हुए हैं। और मैंने उसके लिये १६ अगस्त सन् १६४६ को बैठकें बुलाईं।

दोनों पत्तों ने मेरे सम्मुख अपने वक्तव्य दिए और एक दूसरे से उत्तर-प्रत्युत्तर किया और अपनी-अपनी बातें मुझे समझाईं और क्योंकि मैंने उन पत्रों को भी भली भांति पढ़ा है जो दोनों पत्तों को मान्य है, इसलिये मैं यह निर्णय देता हूं कि पंडित हीरालाल शर्मा की माँग अयुक्त है वह अस्वीकृत की जाती है और मैं यह भी निर्णय देता हूँ कि १ पंडित हीरालाल शर्मा का यह कहना भी अप्रामाणिक है कि सेठ लक्ष्मीनारायण गाडोदिया ने अनियमित रूप से अक्तूबर सन् १६४२ और जनवरी सन् १६४३ के बीच में ट्रस्ट का रुपया रोका। मैं यह भी निर्णय देता हूँ कि पंडित हीरालाल शर्मा का यह अभियोग कि सेठ लक्ष्मीनारायण गाडोदिया ने न तो बैठकों में भाग लिया, न चिट्ठियों पर हस्ताक्षर किये और कभी कभी तत्सम्बन्धी पुस्तकों पर भी हस्ताक्षर नहीं किये, इतना गंभीर नहीं है कि उनपर ट्रस्ट के प्रबन्ध में बाधा डालने का अपराध सिद्ध हो। मैं यह भी निर्णय करता हूँ कि दोनों पक्ष अपना अपना व्यय सहन करें और मैं अपने पंच होने का कोई पारिश्रमिक नहीं लेता हूँ।

ह० "म०"

५-८-४६

श्री "म०" का निर्णय-पत्र प्राप्त होते ही बापू को मैं पत्र लिखने वाला था कि उनका यह निम्न पत्र आ गया :

२५१

नयी दिल्ली,

६-६-४६।

चि० शर्मा,

"म०" आज यहाँ है। उन्होंने अपने निर्णय को एक नकल तुमको

भेजी है। स्टाम्प वाली गाडोदिया जी को भेजी है। उन्होंने मुझको थोड़ा ब्यान भी दिया है तुम चाहो तो मैं उसकी नक़ल भेज दूं। उसकी जरूरत नहीं।

बापू के
आशीर्वाद

उपरोक्त पत्र के फोटो ब्लोक में पाठक देखेंगे कि पत्र को लिखवाकर बापू ने उस पर हस्ताक्षर करते वक्त जो स्वयं अपनी क़लम से यह लिखा है कि 'उसकी ज़रूरत नहीं' इससे श्री "म०" के कथित 'ब्यान' को बापू ने क्या अहमियत दी उसका निर्णय पाठक स्वयं ही कर लें। बहर-हाल मैंने बापू से वह कथित 'ब्यान' मुझे भेजने के लिये कोई इसरार नहीं किया बल्कि बापू के उपरोक्त पत्र के उत्तर में मैंने उनके द्वारा श्री "म०" के निर्णय-पत्र का धन्यवाद भेजा और बापू को लिखा कि श्री "म०" का निर्णय मेरे विरुद्ध में मैं नहीं मानता उसे तो मैंने बापू के विरुद्ध में माना है। मुझे तो केवल एक ही आश्चर्य हुआ था और वह यह कि निर्णय-पत्र पर लगाए गए स्टाम्प का तीस रुपया झगड़े वाली किसी पार्टी से तो लिया नहीं गया था फिर श्री "म०" ने अपने निर्णय-पत्र को पक्का क़ानूनी बनाने के लिये वह ख़र्च कहाँ से किया? मेरे उस पत्र का बापू ने बड़े विनोद भरे शब्दों में यह उत्तर भेजा:

२५२

नयी देहली
१२-६-४६

चि० शर्मा,

तुम्हारा खत मिला। मेरा ख्याल तो ऐसा है कि स्टाम्प का खर्च

—तीन सौ अड़सठ

"म०" जी ने अपनी जेब से निकाला। वे प्रथम पंक्ति के वकील हैं और शायद आज माहवार १५ या २० हज़ार रुपया कमाते हैं। कुछ भी हो, उदार चित्त के हैं। हो सकता है कि स्टाम्प का खर्च गाडोदिया जी भेज दें। उनसे मैं मिला नहीं हूँ। निर्णय मेरे विरोध में है ऐसा तुमको लगे तो भले। मुझे ऐसा नहीं लगता। मैंने तुम्हें लिखा भी था कि तुम्हारे दावा अर्जी में जो चाहिये वह सब नहीं था।

बापू के
आशीर्वाद

श्री "म०" के निर्णय-पत्र से जो कुछ मुझे शिक्षा मिली उसे मैंने अपने गाँठ बाँधी और निर्णय-पत्र की कई कापियाँ करके संस्था के अन्य ट्रस्टियों को तथा अपने कुछ पुराने साथियों को उनकी जानकारी के लिए भेज दीं। इस विषय में बहुत से मित्रों के अनेक प्रकार के पत्र आए उनमें संस्था के तीसरे ट्रस्टी—श्री विचित्र नारायन जी की यह दो पंक्तियां यहां देना अयुक्त न होगा :

२५३

श्री गांधी आश्रम, मेरठ।
१३-६-४६

प्रिय डाक्टर शर्मा,

आपका पत्र मिला। "म०" ऐसा ही निर्णय देंगे यह मैं पहिले ही समझता था।............बाक़ी कुशल।

भवदीय
विचित्र नारायन

—तीन सौ उनहत्तर

बड़े कष्टों के साथ वर्षों में अपने खून पसीने से बसाई गयी गांव की अपनी छोटी सी नगरी जिसको अपनी देश की संस्कृति के अनुसार न्यूयोर्क जैसे ग़रीबों की आदर्श बस्ती के समान बनाने के मैं स्वप्न देखा करता था वहां अपने रक्षक ही भक्षक बनते देख उससे मेरा जी ऊब गया 'पन्द्रह बीस हज़ार रुपया माहवार' वकालत जैसे पेशा से कमाने वाले व्यक्ति के उपरोक्त पंच फैसले को पढ़ते ही अपना निर्णय करने में मुझे एक क्षण भी न लगा। मेरे जीवन के कठिन अवसर, जिनका मेरे भविष्य पर गहरा असर पड़ा है, ऐसे ही हुए हैं। कई मौक़ों पर घटनाएँ ऐसी हुई हैं कि मुझे अपना फ़ैसला करने में कुछ देर न लगी। इसे मैं अपना सौभाग्य समझता हूँ। मैंने अपनी ही बनाई हुई छोटी सी नगरी से अपना त्याग-पत्र देने का निर्णय कर लिया और इसी विषय का पत्र बापू को लिख भेजा। बापू ने भी तुरन्त इसका अनुमोदन किया और मुझे यह निम्न पत्र भेजा :

२५४

दिल्ली
४-१-४६

चि० शर्मा,

तुम्हारा ख़त मिला। मैं मानता हूं कि तुम्हें स्तीफा दे देना चाहिये। लेकिन खुर्जा में नैसर्गिक उपचार का काम आज तो करने में मैं काफ़ी दिक्क़त पाता हूँ। मैंने कोई निर्णय नहीं किया है यहाँ आजाओगे तो मैं तुम्हारा मानस और समझ लूँगा। बाद में निर्णय करेंगे। तो सोमवार को ७ ता० को रात के आठ बजे आना दूसरा कोई काम बीच में आ पड़े तो तुम्हें रुकना पड़ेगा।

बापू के
आशीर्वाद

—तीन सौ सत्तर

चि. रामा, नंदि १६/५/३६

तुम्हारा खत मिला. मैं यहां २८ तारीख तक हुं और खास आनंद आता है. लेकिन और खास मानो कि मैं ठीक ही हुं.

बापुके आशीर्वाद

( देखिये पन्ना—तीन सौ इकहत्तर )

मैं किसी कारण वश ७ ता० को दिल्ली नहीं पहुँच सकता था। अतः बापू को मैंने पत्र लिखकर यह दरियाफ्त किया कि वह दिल्ली कब तक ठहरेंगे। उसके उत्तर में बापू ने यह मार्मिक तथा संकेत पूर्ण ख़त लिखा :

२५५

नई दिल्ली
१६-१०-४६

चि० शर्मा,

तुम्हारा ख़त मिला। मैं यहाँ २३ तारीख़ तक हूँ ऐसा आज तो लगता है। लेकिन ऐसा मानों कि मैं क्षण जीवि हूँ।

बापू के
आशीर्वाद

बापू का यह पत्र मेरी फ़ाइल में आज तो अन्तिम पत्र है क्योंकि आगे के चार पांच पत्र दीमक ने बिलकुल नष्ट कर दिये। लेकिन सन् १९४७ देश के लिये एक ऐतिहासिक वर्ष था। देश में महान् घटनाएँ इसी वर्ष हुईं जिनके सिलसिले में बापू का दिल्ली आना जाना कई बार हुआ। दिल्ली से मेरा गाँव केवल ५० मील की दूरी पर है इसलिये मैं उनसे दिल्ली बराबर मिलता रहा।

बापू के उपरोक्त मार्मिक पत्र को पढ़ते ही मैं १८ ता० को उनसे दिल्ली मिला। बापू ने कमर ठोकी और छूटते ही कहा, "क्या गीता का वह श्लोक याद है 'स्वधर्मे निधनं श्रेयः' या सब भूल गये ?" बापू को देखकर मेरा दिल तो भर आया था लेकिन तुरन्त अपने को संभाल कर मैंने कहा "याद है बापू भूला नहीं हूँ"। इस पर बापू ने कहा "तो अब उरली कांचन जाकर बैठ जाओ"। लेकिन उरली कांचन तो मेरा जाना बापू के वहां रहने पर ही तय हुआ था अतः मैंने उत्तर दिया "वहां आप के साथ ही तो जाऊँगा" इस पर बापू ऐसी हंसी हंसे मानो मेरे इस कथन का उत्तर उन्होंने अपनी हंसी द्वारा

—तीन सौ इकहत्तर

भवितव्यता की झलक दर्शाते हुए दे दिया हो जिसका कटु अनुभव मैं कुछ अर्से बाद ही कर सका।

दो मिनट की खामोशी के बाद बापू ने मुझे दूसरे दिन सुबह को उनके टहलने के वक्त साथ रहने का आदेश दिया।

उन दिनों देश में स्थाई सरकार बन चुकी थी श्री नेहरू जी २ सितम्बर को देश के प्रधान मंत्री बने थे जबकि श्री जिन्हा ने वह दिन "मातम का दिन" घोषित कर दिया था। हिन्दू-मुस्लिम मारकाट के छुटपुट झगड़े बंगाल की तरफ प्रारम्भ भी हो चुके थे। 'हरिजन बस्ती' में बापू की झौपड़ी मानों महामंत्री का निवास-स्थान बनी हुई थी। मिनट-मिनट में काँग्रेसी मंत्री तथा उनके सहायक व अन्य प्रान्तों के अधिकारी गण बापू से छोटी-बड़ी सब बातों की सलाह लेने आते थे। और सुबह से शाम तक इसी तरह का ताँता लगा रहता था। उन दिनों शाम को बापू आँखें मूँद कर टहलते थे वह कहते थे कि उस तरह टहलने से उन्हें काफ़ी आराम मिलता था। इस प्रकार तीन दिन तक शाम को टहलते समय की बातों से जब बापू को यह भली भांति मालूम हो गया कि मेरा दिल अपनी संस्था में काम करने का नहीं रहा तो अंत में यह निश्चय हुआ कि 'मैं संस्था की इमारत के सदुपयोग का कोई उचित प्रबन्ध करके बापू को सूचना दूं और फिर उरली काँचन चलने का सोचेंगे।'

यहां अपने चालू विषय के अन्तर्गत मैं अपने हृदय में आए हुए कुछ भाव लिख देना अपना धर्म समझता हूँ, पाठक क्षमा करेंगे :

बापू अपने जीवन के शेष भाग को देश में ग्रामीण जनता के लिये प्राकृतिक-चिकित्सा की नींव जमाने में व्यतीत करने के बड़े उत्सुक थे लेकिन अभाग्यवश देश के राजनीतिज्ञों ने तथा राजनीतिज्ञों द्वारा पैदा की हुई गंभीर राजनैतिक परिस्थितियों ने बापू को यह अपनी अन्तिम तथा सर्वप्रिय योजना को सफल बनाने से वंचित रक्खा। मेरा यह कहना भी अतिश्योक्ति न होगा कि देश के राजनीतिज्ञों की स्वार्थसिद्धि ने बापू की जीवन लीला ही समाप्त कर दी जिसका

कि आभास वह मुझे पहिले ही कई बार दे चुके थे जैसा कि उपरोक्त वर्णन से तथा आगे की घटनाओं से सिद्ध हुआ। इसीलिये ख़ास तौर पर देश के उन राजनीतिज्ञों से, जो आज स्वयं प्राकृतिक चिकित्सा के थोड़े बहुत साधारण नियमों पर चलकर अपने शरीर को सुदृढ़ बनाए हुए देश का शासन कर रहे हैं, मैं बराबर यह कहता रहा हूँ कि वह देश के राजनैतिक इतिहास के उपरोक्त भारी कलँक को दूर करने के लिए तथा वह अपने प्रति बापू के भारी नैतिक ऋण से उऋण होने के लिए और इस कृषि देश के ग्रामवासियों की सच्ची भलाई के लिए बापू की कम से कम इस साधारण सी अन्तिम योजना को तो सफल बनाने में सहयोग देकर अपनी तरह अपने देश वासियों को भी स्वतन्त्रता के अमृत-रस की दो बूंदों का लाभ उठाने दें।

बापू के स्वास्थ्य सम्बन्धी अनेक अनुभूत प्रयोगों को छोड़कर, जिनका आज ज़िक्र करना मानों अरण्य-रोदन ही है, उनकी केवल मिट्टी जैसी साधारण चीज़ के प्रयोग को ही ले लीजिये। इस मामूली सी वस्तु का बापू ने जीवन पर्यन्त उपयोग किया और लाभ उठाया, यह तो किसी से छिपा ही नहीं है और यह भी सब समझते ही हैं कि अपनी खुली आँखों तक भले ही कोई राजा बनकर मख़मल तथा रेशम पर बैठे या दूसरा कोई ग़रीब अपने फटे चीथड़ों में लिपटा पड़ा रहे लेकिन आखें मिचने पर तो इस संसार में उन दोनों ही के लिये पृथ्वी माता के अतिरिक्त अन्य कोई भी यहां पांच मिनट ठहरने का आश्रय नहीं देता। आँख मुंदने पर जब यहाँ सबको सभी के प्रेमी जन जल्दी से जल्दी ही अपने सामने से हटा देने का प्रयत्न करते हैं तब केवल मिट्टी ही जननी के रूप में उन्हें अपनी गोद में सदैव के लिये आश्रय प्रदान करती हैं। जब आँखें मिचने पर सदियों तक मिट्टी की गोद में राजा तथा भिखारी को एक समान स्थान मिलता है तो इन खुली आँखों के थोड़े से समय में यदि हम अपना सम्पर्क मिट्टी रूपी जननी से स्थापित करके अपने शरीर के अनेक रोगों को भी उसी के द्वारा दूर कर सकें तो कौन सी हमारी नाक कट जायगी ? या हमारी शान को धब्बा लग जायगा ? इस तथ्य को भी अगर हम देख पाएँ तो जहाँ हम दिन प्रतिदिन बड़े बड़े हस्पताल

खोलकर अपनी अवनति का परिचय दे रहे हैं तथा अनेक प्रकार की नवीन विषैली वस्तुओं का प्रयोग कराकर यहां की भोली भाली जनता के जीवन के साथ खिलवाड़ कर रहे है वहां उन्हीं हस्पतालों के एक कोने में बापू की अनुभव की हुई इस मिट्टी जैसी साधारण वस्तु का भी वैज्ञानिक ढंग से रोगियों पर अगर प्रयोग करायें तो इसमें मेरे विचार से देश के स्वास्थ्य विभाग की दूरदर्शिता का ही प्रमाण मिलेगा—मूर्खता का नहीं। इसके अतिरिक्त आने वाले उज्ज्वल भविष्य में जब देश का इतिहास दोहराया जाएगा तो तत्सम्बन्धी आज के अधिकारी वर्ग का कम से कम यह धब्बा तो सामने न आएगा जो वह स्पष्ट रूप में अपने ऊपर लगाए बैठा है और उसे देखता तक नहीं।

मुझे कुछ ऐसा स्मरण होता है कि हमारे कुशल उप-राष्ट्रपति जी ने भी किसी स्थान पर मिट्टी जैसी सादा चीज़ का हस्पतालों में मरीज़ों पर प्रयोग करने का संकेत दिया है यद्यपि मुझे उसका पूरा विवरण इस समय ठीक याद नहीं हो रहा है। लेकिन आज के अधिकारी वर्ग के बड़ों से यह बात तो छिपी है ही नहीं कि देश में उनकी ही पैदा की हुई राजनैतिक परिस्थितियों में मजबूरन फँस जाने के बावजूद बापू प्राकृतिक चिकित्सा की अपनी योजना के विषय में कितने उत्साह से लेख लिखते रहे थे—सो तो १९४७ के उनके 'हरिजन' से तथा उनके "उरली-कांचन" के साथ हुए पत्र-व्यवहार से और उनके साथ आगे हुई मेरी वार्तालाप से ही स्पष्ट प्रतीत है। फिर मुझे यह देखकर आश्चर्य जनक खेद होता है कि हमारा स्वास्थ्य विभाग तत्सम्बन्धी विषय पर अब तक उदासीन कैसे रहा!

बापू के पास से लौटने के बाद तथा बहुत कुछ सोचने के पश्चात मैंने अपनी संस्था की इमारत को श्री गाँधी आश्रम, मेरठ को किसी भी सार्वजनिक कार्य्य के लिए दे देने का विचार कर लिया तथा संस्था के ट्रस्टियों की बैठक २० दिसम्बर को श्री गाँधी आश्रम, मेरठ में बुलाने के लिये एजेन्डा सहित नोटिस निकाल दिया। लेकिन संस्था के कोषाध्यक्ष जी इस बैठक में भी सम्मिलित नहीं हुए अतः निम्न लिखित ही प्रस्ताव पास करके वह मीटिंग समाप्त हो गई :

"डा० शर्मा जी के इस प्रस्ताव को कि 'सूर्य चिकित्सालय तथा दधीच सेवा संघ की इमारत का पूर्ण अधिकार श्री गाँधी आश्रम, मेरठ को दे दिया जाय' यह फ़िलहाल स्थगित कर दिया जाय।"

"उरली कांचन" जाने के लिए यहां से जल्दी फारिग़ हो जाने की इच्छा से मैंने १० फरवरी १९४७ को संस्था के भवन में ट्रस्टियों की बैठक फिर रक्खी। इस मीटिंग में भी जब कोषाध्यक्ष जी नहीं आए तो यह निम्न लिखित प्रस्ताव पास कर दिए गए :

(१) "ट्रस्ट की धारा न० १९ के अनुसार संस्था के कोषाध्यक्ष जी को संस्था से अलग हुआ मान लेना स्वीकार हुआ"।

(२) "................. डा० शर्मा जी से प्रार्थना की गई कि वह अपने निश्चय पर फिर विचार करें परन्तु उन्होंने अपनी बहुत सी निजी कठिनाइयां बताते हुए असमर्थता प्रकट की। लिहाज़ा ट्रस्ट उनके प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते हुए उनके प्रस्ताव को दुःख के साथ स्वीकार करता है और श्री गांधी आश्रम, मेरठ से प्रार्थना करता है कि वह सूर्य चिकित्सालय तथा दधीच सेवा संघ की इमारत व कम्पाउंड को संभालले और इसका उपयोग अपने उद्देश्यों के अनुसार लोक सेवा कार्य में करे।"

उपरोक्त प्रस्ताव स्वीकृत हो जाने से मैं बहुत खुश था और "उरली कांचन" में कार्य करने की रूप रेखा तैयार करने लगा था किन्तु मेरी धर्म पत्नी को गांव की स्त्रियों तथा बच्चों को छोड़कर बाहर जाने में दुःख हो रहा था। उसने एक दिन इसी गाँव में रहने की अपनी इच्छा ज़ाहिर की। उसकी स्वतंत्र इच्छा का मैंने स्वागत किया तो वह भी खुश हो गई। उसने संस्था के पास ही ज़मीन के एक टुकड़े को ख़रीद लिया जो अपनी गौओं के चरागाह के लिए मैंने किराये पर ले रक्खा था और मैंने उसकी ज़मीन पर उसका मकान बन जाने तक वहाँ ठहरना स्वीकार कर लिया।

बापू उन दिनों नवाखाली से बिहार आकर वहां के हिन्दू-मुस्लिम

झगड़ों को शांत करने के लिये बिहार के गांवों में पैदल यात्रा कर रहे थे। उधर दिल्ली में देश के टुकड़े होने की बातें चल रहीं थीं। श्री जिन्हा पाकिस्तान के लिए अड़े हुए थे। उनकी सीधी कार्यवाही के ऐलान से देश मारकाट से थर्रा उठा था। २२ मार्च १९४७ को लार्ड माउन्टबेटन सपत्नीक भारत में आए और चार दिन के भीतर ही उन्होंने बापू से बातचीत करने की इच्छा प्रकट की। लार्ड माउन्टबेटन इस वार्तालाप के लिये इतने इच्छुक थे कि उन्होंने बापू को बिहार से लाने के लिये हवाई जहाज़ भेजना चाहा था किन्तु बापू ने हवाई जहाज़ का प्रयोग कभी नही किया। उन्हें तो जन साधारण की ही सवारियां पंसद थीं अतः ३१ मार्च को रेल द्वारा ही बापू बिहार से दिल्ली आए और १२ अप्रैल तक नए वाइसराय—लार्ड माउन्टबेटन से ६ मर्तबा उनकी भेंट हुई। बापू ने देश के किसी प्रकार के विभाजन का अनुमोदन नहीं किया और अपने मरने के वक्त तक उसके लिये अपनी स्वीकृती देने से इन्कार कर दिया।

इस पखवाड़े भी बापू हरिजन बस्ती में ही रहे थे। मैंने उनके दिल्ली आते ही उस वक्त तक के अपने सब काम की रिपोर्ट उन्हें दे दी। बापू मेरी धर्मपत्नी का उसी गाँव में रहने का निश्चय सुनकर बड़े प्रसन्न हुए और उसके मकान बन जाने तक मुझे वहां रहने की अनुमति दे दी। उन दिनों देश की महत्वपूर्ण घटनाएँ घटित होते हुए भी बापू 'नेचर क्योर' के सम्बन्ध में अपनी हिदायतें 'उरली कांचन' बराबर भेजते रहते थे। सच पूछा जाय तो बापू का हृदय 'उरली-कांचन' में ही था। उन्होंने मुझे उन दिनों का 'हरिजन' बराबर पढ़ने की सलाह दी। बापू बिहार के लिये वापिस चले गये और मैं अपने गांव के लिए रास्ते में खुर्जा स्टेशन पर उतर गया।

कांग्रेस कार्य समिति के सामने देश के विभाजन का महान ऐतिहासिक मसला हल करने को था। लार्ड माउन्टबेटन ने हमारे देश के नेताओं की मनोवृतियों का तथा देश की स्थिति का अच्छा अध्ययन कर लिया मालूम होता था। देश के विभाजन का वही उपयुक्त समय जानकर उन्होंने कांग्रेस के सामने स्पष्ट तथा सीधा

प्रश्न यही रक्खा कि 'क्या कांग्रेस देश का विभाजन स्वीकार करेगी ?' इस संबंध में १ मई को कांग्रेस कार्य समिति की बैठक होने वाली थी। उस मौक़े पर श्री नेहरू जी ने बापू को दिल्ली आने के लिये तार द्वारा प्रार्थना की। मई की गर्मी में बापू ५०० मील का सफ़र करके फिर दिल्ली आए; किन्तु देश के विभाजन के लिये बापू के विरुद्ध होते हुए भी कार्य समिति ने विभाजन की योजना स्वीकार करली जिसका ३ जून १६४७ को प्रधान मंत्री—श्री एटली द्वारा कोमन्स सभा में तथा लार्ड माउन्टबेटन द्वारा नई दिल्ली के रेडियो स्टेशन से एक साथ ऐलान कर दिया गया और १५ जून को कांग्रेस महासमिति ने भी उसे मन्ज़ूर करके अधिकृत रूप दे दिया।

कांग्रेस के इस अमल पर बापू अपनी खेद मिश्रित झुँझलाहट को छिपा न सके। उनका कहना था कि "३२ वर्ष के काम का एक 'शर्मनाक' अंत होने जा रहा है यह एक 'दुःखद' विजय है"। अतः देश की आज़ादी देश के निर्माता के लिये शोक समाचार लेकर आई। अपने देश का पिता अपने ही देश से निराश हो गया। हिन्दू-मुस्लिम ख़ून फ़िसाद बढ़ने लगे। यहां बापू ने दुःख के साथ यह स्वीकार किया और कहा कि, "मैंने इस विश्वास में अपने को धोखा दिया कि जनता अहिंसा के साथ बँधी हुई है"।

हमारे ज़िले में भी हिन्दु-मुस्लिम फ़िसाद की आग भड़क उठी थी। उधर कलकत्ते में भी झगड़े फिर शुरु हो गये थे। कांग्रेसी नेता दिल्ली में आज़ादी की खुशियाँ मना रहे थे और उधर बापू कलकत्ते के पागल बने मनुष्यों में देवत्व की खोज करने जा रहे थे और इधर मुझे अपने ज़िले के हिन्दू-मुस्लिम झगड़ों को शान्त करने के लिये मरने तक का आदेश दे गये थे। हमारा ज़िला बिलकुल पागल हो उठा था। मकानों के पतनालों से खून बह रहे थे; रेलगाड़ियां रोक रोक कर बेगुनाह मुसाफ़िरों का क़त्ले-आम हो रहा था। चारों ओर त्राहि-त्राहि मच गई थी। उन दिनों इस जिले के कलेक्टर—श्री आर० पी० भार्गव तथा अन्य सरकारी कर्मचारियों ने मुझे मेरे काम में पूर्ण सहयोग दिया। यद्यपि कई बार

ऐसे मौक़ों पर मुझको अपनी जान की बाज़ी लगानी पड़ी लेकिन अंत में इन सब बेहूदगियों पर क़ाबू पा लिया। खुर्जा में ख़ूनी इतिहास के वह दिन यहां के बाशिन्दे भुला नही सकते। उधर बापू ने कलकत्ते में एक सितम्बर से अनशन प्रारम्भ कर दिया जिसका तिहत्तर घंटे में ही वहां की पागल हुई जनता पर वह जादू का सा असर पड़ा कि कलकत्ते में पूर्ण शान्ति स्थापित हो गई।

कलकत्ते में शान्ति स्थापित करने के बाद बापू दिल्ली होते हुए पंजाब जाने का इरादा रखते थे इसलिये अपने उपवास की कमज़ोरी में ही वह ७ सितम्बर को वहाँ से चल पड़े। लेकिन दिल्ली में विद्रोह के आग की लपटें ज़ोर पकड़ गई थीं। देश की नई अनुभवहीन सरकार उसके दबाने में असमर्थ थी उसके चेहरों पर निराशा छाई हुई थी अतः दिल्ली की ख़राब हालत देखकर बापू को वहीं रुक जाना पड़ा। बापू के ठहरने की जगह 'हरिजन बस्ती' पंजाब के शरणार्थियों से भर चुकी थी इसलिए अबकी बार बापू नई दिल्ली में श्री बिरला जी की कोठी पर ठहरे। इस बार दिल्ली में बापू से मैं तीन बार मिला। इन तीन मुलाक़ातों में देश की गन्दी राजनीति का भी मुझे बड़ा कटु अनुभव हुआ।

दो अक्तूबर सन् १९४७ को बापू का अठहत्तरवां जन्म दिवस था मैं अपने ज़िले के पूरे समाचार लेकर उनके पास गया था। मेरे साथ ज़िले के कुछ उच्च सरकारी कर्मचारी भी थे जो बापू के दर्शनार्थ बड़ी उत्सुकता से मेरे साथ हो लिये थे। बापू के पास छोटे-बड़े सब मुबारिकबादियाँ देने आ रहे थे लेकिन उनके उस जन्म दिवस पर मैंने बापू में कोई विशेष प्रसन्नता नहीं पाई। उस समय बापू मुझे उस सेनापति की भाँति लगे जिसकी विजयी सेना ने खुद अपने सेनापति को हटा दिया हो। उन्होंने वहां उपस्थित लोगों से कहा, **"मुबारिक-बाद का मौक़ा कहाँ है? क्या सम्वेदनाएँ भेजना अधिक उचित नहीं होगा? मेरे हृदय में तीव्र वेदना के सिवाय कुछ नहीं है। एक समय था कि जब जन समूह पूरी तरह मेरे कहने के अनुसार चलता था। आज मेरी आवाज़ अरण्य रोदन के समान है"**। मैंने धीरे से कहा

—तीन सौ अठहत्तर

"बापू उरली कांचन में रोगियों का जन समूह तो आपकी आवाज़ सुनने की प्रतीक्षा कर रहा है"। बापू ने तुरन्त उत्तर दिया, "यह स्वस्थ कहे जाने वाले लोग ही रोगी बन बैठे हैं इनसे छुटकारा मिले तब ही तो"।

मैं चाहता था कि बापू किसी तरह दिल्ली से निकल कर एक बार "उरली कांचन" चले जाँय किन्तु दुःखी बापू के लिए अभी और भी संताप बाक़ी थे। बापू जन्म से ही संघर्ष करने वाले थे और वह असफलता को जानते ही नहीं थे। वह बुराई से भी भलाई निकालना सम्भव समझते थे। बापू की इच्छा के विरुद्ध देश का विभाजन स्वीकर कर लेने के बाद भी उन्होंने कांग्रेस को सदैव शक्तिशाली संस्था बनाए रखने के विचार से उसे अपनी यही सलाह दी कि 'वह राजनीति में तो रहे किन्तु राजनैतिक सत्ता अपने हाथों में न ले'। उनका कहना था कि 'राजनैतिक सत्ता प्राप्त करने के बाद कांग्रेस का अस्तित्व ही मिट जायगा और वह सरकार की एक रबड़ की मुहर मात्र रह जायगी'। किन्तु कांग्रेस ने तो देश का विभाजन ही सत्ता प्राप्त करने की अभिलाषा से किया था फिर इस विषय पर बापू की उस समय कौन सुनने वाला था। यहां बापू को वह दिन भी देखने पड़े कि जब राजनैतिक मामलों में छाया की तरह उनके पीछे चलने वाले उनके कुछ अनुयायियों ने भी उनकी बातें अनसुनी कर दीं तथा आपस में ही गठबन्धन करके कई गम्भीर मामलों में बापू के विरुद्ध में चले गए अथवा उन्हें पराजित कर दिया।

इसके बाद बापू ने दिसम्बर के शुरु में अपने उन विश्वस्त सहयोगियों से सम्मिलित रूप में अथवा अलग २ बात करनी प्रारम्भ कीं जो सरकार से बाहर थे और बापू द्वारा स्थापित रचनात्मक संस्थाओं में विभिन्न रचनात्मक कार्य कर रहे थे। बापू चाहते थे कि कम से कम उनके रचनात्मक कार्यकर्त्ता तो पद-लोलुप्य होकर राजनैतिक झंझटों में न फंसें, नहीं तो देश का सर्वनाश हो जायगा। बापू से मेरी यहाँ दूसरी मुलाक़ात थी। एक कार्यकर्त्ता ने उनसे प्रश्न किया कि कांग्रेस या सरकार से जनहित रचनात्मक कार्य क्यों न लिया जाय? बापू की दूरदर्शिता बड़ी तीव्र थी। उन्होंने कहा, "क्योंकि रचनात्मक कार्यों में कांग्रेस जनों को काफ़ी दिलचस्पी नहीं है हमें

इस तथ्य को समझ लेना चाहिये कि हमारे स्वप्नों की सामाजिक व्यवस्था आज की कांग्रेस के द्वारा उपलब्ध नहीं हो सकती।" बापू ने यह दृढ़ता पूर्वक कहा कि "आज इतना भ्रष्टाचार फैला हुआ है कि मुझे डर लग रहा है। आदमी अपनी जेब में इतने सारे मत रखना चाहता है क्योंकि मतों से सत्ता मिलती है। इसलिये सत्ता हस्तगत करने का विचार मिटा दीजिये तो आप सत्ता को ठीक मार्ग पर ले जाएँगे। जो भ्रष्टाचार हमारी स्वाधीनता का जन्मते ही गला घोंटने को तैयार खड़ा है उसे मिटाने का दूसरा कोई उपाय नहीं है।"

बापू मानते थे कि 'वही व्यक्ति या संस्था सत्ताधारी व्यक्तियों का तगड़ा विरोध कर सकती है अथवा वही सरकार के लिये एक ब्रेक का काम दे सकता है जो स्वयं इस प्रलोभन में न फँसे तथा अपने को सरकार से बाहर रक्खे।' किन्तु मुझे आश्चर्य की बात उस समय यह लग रही थी कि बापू के ही प्रयत्नों से तथा उन्हीं की घोर तपस्याओं के फल से बनी हुई सरकार जिसके सदस्य कल तक बापू के चरणों में शीश नवाते थे, बापू स्वयं ही उनको सद्मार्ग दिखाने में आज असमर्थ प्रतीत होते थे! प्रभू की यह कैसी विचित्र माया थी!

उनकी प्रार्थना सभा में धमाके के समाचार जब पढ़ने में आए तो मैं २५ जनवरी को फिर दिल्ली इस मज़बूत इरादे से गया कि बापू को "उरली कांचन" चलने के लिये काफ़ी ज़ोर दूँगा। मुझे अपने उस गर्व भरे खयाल पर आज लज्जा प्रद हँसी आती है कि बापू की हिफ़ाज़त के लिए इस बार अपनी जेब में छिपाकर मैं अपना रिवाल्वर भी ले गया था। अभाग्यवश उन दिनों भी बापू के सामने एक और जटिल समस्या आई हुई थी। वह थी उच्च कोटि के दो नेताओं का आपसी मत-भेद। श्री नेहरू—प्रधान मंत्री, और सरदार पटेल—उप-प्रधान मंत्री इन दोनों के स्वभाव परस्पर विरोधी होने के कारण वह एक दूसरे से सहमत नहीं होते थे। दोनों के बीच संघर्ष चल रहा था। बापू देश के हित के लिये इस समस्या को सुलझाने में परेशान थे तथा दोनों नेताओं से उनका परामर्श चल रहा था। शाम को मैंने सुअवसर पाकर कहा, "बापू अब तो चारों ओर झगड़े बन्द से ही हो चुके हैं, "उरली कांचन" चलना आप कब पसंद

करेंगे ? बापू ने बड़े उत्साह से कहा, "अभी, इसी वक्त; लेकिन ईश्वर भेजे तभी तो चल सकूँगा"। कुछ देर बाद इसी प्रश्न को मैंने दूसरी तरह उनसे दरियाफ्त किया कि, "मेरा काम तो बापू यहां ख़त्म हो गया है मैं कब तक आपके साथ चलने की आशा रक्खूं ?" बापू आखें मूँदे मेरे कँधे का सहारा लिये घूम रहे थे। एक दम चौंक गये और बोले, "काम खत्म कैसे ? तुम्हारा काम तो अभी बहुत पड़ा है। मेरा तो अख़बार में देखोगे"। "अख़बार में देखोगे" से मैं समझा था कि उनके प्रोग्राम से उनका मतलब था। इसी बीच सेवाग्राम में होने वाले रचनात्मक कार्य-कर्त्ताओं के सम्मेलन का ज़िक्र आ गया। बापू की इच्छा इस सम्मेलन में जाने की थी यह जानकर मुझे बड़ी ख़ुशी हुई और मैंने सोचा था कि सेवाग्राम में बापू से दिल खोलकर बातें करने का अच्छा अवसर मिलेगा और वहां से ही उनको "उरली कांचन" जाने के लिये अपनी सब दलीलें पेश करूँगा।

रचनात्मक कार्यकर्ताओं के सम्मेलन में बापू के साथ वर्धा जाने के विचार से मैं अपने गाँव में दो एक दिन के लिए आना चाहता था अतः २७ जनवरी की सुबह को मैं बापू से इसकी इजाज़त लेने गया। उस समय बापू कुछ लिखने में व्यस्त थे। मैं समझा बापू 'हरिजन' के लिये कोई लेख लिख रहे थे। लेकिन नहीं, वह लेख बापू का केवल लेख ही नहीं था बल्कि देश की वह बड़ी संस्था अर्थात् कांग्रेस, जिसने बापू के नेतृत्व में प्राप्त किए हुए अपने नैतिक बल के ज़रिए कल ब्रिटेन के सिंहासन को हिला कर रख दिया था उसी कांग्रेस को आज पथ भ्रष्ट हुई देख कर बापू उसका वही बल क़ायम रखने के हेतु उसे अपना एक आदेश लिख रहे थे या यों कहिये कि कांग्रेस को टोर्च दिखा कर उसको सही मार्ग बता रहे थे। बाद में मुझे मालूम हुआ कि बापू ने अपने वह दो दिन विशेष कर इसी पवित्र कार्य्य में ख़र्च किये। कांग्रेस को बापू के उन दिनों के लिखे आदेशों को आज यहाँ देते वक्त ऐसा लगता है मानो बापू कांग्रेस के भविष्य का आँखों देखा हाल लिख गए थे। बापू के वह मार्मिक आदेश जो उन्होंने २७ तथा २९ जनवरी को लिखे थे वह यह हैं :

# कांग्रेस का स्थान और काम

"इन्डियन नेशनल कांग्रेस देश को सबसे पुरानी राष्ट्रीय राजनीतिक संस्था है। उसने कई अहिंसक लड़ाइयों के बाद आज़ादी हासिल की है। उसे मरने नहीं दिया जा सकता। उसका ख़ात्मा सिर्फ़ तभी हो सकता है, जब राष्ट्र का ख़ात्मा हो। एक जीवित संस्था या तो जीवन्त प्राणी की तरह लगातार बढ़ती रहती है, या मर जाती है। कांग्रेस ने सियासी आज़ादी तो हासिल करली है, मगर उसे अभी माली आज़ादी, सामाजिक आज़ादी और नैतिक या इखलाकी आज़ादी हासिल करनी हैं। ये आज़ादियाँ चूंकि रचनात्मक हैं, कम उत्तेजक है और भड़कीली नहीं है, इसलिये इन्हें हासिल करना सियासी आज़ादी से ज्यादा मुश्किल है। जीवन के सारे पहलुओं को अपने में समालेने वाला तामीरी काम करोड़ों जनता के सारे अंगों की शान्ति को जगाता है।

कांग्रेस को उसकी आज़ादी का प्रारम्भिक और ज़रूरी हिस्सा मिल गया है। लेकिन उसकी सबसे कठिन मंजिल आना अभी बाक़ी है। जमहूरी व्यवस्था क़ायम करने के अपने मुश्किल मक़सद तक पहुँचने में उसने अनिवार्य रूप से दल बन्दी करने वाले गन्दे पानी के गड़हों जैसे मंडल खड़े किये हैं; जिनसे घूंसखोरी और बेईमानी फ़ैली है और ऐसी संस्थाएँ पैदा हुई हैं, जो नाम की ही लोक प्रिय और प्रजातन्त्री हैं। इन सब बुराइयों के जंगल से बाहर कैसे निकला जाय ?

कांग्रेस को सब से पहिले अपने मेम्बरों के उस स्पेशल रजिस्टर को अलग हटा देना चाहिये, जिसमें मेम्बरों की तादाद कभी भी एक करोड़ से आगे नहीं बढ़ी, और तब भी जिन्हें आसानी से शनाख्त नहीं किया जा सकता था। उसके पास ऐसे करोड़ों का एक अज्ञात

रजिस्टर था, जो कभी उसके काम में नहीं आए। अब कांग्रेस का रजिस्टर इतना बड़ा होना चाहिये कि देश के मतदाताओं की लिस्ट में जितने मर्द और औरतों के नाम हैं, वे सब उसमें आ जायँ। कांग्रेस का काम यह देखना होना चाहिये कि कोई बनावटी नाम उसमें शामिल न हो जाय और कोई जायज़ नाम छूट न जाय। उसके अपने रजिस्टर में उन देश-सेवकों के नाम रहेंगे, जो समय-समय पर उनको दिया हुआ काम करते रहेंगे।

देश के दुर्भाग्य से ऐसे कार्यकर्त्ता फिलहाल खास तौर पर शहर वालों में से ही लिए जायेंगे, जिनमें से ज्यादातर तो देहातों के लिए और देहातों में काम करने की जरूरत होगी। मगर इस श्रेणी में ज्यादा-ज्यादा तादाद में देहाती लोग ही भर्ती किए जाने चाहिएँ।

इन सेवकों से यह आशा रखी जायगी कि वे अपने-अपने हलकों में क़ानून के मुताबिक़ रजिस्टर में दर्ज किए गए मतदाताओं के बीच काम करके उन पर अपना प्रभाव डालेंगे और उनकी सेवा करेंगे। कई व्यक्ति और पार्टियाँ इन मतदाताओं को अपने पक्ष में करना चाहेंगी। जो सबसे अच्छे होंगे उन्हीं की जीत होगी। इसके सिवा और कोई दूसरा रास्ता नहीं है, जिससे कांग्रेस देश में, तेजी से गिरती हुई अपनी अनुपम स्थिति को फिर से हासिल कर सके। अभी कल तक कांग्रेस बेजाने देश की सेविका थी। वह खुदाई ख़िदमतगार थी—भगवान की सेविका थी। अब वह अपने आपसे और दुनिया से कहे कि वह सिर्फ भगवान की सेविका है—न इससे ज्यादा है, न कम। अगर वह सत्ता हड़पने के व्यर्थ के झगड़ों में पड़ती है, तो एक दिन वह देखेगी कि वह कहीं नहीं हैं। भगवान को धन्यवाद है कि अब वह जन-सेवा के क्षेत्र में एक मात्र स्वामिनी नहीं रही।

मैंने सिर्फ़ दूर का दृश्य आपके सामने रखा है। अगर मुझे वक्त मिला और स्वास्थ्य ठीक रहा तो मैं इन कालमों में यह चर्चा करने

की उम्मीद करता हूँ कि अपने मालिकों—सारे बालिग़ मर्द और औरतों—की नज़रों में अपने को ऊँचा उठाने के लिए देश-सेवक क्या कर सकते हैं।"

नई दिल्ली, २७-१-४८

मोहनदास करमचद गाँधी

('हरिजन सेवक'—१ फरवरी १६४८)

## गाँधी जी का आख़िरी वसीयतनामा

"देश का बँटवारा होते हुए भी, हिन्दी राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा तैयार किए गए साधनों के ज़रिये हिन्दुस्तान को आज़ादी मिलने के कारण मौजूदा स्वरूप वाली कांग्रेस का काम अब ख़त्म हुआ—यानी प्रचार के वाहन और धारा सभा की प्रवृत्ति चलाने वाले तंत्र के नाते उसकी उपयोगिता अब समाप्त हो गई है। शहरों और कस्बों से भिन्न उसके सात लाख गांवों की दृष्टि से हिन्दुस्तान की सामाजिक, नैतिक और आर्थिक आज़ादी हासिल करना अभी बाक़ी है। लोकशाही के मक़सद की तरफ़ हिन्दुस्तान की प्रगति के दरमियान फौजी सत्ता पर मुल्की सत्ता को प्रधानता देने की लड़ाई अनिवार्य है। कांग्रेस को हमें सियासी पार्टियों और साम्प्रदायिक संस्थाओं के साथ की गन्दी होड़ से बचाना चाहिए। इन और ऐसे ही दूसरे कारणों से अखिल भारत कांग्रेस कमेटी नीचे दिए हुए नियमों के मुताबिक़ अपनी मौजूदा संस्था को तोड़ने और लोक-सेवक-संघ के रूप में प्रकट होने का निश्चय करे। ज़रूरत के मुताबिक़ इन नियमों में फेर-फार करने का इस संघ को अधिकार रहेगा।

गाँव वाले या गाँव वालों जैसी मनोवृत्ति वाले पाँच बालिग़ मर्दों या औरतों की बनी हुई हर एक पंचायत एक इकाई बनेगी।

पास-पास की ऐसी हर दो पंचायतों की, उन्हीं में से चुने हुए एक नेता की रहनुमाई में, एक काम करने वाली पार्टी बनेगी।

जब ऐसी १०० पंचायतें बन जायँ, तब पहले दर्जे के पचास नेता अपने में से दूसरे दर्जे का एक नेता चुनें और इस तरह पहले दर्जे के नेता दूसरे दर्जे के नेता के मातहत काम करें। दो सौ पंचायतों के ऐसे जोड़ क़ायम करना तब तक जारी रखा जाय, जब तक कि वे पूरे हिन्दुस्तान को न ढक लें। और बाद में क़ायम की गई पंचायतों का हर एक समूह पहले की तरह दूसरे दर्जे का नेता चुनता जाए। दूसरे दर्जे के नेता सारे हिन्दुस्तान के लिए सम्मिलित रीति से काम करें और अपने-अपने प्रदेशों में अलग-अलग काम करें। जब ज़रूरत महसूस हो, तब दूसरे दर्जे के नेता अपने में से एक मुखिया चुनें, जो चुनने वाले चाहें तब तक, सब समूहों को व्यवस्थित करके उनकी रह-नुमाई करे।

( प्रान्तों या ज़िलों की अन्तिम रचना अभी तय न होने से सेवकों के इस समूह को प्रान्तीय या ज़िला समितियों में बांटने की कोशिश नहीं की गई। और किसी भी वक्त बनाए हुए समूह या समूहों को सारे हिन्दुस्तान में काम करने का अधिकार रहेगा। सेवकों के इस समुदाय को अधिकार या सत्ता अपने उन स्वामियों से यानी सारे हिन्दुस्तान की प्रजा से मिलती है, जिसकी उन्होंने अपनी इच्छा से और होशियारी से सेवा की है। )

( १ ) हर एक सेवक अपने हाथों कते हुए सूत की या चरखा-संघ द्वारा प्रमाणित खादी हमेशा पहनने वाला और नशीली चीज़ों से दूर रहने वाला होना चाहिए। अगर वह हिन्दू है, तो उसे अपने में से और अपने परिवार में से हर क़िस्म की छूआछूत दूर करनी चाहिए और जातियों के बीच एकता के, सब धर्मों के प्रति समभाव के और

—तीन सौ पचासी

जाति, धर्म या स्त्री-पुरुष के किसी भेदभाव के बिना सब के लिए समान अवसर और दर्जे के आदर्श में विश्वास रखने वाला होना चाहिए।

(२) अपने कार्य क्षेत्र में उसे हर एक गाँव वाले के निजी संसर्ग में रहना चाहिए।

(३) गाँव वालों में से वह कार्यकर्त्ता चुनेगा और उन्हें तालीम देगा। इन सब का वह रजिस्टर रखेगा।

(४) वह अपने रोज़ाना के काम का रेकार्ड रखेगा।

(५) वह गाँवों को इस तरह संगठित करेगा कि वे अपनी खेती और गृह-उद्योगों द्वारा स्वयं पूर्ण और स्वावलंबी बनें।

(६) गाँव वालों को वह सफ़ाई और तन्दुरुस्ती की तालीम देगा और उनकी बीमारी व रोगों को रोकने के लिए सारे उपाय काम में लाएगा।

(७) हिन्दुस्तानी तालीमी संघ की नीति के मुताबिक़ नई तालीम के आधार पर वह गाँव वालों की पैदा होने से मरने तक सारी शिक्षा का प्रबन्ध करेगा।

(८) जिनके नाम मत-दाताओं की सरकारी लिस्ट में न आ पाए हों, उनके नाम वह उसमें दर्ज कराएगा।

(९) जिन्होंने मत देने के अधिकार के लिए ज़रूरी योग्यता अभी हासिल न की हो, उन्हें उसे हासिल करने के लिए वह प्रोत्साहन देगा।

(१०) ऊपर बताए हुए और वक्तन-फ़-वक्तन बढ़ाए हुए मक़सद पूरे करने के लिए, योग्य फ़र्ज अदा करने की दृष्टि से, संघ के द्वारा तैयार किए गए नियमों के मुताबिक़ वह ख़ुद तालीम लेगा और योग्य बनेगा।

—तीन सौ छियासी

संघ नीचे की स्वाधीन संस्थाओं को मान्यता देगा :—

( १ ) अखिल भारत चर्खा संघ।

( २ ) अखिल भारत ग्रामोद्योग संघ।

( ३ ) हिन्दुस्तानी तालीमी-संघ।

( ४ ) हरिजन-सेवक संघ।

( ५ ) गो सेवा संघ

संघ अपना मक़सद पूरा करने के लिए गाँव वालों से और दूसरों से चन्दा लेगा। ग़रीब लोगों का पैसा इकट्ठा करने पर ख़ास ज़ोर दिया जाएगा।"

नई दिल्ली, मो० क० गाँधी।

२६-१-४८

( 'हरिजनसेवक'—२२ फरवरी, १६४८ )

बापू के उपरोक्त आदेशों का उलँघन करके कांग्रेस आज जो अपनी दयनीय दशा बना बैठी है वह हमारे सामने है। बापू तो दरिद्र नारायण थे। राजनीति में प्रवेश करके उन्होंने प्रोफेसर एलबर्ट आइन्सटीन के कथनानुसार संसार को यह सिद्ध कर दिखाया था कि 'केवल प्रचलित राजनैतिक चालबाज़ियों और धोकाधड़ियों के मक्कारी-भरे खेलों द्वारा ही नहीं, बल्कि जीवन के नैतिकता पूर्ण श्रेष्टतर आचरण के प्रबल उदाहरण द्वारा भी मनुष्यों का एक बल शाली अनुगामी दल एकत्रित किया जा सकता है।' अतः बापू द्वारा संशोधित की हुई हमारे देश की कांग्रेस तो 'गाँधीवाद' के एक सुन्दरतम पुष्प की खिली हुई कली थी जो सत्ताधारियों के हाथ में पहुँचने से सड़ उठी और आज इन कथित राजवंशियों का धर्म बन गई। अंग्रेज़ी की एक कहावत है कि 'Power Corrupts' अर्थात् 'शक्ति के साथ नैतिक पतन हो जाना।' आज कांग्रेस में वही सब कुछ हम देख रहे हैं। उसमें त्याग के स्थान पर भोग,

कर्त्तव्य के स्थान पर अधिकार और सेवा के स्थान पर शासन की इच्छा बढ़ती जा रही है। प्रत्येक कांग्रेसी स्वतन्त्रता की लूट में शामिल होना चाहता है और जनता के सम्पर्क से दूर होता जाता है। यदि अब भी यह अपने को न संभाल पाई तो वह दिन भी दूर नहीं कि जब कांग्रेस की क़ब्र पर कोई दिया जलाना भी पसंद न करेगा।

आज तो राजनीति मेरा विषय नहीं है किन्तु कांग्रेस के प्रति अभी भी मेरे हृदय में थोड़ा मोह शेष रह जाने के कारण तथा देश की वर्तमान परिस्थितियों को नैतिक तथा सामाजिक दृष्टिकोण से देखते हुए प्रसंगवश तत्सम्बन्धी विषय पर अपने दुःखित हृदय में उठे कुछ भाव प्रकट किये हैं।

मैं सेवाग्राम में होने वाले रचनात्मक कार्य-कर्ताओं के सम्मेलन में बापू के साथ जाने के विचार से २८ ता० को अपने गाँव आया। यहाँ हमारे मकान के लिए बिजली की स्वीकृति हमको मिल चुकी थी। दो दिन मेरे उस कार्य्य में व्यतीत हुए। ३० जनवरी को मैं मकान के बराम्दे में सबके साथ बैठा हुआ अपनी धर्म पत्नी तथा बच्चों के भविष्य के कार्य-क्रम की रूप रेखा बना रहा था कि लगभग पौने छः बजे मेरे एक वकील मित्र शहर से हमारे मकान की ओर तेज़ी से आते हुए नज़र पड़े। मैं उनके लिए आगे बढ़ा तो उन्होंने छूटते ही कहा कि "दिल्ली में गांधी जी को किसी ने गोली से मार दिया।" मेरे दरियाफ्त करने पर उन्होंने कहा कि शहर में इसकी आम अफ़वाह है। "अफ़वाहों पर कैसे भरोसा कर लिया?" यह कहते हुए मैंने अपनी साइकिल ली और तुरन्त उन्हीं के साथ शहर में अपने एक डा० मित्र के यहां पहुँचा जहाँ रेडियो था। ६ बजे की खबरें आने में सिर्फ़ कुछ मिनट ही बाक़ी थे लेकिन वह कुछ मिनट भी घंटों के बराबर कटीं और आख़िर यह बात सत्य ही रही।

अब क्या करूँ? दिल्ली को जाने वाली कोई ट्रेन भी नहीं और मोटर का प्रबन्ध होना असम्भव था यही सोचता हुआ गाँव आया और स्त्री बच्चों को यह दुःखद समाचार सुना दिया। वह रात बहुत लम्बी हो गई। सर्दी बड़े

ज़ोर की थी। रेल का स्टेशन गाँव से ६ मील की दूरी पर है। बच्चे सब साथ जाना चाहते थे। इसलिये शहर तक एक बैलगाड़ी ली और वहाँ से खुर्जा स्टेशन तक घोड़ा ताँगे में पहुँचकर दिल्ली के लिए ११-३० बजे की पैसेन्जर गाड़ी पकड़ी जिसने हमको क़रीब ३ बजे दिल्ली पहुँचाया। अतः बापू के अन्तिम दर्शन हमको जलूस जाते हुए ही मिले। स्त्री और बच्चों की आँखों से आँसू बह रहे थे; लेकिन मैं पत्थर की मूर्ती की तरह भीड़ से दूर खड़ा हुआ अपने सर की सोलह साल की छाया को धीरे २ अपने सर से हटती हुई अपने नेत्रों से देख रहा था। बापू की आँखें मुँदी हुई थीं और उनके वह अन्तिम शब्द मेरे कानों में गूँज रहे थे : "काम ख़त्म कैसे? तुम्हारा काम तो अभी बहुत पड़ा है। मेरा तो अख़बार में देखोगे"। और दूसरे दिन अख़बार में ही बापू की मृत्यु का पूरा विवरण पढ़ने को मिला।

—:o:—

—तीन सौ नवासी

## बापू के बाद

बापू के निधन के बाद बापू के नज़दीकी अनुयायियों को भी राज सत्ता प्राप्त करने की दौड़ में शरीक होते देख मैं हैरान तो हुआ लेकिन मुझे उससे क्या ? मेरे लिए तो बापू मार्ग प्रदर्शन कर गए थे। प्रश्न था आजीविका का और बच्चों को उनकी इच्छानुसार तालीम दिला कर उनके प्रति अपने कर्त्तव्य के पालन करने का।

वास्तव में बापू के नियुक्त किए हुए सब ही रचनात्मक कार्य-कर्ताओं के इस प्रकार के घरेलू बोझ का भार तो देश की बनी हुई अपनी स्वतन्त्र सरकार पर होना चाहिए था जैसा कि उन्नति के पथ पर चलने वाली अन्य देशों की सरकार करती आई हैं लेकिन यहाँ तो स्वतंत्रता की चकाचौंध में हमारी नई सरकार अपनी दूर-दर्शिता की शक्ति नष्ट करके उसे अपने तथा अपनों तक ही सीमित कर बैठी थी, उधर मैं न तो प्राकृतिक चिकित्सा को अपनी आजीविका का साधन बनाना चाहता था और न गाँव के ग़रीब के सम्पर्क से हटना ही चाहता था। इसलिए अपनी इन दोनों आवश्यकताओं की पूर्ति करने के हेतु मैंने कृषि-कार्य को पसन्द किया जिसकी प्राकृतिक चिकित्सा से अविछिन्न मित्रता है। और बावजूद अपने इष्ट मित्रों तथा सम्बन्धियों की खिलाफ़ मर्ज़ी के मैंने यह प्रतिज्ञा ली कि बापू की मृत्यु से दस साल तक मैं कृषि को ही अपनी आजीविका का साधन रखकर अपने आदर्शों तक पहुँचने का प्रयत्न करूँगा। आज मुझे खुशी है कि मेरी स्त्री और बच्चों ने मेरी प्रतिज्ञा को पूरी कराने में

लेखक और उसके परिवार के सुखद कृषि तथा ग्रामीण जीवन की कुछ झाँकियाँ

( देखिए पन्ना—तीन सौ इक्यानवे )

अपना पूर्ण सहयोग दिया और कृषि द्वारा ही अपनी आजीविका से उन्होंने अपनी-अपनी यूनीवर्सिटियों की उच्चतम डिग्रियाँ हासिल कीं।

इस बीच मेरे साथियों ने मुझे अपने से तथा बाहिरी दुनिया से अलग समझा भी हो तो आश्चर्य नहीं; लेकिन मैंने अपने को उन्हीं के बीच देखा है अन्तर केवल इतना ही रहा कि अपने कृषि देश के मूक कृषक की ग़रीबी तथा दरिद्रता का दस साल तक आँखों देखे हाल ने उसके प्रति सहानुभूति की आग मेरे हृदय में पहले से अधिक सुलगा दी है और मैं अपने दस साल के ज़ाती अनुभव के आधार पर यह कहने को बाध्य हो गया हूँ कि भारत में स्वतंत्रता की अभी पौ भी नहीं फटी। लेकिन अभी इस विवाद में जाने का मेरे लिए समय नहीं। यहाँ तो मुझे इस पुस्तक को समाप्त करने से पहले, अपने गाँव के उस विशाल भवन के विषय में दो शब्द कहने हैं जिसको १० फ़रवरी सन् १९४७ में अपने एक प्रस्ताव के अनुसार श्री गांधी आश्रम—मेरठ को देना निश्चय किया था। अभाग्यवश गांधी आश्रम—मेरठ उस भवन का कोई उपयोग न कर सका और मेरा इस्तीफ़ा स्वीकार न हुआ। इमारत की हालत भी दिन प्रतिदिन ख़राब होने लगी। उधर संस्था के दूसरे ट्रस्टी—श्री विचित्र नारायन जी ने भी राज सत्ता में भाग ले लिया। उनकी सहूलियत का ख़्याल रखकर ६ अप्रैल १९४८ को लखनऊ के काउन्सिल हाउस में ट्रस्टियों की एक मीटिंग हुई और यह निम्न प्रस्ताव पास हुए :

"..........लेकिन दुर्भाग्य से गाँधी आश्रम—मेरठ उसका कोई उपयोग न कर सका। इस बीच में संघ (दधीच सेवा संघ) की इमारत की हिफाज़त व मरम्मत में खर्च तो होता ही रहा है फिर भी इमारत की हालत दिन प्रतिदिन ख़राब ही होती जा रही है। उधर बिजली भी डा० शर्मा जी ने अपने मकान से संस्था की इमारत को अपने खर्चे से देना स्वीकार कर लिया है। इन सब कारणों से अब यह प्रश्न उठता है कि इस संस्था का सदुपयोग होना ही चाहिए।

—तीन सौ इक्यानवे

इमारत का बेकार रहना और नष्ट हो जाना उचित नहीं है इसलिए ट्रस्टीज़ यही मुनासिब समझते हैं कि सबसे अच्छा यही होगा कि इस संस्था में वही काम किया जाय जिसके लिए इसकी स्थापना हुई थी। महात्मा जी की मृत्यु के बाद यह और भी आवश्यक हो जाता है कि उनकी उस इच्छा को पूरा किया जाय जिससे प्रेरित होकर उन्होंने इस संस्था को स्थापित कराने के लिए ट्रस्ट बनवाया।"

(२) "ट्रस्ट यह भी महसूस करता है कि यद्यपि गाडोदिया जी वाले विवाद में श्री "म०" के निर्णय द्वारा डा० शर्मा जी के साथ तथा इस संस्था के साथ बहुत अच्छा न्याय नहीं हुआ फिर भी ट्रस्ट यह आशा करता है कि डा० शर्मा, महात्मा जी की स्मृति में सब कुछ भुलाकर और फिर संस्था को अपना कर, अपनी सेवाएँ प्रदान करेंगे। डा० शर्मा की निजी दिक्क़तों को देखते हुए और संस्था की कमज़ोर, आर्थिक स्थिति का ध्यान रखते हुए ट्रस्ट उनको उनके कृषि के स्वतंत्र काम की भी अपने निजी स्थान पर करने की अनुमति देता है।......ट्रस्ट यह भी महसूस करता है कि तीसरे ट्रस्टी--श्री गाडो-दिया जी के खाली स्थान पर किसी योग्य व्यक्ति को ट्रस्टी चुन लिया जाय। इसके लिए श्री आत्माराम गोविंद खेर—मंत्री, स्वास्थ्य विभाग से प्रार्थना की जाय कि वह इस खाली स्थान पर ट्रस्टी होना स्वीकार करें। इसलिए ट्रस्ट यह निर्णय करता है कि श्री आत्माराम गोविंद खेर की स्वीकृति प्राप्त होने पर उन्हें ट्रस्ट का तीसरा ट्रस्टी समझा जाय।"

श्री विचित्र नारायन द्वारा मुझे कुछ समय बाद यह मालूम हुआ कि श्री आत्माराम गोविद खेर ने राज्य के स्वास्थ्य मंत्री होने के नाते ट्रस्टी होना उचित नहीं समझा। अतः अन्त में यह कुल भार मुझे ही सहन करना पड़ा और ७ नवम्बर सन् १९४८ को लखनऊ में ही फिर ट्रस्ट की मीटिंग की गई और संस्था की उजड़ी हुई इमारत को ठीक कराने के लिए निम्न प्रस्ताव द्वारा दो हज़ार रुपया इसके लिए मैंने और निकाला।

( देखिए पन्ना—तीन सौ तिरानवे )

चित्र—४१
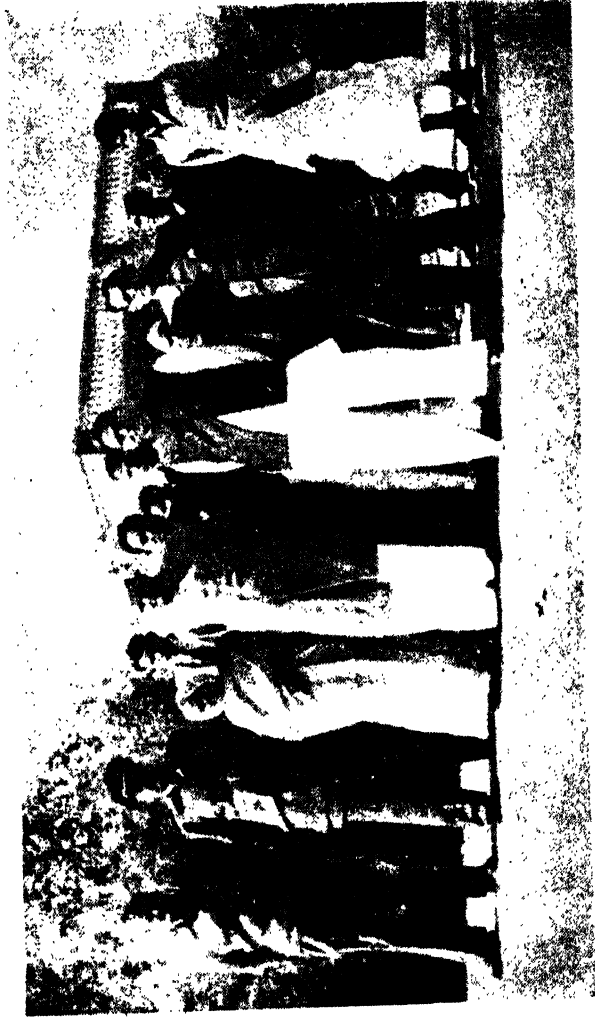
लेखक के ग्रामीण स्थान का समाज-कल्याण विभाग के मँत्री, श्री आचार्य जुगल किशोर जी द्वारा निरीक्षण
( बाँई ओर से ) लेखक की धर्मपत्नी, मंत्री महोदय, लेखक का पुत्र, लेखक

( देखिए पन्ना—तीन सौ तिरानवे ) चित्र—४२

लेखक के ग्रामीण स्थान से स्वशासन विभाग के मंत्री,
श्री विचित्र नारायन जी द्वारा लेखक के कृषि-फार्म का निरीक्षण
( मंत्री महोदय बाँई ओर तथा लेखक चित्र में सीधी ओर हैं )

"......डा० हीरालाल शर्मा ने संस्था के पुनरुद्धार हेतु २०००) रु० इम्पीरियल बैंक ऑफ इंडिया, खुर्जा पर चैक नं० बी० २/५१—०१३६३ ता० ७-१२-४८ द्वारा प्रदान किए। ट्रस्ट कमेटी इस सहायता के लिए उनकी बहुत ऋणी है।"

लेकिन संस्था की इमारत को फिर से ठीक कराने में दो हज़ार रुपये के बजाय तीन हज़ार से भी ऊपर रुपया लग गया जिसकी पूर्ति इस संस्था के प्रति मोह वश मुझे अपने कठोर परिश्रम द्वारा कृषि से प्राप्त हुए धन राशि में से ही करनी पड़ी और जब तक मुझसे चल सका इसके द्वारा जन सेवा की। लेकिन इस दस साल के लम्बे अर्से में मैंने यह स्पष्टतया महसूस किया है कि इस प्रकार एक जगह बँधे रहने से मैं अपने आदर्शों की पूर्ति नहीं कर सकता तथा देश की राजनीति से भी अब अधिक उदासीन नहीं रह सकता। इसलिए यहाँ की अपनी कुल सम्पत्ति से मुक्ती पाने का निर्णय करके मैंने यू० पी० सरकार के समाज-कल्याण विभाग को तत्सम्बन्धी अपना कोई कार्य्य करने के लिए इस ओर निमन्त्रित किया। यह पत्र-व्यवहार एक वर्ष से भी अधिक तक चला लेकिन मुझे यह देखकर दुःख हुआ कि सरकार के इस विभाग ने भी अन्य सरकारी विभागों की भाँति गाँवों की अपेक्षा शहरों को ही अपना कार्य-क्षेत्र बनाना अधिक उचित समझा है इसलिए इस ओर वह अपनी कोई योजना न बना पाया।

सौभाग्य से गाँधी आश्रम—मेरठ का कार्य-क्षेत्र अब काफ़ी बढ़ चुका था। इसलिए अन्त में ता० ७-१०-१९५६ को लखनऊ में ट्रस्टियों की विशेष मीटिंग में एक प्रस्ताव द्वारा गाँधी आश्रम—मेरठ को (अर्थात् उसके मैनेजर को) संस्था का तीसरा ट्रस्टी मुक़र्रिर कर लिया गया और यह निर्णय हो गया कि 'इसी ट्रस्ट को क़ायम रखते हुए गाँधी आश्रम—मेरठ अपने प्रबन्ध में जो भी जन-कल्याण का काम इस भवन में कराना चाहे वह करा दे।' मुझे आज यह देखकर खुशी है कि दधीच सेवा संघ की इस छोटी सी कॉलोनी में आज गाँधी आश्रम—मेरठ के प्रबन्ध में ग्रामोद्योग

तथा अम्बर चर्खे का प्रशिक्षण केन्द्र इत्यादि जैसी चीजें चालू हो गई हैं जिनको भविष्य में और भी बढ़ाने की मुझे आशा है। उधर मैं भी अपने नैतिक भार से हल्का होकर अब यह भली भाँति देख रहा हूँ कि बापू के कहे हुए अन्तिम शब्दों के अनुसार सचमुच मेरा काम तो अभी बहुत पड़ा है। लेकिन मेरे जीवन के सन्ध्या काल में ईश्वर उसका कितना भाग और किस प्रकार मुझ से पूरा करा पाएँगे, यह देखने की चीज़ है।

—:o:—

लेखक काड़ेरा धर्मार्थ आयुर्वेदिक औषधालय की सिल्वर-जुबिली पर आमंत्रित :

(१) लेखक (२) डा० अम्बालाल एम० एल० ए० (३) श्री हरिभाऊ उपाध्याय, चीफ मिनिस्टर (४) श्री गुलजारी लाल नन्दा, योजना मँत्री (५) श्री महाराज कृष्णा नन्द जी (६) ठाकुर साहेब—काड़ेरा (७) चेयरमैन, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड (८) श्री सेठ भागचन्द (९) श्री पुरुषोत्तम दास कुदाल, एडवोकेट ।

# विशुद्धि-पत्र

मुझे दुःख है कि पुस्तक की छपाई में प्रूफ रीडिंग में कुछ ग़लतियाँ रह गई हैं। पाठकों से मैं उसकी क्षमा माँगता हूँ। भविष्य में इसकी ओर विशेष ध्यान रक्खा जायगा। इस समय जो मोटी मोटी ग़लतियाँ मैं इस संस्करण में देख सका हूं उन्हें नीचे दे दिया है उनके अलावा जो गलतियाँ पाठकों को नज़र पड़ें कृपया वे स्वयं उन्हें ठीक करलें :

| पन्ना नं० | लाइन नं० | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| चौदह | ऊपर से दसवीं | तुम्हरा | तुम्हारा |
| बीस | नीचे से आठवीं | पहिले ही म | पहिले ही मैं |
| इक्कीस | नीचे से दूसरी | शीब्र | शीघ्र |
| चौबीस | ऊपर से दूसरी | ३ मार्च, १६३३ | ३ अप्रैल, १६३३ |
| सैंतीस | ऊपर से पहिली | कर सक | कर सकूँ |
| इकतालीस | नीचे से छटी | आर्शीवाद | आशीर्वाद |
| तैंतालीस | ऊपर से चौदहवीं | Advice | Advise |
| चौवालिस | ऊपर से दसवीं | आर्शीवाद | आशीर्वाद |
| पचास | ऊपर से पाँचवीं | आत्म शुद्धि व | आत्म शुद्धि के |
| तिरपन | ऊपर से नवीं | दस दिन बाद के | दस दिन के बाद |
| ” | ऊपर से बारहवीं | आर्शीवाद | आशीर्वाद |

| पन्ना नं० | लाइन नं० | अशुद्ध | शुद्ध |
| --- | --- | --- | --- |
| पचपन | ऊपर से चौथी | आर्शीवाद | आशीर्वाद |
| सत्तावन | नीचे से सातवीं | " | " |
| उनहत्तर | ऊपर से आठवीं | सब को सब प्रकार | सबको और सब प्रकार |
| बयासी | ऊपर से नवीं | पूज्य बा० | पूज्य बा |
| चौरानवे | नीचे से सातवीं | मुझे अपसी | मुझे अपनी |
| एक सौ इक्कीस | ऊपर से सातवीं | से वाक़यात | के वाक़यात |
| दो सौ बत्तीस | यूरोप का नक़शा | चित्र—२३४ | चित्र—१४ |
| दो सौ तैंतीस | नीचे से पाँचवीं | अभिनन्दन | अभिवादन |
| तीन सौ तेरह | नीचे से नवीं | तक मैं बाहर | तक मैं कहीं बाहर |
| तीन सौ चौदह | ऊपर से चौदहवीं | व्यवहार मानो | व्यवहार से मानो |
| तीन सौ अट्ठारह | ऊपर से पहिली | ३०-१०-३२ | ३०-१०-४२ |
| तीन सौ अट्ठारह | " दसवीं | दिल्ली | दिल्ली, ५-११-४२ |
| तीन सौ अट्ठारह | नीचे से पहिली | गोडोदिया | गाडोदिया |

—:०:—

'नवजीवन ट्रस्ट' द्वारा अँग्रेजी में छपी

## गाँधी जी की अन्य उपयोगी पुस्तकें :

(1) "Towards Non-Violent Socialism."
(2) "Drink, Drugs & Gambling."
(3) "Food Shortage & Agriculture."
(4) "Key to Health."
(5) "Nature Cure."
(6) "Ramanama."
(7) "Sarvodaya."
(8) "Diet & Diet Reforms."
(9) "Truth is God."
(10) "My Religion."

## ईश्वर शरण आश्रम द्वारा प्रकाशित हरिजनोत्थान सम्बन्धी पुस्तक

(१) हरिजन वर्ग और उनका उत्थान—मूल्य २)
लेखक—रामजी लाल सहायक, एम० एल० ए०

(२) 'बापू की छाया में मेरे जीवन के सोलह वर्ष'
लेखक--डॉ० हीरालाल शर्मा
मूल्य—लायब्रेरी संस्करण—पन्द्रह रुपया
सस्ता संस्करण —चार रुपया

## आश्रम प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

(१) गोरिल्ला माँ—मूल्य २)

अन्तराष्ट्रीय ख्याति की नोबेल पुरस्कार विजेता पर्ल० एस० बक० की सर्व-श्रेष्ठ पाँच कहानियों का भाषान्तर।

अनुवादिका—श्रीमती प्रियम्बदा नन्दक्योलियार

---

पत्र व्यवहार का पता:—
संचालक, ईश्वर शरण आश्रम, प्रयाग।